मक्सिम गोर्की

तीन नाटक

मक्सिम गोर्की

तीन नाटक

करवट
रसातल
दुश्मन

अनुक्रम

करवट

पात्र

वसीली वसील्येविच बेस्सेमेनोव, उम्र अट्ठावन साल, रंगसाज़ों के संघ का अच्छा खाता-पीता मुखिया।

अकुलीना इवानोव्ना बेस्सेमेनोवा, वसीली की पत्नी, उम्र बावन साल।

प्योत्र बेस्सेमेनोव, वसीली का बेटा। उम्र छब्बीस साल, विश्वविद्यालय से निकाला गया विद्यार्थी।

तत्याना बेस्सेमेनोवा, वसीली की बेटी। उम्र अट्ठाईस साल, अध्यापिका।

नील, वसीली द्वारा पाला-पोसा गया बेटा, उम्र सत्ताईस साल, इंजन-ड्राइवर।

पेर्चीख़िन, वसीली का दूर का रिश्तेदार, उम्र पचास साल, चिड़ीमार।

पोल्या, पेर्चीख़िन की बेटी, उम्र इक्कीस साल, दर्ज़िन जो बेस्सेमेनोव परिवार में काम करती है।

येलेना निकोलायेव्ना क्रिव्त्सोवा, जेल-वार्डन की विधवा, उम्र चौबीस साल, बेस्सेमेनोव की किरायेदार।

तेतेरेव, भजनमंडली का गायक
शीश्किन, विद्यार्थी
} बेस्सेमेनोव के घर में रहते हैं।

त्स्वेतायेवा, उम्र पचीस साल, अध्यापिका, तत्याना की सहेली।

स्तेपानीदा, बावर्चिन।

बुढ़िया।

लड़का, रंगसाज़ का चेला।

डाक्टर।

घटनास्थल – कोई छोटा-सा प्रान्तीय नगर।

मंच-सज्जा

एक समृद्ध कारोबारी के घर का कमरा। उस के बायें हिस्से को विभाजन-दीवारों से दो कमरों में विभाजित कर दिया गया है। इस तरह मंच का पिछला भाग कम चौड़ा रह जाता है और आगे की ओर एक छोटा-सा कमरा बन जाता है। लकड़ी की मेहराब के साथ रंग-बिरंगा परदा लटक रहा है। बड़े कमरे के पिछवाड़े की दीवार में एक दरवाज़ा है जो ड्योढ़ी में और घर के दूसरे हिस्से में जाने का रास्ता है, जहां तेतेरेव और शीश्किन के कमरे और रसोईघर है। दरवाज़े के बायीं ओर बर्तन रखने की एक भारी अलमारी है और कोने में एक सन्दूक़। दरवाज़े के दायीं ओर केस में बन्द पुराने ढंग की एक बड़ी घड़ी है। घड़ी का चांद जैसा बड़ा-सा पेंडुलम शीशे के पीछे धीरे-धीरे हिल रहा है और जब ख़ामोशी होती है तो उसकी नीरस टिक-टिक सुनाई देती रहती है। बायीं ओर की दीवार में दो दरवाज़े हैं – एक बेस्सेमेनोव और उसकी पत्नी के कमरे का और दूसरा उनके बेटे प्योत्र के कमरे का। इन दरवाज़ों के बीच सफ़ेद टाइलों का बड़ा-सा छतवाला तन्दूर* है। तन्दूर के पास

* पुराने वक़्तों में घर गर्म रखने के लिए रूस में छतवाले तन्दूर बनाये जाते थे जिनके ऊपर सोने की जगह भी होती थी। – अनु०

मोमजामे से ढका हुआ एक पुराना सोफ़ा रखा हुआ है। सोफ़े के सामने एक बड़ी मेज़ है। घर के लोग यहीं खाना खाते हैं और चाय पीते हैं। दीवारों के साथ-साथ, बिल्कुल बराबर-बराबर फ़ासले पर, सीधी टेक की सस्ती कुर्सियां रखी हुई हैं। मंच के बायीं ओर, लगभग मंच के सिरे पर, शीशे की छोटी-सी अलमारी है। इस अलमारी में ख़ूबसूरत डिब्बे, ईस्टर के रंग-बिरंगे अण्डे, कांसे के शमादानों की एक जोड़ी, छोटे-बड़े चम्मच, चांदी के कुछ जाम और छोटे गिलास रखे हैं। मेहराब द्वारा बड़े कमरे से अलग किये गये छोटे कमरे में दर्शकों के सामने दीवार के पास एक पियानो रखा है। पास ही एक मेज़ पर स्वर-लिपियां हैं। कमरे के एक कोने में रखे हुए बड़े गमले में फ़िलो-डेंड्रोन का पौधा लगा है। दायीं ओर की दीवार में दो खिड़कियां हैं जिनके दासों पर फूलोंवाले गमले रखे हैं। खिड़कियों के पास एक सोफ़ा है और उसके नज़दीक, मंच के अगले सिरे की तरफ़ एक छोटी-सी मेज़ है।

पहला अंक

(सन्ध्या के लगभग पांच बजे हैं। खिड़कियों में से पतझर का झुटपुटा झांक रहा है। बड़े कमरे में अंधेरा-सा है। सोफ़े पर अधलेटी-सी तत्याना एक पुस्तक पढ़ रही है। पोल्या मेज़ के पास बैठी हुई सिलाई कर रही है।)

तत्याना (पढ़ते हुए) : "चांद निकला। यह देखना बड़ा अजीब-सा लग रहा था कि इतना छोटा और ऐसा उदास-सा चांद धरती पर इतनी प्यारी, रुपहली और नीली-नीली चांदनी बरसा सकता है" ... **(पुस्तक को अपने घुटनों पर रख लेती है)** अंधेरा हो गया है।

पोल्या : लैम्प जला दूं ?

तत्याना : नहीं, रहने दो। थक गयी हूं पढ़ते-पढ़ते ...

पोल्या : कितना बढ़िया लिखा गया है! कितनी सादगी ... और कितनी उदासी है इसमें ... दिल की गहराइयों को छू लेता है ...

(ख़ामोशी)

मैं तो अन्त जानने के लिए मरी जा रही हूं। दोनों की शादी हो जायेगी या नहीं ?

तत्याना (खीभकर) : मुख्य बात यह नहीं है ...

पोल्या : मैं तो कभी ऐसे आदमी को प्यार न करती ... कभी न करती !

तत्याना : वह क्यों ?

पोल्या : बड़ी ऊब पैदा करता है ... जब देखो – शिकवा-शिकायत ! क्योंकि उसे अपने पर विश्वास नहीं ... मर्द को यह तो जानना चाहिए कि वह अपनी ज़िन्दगी में क्या करना चाहता है ...

तत्याना (धीरे से) : क्या ... क्या नील जानता है ?

पोल्या (विश्वास से) : हां, जानता है !

तत्याना : क्या चाहता है वह ?

पोल्या : मैं ... मैं आपको यह नहीं बता सकती ... उसके सीधे-सादे ढंग से तो नहीं ... लेकिन इतना ज़रूर जानती हूं कि वह बुरे लोगों – कमीनों और लालचियों के नाक में दम कर देगा ! वह उनसे बड़ी नफ़रत करता है ...

तत्याना : इसका फ़ैसला कैसे हो कि कौन बुरा है और कौन भला ?

पोल्या : उसे यह मालूम है ! ..

(तत्याना चुप रहती है, पोल्या की तरफ़ देखती भी नहीं। पोल्या मुस्कराकर उसके घुटनों से किताब उठा लेती है)

बहुत बढ़िया लिखा गया है सब कुछ ! और वह तो बहुत ही प्यारी है ... एकदम निष्कपट, सीधी-सादी और सहृदय ! किसी औरत की ऐसी प्यारी

तस्वीर सामने आने पर मुझे अपना आप भी भला लगने लगता है...

तत्याना : कैसी भोली हो तुम, पोल्या... तुम पर हंसी आती है! इस सारे क़िस्से से मुझे खीझ महसूस हो रही है! ऐसी कोई लड़की कभी नहीं थी! न कभी कोई ऐसी हवेली, कोई नदी और न ही कभी कोई ऐसा चांद था! यह सब मनगढ़न्त बातें हैं। ज़िन्दगी दर असल जैसी है—हर दिन की ज़िन्दगी, तुम्हारी और मेरी ज़िन्दगी—ये किताबें कभी उसकी सच्ची तस्वीर पेश नहीं करतीं...

पोल्या : लिखा तो दिलचस्प चीज़ों के बारे में ही जाता है। मगर हमारी ज़िन्दगी में भला क्या दिलचस्प है?

तत्याना (उसकी बात न सुनते हुए, झल्लाकर) : मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि वही लोग किताबें लिखते हैं जो मुझे फूटी आंखों नहीं देख सकते... वे तो मानो हमेशा मेरे साथ बहस करते रहते हैं... यह कहते प्रतीत होते हैं—जैसा तुम सोचती हो, उससे यह कहीं बेहतर, और यह बदतर है...

पोल्या : और मैं यह सोचती हूं कि सभी लेखक अवश्य दयालु होते हैं... काश मैं किसी लेखक को एक नज़र देख पाती!..

तत्याना (मानो अपने आप से बातें करते हुए) : भद्दी और बोझल बातों को वैसे पेश नहीं करते जैसे मेरी आंखें उन्हें देखती हैं, बल्कि एक ख़ास ढंग से, बढ़ा-चढ़ाकर, दुख के गहरे रंग में रंगकर। और अच्छी

बातों को वह अपने दिमाग़ से गढ़ लेते हैं। किताबी प्यार की तरह कभी किसी ने किसी को प्यार करते देखा है! और यह कि ज़िन्दगी दुख-दर्द से भरी पड़ी है – सो भी सच नहीं। ज़िन्दगी गदले पानी की एक बड़ी नदी की तरह धीरे-धीरे और एक ही चाल से बहती जाती है। और जब हम नदी को बहते हुए देखते रहते हैं, तो आंखें थक जाती हैं, ऊब महसूस होने लगती है... दिमाग़ ठस हो जाता है और यह तक सोचने को मन नहीं होता कि नदी किसलिए बह रही है?

पोल्या (विचारों में खोयी-सी और अपने सामने देखती हुई) : काश, मैं लेखक को देख पाती! आप पढ़ रही थीं और मैं रह-रहकर सोच रही थी – वह कैसा होगा? जवान? बूढ़ा? काले बालोंवाला?..

तत्याना : कौन?

पोल्या : इस किताब का लेखक ...

तत्याना : वह तो मर भी गया ...

पोल्या : ओह ... कितने अफ़सोस की बात है! क्या उसे मरे हुए बहुत अरसा हो गया? जवान था?

तत्याना : अधेड़ उम्र का था। उसे पीने की लत थी ...

पोल्या : हाय, बेचारा!..

(**ख़ामोशी**)

ा समझदार लोग भला पीते क्यों हैं? उसे ही ले लीजिये... आपके यहां रहनेवाले को... वही, जो गिरजे

में गाता है... समझदार आदमी है, मगर पीता है... भला क्यों?

तत्याना : इसलिए कि ज़िन्दगी ऊबभरी है...

प्योत्र (उनींदा-सा अपने कमरे से बाहर आता है) : कैसा घुप अंधेरा है। वहां, उधर, कौन बैठा है?

पोल्या : मैं... और तत्याना वसील्येव्ना...

प्योत्र : तुम लोग लैम्प क्यों नहीं जला लेतीं?

पोल्या : झुटपुटे का मज़ा ले रही हैं...

प्योत्र : बुज़ुर्गों के कमरे से मेरे कमरे में तेल की गंध आती रहती है... शायद इसीलिए आज सपने में मैंने अपने को किसी ऐसी नदी में तैरते देखा—जिसका पानी तेल की तरह चिपचिपा था... तैरना बहुत मुश्किल था और मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था कि किधर तैरूं... किनारा कहीं नज़र नहीं आ रहा था। लकड़ी के टुकड़े मेरे पास से गुज़रते। लेकिन जैसे ही मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें पकड़ता, वे... वे चूर-चूर होकर बिखर जाते... गले-सड़े जो थे... कैसा बेतुका सपना था... **(सीटी बजाता हुआ इधर-उधर घूमता है)** चाय का वक़्त हो गया है न?..

पोल्या (लैम्प जलाते हुए) : मैं अभी जाकर तैयार करनें को कहती हूं... **(बाहर चली जाती है)**

प्योत्र : न जाने क्यों, शामों को तो हमारा यह घर बहुत ही तंग और उदास-उदास हो जाता है... बाबा आदम के वक़्त का यह काठ-कबाड़, ये सभी चीज़ें... कुछ इस तरह फूलकर बड़ी और भारी-भरकम हो जाती हैं... फैलकर हवा को कुछ ऐसे दबा देती हैं कि

राम लेना मुश्किल हो जाता है। (**अलमारी को घूंसा मारता है**) इसे देखो ... इस दरियाई घोड़े को ... अठारह बरस से यहीं खड़ा है ... अठारह बरस से ... कहते हैं कि ज़िन्दगी बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही है ... मगर यह अलमारी तो पिछले अठारह सालों में टस से मस नहीं हुई ... छुटपन में न जाने कितनी बार इससे मेरा सिर फूटा था ... और अब भी यह मेरे रास्ते में आती रहती है। कमबख़्त कहीं की! अलमारी नहीं, यह तो मानो कोई प्रतीक है ... जहन्नुम में चली जाये यह!

तत्याना : कैसी उबानेवाली बातें किया करते हो तुम, प्योत्र ... तुम्हारा जीने का यह ढंग अच्छा नहीं है ...

प्योत्र : क्या मतलब?

तत्याना : तुम कहीं आते-जाते नहीं ... बस, ऊपर येलेना के यहां ... हर शाम बिताते हो। हमारे बुज़ुर्गों को इससे बड़ी परेशानी होती है ...

(प्योत्र कोई जवाब न देकर कमरे में टहलता और सीटी बजाता रहता है)

तुम नहीं जानते कि पिछले कुछ समय से मैं कितनी अधिक थकावट महसूस करने लगी हूं ... स्कूल में मैं शोर-शराबे और हल्ले-गुल्ले से थक जाती हूं ... और घर पर शान्ति तथा व्यवस्था से। हां, यह सही है कि जब से येलेना यहां आयी है, ज़िन्दगी में कुछ रंगीनी आ गयी है। हां, मैं बहुत जल्दी थक जाती

हूं, प्योत्र! और जाड़े की छुट्टियां अभी बहुत दूर हैं नवम्बर... दिसम्बर...

(घड़ी छः बजाती है)

बेस्सेमेनोव (अपने कमरे के दरवाज़े में से झांकते हुए) : फिर सीटी बजायी जा रही है! तुमने वह अर्ज़ी तो अभी तक नहीं लिखी होगी?

प्योत्र : लिख ली है, लिख ली है...

बेस्सेमेनोव : आख़िर तो इतनी मेहरबानी कर दी... च-च-च! **(ग़ायब हो जाता है)**

तत्याना : कैसी अर्ज़ी?

प्योत्र : व्यापारी सिज़ोव पर सत्रह रूबल पचास कोपेक की नालिश करने की अर्ज़ी। उसने अपने सायबान की छत रंगवायी थी...

अकुलीना इवानोव्ना (लैम्प लिये हुए आती है) : फिर बूंदाबांदी होने लगी है। **(अलमारी से चाय के बर्तन निकालकर मेज़ पर लगाती है)** यहां भीतर भी ठंड है। तन्दूर भी गर्माया – मगर ठंड को क्या परवाह इसकी। मकान बहुत पुराना हो गया है... दरारों से हवा आती रहती है... ओह, कैसी ठंड है! बच्चो, तुम्हारे पिता तो आज फिर चिढ़े हुए हैं... कहते हैं, कमर में दर्द हो रहा है। तेज़ी से बुढ़ाते जा रहे हैं... और ऊपर से हर काम में असफलता, ऐसा बेढंगापन ... बेहिसाब ख़र्च... चिन्ताएं।

तत्याना (भाई से) : तुम कल येलेना के यहां गये थे?

प्योत्र : हां ...

तत्याना : ख़ूब मज़ा रहा ?

प्योत्र : हर रोज़ जैसा ... चाय पी, गाने गाये ... बहस करते रहे ...

तत्याना : कौन किससे ?

प्योत्र : मैं – नील और शीश्किन से।

तत्याना : हमेशा की तरह ...

प्योत्र : हां। नील ने बड़े जोश से ज़िन्दगी के अच्छे अन्दाज़ का राग अलापा ... बहुत ही खीझ आती है मुझे उससे ... बड़ा आया ज़िन्दगी में ख़ुशी और प्यार का ठेकेदार ... सिर फिर गया है उसका ! उसकी बातें सुनकर तो ऐसे लगता है मानो हमारी वह अनजानी ज़िन्दगी कुछ ऐसी है जिसमें अभी कोई चाचा साम आकर हम पर अपनी रहमत के फूल बरसाने लगेगा ... शीश्किन ने दूध के लाभों और तम्बाकू की हानियों पर एक लम्बा भाषण झाड़ा ... उसने मुझ पर बूर्जुवा विचार रखने का आरोप लगाया।

तत्याना : वही पुरानी बातें ...

प्योत्र : हां ...

तत्याना : क्या तुम्हें ... येलेना बहुत अच्छी लगती है?

प्योत्र : कुछ बुरी नहीं है ... ख़ूबसूरत है ... ख़ुशमिजाज है ...

अकुलीना इवानोव्ना : बहुत चंचल है ! बिल्कुल बेकार ज़िन्दगी है उसकी ! हर शाम को मेहमान, चाय और मिठाइयां ... नाच और गाना-बजाना ... वाशबेसिन भी नहीं ख़रीद सकती ! चिलमची में

हाथ-मुंह धोती है, पानी फ़र्श पर गिरा देती है... इससे तख़्ते तो गलते हैं...

तत्याना : पिछली रात मैं क्लब के एक जलसे में गयी थी। वहां सोमोव भी था — हमारे स्कूल का संरक्षक और नगर-परिषद का सदस्य। मेरा अभिवादन करते हुए उसने ज़रा अपना सिर हिलाया... और बस। मगर जब जज रोमानोव की रखैल वहां आयी तो उस वक़्त उसकी दौड़-धूप देखनेवाली थी। भागा हुआ उसकी तरफ़ गया, ऐसे झुककर अभिवादन किया मानो लाट साहब की बीवी हो और हाथ चूमा...

अकुलीना इवानोव्ना : कैसा बेहया है न? चाहिए तो यह था कि वह इस भली लड़की का हाथ थामकर बड़ी शान से सभी के सामने हाल में जाता...

तत्याना (अपने भाई से) : मैं कहती हूं, तुम ज़रा ग़ौर करो! इन लोगों की नज़रों में एक अध्यापिका किसी रंगी-पुती और बदचलन औरत के मुक़ाबले में कम इज़्ज़त की हक़दार है...

प्योत्र : चलो हटाओ, ऐसी घटिया बातों की तरफ़ ध्यान देने में कोई तुक नहीं... तुम्हें अपने को इनसे ऊपर रखना चाहिए... वह बदचलन तो है, मगर चेहरा नहीं रंगती...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम भला यह कैसे जानते हो? क्या तुमने उसके गाल चाटकर देखे हैं? बहन का अपमान हुआ और तुम उसकी हिमायत करते हो जिसके कारण ऐसा हुआ...

प्योत्र : अम्मां, रहने भी दें...

तत्याना : अम्मां के सामने तो कोई बात ही नहीं की जा सकती ...

(दरवाज़े के पीछे, ड्योढ़ी में भारी क़दमों की आवाज़ सुनाई देती है)

अकुलीना इवानोव्ना : बस, बस! अपनी चपर-चपर बन्द करो। प्योत्र, तुम शान से इधर-उधर टहलने के बजाय अगर जाकर ज़रा समोवार भीतर उठा लाओ तो अच्छा रहे ... स्तेपानीदा हर रोज़ शिकायत करती है कि समोवार बहुत भारी है ...

स्तेपानीदा (समोवार भीतर लाकर मेज़ के पास फ़र्श पर रखती है, कमर सीधी करती है और हांफती हुई मालकिन से कहती है) : बुरा मानें या भला, एक बार फिर आपसे कहे देती हूं, इस शैतान को उठाकर लाना मेरे बस का रोग नहीं, टांगें कांपने लगती हैं ...

अकुलीना इवानोव्ना : तो क्या चाहती हो कि इस काम के लिए एक ख़ास नौकर रखा जाये ?

स्तेपानीदा : यह आप जानें! वह गवैया ही यह कर सकता है – उसका क्या बिगड़ जायेगा ? प्योत्र वसील्येविच, समोवार ज़रा मेज़ पर रख दें, सच, मुझसे रखा नहीं जायेगा !

प्योत्र : लाओ ... यह लो !

स्तेपानीदा : मेहरबानी। **(बाहर जाती है)**

अकुलीना इवानोव्ना : बात तो ठीक है। प्योत्र, तुम ज़रा गवैये से कह देना कि वह समोवार भीतर

ले आया करे! अच्छा ख़्याल है...

तत्याना (उसांस छोड़कर) : हे भगवान...

प्योत्र : समोवार के लिए ही क्यों, शायद पानी लाने, फ़र्श रगड़ने, चिमनियां साफ़ करने और शायद कपड़े धोने के लिए भी उसे कह देना चाहिए?

अकुलीना इवानोव्ना (खीझकर हाथ झटकते हुए) : क्यों बेकार की बातें कर रहे हो? ये सब काम उसकी मदद के बिना ही ढंग से हो जाते हैं... मगर समोवार उठाकर लाना...

प्योत्र : अम्मां! हर शाम आप यही टेढ़ा सवाल सामने लाती हैं कि समोवार उठाकर कौन लायेगा। यक़ीन मानिये जब तक आप छुटपुट काम करनेवाला कोई नौकर नहीं रखेंगी यह सिरदर्दी बनी रहेगी...

अकुलीना इवानोव्ना : हम क्या अचार डालेंगे ऐसे नौकर का? इस तरह के काम तो ख़ुद तुम्हारे पिता करते हैं...

प्योत्र : इसी को तो मैं कंजूस-मक्खीचूस होना कहता हूं। बैंक में इतना रुपया जमा होने पर दांत से कौड़ी-कौड़ी पकड़ना...

अकुलीना इवानोव्ना : शी-शी! अपनी ज़बान को लगाम दो! अगर तुम्हारे पिता ने सुन लिया तो मज़ा चखा देंगे तुम्हें बैंक के रुपये का! तुमने जमा किया है बैंक में रुपया?

प्योत्र : उफ़!

तत्याना (सोफ़े से उछलकर खड़ी होते हुए) : ओह प्योत्र, तुम ही चुप हो जाओ... कितना मुश्किल

है यह बर्दाश्त करना ...

प्योत्र (उसके पास जाकर) : अच्छा, तुम नहीं चिल्लाओ! पता भी नहीं चलता और आदमी ऐसी चख़-चख़ के फेर में पड़ जाता है ...

अकुलीना इवानोव्ना : अहा, फिर से रोना-धोना शुरू हो गया! मां के लिए एक शब्द कहना भी गुनाह है ...

प्योत्र : हर दिन यही गाना!.. सुन-सुनकर कान पक गये। आत्मा पर जैसे कालिख जमती जाती है, उसे ज़ंग लगता जाता है ...

अकुलीना इवानोव्ना (अपने कमरे के दरवाज़े की तरफ़ पुकारते हुए) : प्योत्र के पिता! आकर चाय पी लो ...

प्योत्र : यूनिवर्सिटी में लौटने का वक़्त आने पर मैं फिर से मास्को चला जाऊंगा। पहले की तरह सिर्फ़ हफ़्ते भर के लिए यहां आया करूंगा। यूनिवर्सिटी की ज़िन्दगी के तीन सालों में मैं घर, हर दिन की यहां की चख़-चख़ और कौड़ी-कौड़ी की बक-झक के बारे में बिल्कुल भूल गया था ... मां-बाप की छत्रछाया से दूर, अकेले रहने में बहुत मज़ा है ...

तत्याना : लेकिन मैं बदक़िस्मत कहीं नहीं जा सकती ...

प्योत्र : मैं तो तुमसे कहता हूं कि जाकर पढ़ाई करो ...

तत्याना : ओह, क्या करूंगी मैं और पढ़कर? मैं पढ़ना नहीं, जीना चाहती हूं, जीना ... समझते क्यों नहीं?

अकुलीना इवानोव्ना (समोवार से चायदानी हटाते हुए हाथ जला लेती है) : उफ़! तेरा बेड़ा ग़र्क़ हो!

तत्याना (प्योत्र से) : और ठीक से यह कल्पना भी नहीं कर सकती कि जीना किसे कहते हैं? **मैं** जीना भी चाहूं तो कैसे जिऊं?

प्योत्र (सोच में डूबते हुए) : हां, जीना भी ढंग से चाहिए ... सोच-समझकर ...

बेस्सेमेनोव (अपने कमरे से बाहर आता है। बेटे-बेटी पर नज़र डालकर मेज़ के पास बैठ जाता है) : सबको बुला लिया?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र, सबको बुला लो ...

(प्योत्र बाहर जाता है। तत्याना मेज़ के पास जाती है)

बेस्सेमेनोव : हुंह! फिर वही टिकियोंवाली चीनी ख़रीदी है? कितनी बार मैं यह कह चुका हूं ...

तत्याना : पिता जी, इससे भला फ़र्क़ ही क्या पड़ता है?

बेस्सेमेनोव : मैं तुमसे नहीं, तुम्हारी मां से बात कर रहा हूं। तुम्हें किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, यह मैं जानता हूं ...

अकुलीना इवानोव्ना : मैंने यह तो सिर्फ़ आध सेर ही ख़रीदी थी। चीनी का डला पड़ा हुआ है ... हमें उसे तोड़ने का वक़्त ही नहीं मिला ... बिगड़ो नहीं!

बेस्सेमेनोव : मैं बिगड़ नहीं रहा हूं ... सिर्फ़ यह कह रहा हूं कि टिकियोंवाली चीनी बहुत भारी होती है और उसमें मिठास भी कम होती है, मतलब यह

कि वह ज़्यादा ख़र्च होती है। तुम्हें हमेशा बड़े डलों की चीनी ख़रीदकर... उसे ख़ुद तोड़ना चाहिए। ऐसा करने से चूरा बच जाता है जो रसोई में काम आ सकता है। फिर यह चीनी हल्की और मीठी भी ज़्यादा होती है... (**तत्याना से**) तुम क्यों आहें भर रही हो, रोनी सूरत क्यों बनाये हो?

तत्याना: नहीं, नहीं... ऐसी तो कोई बात नहीं...

बेस्सेमेनोव: अगर बात नहीं तो आहें भी नहीं भरो। तुम्हें क्या अपने पिता की बातें कड़वी लगती हैं? अपने लिए नहीं, तुम नौजवानों के भले के लिए ही हम यह सब कहते हैं। हम तो अपनी ज़िन्दगी गुज़ार चुके, अब जीना तो तुम लोगों को है। जब तुम लोगों की तरफ़ देखते हैं, तो समझ नहीं पाते कि इस दुनिया में आख़िर तुम्हारी गुज़र कैसे होगी? क्या इरादे है तुम लोगों के? हमारी ज़िन्दगी का रंग-ढंग, हमारा मार्ग तुम्हें पसन्द नहीं, यह हम देख रहे हैं, महसूस करते हैं... मगर अपने लिए तुम लोगों ने कौनसा नया रास्ता खोज निकाला है? यही तो सवाल है। हां – यही...

तत्याना: पिता जी! ज़रा याद कीजिये, कितनी बार आप पहले भी यही बात मुझसे कह चुके हैं?

बेस्सेमेनोव: मगर मैं यही बात एक बार नहीं, बार-बार कहूंगा! क़ब्र में जाने तक कहता रहूंगा! क्योंकि मेरे मन को चैन नहीं। तुम दोनों ही मेरी इस बेचैनी की जड़ हो। अच्छी तरह सोचे-समझे बिना तुम दोनों को पढ़ा-लिखाकर मैंने बड़ी भूल की है...

प्योत्र को यूनिवर्सिटी से निकाल दिया गया है और तुम इतनी उम्र होने पर भी कुंवारी बैठी हो...

तत्याना: मैं नौकरी कर रही हूं... मैं...

बेस्सेमेनोव: यह मैं सुन चुका हूं। मगर किसे ज़रूरत है तुम्हारी इस नौकरी की? किसी को नहीं चाहिए तुम्हारे पचीस रूबल, ख़ुद तुम्हें भी। शादी करो, ढंग से घर बसाकर रहो–मैं ख़ुद दूंगा तुम्हें पचास रूबल हर महीने...

अकुलीना इवानोव्ना (बूढ़े की बातचीत के दौरान घबराकर कुर्सी पर दायें-बायें होती रहती है, कई बार कुछ कहने की कोशिश करती है, मगर कह नहीं पाती। आख़िर सस्नेह पूछती है): प्योत्र के पिता! क्या थोड़ा पनीर-केक खाना पसन्द करोगे? दोपहर के खाने के समय कुछ बचा रह गया है...

बेस्सेमेनोव (उसकी ओर मुड़कर पहले उसे ग़ुस्से से घूरता है, फिर मुस्कराकर कहता है): ले आओ, ले आओ पनीर-केक... ओहो!..

(अकुलीना इवानोव्ना अलमारी की तरफ़ बढ़ती है। बेस्सेमेनोव तत्याना से कहता है)

देखा तुमने! मां तो कुत्तों से अपने बच्चों की रक्षा करनेवाली बत्तख़ की तरह मुझसे तुम लोगों को बचाती रहती है... डरती रहती है कि कहीं मैं कोई कड़ुवा शब्द कहकर तुम लोगों का दिल न दुखा दूं... अरे चिड़ीमार! आ धमके इतने दिनों बाद!

पेर्चीख़िन (दरवाज़े में दिखाई देता है। पोल्या

चुपचाप उसके पीछे-पीछे अन्दर आती है) : इस घर का भला हो, घर के बूढ़े मालिक का भला हो, उसकी सुन्दर बीवी का भला हो, उनके अच्छे बच्चों का भला हो! उन पर सदा भगवान की कृपादृष्टि बनी रहे!

बेस्सेमेनोव : तो तुम आज फिर पी आये हो?

पेर्चीख़िन : ग़म ग़लत करने के लिए!

बेस्सेमेनोव : किस बात का ग़म?

पेर्चीख़िन (सभी का अभिवादन करते हुए अपनी बात कहता है) : मैना को बेचने का ग़म... क्या सुरीला गाती थी! तीन साल तक अपने पास रखा, मगर आज जाकर बेच आया! अपनी इसी कमीनी हरकत से दुखी होकर अपने को जाम में डुबा दिया। उसके जाने का बड़ा अफ़सोस है... उसका आदी हो गया था... उसे प्यार करता था...

(पोल्या मुस्कराती हुई सिर हिलाकर उसकी बात का समर्थन करती है)

बेस्सेमेनोव : अगर ऐसी बात थी तो उसे बेचा क्यों?

पेर्चीख़िन (कुर्सियों का सहारा लेकर मेज़ के गिर्द घूमते हुए) : अच्छे दाम मिल गये थे, इसलिए...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम्हारे लिए तो पैसा हाथ का मैल ही है न? योंही इधर-उधर उड़ा देते हो...

पेर्चीख़िन (बैठते हुए) : हां, यह सच है, मेरे हाथ में पैसा टिकता नहीं... यह सच है!

बेस्सेमेनोव : तब उसे बेचने की क्या ज़रूरत थी?..

पेर्चीख़िन : बेचने की ज़रूरत थी। वह अन्धी होने लगी थी... जल्द ही मर जाती...

बेस्सेमेनोव (व्यंग्य से मुस्कराकर) : तब तो तुम पूरी तरह से बुद्धू नहीं हो...

पेर्चीख़िन : क्या मैंने अक्ल से काम लेते हुए ऐसा किया है? अजी नहीं, यह तो मेरे स्वभाव की नीचता है...

(प्योत्र और तेतेरेव प्रवेश करते हैं)

तत्याना : नील कहां है?

प्योत्र : शीश्किन के साथ रिहर्सल के लिए गया है।

बेस्सेमेनोव : नाटक कहां खेला जायेगा?

प्योत्र : घुड़दौड़ के मैदान में। फ़ौजियों के सामने।

पेर्चीख़िन (तेतेरेव से) : भगवान के भोंपू – तुम्हें मेरा नमस्कार! कहो, चिड़ियां पकड़ने चलोगे?

तेतेरेव : चला जा सकता है। बोलो, कब?

पेर्चीख़िन : चाहो, तो कल ही।

तेतेरेव : नहीं, कल नहीं हो सकता। कल मुझे एक मातमी जुलूस में भजन गाने के लिए जाना है...

पेर्चीख़िन : तो दोपहर की प्रार्थना के पहले चलो?

तेतेरेव : हां, यह ठीक है। मुझे बुला लेना। अकुलीना इवानोव्ना! दोपहर के खाने में से कुछ बचा या नहीं? यही, कोई दलिया-वलिया या इसी क़िस्म की कोई दूसरी चीज़?..

अकुलीना इवानोव्ना : हां, भैया, कुछ बच तो गया

था। पोल्या, ज़रा ले आओ!..

(पोल्या जाती है)

तेतेरेव : बहुत, बहुत धन्यवाद। जैसा कि आपको मालूम है, पहले एक जनाज़े और फिर शादी की वजह से मेरा दोपहर का खाना गोल हो गया...

अकुलीना इवानोव्ना : मुझे मालूम है, मालूम है...

(प्योत्र चाय का गिलास उठाकर मेहराब के पीछे वाले छोटे-से कमरे में जाता है। पिता की पैनी और तेतेरेव की शत्रुतापूर्ण दृष्टि उसका पीछा करती है। थोड़ी देर तक चुप्पी रहती है। सब खाते-पीते रहते हैं)

बेस्सेमेनोव : इस महीने तो तुम्हारी ख़ूब चांदी है, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच! हर रोज़ कोई न कोई चल बसता है।

तेतेरेव : हां, क़िस्मत ख़ूब साथ दे रही है... कुछ बुरा नहीं।

बेस्सेमेनोव : और शादियों का धूम-धड़ाका भी ज़ोरों पर है...

तेतेरेव : हां, धड़ाधड़ शादियां हो रही हैं...

बेस्सेमेनोव : कुछ पैसे बचाकर तुम भी एक से दो हो जाओ।

तेतेरेव : मन नहीं चाहता...

(तत्याना अपने भाई के पास चली जाती है। दोनों धीमे-धीमे बातचीत करते हैं)

पेर्चीख़िन : बिल्कुल ठीक ! यह ग़लती मत करना। शादी हमारे जैसों के बस की बात नहीं है। चिड़ियां पकड़ना कहीं ज़्यादा अच्छा होगा...

तेतेरेव : सोलह आने सही ...

पेर्चीख़िन : भई वाह ! क्या बढ़िया काम है चिड़ियां पकड़ना ! जैसे ही पहली बर्फ़ गिरती है, धरती चम-चम कर उठती है – ईस्टर में सजने-धजनेवाले पादरी की तरह !.. हर चीज़ निखर आती है, चमक उठती है, सब तरफ़ प्यारी नीरवता छा जाती है... और फिर अगर धूप निकल आये, तब तो क्या कहने ? मन नाच उठता है ख़ुशी से दीवाना होकर ! वृक्षों पर पतझर के सुनहरे पत्तों का सोना अभी तक चमकता होता है और बर्फ़ से ढकी टहनियों पर चांदी दमकती है... और ऐसी सुन्दर दुनिया में तभी एक आवाज़ सुनाई पड़ती है – फर-फर ! फर-फर ! धुले हुए आकाश के किसी कोने से लाल चिड़ियों का एक झुण्ड उड़ता हुआ सामने आता है और वे बैठ जाती हैं डालों पर और लगती हैं पोस्त के फूलों जैसी ! चूं-चूं ! चूं-चूं ! प्यारी-प्यारी, मोटी-मोटी चिड़ियां जनरलों की तरह बड़ी शान से इधर-उधर फुदकती हैं, चहकती हैं, क्या अनुपम दृश्य होता है ! मन करता है कि हम भी चिड़ियां बन जायें, उनके साथ बर्फ़ पर फुदकें। अहा !.. सचमुच !

बेस्सेमेनोव : ये लाल चिड़ियां बड़ी बुद्धू होती हैं।

पेर्चीख़िन : मैं ख़ुद भी बुद्धू हूं...

तेतेरेव : वाह, तुमने ख़ूब बढ़िया तस्वीर खींची है...

अकुलीना इवानोव्ना (पेर्चीख़िन से) : तुम्हारा मन तो बच्चे जैसा है ...

पेर्चीख़िन : चिड़ियां पकड़ना मुझे बहुत अच्छा लगता है! गानेवाली चिड़िया से बढ़कर भी दुनिया में कोई प्यारी चीज़ हो सकती है?

बेस्सेमेनोव : मगर क्या यह नहीं जानते कि चिड़ियां पकड़ना पाप है?

पेर्चीख़िन : जानता हूं। लेकिन अगर मैं इस काम को प्यार करता हूं, तो? फिर इस काम के अलावा मैं और कुछ करना भी नहीं जानता। मेरे ख़्याल में प्यार से करने पर हर काम अच्छा हो जाता है ...

बेस्सेमेनोव : तुम्हारा मतलब है – हर काम?

पेर्चीख़िन : हां, हर काम!

बेस्सेमेनोव : अगर किसी को परायी चीज़ें उठाकर जेब में रखना पसन्द हो, तो?

पेर्चीख़िन : यह तो काम नहीं, चोरी करना होगा।

बेस्सेमेनोव : हुंह ... शायद ऐसा ही हो ...

अकुलीना इवानोव्ना (जम्हाई लेते हुए) : ओ-हो-हो! बड़ी ऊब महसूस हो रही है ... शामें हमेशा ही बड़ी ऊबभरी होती हैं ... तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच, ज़रा अपनी गिटार ही उठा लाओ। कुछ गाना-बजाना ही हो जाये ...

तेतेरेव (शान्ति से) : आदरणीया अकुलीना इवानोव्ना, आपके यहां रहने की बात तय करते वक़्त मैंने आपका मन बहलाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ली थी ...

अकुलीना इवानोव्ना (बात न समझते हुए) : क्या कहा तुमने ?

तेतेरेव : जो भी कहा, कहा ज़ोर से और साफ़-साफ़।

बेस्सेमेनोव (हैरान होकर, खीझ से) : तेरेन्ती, मैं तुम्हें देखता हूं और हैरान होता हूं। बुरा न मानना, तुम हो तो दो टके के आदमी ... न किसी काम के, न काज के, मगर शान दिखाते हो रईसों जैसी। कहां से आयी है तुममें यह अकड़ ?

तेतेरेव (शान्ति से) : मैं तो इसे लेकर ही पैदा हुआ था ...

बेस्सेमेनोव : तुममें यह घमंड है किस बात का, बताओ तो ?

अकुलीना इवानोव्ना : योंही अपना दिखावा कर रहा है। ऐसे आदमी के पास घमंड करने को रखा ही क्या है ?

तत्याना : मां !

अकुलीना इवानोव्ना (चौंककर) : हां ! क्या है ?

(तत्याना तिरस्कार से सिर हिला देती है)

मैंने फिर कोई ऐसी बात कह दी जो मुझे न कहनी चाहिए थी ?.. अच्छा, अब ख़ामोश रहूंगी ... तुम जानो तुम्हारा काम !

बेस्सेमेनोव (बुरा मानते हुए) : तत्याना की मां, तुम मुंह से निकालने के पहले हर शब्द को तोल लिया करो। हम पढ़े-लिखे लोगों के बीच रहते हैं। ये अपनी

पढ़ाई और ऊंची अक़्ल से हर चीज़ में मीन-मेख निकाल सकते हैं। हम तो ठहरे बूढ़े-खूसट और बेवक़ूफ़...

अकुलीना इवानोव्ना (शान्त करते हुए): यह तो ठीक ही है!.. ये लोग तो बेशक... बहुत कुछ जानते हैं।

पेर्चीख़िन: भैया, सोलह आने सही कहा है तुमने। तुमने तो मज़ाक़ में कहा, मगर है यह सच...

बेस्सेमेनोव: मैंने यह मज़ाक़ में नहीं कहा...

पेर्चीख़िन: ज़रा रुको! मगर बूढ़े सचमुच बेवक़ूफ़ होते हैं...

बेस्सेमेनोव: ख़ासकर तुम्हें देखकर तो ऐसा ही लगता है।

पेर्चीख़िन: मैं किस गिनती में हूं! मैं तो यह तक मानता हूं कि अगर बूढ़े न होते तो बेवक़ूफ़ी का नाम-निशान ही मिट जाता... बूढ़े का सोचना और गीली लकड़ी का जलना दोनों बराबर हैं – लपट कम, धुआं ज़्यादा...

तेतेरेव (मुस्कराते हुए): बिल्कुल ठीक...

(पोल्या पिता की ओर स्नेहपूर्वक देखकर उसका कंधा थपथपाती है)

बेस्सेमेनोव (झल्लाकर): हुंह! तो अपनी बकवास जारी रखो...

(प्योत्र और तत्याना बातचीत बन्द कर देते हैं और मुस्कराते हुए पेर्चीख़िन को देखते हैं)

पेर्चीख़िन (उत्साहित होकर) : मुसीबत यह है कि बूढ़े बहुत ज़िद्दी होते हैं! वे जानते हैं कि ग़लती कर रहे हैं, ये महसूस करते हैं कि उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा, मगर मानेंगे कभी नहीं। घमंड जो होता है! वे सोचते हैं – "हमने इतनी लम्बी ज़िन्दगी देखी है, धूप में बाल सफ़ेद नहीं किये – चालीस तो पतलून फाड़े हैं पहनकर, और अब हमारे दिमाग़ों को ज़ंग लग गया! यह कैसे हो सकता है?" यह मानते हुए उनके दिल को ठेस लगती है। इसलिए वे अपनी ही रट लगाये जाते हैं – "हम बूढ़े हैं, हमने ज़िन्दगी देखी है, हमारी बात ही सही है।" मगर इससे हासिल क्या होता है? उनके दिमाग़ सठिया चुके हैं ... लेकिन जवानों की अक़्ल होती है तेज़ और ताज़गी लिये हुए ...

बेस्सेमेनोव (कड़ाई से) : ख़ैर, तुमने बहुत बकवास कर ली ... तुम मुझे यह बताओ – अगर हम बेवक़ूफ़ हैं, तो हमें अक़्ल सिखानी चाहिए न?

पेर्चीख़िन : इसमें क्या तुक है? चट्टान पर गोलियां चलाना तो उन्हें बरबाद करना है ...

बेस्सेमेनोव : अच्छा, तो सुनो, बीच में मत टोकना! उम्र में मैं तुमसे बड़ा हूं। तुम जिन्हें तेज़ और ताज़ा दिमाग़वाले मानते हो, वे हम बूढ़ों से कन्नी क्यों काटते हैं, कोनों में छिप-छिपकर मुंह क्यों बनाते हैं? हमसे बात करते हुए कतराते क्यों हैं? मेरे इस सवाल पर ग़ौर करो ... मैं भी अलग जाकर इस पर सोचूंगा ... क्योंकि इतना बेवक़ूफ़ हूं कि आप लोगों के साथ बैठने

लायक़ नहीं हूं ... (**ज़ोर से कुर्सी पीछे हटाता है। कमरे से जाते हुए दरवाज़े में रुककर कहता है**) मेरी पढ़ी-लिखी औलाद ...

(**ख़ामोशी**)

पेर्चीख़िन (**प्योत्र और तत्याना से**) : अरे बच्चो ! क्यों बूढ़े का दिल दुखाया करते हो ?

पोल्या (**मुस्कराते हुए**) : यह तो तुमने दुखाया है उसका दिल ...

पेर्चीख़िन : मैंने ? पूरी ज़िन्दगी में एक बार भी कभी किसी का दिल नहीं दुखाया ...

अकुलीना इवानोव्ना : हे भगवान ! जाने हम सब को हो क्या गया है ?.. किसलिए बूढ़े का दिल दुखाया है ? तुम लोग हर वक़्त मुंह फुलाये रहते हो , बड़बड़ाया करते हो ... मगर वह बूढ़ा आदमी है। उसे चाहिए चैन ... तुम्हें उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए ... आख़िर वह तुम्हारा बाप है ... मैं जाती हूं उसके पास। पोल्या , तुम चाय के बरतन धो डालो ...

तत्याना (**मेज़ के पास जाकर**) : मैं पूछती हूं कि पिता जी हमसे नाराज़ किसलिए हुए हैं ?

अकुलीना इवानोव्ना (**दरवाज़े में रुककर**) : तुम और ज़्यादा अपने बाप से दूर भागा करो ... चतुर लड़की !

(**जब पोल्या बरतन धोती है तो तेतेरेव अपनी कुहनियां मेज़ पर टिकाकर उसे उदास नज़रों से देखता है। पेर्चीख़िन प्योत्र के पास जाकर मेज़ के निकट बैठ**

जाता है। तत्याना धीरे से अपने कमरे में जाती है)

पोल्या (तेतेरेव से) : आप मुझे इस तरह... ऐसे क्यों घूर रहे हैं ?

तेतेरेव : योंही...

पेर्चीख़िन : क्या सोच रहे हो, प्योत्र ?

प्योत्र : यहां से कहां चला जाऊं...

पेर्चीख़िन : बहुत दिनों से मैं तुमसे यह पूछना चाहता था कि "ज़मीनदोज़ नाले-नालियों" का क्या मतलब है ?

प्योत्र : तुम्हें इससे क्या लेना-देना है ? तुम्हें इस तरह बताने के लिए कि तुम्हारी समझ में आ जाये, बहुत वक़्त लगेगा... और यह बड़ा ऊब का काम है...

पेर्चीख़िन : तुम ख़ुद तो यह जानते हो ?

प्योत्र : हां, जानता हूं...

पेर्चीख़िन (सन्देह से उसके चेहरे को देखते हुए) : हुंह...

पोल्या : न जाने नील आज अभी तक क्यों नहीं आया...

तेतेरेव : आपकी आंखें कितनी प्यारी हैं !

पोल्या : यह तो आपने कल भी कहा था।

तेतेरेव : मैं कल फिर यही कहूंगा...

पोल्या : वह किसलिए ?

तेतेरेव : यह मैं नहीं जानता... शायद आप सोचती हैं कि मैं आपसे प्रेम करने लगा हूं ?

पोल्या : हे भगवान ! मैं ऐसा कुछ नहीं सोचती हूं।

तेतेरेव : कुछ नहीं सोचतीं? अफ़सोस की बात है! आप ज़रा सोचिये ...

पोल्या : किस बारे में?

तेतेरेव : चाहे इसी बारे में कि आख़िर क्यों मैं आपके पीछे पड़ा रहता हूं। इस बात पर सोचकर मुझे जवाब दीजिये ...

पोल्या : कैसे अजीब आदमी हैं आप!

तेतेरेव : यह मैं जानता हूं ... आप पहले भी यह कह चुकी हैं। मैं भी दोहराता हूं – आप यहां से चली जायें! आपके लिए इस घर में रहना अच्छा नहीं ... चली जाइये!

प्योत्र : क्या प्रेम-प्रदर्शन हो रहा है? शायद मुझे यहां से चलते-फिरते नज़र आना चाहिए?

तेतेरेव : परेशान होने की ज़रूरत नहीं! मैं बेजान चीज़ों में आपकी गिनती करता हूं ...

प्योत्र : बात कुछ बनी नहीं ...

पोल्या (तेतेरेव से) : कैसे मुंहफट हैं आप!

(तेतेरेव वहां से हट जाता है। वह ध्यान से प्योत्र और पेर्चीख़िन की बातें सुनता है)

तत्याना (अपने कमरे से बाहर आती है। वह शॉल लपेटे हुए है, पियानो की कुर्सी पर बैठकर स्वर-लिपियों को उलटती-पलटती है) : नील अभी तक नहीं आया?

पोल्या : नहीं ...

पेर्चीख़िन : बड़ी उदासी है ... हां प्योत्र, मैं तुमसे

एक और बात पूछना चाहता था। कुछ दिन पहले मैंने अखबार में पढ़ा था कि अंग्रेज़ों ने एक उड़नेवाला जहाज़ बनाया है। बिल्कुल जहाज़ जैसा। मगर उसमें बैठकर कोई बटन दबा दिया जाये तो फुर से वह पंछी की भांति आकाश में जा पहुंचता है – बादलों के पास और जाने आदमी को कहां पहुंचा देता है ... कहते हैं, कि बहुत-से अंग्रेज़ इसी तरह से ग़ायब हो गये हैं। क्या यह सच है, प्योत्र ?

प्योत्र : सब बकवास है !

पेर्चीख़िन : मगर यह तो अख़बार में था ...

प्योत्र : अख़बारों में ऐसी बहुत-सी बकवास छपती रहती हैं।

पेर्चीख़िन : सच ?

(तत्याना कोई दर्दभरी धुन धीरे-धीरे बजाती है)

प्योत्र (चिढ़कर) : हां, बिल्कुल सच !

पेर्चीख़िन : भई, बिगड़ो नहीं। हम पुराने ढर्रे के लोगों को तुम जवान लोग न जाने क्यों इतनी नीची नज़र से देखते हो ? बात करना भी पसन्द नहीं करते। यह अच्छी बात नहीं है !

प्योत्र : ख़ैर, आगे ! ..

पेर्चीख़िन : आगे यह कि अब मुझे यहां से नौ दो ग्यारह हो जाना चाहिए। मुझसे तंग आ गये लगते हो। पोल्या, क्या तुम जल्दी ही घर जा रही हो ?

पोल्या : बाक़ी काम निबटाकर ... **(कमरे से बाहर**

जाती है। तेतेरेव उसे देखता रहता है)

पेर्चीख़िन : प्योत्र, तुम वे दिन भूल गये जब हम इकट्ठे चिड़ियां पकड़ा करते थे। उन दिनों तुम मुझे प्यार करते थे...

प्योत्र : मैं तो अब भी...

पेर्चीख़िन : वह तो देख रहा हूं, महसूस कर रहा हूं कैसे अब तुम मुझे प्यार करते हो!

प्योत्र : उन दिनों मुझे मीठी रोटी और मिठाई बहुत पसन्द थी। मगर अब मैं उन्हें छूता भी नहीं हूं...

पेर्चीख़िन : समझ गया... कहो तेरेन्ती! चलते हो बियर पीने?

तेतेरेव : मूड नहीं है...

पेर्चीख़िन : तो मैं अकेला ही चल दिया। शराबख़ाने में ख़ूब मज़ा रहता है! वहां कोई अपनी शान नहीं दिखाता। यहां तो ऊब से दम निकल जाये। तुम लोगों के लिए यह कोई तारीफ़ की बात नहीं है। तुम न कुछ करते हो, न धरते हो... किसी चीज़ में तुम्हारी दिलचस्पी नहीं है... ताश की एकाध बाज़ी ही हो जाये? हम हैं भी चार आदमी।

(तेतेरेव पेर्चीख़िन को देखकर मुस्कराता है)

नहीं खेलना चाहते? जैसी मर्ज़ी... अच्छा, तो विदा! **(तेतेरेव के पास जाकर शराब पीने के लिए चलने का संकेत करता है यानी गर्दन पर चुटकी मारता है)** चलते हो?

तेतेरेव : नहीं...

(पेर्चीख़िन निराशा से हाथ झटककर बाहर जाता है। कुछ देर चुप्पी। पियानो पर तत्याना द्वारा बजायी जानेवाली धुन साफ़ सुनाई देने लगती है। प्योत्र सोफ़े पर लेटा हुआ ध्यान से यह धुन सुनता है और उसके साथ सीटी बजाता है। तेतेरेव कुर्सी से उठकर कमरे में चक्कर काटने लगता है। ड्योढ़ी से बालटी या समोवार की नली के गिरने की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई देती है। स्तेपानीदा यह कहती सुनी जाती है – "किधर जा रही है कमबख़्त ...")

तत्याना (पियानो बजाना जारी रखते हुए) : इतनी देर हो गयी, नील क्यों नहीं आता ...

प्योत्र : कोई भी तो नहीं आता ...

तत्याना : तुम येलेना का इन्तज़ार कर रहे हो?

प्योत्र : किसी का भी सही ...

तेतेरेव : कोई नहीं आयेगा आप लोगों के पास ...

तत्याना : आप हमेशा ऐसे जले-भुने ही रहते हैं ...

तेतेरेव : कोई नहीं आयेगा आपके पास, क्योंकि आपसे किसी को मिलेगा ही क्या ...

प्योत्र : और यह है महात्मा तेरेन्ती की आकाशवाणी ...

तेतेरेव (ज़ोर देते हुए) : आप लोगों ने ध्यान दिया या नहीं कि उस शराबी, उस पुराने ज़माने के आदमी, उस चिड़ीमार के शरीर और आत्मा – दोनों में ज़िन्दगी की धड़कन है, जबकि आप-आप दोनों, जो अभी ज़िन्दगी की दहलीज़ पर खड़े हैं, अधमरे

तो ज़रूर हो चुके हैं?

प्योत्र: और आप? अपने बारे में आपकी क्या राय है?

तत्याना (पियानो की कुर्सी से उठते हुए): महानुभावो, रहने दीजिये इस बहस को! बार-बार वही बात! आप लोग पहले भी यह बहस कर चुके हैं...

प्योत्र: मुझे आपका यह अन्दाज़ पसन्द है, तेरेन्ती ग्रीसान्फ़ोविच... आपकी भूमिका भी पसन्द है – हम सब के बारे में फ़ैसले सुनाने की आपकी भूमिका... मगर मैं यह समझना चाहता हूं कि आपने यह भूमिका क्यों अपना रखी है? आप तो हमेशा ऐसे बात करते हैं मानो तारीफ़ों के पुल बांधनेवाले मरसिये पढ़ रहे हों...

तेतेरेव: ऐसे मरसिये नहीं होते...

प्योत्र: ख़ैर, यह कोई बात नहीं। मैं यह कहना चाहता हूं कि आप हमें पसन्द नहीं करते...

तेतेरेव: बिल्कुल पसन्द नहीं करता...

प्योत्र: साफ़गोई के लिए शुक्रिया।

(पोल्या प्रवेश करती है)

तेतेरेव (व्यंग्यपूर्वक): शुक्रिया तो शुक्रिया!

पोल्या: किस बात का शुक्रिया अदा किया जा रहा है?

तत्याना: गुस्ताख़ी का...

तेतेरेव: सचाई का...

पोल्या : मैं थियेटर जाना चाहती हूं ... कोई मेरा साथ देगा ?

तेतेरेव : मैं ...

प्योत्र : आज खेल कौनसा है ?

पोल्या : 'दूसरी जवानी'* ... चलिये, तत्याना वसील्येव्ना ?

तत्याना : नहीं ... इस जाड़े में तो मैं शायद ही थियेटर जाऊं। गोलियों की ठांय-ठांय, शोर-गुल और आहों-सिसकियोंवाले नाटकों से मुझे झल्लाहट होती है।

(तेतेरेव पियानो के एक परदे पर ज़ोर से अपनी उंगली मारता है। उसमें से भारी और दर्दभरी आवाज़ निकलती है)

यह सब झूठा और बनावटी होता है! ज़िन्दगी शोर-गुल, चीख़-चिल्लाहट ... आंसू और आहों के बिना ... चुपके-चुपके ... अनजाने ही लोगों को तोड़ती रहती है ...

प्योत्र (उदासी से) : वहां प्यार की पीड़ा का नाटक किया जाता है, मगर कर्तव्य और भावना की चक्की के पाटों के बीच पिस रही इनसान की आत्मा की तरफ़ कोई भी ध्यान नहीं देता ...

(तेतेरेव मुस्कराता हुआ पियानो के मन्द स्वरों को ज़ोर से बजाता जाता है)

---

* १९ वीं शताब्दी के अन्तिम दशक का लोकप्रिय नाटक, जिसके नाटककार थे प० व० नेवेजिन (१८४१–१९१९)। – सं०

पोल्या (झेंपभरी मुस्कान के साथ) : मैं तो थियेटर की दीवानी, बेहद दीवानी हूं... उसे ही ले लो – उस डोन सेज़ार डे बज़ान* को, उस स्पेनी रईस को... वह तो बस कमाल ही है! असली नायक है!..

तेतेरेव : मैं उसके जैसा हूं?

पोल्या : ओह, यह भी ख़ूब रही! बिल्कुल नहीं, ज़रा भी नहीं!..

तेतेरेव (मुस्कराते हुए) : हाय... बड़े अफ़सोस की बात है!

तत्याना : अभिनेता जब मंच पर प्रेम-प्रदर्शन करता है तो मुझे झल्लाहट होती है, मेरे अन्दर आग जलने लगती है... हमारे जीवन में तो ऐसा कभी नहीं होता – कभी नहीं होता!..

पोल्या : ख़ैर, मैं तो जा रही हूं... चल रहे हैं, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच?

तेतेरेव (पियानो बजाना बन्द करके) : नहीं। मैं आपके साथ नहीं जाऊंगा क्योंकि आप मुझमें स्पेनी रईस जैसा तो कुछ महसूस ही नहीं करतीं...

(पोल्या हंसती हुई बाहर जाती है)

प्योत्र (उसे जाते हुए देखकर) : यह स्पेनी रईस पर क्यों लट्टू है?

---

* विक्टर ह्यूगो के नाटक 'री ब्लाज़' का नायक। – सं०

तेतेरेव: इसलिए कि वह उसमें एक स्वस्थ इनसान को अनुभव करती है।

तत्याना: उसे उसकी पोशाक बढ़िया लगती है...

तेतेरेव: उसकी ख़ुशमिज़ाजी भी... ख़ुशमिज़ाज लोग हमेशा भले होते हैं... नीच-कमीनों में भूले-भटके ही ख़ुशमिज़ाज देखे जाते हैं।

प्योत्र: इस नज़रिये से तो आपको ही सबसे बुरा आदमी होना चाहिए...

तेतेरेव (फिर पियानो के मन्द स्वरों को छेड़ते हुए): मैं तो सिर्फ़ पियक्कड़ हूं। जानते हैं, हमारे रूस में इतने ज़्यादा शराबी क्यों हैं? क्योंकि शराबी की ज़िन्दगी आसान हो जाती है। हम रूसी शराबियों को प्यार करते हैं। नयी राह दिखानेवालों और दिलेरों से हम नफ़रत, मगर शराबियों से मुहब्बत करते हैं क्योंकि किसी बड़ी और अच्छी चीज़ के मुक़ाबले में मामूली और घटिया चीज़ को प्यार करना कहीं अधिक आसान होता है।

प्योत्र (इधर-उधर टहलते हुए): हमारे रूस में... हमारे रूस में... कितना अजीब लगता है यह सुनना — क्या रूस सचमुच हमारा है? मेरा है? आपका है? हम — ये कौन हैं? क्या हैं — हम?

तेतेरेव (गाते हुए): "हम हैं आ... आज़ाद पंछी..." *

तत्याना: भगवान के लिए यह पियानो को ढपढपाना

* पुश्किन की 'क़ैदी' कविता की एक पंक्ति। — सं०

बन्द कर दीजिये ... मातमी घंटियां-सी बजती लगती हैं।

तेतेरेव (पियानो बजाना जारी रखते हुए) : मूड का साथ दे रहा हूं ...

(तत्याना खीझकर ड्योढ़ी में चली जाती है)

प्योत्र (सोच में खोया-सा) : हां, आप ... इस ढपढप को सचमुच बन्द कर दीजिये – तबीयत परेशान होने लगी है ... मुझे लगता है कि जब कोई फ़्रांसीसी या अंग्रेज़, "फ़्रांस" या "इंगलैंड" कहता है तो उसका कुछ मतलब होता है ... कोई खास, ठोस मतलब ... जो उसकी समझ में आता है ... मगर जब मैं "रूस" कहता हूं तो मुझे यह शब्द बेमानी-सा लगता है। मैं इसका कोई साफ़-साफ़ और सही मतलब नहीं समझ पाता।

(खामोशी। तेतेरेव स्वर छेड़ता रहता है)

बहुत-से ऐसे शब्द हैं जिन्हें हम सिर्फ़ आदत के तौर पर बोलते रहते हैं और यह नहीं सोचते कि उनकी तह में क्या अर्थ छिपा है ... मिसाल के तौर पर ... ज़िन्दगी मेरी ज़िन्दगी ... इन दो शब्दों में क्या अर्थ छिपा हुआ है ?.. **(वह चुप होकर इधर-उधर टहलता है)**

(तेतेरेव स्वर छेड़ता रहता है। कमरा करुण संगीत से भर जाता है। वह ऐसी मुस्कान से प्योत्र को देखता

है जो उसके चेहरे पर जमकर रह गयी है)

शैतान ही मुझे घसीट ले गया छात्र-आन्दोलन में! मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ने गया था ... यही कर भी रहा था ... भगवान के लिए यह ढपढप बन्द कर दीजिये ... मैंने रोमन क़ानून की पढ़ाई में कभी किसी शक्ति की बाधा अनुभव नहीं की ... ईमान की बात है, कभी ऐसी बाधा अनुभव नहीं की! मगर मैंने साथियों की भावना की शक्ति को अनुभव किया ... और मैं उसके सामने झुक गया। मेरी ज़िन्दगी के दो साल बरबाद हो गये ... हां! यह ज़ुल्म है! मुझ पर ज़ुल्म किया गया है। ठीक है न? सोचा था – पढ़ाई ख़त्म करूंगा, वकील बन जाऊंगा, काम करूंगा ... पढ़ूंगा, ज़िन्दगी को देखूं-समझूंगा ... ढंग से ज़िन्दगी बिताऊंगा!..

तेतेरेव (व्यंग्य से उसकी बात आगे बढ़ाते हुए) : मां-बाप के दिल को चैन दूंगा, धर्म और सरकार का भला करूंगा, समाज का एक विनम्र सेवक बनूंगा ...

प्योत्र : समाज? उससे तो मुझे सख़्त नफ़रत है। वह हर व्यक्ति से अधिकाधिक की मांग करता है, लेकिन उसे ढंग से और बेरोक-टोक आगे नहीं बढ़ने देता ... मेरे साथियों के रूप में समाज ने मुझसे पुकार-कर कहा – "हर इनसान को सबसे पहले अच्छा नागरिक होना चाहिए!" मैं नागरिक बना – बुरा हो उनका!.. मैं ... ऐसा नहीं चाहता ... समाज की मांगों के सामने झुकने को मैं मजबूर नहीं हूं! मैं एक व्यक्ति हूं! और व्यक्ति को आज़ाद होना चाहिए ...

मैं कहता हूं कि अपनी यह ढपढप बन्द कर दीजिये ...

तेतेरेव : मैं तो आपकी संगत कर रहा हूं, कूपमंडूक रईसज़ादे ... जिसने आध घंटे के लिए ईमानदार नागरिक बनने की भूल की। ठीक है न ?

(ड्योढ़ी में शोर सुनाई देता है)

प्योत्र (खीझकर) : मुझ पर फब्तियां कसने की कोशिश नहीं करें !

(प्योत्र की तरफ़ चुनौती के ढंग से देखते हुए तेतेरेव पियानो बजाता जाता है। नील, येलेना, शीश्किन, त्स्वेतायेवा और इनके कुछ पीछे तत्याना आती है)

येलेना : ये मातमी घंटियां किसलिए बजायी जा रही हैं ? नमस्कार, राक्षसराज ! नमस्कार, लगभग वकील साहब ! आप लोग यहां क्या करते रहे हैं ?

प्योत्र (भौं सिकोड़कर) : बकवास ...

तेतेरेव : मैं वक़्त से पहले मर जानेवाले की मौत की घंटियां बजा रहा हूं ...

नील (तेतेरेव से) : सुनो ! मेरा एक काम कर दो ! **(तेतेरेव के कान में कुछ फुसफुसाता है। तेतेरेव हामी भरता है)**

त्स्वेतायेवा : भई, आज तो कमाल की रिहर्सल हुई !

येलेना : वकील साहब ! काश, आपने देखा होता कि लेफ़्टीनेन्ट बीकोव आज कैसे मुझ पर डोरे डालने की कोशिश करता रहा !

शीश्किन: बीकोव तो बिल्कुल गधा है ...

प्योत्र: आपको यह वहम कैसे हो गया कि आप पर कौन और कैसे डोरे डालता है, मुझे इसमें दिलचस्पी है?

येलेना: अरे, आपका तो मूड बिगड़ा हुआ है?

त्स्वेतायेवा: प्योत्र वसील्येविच का तो हमेशा ही मूड बिगड़ा रहता है।

शीश्किन: यह तो आम बात है उसके मूड की ...

येलेना: तत्याना, क्या तुम भी सदा की तरह उदास हो, पतझर की रात की तरह?

तत्याना: हां, सदा की तरह ...

येलेना: लेकिन मैं तो बेहद ख़ुश हूं! बताइये तो, मैं क्यों हमेशा ख़ुश रहती हूं?

नील: मैं इसका जवाब नहीं दूंगा – मैं तो ख़ुद भी हमेशा ख़ुश रहता हूं!

त्स्वेतायेवा: और मैं भी!

शीश्किन: मैं हमेशा तो नहीं, लेकिन ...

तत्याना: हर वक़्त ...

येलेना: यह तुमने चुटकी लेने की कोशिश की है न, तत्याना? तुम्हारे लिए यह अच्छा है! राक्षसराज! यह बताइये, मैं हमेशा इतनी ख़ुश क्यों रहती हूं?

तेतेरेव: ओ चंचलता की जीती-जागती मूरत!

येलेना: क्या कहा? ख़ैर, कोई बात नहीं! जब आप अगली बार आयेंगे मुझे अपना प्रेम जताने, तो मैं आपको आपके ये शब्द याद दिलाऊंगी!

नील: मुझे तो भूख लगी है ... थोड़ी देर में ड्यूटी

पर जाना होगा...

त्स्वेतायेवा: रात भर की ड्यूटी पर? बेचारा!

नील: रात ही नहीं, पूरे चौबीस घंटे की ड्यूटी पर... रसोईघर में जाकर स्तेपानीदा को सलाम बोलता हूं...

तत्याना: मैं उससे कह देती हूं कि वह तुम्हें खाना खिला दे... **(नील के साथ बाहर जाती है)**

तेतेरेव (येलेना से): इतना तो बताइये, सुन्दरी, क्या मुझे भी आपके प्रेम-पाश में बंधना होगा?

येलेना: हां, हां, बेशर्म आदमी! हां, रोनी सूरतवाले राक्षसराज! हां! हां!

तेतेरेव (येलेना से पीछे हटते हुए): तो मैं बंध जाऊंगा प्रेम-पाश में... मेरे लिए यह मुश्किल काम नहीं है... कभी मैंने दो जवान लड़कियों और एक शादीशुदा औरत से एकसाथ ही प्रेम किया था...

येलेना (उसकी तरफ़ बढ़ती जाती है): तो नतीजा क्या निकला?

तेतेरेव: कुछ भी नहीं...

येलेना (प्योत्र की ओर आंखों से संकेत करते हुए धीरे से): क्या आज फिर तुम दोनों में नोक-झोंक हुई है?

(तेतेरेव हंसता है। वे धीरे-धीरे बातचीत करते हैं)

शीश्किन (प्योत्र से): सुनो भाई, क्या तीन रोज़ के लिए एक रूबल उधार दे सकते हो? मेरे बूट फट गये हैं...

[illegible] : [illegible] कुल सात रूबल हो गये तुम्हारे [illegible]

शीश्किन : ठीक है ...

त्स्वेतायेवा : प्योत्र वसील्येविच, आप हमारे नाटकों में हिस्सा क्यों नहीं लेते ?

प्योत्र : मैं अभिनय नहीं कर सकता ...

शीश्किन : हमें भी कहां आता अभिनय करना ?

त्स्वेतायेवा : और कुछ नहीं, तो रिहर्सलों में ही आ जाया करें। ये फ़ौजी तो बहुत प्यारे लोग हैं ! एक का नाम है शीर्कोव। ऐसा दिलचस्प आदमी है कि बयान से बाहर ! बड़ा प्यारा और बेहद मासूम। मुस्कराता है तो छुईमुई-सा, घबराया-सा ... और है एकदम बुद्धू ...

प्योत्र (येलेना को कनखियों से देखते हुए) : बुद्धूओं का दिलचस्प होना मेरी समझ के परे की बात है।

शीश्किन : मगर वहां सिर्फ़ शीर्कोव ही तो नहीं है ...

प्योत्र : मानता हूं कि वहां उनकी पूरी फ़ौज है।

त्स्वेतायेवा : ऐसी बातें भला कोई कैसे कह सकता है ? समझ नहीं पाती – यह क्या अन्दाज़ है आपका ? क्या यही है रईसी की शान ?

तेतेरेव (अचानक ऊंची आवाज़ में) : मैं दूसरों पर तरस खाना नहीं जानता ...

येलेना : शी ... शी ! ..

प्योत्र : जैसा कि आप लोग जानते हैं, मैं रईस नहीं, टुटपुंजिया हूं ...

शीश्किन: इसी से तो आम लोगों के प्रति तुम्हारे रवैया को समझना और भी मुश्किल हो जाता है...

तेतेरेव: मुझ पर तो कभी किसी ने तरस नहीं खाया...

येलेना (धीमे से): मगर क्या आप नहीं जानते कि बुराई का बदला भलाई से देना चाहिए?

तेतेरेव: मेरे पास देने को कुछ है ही नहीं...

येलेना: ओह, धीरे बोलिये!

प्योत्र (येलेना और तेतेरेव की बात सुनते हुए): लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि आप सब आम लोगों से हमदर्दी करने का यह ढोंग किसलिए करते हैं?

त्स्वेतायेवा: हम ढोंग नहीं करते... हमारे पास जो कुछ है, उन्हें उसमें हिस्सेदार बना लेते हैं...

शीश्किन: बात इतनी ही नहीं... हमें उनकी संगत अच्छी लगती है... बनावट के बिना सीधे-सादे लोग हैं... उनमें जंगल की ताज़ा हवा जैसी ताज़गी है। हम जैसे किताबी कीड़ों को ऐसी ताज़ा हवा की ज़रूरत रहती है...

प्योत्र (गुस्से को पीकर, अपनी बात पर ज़ोर देते हुए): आप लोग हवाई क़िलों की दुनिया में रहना पसन्द करते हैं। फ़ौजियों के पास भी 'आप कुछ छिपे इरादों से जाते हैं... सच्ची बात कहने के लिए माफ़ी चाहता हूं, हंसानेवाले, बेकार इरादे लेकर फ़ौजियों में जाकर ताज़ा हवा ढूंढ़ना – माफ़ कीजिये, यह मेरी समझ...

त्स्वेतायेवा: सिर्फ़ फ़ौजियों में ही नहीं! आप जानते

4*

है कि हम तो रेलवे-डिपो में भी नाटक खेलते हैं...

प्योत्र: यह तो एक ही बात है। मैं यह कहना चाहता हूं कि अपनी... दौड़-धूप, अपने हो-हल्ले को किसी ऊंचे ध्येय का नाम देकर आप लोग अपनी आंखों में धूल झोंकते हैं। आपको विश्वास है कि आप व्यक्ति के विकास और निखार में सहायक हो रहे हैं... यह ख़ुद को झूठी तसल्ली देनेवाली बात है – आत्म-प्रवंचना है। कल कोई अफ़सर या फ़ोरमैन आयेगा, वह तुम्हारे इस "व्यक्ति" के तोबड़े पर ज़ोर का हाथ जमायेगा, और जो कुछ आपने उसकी खोपड़ी में भरा होगा – अगर आप सचमुच कुछ भर पाये होंगे – खट से निकलकर बाहर आ गिरेगा।

त्स्वेतायेवा: ऐसी बातें सुनकर तो आदमी का दिल बैठ जाता है!

शीश्किन (दुखी होकर): हां... कुछ अच्छी बातें नहीं हैं ये। पहली बार मैं इन्हें नहीं सुन रहा हूं और मुझे ये हर बार पहले से ज़्यादा बुरी लगती हैं... प्योत्र, कभी न कभी तुमसे खुलकर ले-दे होगी... और आख़िरी बार...

प्योत्र (रुखाई और उदासीनता से): तुमने मेरा दम ख़ुश्क कर दिया! लेकिन बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार में हूं उस दिन की...

येलेना (ज़ोर देकर): किसलिए आप अपने को ऐसा ज़ाहिर करते हैं? आख़िर यह ऐसा क्यों चाहता है कि हम सब इसे जंगली जानवर समझें?

प्योत्र: मेरे ख़्याल में दिखावा करने के लिए।

त्स्वेतायेवा : यही बात है। निरालापन दिखाने के लिए! औरतों के सामने सभी मर्द अपने को अनूठा दिखाना चाहते हैं... कुछ निराशावादी बन बैठते हैं तो कुछ शैतान... मगर वास्तव में वे होते हैं काहिल...

तेतेरेव : वाह! क्या गागर में सागर भरा है, बड़ी स्पष्टता से... बहुत ख़ूब!

त्स्वेतायेवा : आप तो शायद अपनी तारीफ़ सुनना चाह रहे हैं? मुंह धो रखिए! बहुत अच्छी तरह मे जानती हूं मैं आप मर्दों को!

तेतेरेव : हां, यह तो आप मुझसे ज़्यादा अच्छी तरह जानती हैं। लेकिन क्या आप यह भी जानती हैं कि बुराई का बदला भलाई से दिया जाना चाहिए? यानी बुराई और भलाई एक ही क़ीमत के दो सिक्के हैं?

त्स्वेतायेवा : लीजिये, पहेलियां बुझवाने लगे!

शीश्किन : ज़रा रुकिये, उसे टोकिये नहीं! यह एक दिलचस्प सवाल है। तेतेरेव की बातें मुझे हमेशा बहुत अच्छी लगती हैं! वह ज़रूर कभी कोई सचाई की कील हमारे दिमाग़ में ठोंक देता है... सच तो यही है कि हममें से अधिकतर लोगों के विचार मामूली और घिसे-पिटे हैं, पुराने सिक्कों की तरह घिसे-घिसाये...

प्योत्र : तुम्हारी दरियादिली की दाद देनी ही पड़ेगी... दूसरों में अपनी ख़ूबियां देखा करते हो...

शीश्किन : रहने दो, रहने दो! सच्ची बात कहनी चाहिए, भैया! छोटी-छोटी बातों में भी ईमानदार

होना चाहिए! मैं तो खुलकर यह मानता हूं कि मैंने आज तक कभी कोई नयी, अनोखी बात नहीं कही! लेकिन ऐसा करने को दिल बहुत चाहता है, दोस्तो!

तेतेरेव: लो, कह भी दी!

शीश्किन (जल्दी से): सच? झूठ बोल रहे हो? कौनसी बात?

तेतेरेव: हां, कही है भैया! सच कही है... लेकिन कौनसी बात, इसका ख़ुद अनुमान लगाओ।

शीश्किन: योंही अचानक मुंह से निकल गयी होगी...

तेतेरेव: कोशिश करके कोई अनोखी बात नहीं कह सकता। मैं आज़माकर देख चुका हूं...

येलेना: हमारे संतापक, ज़रा सुनें तो आपको क्या कहना है भलाई और बुराई के बारे में!

शीश्किन: हां, हां, हो जायें दो-चार फ़लसफ़े की बातें भी!

तेतेरेव (एक विशेष मुद्रा बनाकर खड़ा हो जाता है): सम्मानित दोपायो! जब आप यह कहते हैं कि बुराई का बदला भलाई से देना चाहिए, तो बड़ी भूल करते हैं। बुराई तो हम मां के पेट से अपने साथ लेकर पैदा होते हैं – इसके लिए हमें कोई क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ती। भलाई की आपने ख़ुद कल्पना की है और इसे अपने में पैदा करने के लिए आपको क़ीमत भी बहुत चुकानी पड़ती है। इसलिए यह बहुत मूल्यवान और ऐसी दुर्लभ चीज़ है जिससे बढ़कर सुन्दर चीज़ इस दुनिया में और कोई नहीं। तो इससे नतीजा यह निकलता है कि बुराई का बदला भलाई

मे देने में न तो कोई तुक है, न ही कोई लाभ। मैं आपसे कहता हूं – सिर्फ़ भलाई का बदला ही भलाई मे दिया जाना चाहिए। आपको कभी उससे ज़्यादा दूसरों को नहीं देना चाहिए जितना वे आपको देते हैं ताकि उन्हें सूदख़ोरी की लत न पड़ जाये। कारण कि लालच इनसान के ख़ून में है। एक बार हक़ से ज़्यादा मिलने पर वह और भी ज़्यादा की मांग करेगा। आपको उसे उसके हक़ से कम भी नहीं देना चाहिए, क्योंकि अगर आप उसे एक बार कम दे देंगे – इनसान अपने दिल को लगी ठेस कभी नहीं भूलता – तो वह आपके दिवालिया होने का ढिंढोरा पीट देगा। आप उसकी नज़रों में गिर जायेंगे, अगली बार वह आपके साथ भलाई न करके आपको सिर्फ़ भीख देने की कोशिश करेगा। भाइयो! भलाई के बदले में उतनी ही भलाई करने को हमेशा तैयार रहें! वह इनसान सबसे ज़्यादा नफ़रत और तरस के लायक़ है, जो अपने जैसे आदमी के साथ बराबर की भलाई न करके उसे भीख देता है! लेकिन अगर कोई आपके साथ बुराई करता है तो आप उसका कई गुना बदला चुकायें! उसे उसकी बुराई का बदला देने में बेहद दरियादिली दिखायें। रोटी का एक टुकड़ा मांगने पर अगर वह आपको पत्थर देता है तो आप उसके सिर पर पहाड़ गिरा दें! (**तेतेरेव अपनी बात को मज़ाक़िया ढंग से शुरू करता है, मगर ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है, गम्भीर होता जाता है और अपना भाषण बड़े जोशीले शब्दों में समाप्त करता है। अपनी बात कह चुकने के बाद**

वह धमधमाता हुआ एक ओर को हट जाता है)

(सभी चुप बैठे रहते हैं। हर कोई बेचैनी अनुभव करता है। प्रत्येक उसके शब्दों में कुछ बोझल और सचाई को महसूस करता है)

येलेना (धीरे से) : लगता है... आप लोगों के हाथों बुरी तरह सताये गये हैं...

तेतेरेव (खीसें निपोरते हुए) : लेकिन इसी ने मुझे यह प्यारी उम्मीद बंधवाई है कि वह वक़्त दूर नहीं, जब वे मेरे हाथों या मेरी ख़ातिर सताये जायेंगे...

नील (एक हाथ में प्याला और दूसरे में रोटी का टुकड़ा लिये प्रवेश करता है। बोलते समय उसकी नज़र प्याले पर रहती है कि कहीं वह छलक न जाये)

(उसके पीछे-पीछे तत्याना आती है)

फ़लसफ़ा, जब देखो – फ़लसफ़ा। तिल का ताड़ बनाने और उस पर फ़लसफ़े का रंग चढ़ाने की तुम्हारी यह आदत बुरी है, तत्याना! कहीं पानी बरसा – फ़लसफ़ा, उंगली कट गयी – दूसरा फ़लसफ़ा, चूल्हे में से धुआं निकला – तीसरा फ़लसफ़ा। जब मैं हर मामूली बात के लिए इस तरह का फ़लसफ़ा सुनता हूं तो बरबस यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता हूं कि पढाई-लिखाई से हर आदमी का भला नहीं होता...

तत्याना : तुम बहुत... लट्ठमार हो, नील!

नील (मेज़ पर बैठकर खाना शुरू करते हुए) : इसमें लट्ठमार होने की क्या बात है? ज़िन्दगी में ऊब

महसूस होती है तो कुछ काम करो। काम करनेवालों के पास ऊबने का वक़्त नहीं होता। घर में ज़िन्दगी दूभर है, तो गांव में जाकर रहो, वहां बच्चों को पढ़ाओ... या फिर मास्को जाकर ख़ुद पढ़ो...

येलेना : बिल्कुल ठीक कहा! ज़रा इसकी भी ख़बर ले लीजिये! **(तेतेरेव की ओर संकेत करती है)** इसकी भी!

नील (कनखियों से उसे देखते हुए) : यह एक और नमूना है। हेरकलीटस* का छोटा भाई...

तेतेरेव : अगर तकलीफ़ न हो तो स्विफ़्ट** कहो।

नील : मुंह धो रखो!

प्योत्र : हां, छोटा मुंह, बड़ी बात।

तेतेरेव : मगर मेरी बाछें खिल जातीं...

त्स्वेतायेवा : तारीफ़ के चटोरे हो!..

नील (प्याले से आंखें हटाये बिना) : कुढ़ो नहीं... अरे हां... वह... पोल्या यहां आयी थी न?.. मेरा मतलब वह कहां गयी है?

तत्याना : थियेटर। क्यों?

नील : कुछ नहीं... ऐसे ही पूछ रहा था...

तत्याना : तुम्हें उसकी ज़रूरत है?

नील : नहीं... ज़रूरत नहीं... मेरा मतलब इस वक़्त ज़रूरत नहीं... वैसे मुझे ... हमेशा उसकी ज़रूरत

---

* ईसा पूर्व की छठी शताब्दी के अन्त और पांचवीं शताब्दी के पूर्व का यूनानी दार्शनिक। – सं०

** अंग्रेज़ लेखक, व्यंग्यकार और राजनीतिक कार्यकर्त्ता (१६६७–१७४५) – सं०

रहती है। ओह, शैतान, यह मैं क्या बक रहा हूं!

(तत्याना को छोड़कर सब मुस्कराते हैं)

तत्याना (अपनी बात पर अड़ते हुए) : किसलिए? किसलिए ज़रूरत रहती है तुम्हें उसकी?

(नील उसके प्रश्न की तरफ़ ध्यान न देकर खाता रहता है)

येलेना (जल्दी से तत्याना से) : वह तुम्हें किसलिए डांट-डपट रहा था? बताओ न?

त्स्वेतायेवा : हां, बताओ, यह जानना दिलचस्प रहेगा!

शीश्किन : मुझे भी इसका डांटने का ढंग पसन्द है...

प्योत्र : और मुझे – इसका खाने का ढंग...

नील : मैं कुछ भी तो बुरे ढंग से नहीं करता...

येलेना : तो बताओ न तत्याना, बताओ भी!

तत्याना : जी नहीं चाहता...

त्स्वेतायेवा : वह कभी कुछ नहीं चाहती!

तत्याना : तुम्हें यह कैसे मालूम है? शायद मैं... मर जाना चाहती हूं, बुरी तरह चाहती हूं?

त्स्वेतायेवा : उफ़, यह कैसी भयानक बात कही है तुमने!

येलेना : बाप रे बाप! मौत का ज़िक्र मुझे पसन्द नहीं!

नील : मरे बिना कोई मौत के बारे में कह ही क्या सकता है?

तेतेरेव : यह है असली फ़लसफ़ी !

येलेना : तो महानुभावो, मेरे कमरे में चलिये ! समोवार में तो शायद पानी उबल रहा होगा...

शीश्किन : सच, अब चाय मिले तो मज़ा आ जाये ! साथ में कुछ नमकीन-मीठा भी... उम्मीद की जाये ?

येलेना : बेशक !

शीश्किन (नील की तरफ़ संकेत करते हुए) : वरना इसकी तरफ़ देख-देखकर मुझे जलन हो रही थी, पापी जो हूं !

नील : अब जलो नहीं – मैं सब कुछ हड़प चुका हूं ! मैं भी आप लोगों के साथ ऊपर चल रहा हूं, अभी मेरे पास एक घण्टे से ज़्यादा वक़्त है...

तत्याना : काम पर जाने से पहले तुम झपकी ले लेते, तो ज़्यादा अच्छा होता...

नील : इसके बिना भी काम चलेगा...

येलेना : प्योत्र वसील्येविच ! आप भी चल रहे हैं न ?

प्योत्र : अगर इजाज़त हो...

येलेना : बड़ी ख़ुशी से ! मुझे अपना हाथ दीजिये...

त्स्वेतायेवा : जोड़े बना लीजिये। नील वसील्येविच, आप मेरे साथ आ जाइये...

शीश्किन (तत्याना से) : तो आप मेरे साथ होंगी...

तेतेरेव : कहते हैं कि दुनिया में औरतें मर्दों से ज़्यादा हैं। मगर मैं तो इस देश के बहुत-से शहरों में

रह चुका हूं और कभी, कहीं भी मेरे लिए कोई औरत नहीं बची...

येलेना (**हंसती और गाती हुई दरवाज़े की तरफ़ बढ़ती है**) : Allons, enfants de la patri...i...i...e!*

शीश्किन (**प्योत्र को धकेलता है**) : देश के सपूत, ज़रा तेज़ी से क़दम बढ़ाओ!..

(वे शोर मचाते, गाते और हंसते हुए बाहर जाते हैं। कुछ क्षण तक कमरा ख़ाली रहता है। उसके बाद बेस्सेमेनोव के कमरे का दरवाज़ा खुलता है और अकुलीना इवानोव्ना बाहर आती है। जम्हाई लेते हुए वह लैम्प बुझाती है। बुज़ुर्ग के कमरे से नीरस ढंग से प्रार्थना करने की धीमी आवाज़ सुनाई देती है। अंधेरे में कुर्सियों से ठोकर खाती हुई अकुलीना इवानोव्ना अपने कमरे की तरफ़ जाती है)

(परदा गिरता है)

---

* विश्वविख्यात क्रान्तिकारी गीत की पहली पंक्ति: "आगे बढ़ो, देश के सपूत तुम!" (फ़्रांसीसी)

दूसरा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(पतझर की दोपहर। बेस्सेमेनोव मेज़ के पास बैठा है। तत्याना धीरे-धीरे, दबे पांव कमरे में टहल रही है। प्योत्र दोनों कमरों के बीचवाले मेहराबदार दरवाज़े में खड़ा हुआ खिड़की से बाहर झांक रहा है।)

बेस्सेमेनोव : घण्टे भर से मैं तुम लोगों के साथ मत्थापच्ची कर रहा हूं... सुनते हो, मेरे प्यारे बच्चो। लेकिन लगता है कि मेरे पास ऐसे शब्द नहीं जो तुम्हारे दिलों में घर कर सकें... एक मेरी तरफ़ पीठ किये हुए मेरी बातें सुन रहा है और दूसरी मुंडेर पर फुदकनेवाले कौवे की तरह इधर-उधर आ-जा रही है।

तत्याना : मैं बैठ जाती हूं... **(बैठ जाती है)**

प्योत्र (अपने पिता की तरफ़ मुड़ते हुए) : आप साफ़-साफ़ बात क्यों नहीं कहते कि आप हमसे चाहते क्या हैं ?

बेस्सेमेनोव : मैं यह समझना चाहता हूं कि आखिर तुम किस क़िस्म के लोग हो... मैं यह जानना चाहता हूं कि प्योत्र, तुम किस ढंग के आदमी हो ?

प्योत्र : थोड़ा इन्तज़ार कीजिये ! वक़्त आने पर आप सब जान जायेंगे, सब कुछ देख लेंगे... अभी तो मुझे अपनी पढ़ाई ख़त्म कर लेने दीजिये...

बेस्सेमेनोव : हुंह ... पढ़ाई ... तो पढ़ो ! मगर तुम पढ़ो भी ... तुम तो सिर्फ़ अपनी शान दिखाया करते हो, हर चीज़ पर नाक-भौंह सिकोड़ना सीख गये हो, मगर समझदारी से काम लेना नहीं सीखा ... उन्होंने तुम्हें यूनिवर्सिटी से निकाल दिया। तुम सोचते हो कि तुम्हारे साथ ज़्यादती हुई है ? यह तुम्हारी भूल है। विद्यार्थी विद्यार्थी है – यह बताना उसका काम नहीं कि क्या और कैसे होना चाहिए। बीस साल का हर छोकरा क़ानून-कायदे का ठेकेदार बन बैठे तो चारों तरफ़ धांधली मच जाये ... भले लोगों के लिए कहीं सिर छिपाने की जगह न बचे। तुम पहले अपनी पढ़ाई ख़त्म कर लो, अपने काम के उस्ताद बन जाओ और फिर भले-बुरे का फ़ैसला करने बैठना ... उस वक़्त तक हर कोई तुम्हारी मीन-मीख़ के जवाब में यह कहने का हक़ रखता है – चुप रहो ! मैं यह सब कुछ तुम्हारे बुरे के लिए नहीं, भले के लिए, सच्चे दिल से कह रहा हूं – क्योंकि तुम मेरे बेटे हो, मेरे अपने हो, मेरा ख़ून हो। नील से मैं यह सब नहीं कहता हूं ... बेशक उसके लिए भी मैंने अपना ख़ून-पसीना एक किया है, वह मेरा पाला हुआ बेटा है ... फिर भी वह पराया ख़ून है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे और ज़्यादा पराया होता जाता है। मैं देख रहा हूं कि वह कोई लफ़ंगा, निकम्मा आदमी बनेगा ... अभिनेता या ऐसा ही कुछ और ... शायद समाजवादी ही बन जाये ... मेरी बला से वह कुछ भी बने – वह है भी इसी के लायक़ !

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े में से झांककर अनुरोधपूर्ण और सहमी-सी आवाज़ में पूछती है) : प्योत्र के पिता, खाने का वक़्त हो गया है न?

बेस्सेमेनोव (कड़ाई से) : चलती बनो यहां से! बेमौक़े अपनी टांग मत अड़ाया करो...

(अकुलीना इवानोव्ना दरवाज़ा बन्द कर देती है। तत्याना तिरस्कार से अपने पिता की ओर देखती है और कुर्सी से उठकर फिर इधर-उधर टहलना शुरू कर देती है)

देखा तुमने? देखा, अपनी इस मां को? हर वक़्त बेचैन और तुम पर अपनी छत्रछाया बनाये रहती है... उसे यही डर खाता रहता है कि मैं कहीं तुम्हें कुछ बुरा-भला न कह दूं, तुम्हारे दिलों को ठेस न लगा दूं... मैं किसी का दिल दुखाना नहीं चाहता... लेकिन तुम लोगों ने मेरे दिल को ठेस लगायी है – बहुत बुरी तरह मेरा दिल दुखाया है तुमने!.. मैं अपने ही घर में पंजों के बल, सहम-सहमकर चलता हूं मानो फ़र्श पर शीशे के टुकड़े बिखरा दिये गये हों... मेरे पुराने दोस्तों ने अब मेरे यहां आना छोड़ दिया है। "तुम्हारे बच्चे बहुत पढ़े-लिखे हैं," वे कहते हैं, "हम हैं सीधे-सादे लोग, वे हमारी खिल्ली उड़ायेंगे।" बहुत बार तुमने उनका मज़ाक़ उड़ाया भी और तब मैं शर्म से पानी-पानी होकर रह गया था। मेरे सभी दोस्तों ने मुझसे ऐसे नाता तोड़ लिया मानो पढ़े-लिखे बच्चे

प्लेग की बीमारी हों। तुम अपने बाप की ओर रत्ती भर ध्यान नहीं देते... कभी कोई मीठा शब्द नहीं बोलते, उसके सामने कभी अपना दिल नहीं खोलते, कभी यह नहीं बताते कि तुम्हारे क्या इरादे हैं, तुम लोग क्या करना चाहते हो। मैं तुम्हारे लिए बिल्कुल पराया हूं... मगर मैं तुम्हें प्यार करता हूं... हां-हां! प्यार करता हूं। तुम समझते हो कि किसी को प्यार करने का क्या मतलब होता है? उन्होंने तुम्हें यूनिवर्सिटी से निकाल दिया– इसके लिए मेरा दिल दुखता है। तत्याना अकारण कुंवारी ही बूढ़ी हुई जा रही है, मेरे दिल को इससे ठेस लगती है... मैं नहीं जानता कि लोगों को कैसे मुंह दिखाऊं... तत्याना में कौनसी कमी है?.. दूसरी लड़कियों में कौनसे लाल लगे रहते हैं जो वे शादियां कर लेती हैं? मैं तुम्हें एक इनसान देखना चाहता हूं, प्योत्र, विद्यार्थी नहीं... फ़िलीप नाज़ारोव के बेटे को देखो – पढ़ाई ख़त्म करके शादी कर चुका है, घर में बहू लाया है और बहुत-सा दहेज भी, दो हज़ार सालाना पगार पाता है और अब... अब जल्द ही नगर-परिषद का सदस्य चुना जानेवाला है...

प्योत्र: थोड़ा सब्र कीजिये... मैं भी शादी कर लूंगा...

बेस्सेमेनोव: वह मैं जानता हूं। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। तुम तो कल ही शादी करने को तैयार हो... मगर किससे? एक दिलफेंक औरत से, सो भी विधवा से! छि!

प्योत्र (तुनककर) : आप उसके बारे में ऐसा कहने का हक़ ... नहीं रखते !

बेस्सेमेनोव : ऐसा कहने का ? क्या कहने का हक़ नहीं रखता ? विधवा या दिलफेंक औरत ?

तत्याना : पिता जी ! मेहरबानी करके, पिता जी, हटाइये इस क़िस्से को !.. प्योत्र ... या तो तुम कमरे मे बाहर चले जाओ !.. या फिर चुप रहो ! आख़िर मैं तो चुप हूं ! सुनिये ... मेरी समझ में कुछ नहीं आता ... पिता जी !.. जब आप अपनी बात कहते हैं तो मुझे लगता है कि आप ठीक कहते हैं ! आप ठीक कहते हैं – इसमें मुझे ज़रा भी शक नहीं ... यक़ीन कीजिये, मैं ... दिल से ऐसा महसूस करती हूं ! मगर आपकी सचाई हमारी नज़र में ... मेरी और प्योत्र की नज़र में ... परायी है ... आप यह बात क्यों नहीं समझते ? हमारी अपनी सचाई है ... ज़रा रुकिये, बिगड़िये नहीं, पिता जी ! एक आपकी और एक हमारी सचाई है ...

बेस्सेमेनोव (उछलकर) : झूठ ! सरासर झूठ ! सिर्फ़ एक ही सचाई है। मेरी सचाई ! वह कैसी है तुम्हारी सचाई ? कहां है वह ? दिखाओ, साबित करो !

प्योत्र : चीख़िये-चिल्लाइये नहीं, पिता जी ! मैं भी यह कह सकता हूं ... कि आपकी बात सही है। मगर आपकी सचाई का दायरा हमारे लिए बहुत तंग है। हम इससे बाहर आ चुके हैं ... जिस तरह हमारे बचपन के कपड़े आज हमारे लिए छोटे हो चुके हैं। आपकी सचाई के दायरे में हमें घुटन महसूस होती है, वह

हमें दबाता है... आपकी ज़िन्दगी का रास्ता, उसका रंग-ढंग हमारे काम नहीं आ सकता...

बेस्सेमेनोव : हां, हां! तुम... तुम! अरे हां, तुम पढ़-लिख गये... और मैं जाहिल हूं! तुम...

तत्याना : नहीं, यह बात नहीं है, पिता जी! ऐसी बात नहीं है...

बेस्सेमेनोव : यही, बिल्कुल यही बात है! तुम्हारे यहां मेहमान आते हैं... तुम सब मिलकर सारा घर सिर पर उठा लेते हो... सोना हराम कर देते हो... तुम मेरे सामने ही उस किरायेदारन से आंखें लड़ाया करते हो... तुम हमेशा मुंह फुलाये रहती हो, मैं... और तुम्हारी मां, हम दोनों एक कोने में पड़े रहते हैं...

अकुलीना इवानोव्ना (तेज़ी से कमरे में प्रवेश करती है और गिड़गिड़ाती हुई ऊंचे-ऊंचे कहती है) : ओह, मेरे प्यारो! क्या मैं... प्योत्र के पिता, मेरे प्यारे! क्या मैं कभी शिकायत करती हूं? कोने में ही क्या... मैं तो बाड़े में भी पड़ी रह सकती हूं, अगर तुम लोग आपस में न उलझो! एक दूसरे को काटने को न दौड़ो, मेरे प्यारो!..

बेस्सेमेनोव (एक हाथ से उसे अपनी तरफ़ खींचते और दूसरे से धकेलते हुए) : निकल जा यहां से, बुढ़िया! इन्हें तेरी ज़रूरत नहीं है। इन्हें हम दोनों की ही ज़रूरत नहीं है! ये बहुत अक़्लमन्द हैं!.. हम इनके लिए पराये...

तत्याना (आह भरकर) : क्या मुसीबत है! उफ़. क्या... मुसीबत है!

प्योत्र (फक चेहरे और निराशा से) : पिता जी ... समझिये कि यह बड़ी बेतुकी बात है! एकदम बेतुकी है! आप बिला वजह और अचानक ही फट पड़े ...

बेस्सेमेनोव : अचानक ही? तुम भूलते हो!.. अचानक नहीं ... बरसों से यह नासूर मेरे भीतर ही भीतर पक रहा था।

अकुलीना इवानोव्ना : इनकी बात ही मान लो, प्योत्र! इनसे बहस नहीं करो!.. तत्याना ... अपने पिता पर रहम करो!

बेस्सेमेनोव : बेतुकी बात? तुम उल्लू हो! बेतुकी नहीं, ख़तरनाक बात है! अचानक ही ... बाप और बच्चे – अचानक दोनों की दो सचाइयां ... दरिन्दे हो तुम लोग, दरिन्दे!

तत्याना : यहां से चले जाओ, प्योत्र। ग़ुस्से को थूक दीजिये, पिता जी ... मैं आपकी मिन्नत करती हूं ...

बेस्सेमेनोव : पत्थरदिल दरिन्दे! इन्हें यहां घुटन महसूस होती है ... किस बात का घमंड है तुम्हें? कौनसे बड़े तीर मारे हैं तुमने? हम तो जिये हैं! हमने कुछ किया है ... मकान बनाये हैं ... तुम्हारे लिए ... पाप किये हैं ... शायद बहुत पाप किये हैं ... तुम्हारी ख़ातिर!

प्योत्र (चिल्लाते हुए) : क्या मैंने आपसे ... ऐसे करने को कहा था?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र! भगवान के लिए ...

तत्याना : यहां से चले जाओ, प्योत्र! मैं यह सब कुछ सहन नहीं कर सकती! मैं जाती हूं ... (**बेजान-सी कुर्सी पर जा गिरती है**)

बेस्सेमेनोव : अहा! सचाई से दूर भागने लगे हो ... जैसे शैतान धूप की गन्ध से दूर भागता है ... आख़िर तुम्हारी आत्मा धिक्कारने लगी!

नील (दरवाज़े को चौपट खोलता है और दरवाज़े में ही खड़ा रह जाता है। वह अभी काम से लौटा है। उसका चेहरा गन्दा है, उस पर गर्द-मिट्टी और कालिख लगी हुई है। उसके हाथ भी गन्दे हैं। वह कीचड़ से सने घुटनों तक के बूट और मिट्टी तथा तेल से चीकट जाकेट पहने है जिस पर पेटी बंधी है। वह हाथ आगे बढ़ाते हुए कहता है) : तांगे का किराया चुकाने के लिए मुझे जल्दी से बीस कोपेक दीजिये!

(उसके अचानक ही यहां आ जाने और शान्तभाव से कोपेक मांगने पर सभी चिल्लाना बन्द कर देते हैं और कुछ सेकंड तक चुपचाप उसे घूरते रहते हैं)

(अपने आने से पैदा हुए प्रभाव से वह सारी स्थिति का अनुमान लगा लेता है और तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ कहता है) :

तो! फिर नोक-झोंक हो रही है?

बेस्सेमेनोव (भद्दे ढंग से चिल्लाते हुए) : अबे ओ, बदतमीज़! कुछ समझते हो, कहां हो तुम?

नील : क्यों? कहां हूं मैं?

बेस्सेमेनोव : टोपी पहने हुए! पहले इसे उतारो! ..

अकुलीना इवानोव्ना : सचमुच, यह सब क्या है? मैले-कुचैले चिथड़े पहने हुए खाने के कमरे में घुस आये हो... हद हो गयी!

नील : जल्दी से कुछ पैसे तो दीजिये!

प्योत्र (पैसे देते हुए फुसफुसाता है) : झटपट यहां लौट आना...

नील (मुस्कराकर) : मदद की ज़रूरत है? छठी का दूध याद आ रहा है, क्यों? अभी आता हूं!

बेस्सेमेनोव : यह एक और हज़रत है!.. कभी मन लगाकर कोई काम नहीं करता – जिस चीज़ की सनक सवार होती है, वही करता है... दिमाग़ में उल्टी-सीधी, ऊल-जलूल बातें भरी हुई हैं... कोई भी ऐसी चीज़ नहीं, जिसकी इज़्ज़त करता हो...

अकुलीना इवानोव्ना (पति के अन्दाज़ में ही) : बिल्कुल इज़्ज़त नहीं करता... लफ़ंगा है, लफ़ंगा! तत्याना, जाओ... झटपट रसोईघर में जाओ... स्तेपानीदा से कहो कि मेज़ पर खाना लगा दे...

(तत्याना बाहर जाती है)

बेस्सेमेनोव (कटु मुस्कान के साथ): और प्योत्र को कहां भेजोगी? च-च-च... अरी ओ, मूर्ख बुढ़िया! मूर्ख हो तुम... इतना भी नहीं समझतीं कि मैं कोई दरिन्दा नहीं हूं! मैं सच्चे दिल से... इनकी ख़ातिर परेशान होता हुआ... दिल के दर्द से चीख़ता-चिल्लाता हूं... ग़ुस्से से नहीं। तुम हर वक़्त इन्हें मुझसे दूर क्यों भगाती रहती हो?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता, मैं यह जानती हूं, मेरे प्यारे... सब कुछ जानती हूं... मगर इनके लिए दिल रोता है! हम-तुम तो अब बूढ़े हो गये... किसको ज़रूरत है अब हमारी? हे भगवान! हम हैं ही किस लायक़? मगर इनके सामने तो पहाड़-सी ज़िन्दगी है! न जाने कितने झटके, कितने सदमे सहने होंगे इन्हें पराये लोगों की बदौलत...

प्योत्र : पिता जी, आप तो सचमुच व्यर्थ ही इतने परेशान होते रहते हैं... आपने अपने दिमाग़ में योंही ऐसी बात बिठा ली है...

बेस्सेमेनोव : मैं डरता हूं! ज़माना ऐसा है... बुरा ज़माना है! हर चीज़ टूट-फूट रही है, सभी कुछ ढह रहा है... ज़िन्दगी में उथल-पुथल मची हुई है!.. मुझे तुम्हारी फ़िक्र है... कहीं कुछ ऐसा-वैसा हो गया... तो हमारे बुढ़ापे का सहारा, हमारी लाठी कौन होगा? तुम्हीं तो हमारा सहारा हो... इस नील को देखते हो, क्या रंग-ढंग हैं उसके? और वह... तेतेरेव... वह भी उसी थैली का चट्टा-बट्टा है! तुम इन दोनों से दूर रहा करो! वे... हमसे नफ़रत करते हैं! सावधान रहना!

प्योत्र : हटाइये भी! मुझे कुछ नहीं होगा... थोड़ा और इन्तज़ार करने के बाद मैं यूनिवर्सिटी को ख़त लिखकर माफ़ी मांग लूंगा...

अकुलीना इवानोव्ना : जल्दी ही कर डालो, प्योत्र! पिता के दिल को चैन दो...

बेस्सेमेनोव : जब तुम ऐसी समझदारी की बातें

करते हो ... इतने गम्भीर हो जाते हो ... तो मुझे तुम पर भरोसा होने लगता है ... मुझे यह यक़ीन होने लगता है कि तुम्हारी ज़िन्दगी मुझसे कुछ बुरी नहीं गुज़रेगी ... मगर फिर कभी-कभी मेरा यह विश्वास ...

प्योत्र : लाइये, अब इस क़िस्से को ख़त्म कर दें ... बस, काफ़ी है ... ज़रा ख़्याल कीजिये कि कितनी बार ऐसे ही भद्दे तमाशे होते हैं हमारे यहां !

अकुलीना इवानोव्ना : भगवान तुम दोनों का भला करे !

बेस्सेमेनोव : और यह तत्याना ... उसे तो पढ़ाने का यह झंझट ख़त्म कर देना चाहिए ... क्या मिलता उसे इससे ? सिरदर्दी और थकान ही न !

प्योत्र : हां, उसे आराम की बेहद ज़रूरत है ...

अकुलीना इवानोव्ना : ओह, बहुत ज़रूरत है !

नील (वह नीली कमीज़ पहने है, मगर हाथ-मुंह अभी नहीं धोया है) : खाना तो जल्द ही खायेंगे न ?

(नील को देखकर प्योत्र जल्दी से ड्योढ़ी में चला जाता है)

बेस्सेमेनोव : पहले अपने उस तोबड़े को तो धो लेते, फिर खाने की पूछते।

नील : मेरा तोबड़ा कोई बहुत बड़ा नहीं है, चुटकी बजाते में धुल जायेगा। मगर भूख के मारे मेरा दम निकला जा रहा है ! ठंड और बारिश, तुफ़ानी हवा और फिर पुराना, छकड़े जैसा इंजन ... इस रात तो बुरी तरह थक-टूट गया हूं ! काश, अफ़सर को

ऐसे मौसम में उसी इंजन पर बिठाकर थोड़ी सैर करा देता ...

बेस्सेमेनोव : और बकबक कर लो! देख रहा हूं कि कुछ अरसे से तुम अपने अफ़सरों को ख़ूब कोसने लगे हो ... ज़रा सम्भल जाओ, कहीं आटे-दाल का भाव न मालूम हो जाये!

नील : अफ़सरों को कुछ नहीं होगा ...

अकुलीना इवानोव्ना : पिता अफ़सरों की नहीं, तुम्हारी बात कर रहे हैं।

नील : ओह, मेरी बात ...

बेस्सेमेनोव : हां, तुम्हारी बात!

नील : ओ-हो! ..

बेस्सेमेनोव : अपनी यह "ओ-हो" बन्द करो। जो मैं कहता हूं, उसे सुनो ...

नील : सुन रहा हूं ...

बेस्सेमेनोव : तुम्हारा दिमाग़ आसमान पर पहुंचता जा रहा है ...

नील : बहुत अरसे से?

बेस्सेमेनोव : तुम मुझसे ऐसी ज़बान में बात करने की हिम्मत नहीं करो!

नील : मेरे पास तो एक ही ज़बान है ... (**ज़बान बाहर निकालता है**) मैं सबके साथ इसी से बात करता हूं ...

अकुलीना इवानोव्ना (हैरानी से हाथ आगे बढ़ाते हुए) : ओह, बेशर्म कहीं के! ज़रा सोचो तो, किसे दिखा रहे हो अपनी यह ज़बान!

बेस्सेमेनोव: ठहरो, बुढ़िया, बीच में मत टोको!

(अकुलीना इवानोव्ना तिरस्कार से सिर हिलाती हुई बाहर चली जाती है)

तुम अक़्ल के ठेकेदार! मैं तुमसे बात करना चाहता हूं...

नील: खाने के बाद?

बेस्सेमेनोव: नहीं, अभी!

नील: खाने के बाद बेहतर रहेगा बात करना! मेरे पेट में सचमुच चूहे कूद रहे हैं, मैं बेहद थका और ठिठुरा हुआ हूं... मेहरबानी कीजिये, कुछ देर को बातचीत रहने दीजिये! और फिर आप मुझसे कहेंगे भी क्या? आप झगड़ा करना चाहेंगे... और आपसे झगड़ना मुझे पसन्द नहीं... बेहतर यही है कि... आप मेरे मुंह पर साफ़-साफ़ कह दें कि मैं अब आपकी आंख में खटकने लगा हूं... और यह कि अब मुझे अपनी राह...

बेस्सेमेनोव: जहन्नुम में जाओ तुम! **(वह अपने कमरे में जाता है और ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर लेता है)**

नील (बड़बड़ाते हुए): तुम्हारे साथ रहने के बजाय जहन्नुम में रहना कहीं बेहतर है... **(गुनगुनाता हुआ इधर-उधर टहलता है)**

(तत्याना आती है)

एक झड़प और हो गयी?

तत्याना : तुम तो अनुमान भी नहीं लगा सकते कि ...

नील : अरे ! ख़ूब अनुमान लगा सकता हूं ... अन्तहीन कामदी 'न घर के, न घाट के' का एक और मनोरंजक दृश्य।

तत्याना : तुम मज़े से ऐसी बातें कह सकते हो ! तुम्हें अपना दामन बचाने का ढंग आता है ...

नील : मैं इस तरह की बक-झक को अपने से दूर रखना जानता हूं। जल्द ही सदा-सदा के लिए और पूरी तरह इससे अपना पिंड छुड़ा लूंगा ... मैं डिपो में मेकेनिक हो जाऊंगा ... हर रात मालगाड़ी चला-चलाकर जी तंग आ गया है ! कोई कहीं मुसाफ़िर गाड़ी, कोई एक्सप्रेस गाड़ी होती, तब भी कोई बात थी। पूरी रफ़्तार से हवा को चीरती, फर्राटे भरती, खटा-खट, खटा-खट ! मगर यह मालगाड़ी चींटी की तरह रेंगती है और झोंकिये को छोड़कर कोई साथी नहीं होता ... ऊब से दम निकलता है !.. मुझे लोगों के बीच मज़ा आता है ...

तत्याना : फिर भी तुम हम लोगों से दूर भागते रहते हो ...

नील : हां ... सचाई के लिए माफ़ी चाहता हूं, मगर कोई भी यहां से भागना चाहेगा ! मुझे ज़िन्दगी से प्यार है, मैं शोर-ग़ुल, काम और सीधे-सादे, हंसमुख लोगों को पसन्द करता हूं ! तुम लोग क्या ज़िन्दगी को जीते हो ? तुम ज़िन्दगी के एक किनारे पर खड़े हो और न जाने क्यों, आहें भरते और शिकवा-

शिकायत करते रहते हो ... किसके ख़िलाफ़, क्यों और किसलिए? समझ में नहीं आता।

तत्याना : तुम नहीं समझते?

नील : हां, नहीं समझता। जब कोई आदमी एक ही करवट लेटे-लेटे थक जाता है तो वह करवट बदल लेता है, मगर जब ज़िन्दगी उसके लिए भार बन जाती है तो वह सिर्फ़ शिकवा-शिकायत करता है ... तुम करवट बदलने की कोशिश करो!

तत्याना : किसी फ़लसफ़ी ने कहा है कि सिर्फ़ बेवक़ूफ़ को ही ज़िन्दगी आसान लगती है!

नील : लगता है कि फ़लसफ़ी बेवक़ूफ़ियों के मैदान के बड़े खिलाड़ी होते हैं। मैं बहुत अक़्लमन्द होने का दम नहीं भरता हूं ... मगर मुझे यहां की ज़िन्दगी बहुत ऊबभरी और नीरस लगती है। मेरे ख़्याल में तुम लोगों की रात-दिन की, चौबीसों घण्टों की हाय-तोबा की वजह से ही ऐसा है। हाय-हाय करने से मिलता भी क्या है? कौन मदद को आयेगा? कोई भी नहीं ... कोई नहीं आयेगा ... और उससे कुछ बने-बनायेगा भी नहीं ...

तत्याना : नील, तुम्हारा दिल इतना पत्थर क्यों हो गया है?

नील : तुम इसे पत्थरदिल होना कहती हो?

तत्याना : पत्थरदिल ही नहीं, ज़ालिम भी ... शायद तुम्हें यह छूत तेतेरेव से लगी है जो सभी से नफ़रत करता है।

नील : नहीं, सभी से नहीं ... (**हंसता है**) क्या

तुम्हें तेतेरेव एक कुल्हाड़ी जैसा नहीं लगता?

तत्याना : कुल्हाड़ी जैसा? क्या मतलब तुम्हारा?

नील : एक मामूली, लकड़ी के दस्ते वाली कुल्हाड़ी जैसा?..

तत्याना : हटाओ, मज़ाक़ नहीं करो! रहने दो... तुमसे बात करके मन खिल उठता है... तुम्हारी बातों में हमेशा ताज़गी होती है, मगर तुम... तुम बेपरवाह हो...

नील : किस चीज़ के बारे में?

तत्याना : लोगों के बारे में... मिसाल के तौर पर मेरे बारे में...

नील : हुंह... शायद हर किसी के बारे में तो बेपरवाह नहीं हूं...

तत्याना : मेरे मामले में तो बेपरवाह हो...

नील : तुम्हारे मामले में? हां...

(दोनों चुप हो जाते हैं। नील अपने जूतों को घूरता है। तत्याना आशाभरी दृष्टि से उसे देखती है)

देखो न, मैं... तुम... यानी मैं तुम्हारी...

(तत्याना उसकी तरफ़ खिसकती है, मगर नील का इस चीज़ की ओर ध्यान नहीं जाता)

मैं तुम्हारी बड़ी इज़्ज़त करता हूं और... और मैं तुम्हें चाहता भी हूं। मगर मुझे तुम्हारे स्कूल की अध्यापिका होने में कोई तुक नज़र नहीं आती। तुम्हें वह काम पसन्द नहीं, तुम्हें उससे थकान होती है, तुम झल्ला

उठती हो। और पढ़ाना – यह बहुत बड़ा काम है! बच्चे हमारा भविष्य हैं, वही कल बड़े होंगे... तुम्हें उनके महत्व को समझना, उन्हें प्यार करना चाहिए। किसी काम को अच्छे ढंग से करने के लिए उसे प्यार करना ज़रूरी है। मुझे ही ले लो – मुझे लुहार की निहाई पर काम करने में बड़ा मज़ा आता है। दहकता हुआ लाल-लाल गोला सामने होता है – उस पर हथौड़े बरसाते हुए दिल ख़ुशी से नाचने लगता है। ढेरों चिंगारियां फूटती हैं, वे मेरी आंखों की तरफ़ लपकती हैं, मुझे अन्धा कर देता चाहती हैं, लोहे का गोला क़ाबू से बाहर होने लगता है, उसमें मानो ज़िन्दगी की धड़कन और लोच महसूस होती है... मैं ज़ोरदार चोटों से उसे मनमानी शक्ल दे देता हूं...

तत्याना : इसके लिए आदमी को बहुत ताक़तवर होना चाहिए।

नील : चुस्त-चतुर भी...

तत्याना : सुनो नील... क्या तुम्हें कभी दया नहीं आती ?..

नील : किस पर ?

येलेना (प्रवेश करते हुए) : आप लोगों ने अभी खाना तो नहीं खाया, न ? बहुत अच्छी बात है। तो मेरे साथ चलिये ! कैसा बढ़िया केक बनाया मैंने ! वकील साहब कहां हैं ? बहुत गज़ब का केक है !

नील (येलेना के पास जाकर) : मैं तो चल रहा हूं ! ओह, मैं ही हड़प जाऊंगा आपके उस पूरे केक को ! भूख के मारे मेरी जान निकली जा रही है और

ये लोग जान-बूझकर मुझे खाने को कुछ भी नहीं दे रहे! न जाने,, क्यों मुझसे बिगड़े हुए हैं...

येलेना : शायद ज़बान की वजह से... आओ चलें, तत्याना!

तत्याना : मैं ज़रा मां से कह आऊं... (**बाहर जाती है**)

नील : आपको यह कैसे मालूम हुआ कि आज मैंने बुड्ढे को अपनी ज़बान दिखायी थी?

येलेना : क्या? मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं! क्या हुआ था?

नील : तो मैं नहीं बताऊंगा... आप अपने केक के बारे में बतायें, यही ज़्यादा अच्छा होगा।

येलेना : मैं ख़ुद मालूम कर लूंगी! रही केक की बात... तो मुझे केक बनाना सिखाया एक क़ैदी ने। उसे ख़ून करने के लिए सज़ा दी गयी। मेरे पति ने उसे रसोईघर में मेरी मदद करने की इजाज़त दे दी थी। बेचारा दुबला-पतला, बड़ा मरियल-सा था...

नील : कौन? आपका पति?

येलेना : जनाब! मेरे पति का क़द तो छः फ़ुट पांच इंच था...

नील : बस, इतना छोटा-सा था?

येलेना : ख़ामोश! बड़े तेज़ हैं! और उसकी मूंछें – ये थीं (**उंगलियों से संकेत करती है**), दोनों तरफ़ छः-छः इंच...

नील : पहली बार सुन रहा हूं कि किसी आदमी की ख़ूबियों को इंचों में नापा जाये।

येलेना: हाय! मूंछों के अलावा उसमें और कोई ख़ूबी तो थी ही नहीं!

नील: बड़े अफ़सोस की बात है! केक की चर्चा जारी रखिये...

येलेना: वह क़ैदी बावर्ची था... और उसने अपनी बीवी की हत्या कर डाली थी। मगर मुझे वह बेहद पसन्द था। उसने अपनी बीवी का ख़ून तो कुछ ऐसे ही कर दिया...

नील: ऐसे ही... समझता हूं!

येलेना: जाइये यहां से! मैं आपसे बात नहीं करना चाहती!

(तत्याना दरवाज़े में दिखाई देती है और इन्हें देखती है। प्योत्र दूसरे दरवाज़े से प्रवेश करता है)

हलो, वकील साहब! मेरे यहां चलिये... केक खाने के लिए!..

प्योत्र: ख़ुशी से चलने को तैयार हूं!

नील: आज इसके पापा ने गुस्ताख़ी के लिए इसकी ख़ूब ख़बर ली है...

प्योत्र: ओह, हटाओ भी...

नील: मुझे हैरानी हो रही है कि इजाज़त के बिना वह आपके यहां जाने की हिम्मत ही कैसे कर रहा है?

प्योत्र: **(अपने माता-पिता के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ घबराहट से देखते हुए)**: चलना है, तो चलिये!

तत्याना: आप लोग जायें, मैं अभी आ रही हूं...

(नील, प्योत्र और येलेना बाहर जाते हैं। तत्याना अपने कमरे की ओर जाती है। इसी वक़्त बुज़ुर्गों के कमरे से अकुलीना इवानोव्ना की आवाज़ सुनाई देती है)

अकुलीना इवानोव्ना : तत्याना !

तत्याना (रुकती है और कंधे झटककर अपनी बेचैनी प्रकट करती है) : क्या है, अम्मां ?

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े में से) : इधर आओ ! **(लगभग कानाफूसी करते हुए)** क्या प्योत्र फिर ऊपर गया है ?

तत्याना : हां... और मैं भी जा रही हूं...

अकुलीना इवानोव्ना : हाय, फूट गयी तक़दीर, फूट गयी ! वह पेत्या को अपने जाल में ज़रूर फंसा लेगी ! मैं यह महसूस करती हूं !.. उसे समझाओ, तत्याना। उसे बताओ कि वह उसके लायक़ नहीं है... तीन हज़ार रूबल और ख़सम की पेंशन के अलावा उसके पास एक कौड़ी भी नहीं है... मैं यह अच्छी तरह जानती हूं !

तत्याना : अम्मां, इस पचड़े में नहीं पड़िये। येलेना प्योत्र में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं लेती है...

अकुलीना इवानोव्ना : ऐसा वह जान-बूझकर करती है ! मैं कहती हूं, जान-बूझकर ! वह उसके दिल की आग को तेज़ करना चाहती है... वह उसमें दिलचस्पी न लेने का ढोंग करती है... मगर यों हर वक़्त उस पर ऐसे आंखें जमाये रहती है, जैसे बिल्ली चूहे पर...

तत्याना : ओह ! मेरी बला से ! मुझे क्या लेना-देना है ? अगर चाहती हैं तो ख़ुद उससे बात कर लें...

इस मामले में मुझे नहीं घसीटिये! क्या आप इतना भी नहीं समझतीं कि मैं थक गयी हूं?

अकुलीना इवानोव्ना : मैंने यह तो नहीं कहा कि तुम अभी जाकर उससे बात करो... तुम लेट जाओ, थोड़ा आराम कर लो...

तत्याना (लगभग चीख़ते हुए) : मेरे आराम करने की जगह ही कहां है! मैं हमेशा के लिए थक गयी हूं... ज़िन्दगी भर के लिए थक गयी हूं! समझती हैं? ज़िन्दगी भर के लिए... आपसे थक गयी हूं सभी चीज़ों से तंग आ गयी हूं! **(जल्दी से ड्योढ़ी में चली जाती है)**

(अकुलीना इवानोव्ना एक क़दम बढ़ाती है, मानो उसे रोकना चाहती हो। लेकिन फिर हाथ झटककर अपनी निराशा प्रकट करते हुए हतप्रभ-सी खड़ी रह जाती है)

बेस्सेमेनोव (दरवाज़े में से झांकते हुए) : फिर उलझीं?

अकुलीना इवानोव्ना (चौंककर) : नहीं, कोई ऐसी बात नहीं... योंही...

बेस्सेमेनोव : योंही क्या? उसने तुम्हारे सामने ज़बान चलाने की हिम्मत की है?

अकुलीना इवानोव्ना (जल्दी से) : नहीं, तो, प्योत्र के पिता! तुमको यह वहम कैसे हो गया? मैंने तो सिर्फ़ इतना कहा था कि... खाना खाने का वक़्त हो गया है! उसने कहा कि मैं खाना नहीं चाहती! मैंने कहा, क्यों नहीं चाहती? और उसने कहा...

बेस्सेमेनोव: तुम बिल्कुल झूठ बोल रही हो, तत्याना की मां!

अकुलीना इवानोव्ना: नहीं, सच कह रही हूं!

बेस्सेमेनोव: इनकी ख़ातिर तुम मेरे सामने कितना झूठ बोलती हो! ज़रा मुझसे नज़रें तो मिलाओ... नहीं मिला सकतीं? च-च-च!

(अकुलीना इवानोव्ना अपने पति के सामने सिर झुकाये खड़ी रहती है और वह भी चुपचाप खड़ा हुआ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता रहता है। फिर आह भरकर कहता है)

इन्हें पढ़ा-लिखाकर हमने बहुत बड़ी ग़लती की है...

अकुलीना इवानोव्ना (धीमे से): यह बात नहीं है, प्योत्र के पिता! अब तो अनपढ़ और सीधे-सादे लोग भी इनसे कुछ अच्छे नहीं हैं...

बेस्सेमेनोव: बच्चों को अपने से ज़्यादा कभी कुछ नहीं देना चाहिए... सबसे ज़्यादा दुख की बात तो यह है कि मुझे इनमें किसी तरह की कोई ख़ास बात नज़र नहीं आती... कोई अनोखापन... इनसान में कुछ तो ऐसा होना चाहिए, जो दूसरों से अलग हो, जिससे उसकी पहचान हो सके... मगर इनकी अपनी कोई हस्ती ही नहीं! नील को ले लो... वह मुंहफट है... वह आवारा है। मगर – उसकी अपनी हस्ती है! वह ख़तरनाक है... मगर समझ में तो आता है... **(निःश्वास छोड़ता है)** जब मैं जवान था तो गिरजाघर के संगीत पर जान देता था... मुझे जंगलों में जाकर

खुमियां इकट्ठी करना बहुत पसन्द था ... लेकिन प्योत्र की क्या किसी भी चीज़ में दिलचस्पी है?

अकुलीना इवानोव्ना (डरते हुए आह भरकर): वह फिर ऊपर गया है, उसी के पास।

बेस्सेमेनोव: देखा! .. ज़रा ठहरो! मैं अभी उसको ... मज़ा चखाता हूं!

(तेतेरेव प्रवेश करता है। उसकी आंखों में नींद की ख़ुमारी है और वह पहले से कहीं अधिक दुखी दिखाई देता है। उसके एक हाथ में वोदका की बोतल और दूसरे में गिलास है)

फिर इसी फेर में पड़ गये, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच?

तेतेरेव: कल की प्रार्थना समाप्त होने के बाद से ...

बेस्सेमेनोव: किस कारण?

तेतेरेव: कारण तो कोई नहीं। खाना कब मिलेगा?

अकुलीना इवानोव्ना: अभी मेज़ लगा देती हूं ... **(मेज़ लगाना शुरू करती है)**

बेस्सेमेनोव: तुम ख़ासे समझदार आदमी हो, तेरेन्ती ... लेकिन शराब तुम्हें तबाह किये दे रही है! ..

तेतेरेव: तुम झूठ बोल रहे हो, मेरे सम्मानित कूपमंडूक! शराब नहीं, मुझे मेरी फ़ालतू ताक़त तबाह कर रही है ... ज़रूरत से ज़्यादा ताक़त ... वह कर रही है मुझे तबाह ...

बेस्सेमेनोव: फ़ालतू ताक़त जैसी कोई चीज़ नहीं होती ...

तेतेरेव : तुम फिर ग़लत कह रहे हो! आज के ज़माने में ताक़त की ज़रूरत नहीं है। ज़रूरत है चालबाज़ी और चालाकी की... सांप जैसी लोच होनी चाहिए... (**आस्तीन ऊपर चढ़ाकर घूंसा दिखाता है**) इसे देखो – अगर मैं घूंसा मारूं तो मेज़ का भुरकस निकल जाये। मगर ऐसे मज़बूत हाथों से कुछ भी तो नहीं किया जा सकता इस ज़िन्दगी में। मैं इनसे लकड़ियां चीर सकता हूं, मगर मिसाल के तौर पर लिखने की कोशिश बेकार होगी... मैं क्या करूं अपनी इस ताक़त का? मुझे लगता है कि इसका एक ही इस्तेमाल हो सकता है – मेले-ठेले में जाऊं और करतब दिखाऊं – वज़न उठाऊं, लोहे की ज़ंजीरें तोड़ूं और ऐसे ही कुछ दूसरे कमाल करूं। लेकिन कभी मैं विद्यार्थी था... विद्यार्थी भी होनहार... इसी के लिए मुझे धार्मिक पाठशाला से निकाल दिया गया... अब मैं... अब मैं यह नहीं चाहता कि तमाशा बनूं, कि तुम जैसे लोग चैन से मेरे करतब देखते हुए खुश हों। मैं यही चाहता हूं कि मुझे देखकर सभी बेचैन और परेशान हो जायें...

बेस्सेमेनोव : तुम बहुत बुरे दिल के आदमी हो...

तेतेरेव : मुझ जैसे लम्बे-तड़ंगे जानवर दिल के बुरे नहीं होते। जानवरों की विद्या की तुम्हें जानकारी नहीं है। क़ुदरत बहुत चालाक है। अगर लम्बा-तड़ंगा होने के साथ-साथ मैं क्रोधी भी होता तो तुम मेरे पंजे से निकलकर भाग ही कहां पाते?

बेस्सेमेनोव : मुझे कहीं भागने की ज़रूरत ही नहीं है... मैं तो अपने घर में हूं।

अकुलीना इवानोव्ना : तुम चुप हो जाओ, प्योत्र के पिता।

तेतेरेव : बिल्कुल ठीक ! तुम अपने घर में हो। तमाम दुनिया ही तुम्हारा घर है। तुम इसके मालिक हो। यही वजह है कि इसमें मेरे लिए कोई जगह नहीं है, कूपमंडूक !

बेस्सेमेनोव : जिस ढंग से तुम जी रहे हो, इसमें क्या तुक है?.. कोई तुक नहीं। अगर तुम चाहते तो...

तेतेरेव : मैं चाहता ही नहीं हूं, क्योंकि मैं हर चीज़ से नफ़रत करता हूं। तुम जैसों के लिए काम करने के बजाय मैं शराब में डूब जाना और इस तरह मिट जाना कहीं बेहतर समझता हूं। क्या तुम, कूपमंडूक, मुझे होश-हवास में, ढंग के कपड़े पहने और ग़ुलामों जैसे अन्दाज़ में चापलूसी की बातें करते हुए देखने की कल्पना कर सकते हो? नहीं, ऐसी कल्पना नहीं कर सकते...

(पोल्या कमरे में आती है, तेतेरेव को देखकर लौटना चाहती है। उसे देखकर तेतेरेव की बाछें खिल जाती हैं और वह सिर झुकाकर उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाता है)

नमस्ते पोल्या, डरिये नहीं... मैं अब एक भी शब्द ज़बान से नहीं निकालूंगा... क्योंकि सब कुछ जानता हूं !

पोल्या (घबराकर) : क्या जानते हैं?.. आप कुछ भी नहीं जान सकते...

अकुलीना इवानोव्ना : अरे, तुम आ गयीं ! जाओ,

जाकर स्तेपानीदा से कहो कि शोरबा ले आये...

बेस्सेमेनोव : कब का वक़्त हो चुका (**तेतेरेव से**) मुझे तुम्हारा विचार प्रकट करने का ढंग बहुत पसन्द है... ख़ास तौर पर अपने बारे में तो तुम कमाल ही करते हो। देखने में तो बड़े भयानक लगते हो! मगर जैसे ही तुम अपने ख़्याल ज़ाहिर करना शुरू करते हो, तुम्हारी कमज़ोरियां सामने आने लगती हैं... (**वह मजा लेते हुए धीरे-धीरे हंसता है**)

तेतेरेव : तुम भी मुझे पसन्द हो, क्योंकि तुम कुछ अक़्लमन्द हो और कुछ बेवक़ूफ़ भी, कुछ भले और कुछ बुरे भी, ईमानदार और बेईमान भी, बहादुर और बुज़दिल भी... मतलब यह कि नमूने के कूपमंडूक हो! नीचता के तो तुम पूरे अवतार हो... यह वह ताक़त है जिसके सामने बड़े-बड़े बहादुरों के छक्के छूट जाते हैं जो हमेशा ज़िन्दा रहती है और हमेशा जीतती है... तो आओ, शोरबे के पहले पियें, मेरे सम्मानित छछून्दर!

बेस्सेमेनोव : शोरबा आने पर पी लेंगे। हां, यह तो बताओ कि तुम लोगों को काटने को क्यों दौड़ा करते हो?.. किसी कारण के बिना दूसरों के दिल क्यों दुखाते हो?.. तुम्हें नम्रता से, ढंग से अपनी बात कहनी चाहिए ताकि लोगों को सुनकर ख़ुशी हो... अगर तुम दूसरों के दिलों पर शब्दों की छुरियां चलाओगे तो कोई तुम्हारी बात नहीं सुनेगा और जो सुनेगा – बेवक़ूफ़ होगा!

नील (प्रवेश करते हुए) : पोल्या आ गयी?

तेतेरेव (थोड़ा हंसकर) : आ गयी ...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ गयी उसकी ?

नील (अकुलीना इवानोव्ना के प्रश्न की ओर ध्यान न देकर, तेतेरेव से) : फिर से चालू हो गये ? पिछले कुछ दिनों से मामला ख़ूब ज़ोरों पर है ...

तेतेरेव : लोगों का ख़ून पीने से वोदका पीना कहीं अच्छा है ... ख़ास तौर पर जबकि लोगों का ख़ून पतला, सफ़ेद और बेमज़ा हो गया है ... अच्छे और लाल ख़ून की बड़ी कमी हो गयी है – सारा चूसा जा चुका है ...

(स्तेपानीदा शोरबे का पतीला और पोल्या प्लेट में मांस लिये हुए आती हैं)

नील (पोल्या के पास जाकर) : कहो, क्या हाल है ? तुम्हारा जवाब तैयार है ?

पोल्या (बहुत धीमे से) : यहां, सबके सामने तो नहीं ...

नील : क्यों नहीं ? किसका डर है भला ?

बेस्सेमेनोव : किसे ?

नील : मुझे ... और इसे ...

अकुलीना इवानोव्ना : क्या मामला है ?

बेस्सेमेनोव : कुछ समझ में नहीं आ रहा ...

तेतेरेव (थोड़ा हंसकर) : मगर मैं सब समझता हूं ... **(वोदका गिलास में ढालकर पीने लगता है)**

बेस्सेमेनोव : क्या मामला है ? क्या बात है, पोल्या ?

पोल्या (घबराकर, धीरे से) : कुछ भी नहीं...

नील (मेज़ के पास बैठते हुए) : एक रहस्य है... एक बहुत बड़ा राज़!

बेस्सेमेनोव : अगर राज़ है तो किसी कोने में जाकर खुसुर-फुसुर करो, सबके सामने नहीं... यह तो दूसरों का ऐसे मज़ाक़ उड़ाना हुआ कि... आदमी अपना घर छोड़कर भाग जाये! इशारेबाज़ियां, खुसुर-फुसुर, तरह-तरह की तिकड़में... और हम बैठे हुए उल्लुओं की तरह मुंह ताकते रहें... नील, आख़िर तुम मुझे समझते क्या हो?

अकुलीना इवानोव्ना : सचमुच, नील, यह तो बहुत...

नील (शान्त भाव से) : आप मेरे मुंहबोले बाप हैं... लेकिन गुस्से में आने और तमाशा करने की कोई वजह नहीं है... कोई ख़ास बात तो हुई नहीं...

पोल्या (कुर्सी से उठते हुए) : नील वसील्येविच... नील ने... पिछली रात... मुझसे... मुझसे पूछा था...

बेस्सेमेनोव : क्या पूछा था तुमसे नील ने?.. बोलो भी?

नील (शान्त भाव से) : उसे डराने-धमकाने की कोशिश नहीं कीजिये... मैंने पूछा था कि क्या वह मुझसे शादी करने को राज़ी है?..

(बेस्सेमेनोव का वह हाथ, जिसमें चम्मच है, उठा का उठा रह जाता है। वह आश्चर्य से नील और पोल्या को घूरता है। अकुलीना इवानोव्ना पर भी जैसे गाज गिर जाती है। तेतेरेव पलक झपकाता हुआ शून्य में

देखता है। घुटने पर रखा हुआ उसका हाथ सहसा कांपता है। पोल्या सिर झुकाये खड़ी रहती है)

(बात जारी रखते हुए) : और इसने कहा था कि आज मुझे जवाब देगी... बस इतनी-सी बात है...

तेतेरेव (अपना हाथ हिलाकर) : सचमुच बहुत मामूली-सी बात है... क़िस्सा ख़त्म...

बेस्सेमेनोव : तो यह बात है... बेशक, बहुत मामूली-सी बात है! **(खीझकर)** और नये अन्दाज़ की... ज़माने की हवा के मुताबिक़! लेकिन ख़ैर!

अकुलीना इवानोव्ना : भगवान का डर-भय नहीं है तुम्हें! ज़रा भी डर नहीं रह गया! बिल्कुल सिर-फिरे हो तुम! कम से कम हमसे बात तो कर ली होती...

नील (दुखी होते हुए) : जाने किस कुत्ते ने काटा था मुझे, जो मैं इनसे यह कह बैठा!

बेस्सेमेनोव : तत्याना की मां, हटाओ इस बात को!.. हमें क्या मतलब है इस मामले से! खाना खाओ और चुप रहो। मैं भी ख़ामोश रहूंगा...

तेतेरेव (नशे में आते हुए) : मगर मैं बोलूंगा... वैसे, फ़िलहाल तो मैं भी चुप रहूंगा...

बेस्सेमेनोव : हां... सभी के लिए चुप रहना बेहतर होगा। फिर भी... नील, मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि तुमने मेरे एहसानों का बदला ख़ूब चुकाया है... तुम हमेशा छिपे-छिपे ही ऐसी हरकतें किया करते हो...

नील : आपके एहसानों का बदला मैंने अपना ख़ून-पसीना एक करके चुकाया है और आगे भी चुकाता रहूंगा। लेकिन मैं आपके इशारों पर नाचने को तैयार नहीं हूं। आप मेरी शादी उस बेवक़ूफ़ सेदोवा से सिर्फ़ इसलिए करना चाहते थे कि वह अपने साथ दस हज़ार रूबल का दहेज लायेगी। मगर मुझे उस लड़की का क्या अचार डालना है? पोल्या को मैं प्यार करता हूं ... बहुत अरसे से उसे प्यार करता हूं। इस बात को मैंने कभी किसी से नहीं छिपाया। मेरी ज़िन्दगी तो खुली किताब है और हमेशा ऐसी ही रहेगी। आप किसी भी चीज़ के लिए न तो मेरी लानत-मलामत कर सकते हैं और न बुरा मान सकते हैं।

बेस्सेमेनोव (संयम से) : तो यह बात है, यह बात है! बहुत अच्छी बात है ... हां, हां करो शादी। हम तुम्हारे आड़े नहीं आयेंगे। किस पूंजी के बल पर जीने का इरादा रखते हो? अगर यह कोई राज़ न हो तो इतना बता दो।

नील : हम दोनों काम करेंगे। मैं डिपो में जाकर काम करनेवाला हूं ... और इसे ... इसे भी कोई काम मिल जायेगा ... पहले की तरह हर महीने अब भी आपको मुझसे तीस रूबल मिलते रहेंगे।

बेस्सेमेनोव : देखेंगे। ज़बान हिलाने में क्या जाता है?..

नील : हुंडी लिखवा लीजिये ...

तेतेरेव : कूपमंडूक! इससे हुंडी लिखवा लो! लिखवा लो हुंडी!

बेस्सेमेनोव : तुम्हें इस मामले में टांग अड़ाने को किसने कहा है ...

अकुलीना इवानोव्ना : बड़ा आया है ... सलाह देनेवाला !

तेतेरेव : नहीं, हुंडी लिखवा लो ! मगर तुम ऐसा नहीं करोगे, क्योंकि तुम्हारी आत्मा धिक्कारती है, ऐसा कहने की हिम्मत नहीं कर सकोगे ... तुम ख़ुद ही इसे लिखकर दे दो, नील ! लिख दो कि मैं, नील, बक़लमख़ुद हर महीने इतनी रक़म देने का वादा करता हूं ...

बेस्सेमेनोव : मैं हुंडी लिखवा भी सकता हूं ... मुझे इसका हक़ भी है। यह दस बरस का था जब से मैंने इसे खिलाया-पिलाया और ओढ़ाया-पहनाया है ... इसे पाल-पोसकर बड़ा किया है — सत्ताईस बरस का ... हां ...

नील : क्या यह ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि हम अपना हिसाब इसी वक़्त नहीं, बाद में करें ?

बेस्सेमेनोव : बाद में भी किया जा सकता है। (**अचानक ग़ुस्से में आकर**) मगर एक बात याद रखना, नील ! आज से हम-तुम एक दूसरे के दुश्मन हैं ! आज का यह अपमान मैं कभी नहीं भूलूंगा, कभी नहीं ! इतना जान लो !

नील : कौनसा अपमान ? किस तरह मैंने आपका अपमान किया है ? आपने यह तो सोचा नहीं होगा कि मैं आपसे शादी करूंगा ?

बेस्सेमेनोव (बहुत ग़ुस्से में होने के कारण नील

की बात नहीं सुनता) : याद रखना! तुमने उसकी टोपी उछाली है, उसे अंगूठा दिखाया है, जिसने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया है... उसे एक किनारे रखकर तुम चोरी-चोरी फ़ैसले करते हो... पूछा तक भी नहीं... और तुम! तुम भीगी बिल्ली, बेचारी बेज़बान! ऐसे सिर झुकाये हो? बोलती क्यों नहीं? तुम्हारे पास कुछ नहीं कहने को? जानती हो, नाकों चने चबवा सकता हूं...

नील (उछलकर खड़ा हो जाता है) : कुछ भी नाकों चने नहीं चबवा सकते आप इसको! चीख़ना-चिल्लाना बन्द कीजिये! मैं भी इस घर का मालिक हूं। मैं दस बरस से अपने गाढ़े पसीने की कमाई आपको दे रहा हूं। इन सब चीज़ों में **(फ़र्श पर धम से पांव पटकता है और हाथ से सभी ओर संकेत करता है)** मेरा कुछ कम पैसा नहीं लगा है! जो मेहनत करता है, वही मालिक होता है...

(नील के बोलते समय पोल्या उठकर बाहर चली जाती है। दरवाज़े में प्योत्र और तत्याना सामने आते हैं। प्योत्र कमरे में झांककर ग़ायब हो जाता है। तत्याना दरवाज़े का सहारा लेकर वहीं खड़ी रहती है)

बेस्सेमेनोव (आंखें फाड़ फाड़कर नील को घूरते हुए) : क्य...ा? तुम मालिक हो? तुम?

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता, चलिये यहां से! चलिये यहां से! **(नील को मुक्का दिखाते हुए)** ज़रा देखना तुम, नील के बच्चे! **(आंसू भरकर)**

ज़रा देखना... तुम्हें भी मज़ा मिल जायेगा!

नील (दृढ़ता से): हां, मालिक वही होता है जो मेहनत करता है... यह मत भूलियेगा!

अकुलीना इवानोव्ना (पति को अपने पीछे खींचते हुए): चलो यहां से, प्योत्र के पिता! अब चलो भी! भूल जाओ इन्हें!.. कुछ नहीं बोलो, चीख़ो नहीं! कौन हमारी बात सुनता है?

बेस्सेमेनोव (अपनी पत्नी की बात मानते हुए): अच्छी बात है! बनो... मालिक! हम भी देखेंगे... कौन है मालिक! हम भी देखेंगे! **(बेस्सेमेनोव और उसकी पत्नी अपने कमरे में जाते हैं)**

(नील बचैनी से इधर-उधर घूमता है। कहीं दूर गली में बाजे की आवाज़ सुनाई देती है)

नील: आख़िर मैंने घुटाला कर ही दिया! मैं भी कैसा उल्लू हूं—जाने किस शैतान ने मुझे उससे पूछने को उकसाया... लाख कोशिश करूं, मेरे पेट में कभी कोई बात पचती ही नहीं... मुंह से निकल ही जाती है! ओह, लानत है मुझ पर...

तेतेरेव: सब ठीक है! बहुत दिलचस्प रहा। मैंने तो बड़े मज़े से यह सब देखा-सुना। सचमुच बहुत अच्छा था, बहुत अच्छा था! कुछ फ़िक्र मत करो, मेरे नौजवान... तुम बहादुरी दिखाना ख़ूब जानते हो, और आजकल के ज़माने में बहादुरों की बड़ी ज़रूरत है... बहुत ही ज़रूरत है! हमारे ज़माने में लोगों को दो हिस्सों में बांटा जाना चाहिए—एक तो हैं

बहादुर – यानी बेवक़ूफ़ और दूसरे हैं मक्कार – यानी समझदार ...

नील: मैंने पोल्या को इस घिनौने तमाशे में क्यों घसीट लिया? डर गयी होगी बेचारी ... नहीं, वह डर जानेवाली नहीं है! शायद नाराज़ हो गई होगी ...

(पोल्या का नाम सुनकर दरवाज़े में खड़ी हुई तत्याना हिलती-डुलती है। बाजे की आवाज़ बन्द हो जाती है)

तेतेरेव: लोगों को बड़ी आसानी से बेवक़ूफ़ों और कमीनों में बांटा जा सकता है। दुनिया कमीनों से भरी पड़ी है। इनके दिमाग़ जानवरों के दिमाग़ों की तरह हैं। ये लातों के भूत है, सिर्फ़ ताक़त की सचाई के सामने ही झुकना जानते हैं ... वह ताक़त नहीं जो मुझमें है, वह ताक़त नहीं जो मेरी छाती और मेरे मज़बूत बाज़ू में है बल्कि मक्कारी की ताक़त के सामने ... मक्कारी ही दरिन्दे की अक़्ल होती है।

नील (तेतेरेव की बात न सुनते हुए): अब हमें जल्दी ही शादी करनी होगी ... हम ऐसा ही करेंगे ... उसने अभी तक मुझे जवाब नहीं दिया, मगर मैं जानता हूं कि मेरी उस प्यारी बुलबुल का ... उसका क्या जवाब होगा ... कितनी घृणा करता हूं मैं इस आदमी से ... इस घर से ... यहां की गली-सड़ी ज़िन्दगी से! यहां सभी ... बड़े बेढंगे लोग हैं! इनमें से कोई यह अनुभव नहीं करता कि इन्होंने ख़ुद अपनी ज़िन्दगी को बरबाद कर रखा है, छोटी-छोटी बातों से इसका हुलिया बिगाड़ दिया है ... इसे एक जेलख़ाना बना

रखा है, एक मुसीबत, एक अभिशाप में बदल डाला है... कैसे ये इसे बिगाड़ने में कामयाब हो जाते हैं? यह मेरी समझ में नहीं आता! लेकिन वे लोग मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाते जो ज़िन्दगी का रंग-रूप बिगाड़ते हैं...

(तत्याना एक क़दम बढ़ाती है, रुक जाती है। फिर दबे पांव कोने में पड़े हुए सन्दूक़ की तरफ़ जाकर उस पर बैठ जाती है। वह झुकी हुई है, छोटी-सी और दयनीय हो गयी है)

तेतेरेव : सिर्फ़ बेवक़ूफ़ ही ज़िन्दगी को रंगीन बनाने की बात सोचते हैं। और ऐसे सिरफिरों की गिनती बहुत नहीं है। वे कुछ ऐसा खोज लेने के फेर में रहते हैं जिसकी उन्हें ज़रूरत नहीं होती, सिर्फ़ उन्हें ही ज़रूरत नहीं होती... वे तमाम दुनिया को ख़ुश देखने के ख़्याली घोड़े दौड़ाया करते हैं, ऐसी ही ऊट-पटांग बातों में उलझे रहते हैं। वे दुनिया के सार को जानने-समझने के फेर में पड़े रहते हैं। मतलब यह कि बेव-क़ूफ़ियां करते हैं...

नील (विचारों में खोया-सा) : हां, बेवक़ूफ़ियां! मैं इस फ़न का उस्ताद हूं... वह मुझसे अधिक समझ-दार है... वह भी ज़िन्दगी को प्यार करती है, मगर होशियारी और समझदारी से... जानते हो, हम दोनों की बहुत अच्छी निभेगी! हम दोनों ही दिलेर हैं... अगर हमें किसी चीज़ की धुन सवार हो जाती है, तो हम उसे हासिल करके ही दम लेते हैं!.. हां,

हम उसे हासिल करके ही दम लेते हैं... वह तो जैसे हुमकते बच्चे जैसी है... (**हंसता है**) ख़ूब गुज़रेगी हम दोनों की !

तेतेरेव : बेवक़ूफ़ ही ज़िन्दगी भर यह सोचता रह सकता है कि शीशा पारदर्शी क्यों है, मगर कमीना उसी शीशे की बोतल बना लेता है...

(**बाहर फिर से बाजा बजने लगता है। इस बार बहुत समीप, लगभग खिड़की के नीचे**)

नील : तुम हमेशा बोतलों के बारे में ही सोचा करते हो !

तेतेरेव : नहीं, इस वक़्त बेवक़ूफ़ों के बारे में सोच रहा हूं। बेवक़ूफ़ ही यह जानने के चक्कर में रहता है कि आग जलने से पहले कहां होती है और बुझने के बाद कहां जाती है। मगर कमीना-मक्कार उसके पास बैठकर उसकी गर्मी का मज़ा लेता रहता है।

नील (सोच में डूबते हुए) : हां, गर्मी का मज़ा लेता रहता है...

तेतेरेव : सच तो यह है कि वे दोनों ही बेवक़ूफ़ हैं। मगर एक की बेवक़ूफ़ी में ख़ूबसूरती और बहादुरी होती है और दूसरे की बेवक़ूफ़ी ठस और घटिया। बेशक दोनों के रास्ते अलग, मगर मंज़िल एक होती है। दोनों ही क़ब्र की तरफ़ जाते हैं, क़ब्र की तरफ़ मेरे दोस्त... (**वह हंसता है**)

(**तत्याना धीरे से सिर हिलाती है**)

नील (तेतेरेव से) : तुम्हें क्या हुआ है ?

तेतेरेव : हंस रहा हूं ... ज़िन्दा रह जानेवाले बेवक़ूफ़ अपने मुर्दा भाई को देखकर यह पूछते हैं कि वह कहां चला गया ? मगर कमीने चट से उसके माल को डकार जाते हैं, मज़े से खाते-पीते, मौज करते हुए सुखी ज़िन्दगी बिताते हैं ... **(हंसता है)**

नील : खूब चढ़ा रखी है तुमने ... अपने कमरे में क्यों नहीं चले जाते ?

तेतेरेव : बताओ – वह है कहां ?

नील : बहुत बनो नहीं ! कहो, तो मैं पहुंचा दूं ?

तेतेरेव : तुम मुझे नहीं पहुंचा सकते, मेरे भाई। न मैं मुजरिम हूं, न किसी को मुजरिम मानता हूं। मैं अपनी जगह खुद ही हूं। मैं जुर्म का जीता-जागता सबूत हूं ! ज़िन्दगी तबाह हो चुकी है ! तंग लिबास की तरह सिली हुई है यह ... माप के मुताबिक़ नहीं। टुटपुंजियों ने काट-काटकर इसे और भी छोटा कर डाला है। अब इसमें दम घुटता है ... और मैं हूं इस बात का जीता-जागता सबूत कि इस दुनिया में आदमी के ज़िन्दा रहने की न कोई जगह है, न कोई वजह है और न कोई मक़सद है ...

नील : अब चलो, चलो भी !

तेतेरेव : तुम मुझे छोड़ दो ! तुम सोचते हो कि मैं गिर पड़ूंगा ? मैं तो कभी का गिर चुका हूं बेवक़ूफ़ ! .. कभी का ! वैसे मैंने सोचा था कि मैं फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊंगा कि तुम पास से गुज़रे और तुमने अनजाने ही, जान-बूझकर नहीं, मुझे फिर चारों

शाने चित कर दिया! ख़ैर, कोई बात नहीं, तुम बढ़ते जाओ! बढ़ते जाओ, मैं शिकायत नहीं कर रहा हूं... तुम मज़बूत हो, तुम्हें हर जगह, हर तरह से जाने का हक़ हासिल है... मैं तो गिर चुका हूं, तुम्हें आगे बढ़ते देखकर तुम्हारी तारीफ़ करता हूं— बढ़ते जाओ!

नील : यह तुम क्या बकबक कर रहे हो? तुम्हारी बातें हैं तो दिलचस्प, मगर इनका कोई सिर-पैर मेरी समझ में नहीं आ रहा...

तेतेरेव : और समझो भी नहीं! इसकी ज़रूरत नहीं! कुछ चीज़ों को न समझना ही अच्छा होता है, क्योंकि उन्हें समझने में कोई तुक नहीं होती। तुम अपने रास्ते चलते जाओ, चलते जाओ!

नील : अच्छी बात है, मैं चल दिया। (**कोने में बिल्कुल सिकुड़ी हुई तत्याना को देखे बिना ड्योढ़ी की तरफ़ चला जाता है**)

तेतेरेव (नील की ओर सिर झुकाकर) : तुम्हारे लिए दुआ करता हूं, लुटेरे! अनजाने ही तुमने मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी किरण भी लूट ली... ख़ैर, वह भी भाड़ में जाये! (**वह मेज़ की तरफ़ जाता है, जहां उसने अपनी बोतल रख दी थी, और जाते हुए अचानक तत्याना को देखता है**) यह कौन है?

तत्याना (धीमे से) : मैं...

(**बाजे की आवाज़ सहसा बन्द हो जाती है**)

तेतेरेव : आप ? हुंह ... और मैंने सोचा, मुझे ऐसा लगा ...

तत्याना : नहीं, यह मैं हूं ...

तेतेरेव : समझा ... मगर ... आप क्यों ? आप यहां किसलिए हैं ?

तत्याना (धीमे, किन्तु साफ़ और स्पष्ट ढंग से) : इसलिए कि मेरे ज़िन्दा रहने की न कोई जगह है, न कोई वजह है और न कोई मक़सद ...

(तेतेरेव धीरे-धीरे और चुपचाप उसके पास जाता है)

मैं नहीं जानती कि मैं क्यों इतनी थकी हुई हूं, क्यों इतनी ऊब अनुभव करती हूं ?.. लेकिन भयानकता की हद तक ऊब महसूस करती हूं ! मैं सिर्फ़ अट्ठाईस बरस की हूं ... मुझे शर्म आती है, मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि मुझे अपने को इतनी कमज़ोर, इतनी तुच्छ महसूस करते हुए बेहद शर्म आती है ... मेरी आत्मा बिल्कुल खोखली हो गयी है ... उसमें सब कुछ सूख गया है, जलकर राख हो गया है ... मैं यह अनुभव करती हूं और मुझे इससे दुख होता है ... मुझे यह पता तक न चला कि यह सब हुआ कैसे ? किस तरह खोखलेपन ने मेरी आत्मा में अपनी जड़ जमा ली ?.. मगर मैं यह सब कुछ आपसे क्यों कह रही हूं ?

तेतेरेव : मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूं ... बहुत पिये हुए हूं ... मेरे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा ...

तत्याना : जैसे मैं चाहती हूं, वैसे कोई भी मुझसे

बात नहीं करता ... मैं कितना चाहती थी मुझे आशा थी ... कि वह मुझसे बात करेगा मैं बहुत अरसे तक चुपचाप इन्तज़ार करती रही। इसी बीच यह ज़िन्दगी ... ये झगड़े, हर दिन की चख़-चख़, ये छोटी और कमीनी बातें, घटियापन और घुटन – ये सभी चीज़ें आख़िर मुझे ले डूबीं ... धीरे-धीरे, अनजाने ही इन्होंने मुझे कुचल डाला ... अब मुझमें ज़िन्दा रहने की ताक़त नहीं रही ... अब तो मेरी निराशा-हताशा भी बेजान हो गयी है ... मैं डर गयी हूं ... अभी ... अचानक ही ... मैं बेहद डर गयी हूं ...

तेतेरेव (अपना सिर हिलाकर दरवाज़े की तरफ़ बढ़ जाता है और उसे खोलने के बाद बड़ी मुश्किल से भारी आवाज़ में कहता है) : इस घर पर गाज गिरे !.. लानत है इस घर पर ...

(तत्याना धीरे से अपने कमरे में चली जाती है। कुछ देर के लिए रंगमंच ख़ाली और उस पर सन्नाटा रहता है। पोल्या दबे क़दमों से कमरे में आती है और उसके पीछे-पीछे नील आता है। दोनों चुपचाप खिड़की के पास जाते हैं और वहां नील उसका हाथ पकड़कर धीमे स्वर में कहता है)

नील : आज जो भी हुआ, उसके लिए मुझे क्षमा करो ... मैंने बेवक़ूफ़ी और बेढंगेपन का सबूत दिया ... मैं जब कुछ कहना चाहता हूं, तो मुझसे चुप नहीं रहा जाता !

पोल्या (लगभग फुसफुसाते हुए) : कोई बात नहीं ...

अब किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता! मुझे उनकी परवाह ही क्या है? मेरे लिए सब बराबर है...

नील: मैं जानता हूं कि तुम मुझे प्यार करती हो... मैं यह देख रहा हूं... मैं तुमसे पूछ नहीं रहा हूं। तुम भी अजीब लड़की हो! कल मुझसे यह कहा: "मैं तुम्हें कल जवाब दूंगी, मुझे सोचना-समझना है।" हो न अजीब! सोचने-समझने की बात ही कौनसी है – तुम तो प्यार करती हो न?

पोल्या: हां, हां, करती हूं... एक अरसे से!..

(तत्याना दबे पांव अपने कमरे से बाहर आती है और परदे के पीछे छिपकर इनकी बातें सुनती है)

नील: खूब निभेगी हम दोनों की! तुम इतनी अच्छी साथी हो... तुम ग़रीबी से नहीं डरतीं... मुसीबतों की कलाई मरोड़ना जानती हो...

पोल्या (सरलता से): तुम साथ हो तो फिर डर किस बात का? यों तो मैं खुद भी किसी से नहीं डरती। मुझे ज़्यादा बोलना अच्छा नहीं लगता...

नील: अपनी आन पर मर मिटनेवाली भी... मज़बूत भी जिसे झुकाया नहीं जा सकता... मैं बहुत खुश हूं... मैं जानता था कि यह ऐसे ही होगा, फिर भी मैं कितना खुश हूं, कह नहीं सकता...

पोल्या: मैं भी यह सब पहले से जानती थी...

नील: सच? तुम भी जानती थीं? यह अच्छी बात है... कितना मज़ा है जीने में!.. सच मज़ा है, न?

पोल्या : हां, मज़ा है ... मेरे प्यारे, मेरे प्रियतम ...

नील : कितने प्यारे शब्द कहे हैं ये तुमने ... कितने अच्छे !

पोल्या : तुम तारीफ़ नहीं करो ... अब हमें चलना चाहिए ... चलना चाहिए ... कहीं कोई आ न जाये ...

नील : हमारी बला से !

पोल्या : नहीं, चलना चाहिए ... एक बार फिर प्यार करो !

(नील पोल्या का चुम्बन लेता है। इसके बाद वह उसकी बांहों से निकलकर तत्याना के पास से, किन्तु उसे देखे बिना भीतर भाग जाती है। उसके पीछे-पीछे मुस्कराता हुआ आनेवाला नील तत्याना को देख लेता है, हैरान होता है और ग़ुस्से में आकर वहीं ठहर जाता है। तत्याना बुझी-बुझी आंखों से चुपचाप उसे देखती है। उसके होंठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान है)

नील (घृणा से) : जासूसी हो रही है ? ताक-झांक की जा रही है ? शर्म करो ! .. **(वह जल्दी से बाहर चला जाता है)**

(तत्याना बुत बनी खड़ी रह जाती है। बाहर जाते वक़्त नील ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला छोड़ देता है। कमरे में बेस्सेमेनोव की कर्कश आवाज़ सुनाई देती है : "स्तेपानीदा ! यहां कोयले किसने गिराये हैं ? क्या दीदे फूटे गये हैं ? जल्दी से उठाओ इन्हें !")

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(सुबह का वक़्त। स्तेपानीदा फ़र्नीचर की झाड़-पोंछ कर रही है।)

अकुलीना इवानोव्ना (चाय के बर्तन धोती हुई कहती है) : आज कम चर्बीवाला मांस आ गया है। तुम ऐसा करो कि कल के भुने हुए मांस की जो चिक-नाई बच गयी हो, उसे शोरबे में डाल देना ... इससे शोरबा चर्बीवाला नज़र आने लगेगा ... सुन रही हो ?

स्तेपानीदा : सुन रही हूं ...

अकुलीना इवानोव्ना : मांस भूनते वक़्त घी की नदी ही नहीं बहा देना ... अभी बुधवार को ही तो मैंने ढाई सेर ख़रीदा था और कल जो नज़र डाली, तो देखा कि मुश्किल से आध सेर बाक़ी था ...

स्तेपानीदा : इसका मतलब है कि ख़र्च हो गया ...

अकुलीना इवानोव्ना : मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं ... तुमने डिब्बा भर तो अपने बालों की नज़र कर दिया होगा ...

स्तेपानीदा : नहीं, मालकिन, मैं तो अपने बालों में लैम्प का तेल लगाती हूं। यक़ीन न हो तो सूंघकर देख लें ?

अकुलीना इवानोव्ना : बस, बस, देख लिया सूंघकर।

(ख़ामोशी)

आज सुबह तत्याना ने तुम्हें कहां भेजा था ?

स्तेपानीदा : दवाइयों की दुकान पर अमोनिया स्पिरिट लाने के लिए... बोली : "बीस कोपेक का ख़रीद लाओ..."

अकुलीना इवानोव्ना : लगता है फिर से सिर में दर्द हो रहा है... (**आह भरती है**) वह हमेशा बीमार रहती है...

स्तेपानीदा : आप उसकी शादी कर दीजिये... तब उसकी सब बीमारियां दूर हो जायेंगी...

अकुलीना इवानोव्ना : आजकल बेटी का ब्याह करना कोई हंसी-मज़ाक़ नहीं है... पढ़ी-लिखी हो तो और भी टेढ़ा मामला हो जाता है...

स्तेपानीदा : बहुत-सा दहेज दे दीजिये और तब पढ़ी-लिखी से भी कोई ख़ुशी से ब्याह कर लेगा...

(अपने कमरे से प्योत्र यहां झांककर ग़ायब हो जाता है)

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी क़िस्मत में तो वह ख़ुशी का दिन देखना नहीं लिखा है... तत्याना शादी करना ही नहीं चाहती...

स्तेपानीदा (व्यंग्य से) : हां, हां, वह क्यों चाहेगी... अभी उसकी उम्र ही क्या है ?

अकुलीना इवानोव्ना : ओह-हो-हो... पिछली रात उस ऊपर वाली के यहां कौन-कौन आया था ?

स्तेपानीदा : वह मास्टर ... वह ... लाल बालोंवाला।

अकुलीना इवानोव्ना : वह, जिसकी बीवी उसे छोड़कर भाग गयी है?..

स्तेपानीदा : हां, हां, वही! और एक वह था... वह, दफ़्तर का बाबू ... मरियल-सा, पीले-पीले चेहरे-वाला ...

अकुलीना इवानोव्ना : हां, जानती हूं। वह, जिसने पीमेनोव सौदागर की भानजीजी से शादी की है ... उसे तो तपेदिक़ है ...

स्तेपानीदा : अरे, सच ... लगता तो ऐसा ही है ...

अकुलीना इवानोव्ना : हमारा गवैया भी वहां था?

स्तेपानीदा : वह भी था और प्योत्र वसील्येविच भी ... वह गवैया तो रात के लगभग दो बजे तक गला फाड़ता रहा ... सांड़ की तरह दहाड़ता रहा ...

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र कब लौटा था?

स्तेपानीदा : जब मैंने दरवाज़ा खोला तो भोर हो चुका था ...

अकुलीना इवानोव्ना : हे भगवान ...

प्योत्र (प्रवेश करते हुए) : स्तेपानीदा, जल्दी से अपना काम ख़त्म करो और चलती बनो ...

स्तेपानीदा : अभी ... मैं भी इसे जल्दी से ख़त्म करना चाहती हूं ...

प्योत्र : चाहती हो, तो ज़बान कम चलाओ और हाथ ज़्यादा हिलाओ ...

(स्तेपानीदा नाक फरफराती हुई बाहर चली जाती है)

अम्मां ! मैंने कितनी बार आपसे कहा है कि आप इससे बातें नहीं किया करें... आख़िर आप यह समझतीं क्यों नहीं कि बावर्चिन के साथ अपने घरेलू मामलों की चर्चा करना बहुत बुरी बात है ! और फिर उससे तरह-तरह की बातें पूछना। यह अच्छा नहीं !

अकुलीना इवानोव्ना (बुरा मानते हुए) : मैं किससे बात करूं और किससे नहीं, इसके लिए भी मुझे तुम्हारी इजाज़त लेनी होगी ? जब तुम मुझसे और अपने बाप से बात करने में अपनी हतक समझते हो तो नौकरानी से तो दो शब्द बोलने दो...

प्योत्र : मगर आप इतना क्यों नहीं समझतीं कि वह आपसे बहुत नीचे दर्जे की है ? निन्दा-चुग़ली के सिवा आप उससे और कुछ तो सुनने से रहीं !

अकुलीना इवानोव्ना : और तुमसे मुझे क्या सुनने को मिला है ? छः महीने हो गये तुम्हें घर आये हुए, मगर कभी एक घण्टा भी अपनी मां के पास बैठे हो ?.. मास्को के बारे में या किसी दूसरी चीज़ के बारे में कभी एक शब्द भी तो तुमने नहीं कहा...

प्योत्र : मगर सुनिये तो...

अकुलीना इवानोव्ना : और जब कभी बात करते भी हो तो सिर्फ़ दिल दुखाते हो... "वह ऐसे नहीं," "यह वैसे नहीं..." अपनी मां को इस तरह पाठ पढ़ाते हो, इस तरह डांटते-डपटते और उसकी ऐसी खिल्ली उड़ाते हो, जैसे वह कोई स्कूल में पढ़नेवाली छोकरी हो...

(प्योत्र हाथ झटककर ड्योढ़ी में चला जाता है। अकुलीना इवानोव्ना पीछे से कहती है)

देखो तो, कितनी बातें की हैं मां के साथ!.. **(वह सिसकती है और अपने पेशबन्द के छोर से आंखें पोंछती है)**

पेर्चीख़िन (एक पुरानी रूईदार जाकेट पहने हुए प्रवेश करता है। जाकेट जगह-जगह से फटी हुई है और उसमें से गंदी रूई बाहर झांक रही है। पेटी की जगह कमर पर रस्सी बंधी है। पैरों में छाल के चप्पल हैं और सिर पर समूर की टोपी है) ये टसुए किसलिए बहा रही हो? क्या प्योत्र कोई खरी-खोटी सुना गया? वह मेरे पास से अबाबील की तरह फुर से निकल गया... सलाम-दुआ भी नहीं की। मेरी पोल्या यहां है?

अकुलीना इवानोव्ना (आह भरकर) : रसोईघर में है। पत्तागोभी काट रही है।

पेर्चीख़िन : पंछियों का तरीक़ा बहुत बढ़िया है: बच्चों के पंख निकले और यह जा, वह जा... मां-बाप न कोई नसीहत देते हैं, न उपदेश... मेरे लिए दो घूंट चाय बच रही है क्या?

अकुलीना इवानोव्ना : शायद तुम अपनी ज़िन्दगी में भी पंछियों के इसी रंग-ढंग पर अमल करते हो?

पेर्चीख़िन : बिल्कुल, ऐसा ही करता हूं! और सचमुच बहुत अच्छा है यह! मेरे हाथ-पल्ले कुछ भी नहीं, और न मैं किसी के आड़े आता हूं... मानो धरती पर नहीं, हवा में जीता हूं।

अकुलीना इवानोव्ना (उपेक्षा से) : और कोई भी तुम्हारी दो कौड़ी की इज़्ज़त नहीं करता। यह लो चाय ... मगर यह ठण्डी और हल्की है ...

पेर्चीख़िन (गिलास को रोशनी के पास ले जाकर) : हां, तेज़ तो नहीं, लेकिन शुक्रिया कि गिलास खाली नहीं ... अगर तेज़ होती तो शायद यही सिर पर सवार हो बैठती ... रही इज़्ज़त की बात, तो इज़्ज़त न करने की मेहरबानी कीजिये ... मैं खुद भी किसी की इज़्ज़त नहीं करता ...

अकुलीना इवानोव्ना : किसे ज़रूरत है तुम्हारी इस इज़्ज़त की ? किसी को नहीं ...

पेर्चीख़िन : यह बहुत ख़ुशी की बात है ! .. मैं देखता हूं कि जो लोग धरती से अपनी रोटी पाते हैं, वे एक दूसरे के मुंह से निवाला निकालते हैं। मगर मेरी ख़ुराक तो आसमान से आती है ... स्वर्ग की चिड़ियां लाती हैं ... इसलिए मेरे मामले में कोई लूट-खसोट नहीं !

अकुलीना इवानोव्ना : क्या शादी जल्दी ही होने जा रही है ?

पेर्चीख़िन : किसकी ? मेरी ? वह कोयल जो मेरी बीवी बन सकती थी, अभी तक हमारे जंगलों में नहीं आई। आवारा कहीं की ! .. लगता है कि बहुत देर कर रही है ... उसके आने तक मैं ज़िन्दा नहीं रह पाऊंगा – चल बसूंगा ...

अकुलीना इवानोव्ना : यह बकवास बन्द करो। साफ़-साफ़ बताओ, कब शादी कर रहे हो ?

पेर्चीख़िन : किसकी ?

अकुलीना इवानोव्ना : बेटी की ! बन तो ऐसे रहे हो, जैसे कुछ जानते ही नहीं ... अरे, वाह !

पेर्चीख़िन : बेटी की ? जब भी वह चाहे ... मगर कोई दूल्हा भी तो हो ...

अकुलीना इवानोव्ना : क्या बहुत दिनों से उनमें यह आंख-मिचौनी चल रही थी ?

पेर्चीख़िन : कैसी आंख-मिचौनी ? किनमें ?

अकुलीना इवानोव्ना : तुम बनो नहीं, मसखरे कहीं के ! कम से कम तुम्हें तो उसने सब कुछ बताया होगा ...

पेर्चीख़िन : किस बारे में ?

अकुलीना इवानोव्ना : शादी के बारे में ...

पेर्चीख़िन : किसकी शादी के बारे में ?

अकुलीना इवानोव्ना : बेड़ा ग़र्क़ तुम्हारा ! कुछ तो शर्म करो ऐसे ढोंग करते हुए !

पेर्चीख़िन : सुनो ! तुम बिगड़ो नहीं ... साफ़-साफ़ बताओ कि क़िस्सा क्या है ?

अकुलीना इवानोव्ना : तुमसे तो बात करने को मन नहीं होता ...

पेर्चीख़िन : लेकिन बात तो तुम कर रही हो ... वह भी कितनी देर से और बेकार ...

अकुलीना इवानोव्ना (ईर्ष्या और रूखेपन से) : नील से पोल्या की शादी कब कर रहे हो ?

पेर्चीख़िन (हैरानी से उछलते हुए) : क्या ? नील से ? हो-हो !

अकुलीना इवानोव्ना : क्या सचमुच उसने तुम्हें

कुछ नहीं बताया? कैसा ज़माना आ गया है!.. अपने बाप तक से नहीं कहा ...

पेर्चीख़िन (प्रसन्न होकर): यह तुम क्या कह रही हो? मज़ाक़ कर रही हो न? नील? ओह, अच्छे-ख़ासे लंगूर हैं दोनों? सच? अरी, वाह री, पोल्या, तुमने तो पोल्का नाच का सा रंग बांध दिया! पोल्का का ही नहीं, उससे बढ़कर क्वाड्रिल नाच का ... तुम मेरा उल्लू तो नहीं बना रही हो? शैतान के चरख़े न हों तो! ख़ूब कमाल किया! मैं तो यह सोचे बैठा था कि नील तत्याना से शादी करेगा ... क़सम खाने को तैयार हूं! लग तो ऐसा ही रहा था ...

अकुलीना इवानोव्ना (बिगड़ते हुए): जैसे कि हम तत्याना की उससे शादी कर देते! ऐसे निकम्मे से ...

पेर्चीख़िन: नील निकम्मा? यह तुम क्या कहती हो! मेरी तो अगर दस बेटियां होतीं तो मैं आंखें मूंदकर सभी उसे सौंप देता! नील निकम्मा?.. वह तो अकेला ही सौ आदमियों का पेट भर सकता है। वह नील तो? हो-हो!

अकुलीना इवानोव्ना (व्यंग्यपूर्वक): देखती हूं कि नील का ससुर तो ख़ूब बढ़िया होगा! बहुत ही बांका!

पेर्चीख़िन: ससुर? हो-हो! यह ससुर न तो नील और न किसी दूसरे के लिए बोझ बनना चाहता है! समझीं! मेरी टांगें तो ख़ुशी के मारे नाचने को मचल रही हैं ... अब मैं एक परिन्दे की तरह आज़ाद हूं। अब तो ख़ूब मज़े से बीतेगी मेरी ज़िन्दगी! किसी को मेरी झलक भी नहीं मिलेगी ... बस, जंगल में जाकर

डेरा डाल लूंगा और—लो, ग़ायब हो गया पेर्चीख़िन! यह पोल्या भी ख़ूब लड़की है! कभी मैं सोचा करता था—मेरी इस बेटी का क्या होगा? यह ख़्याल आने पर मेरी आत्मा मुझे धिक्कारने लगती थी... उसे इस दुनिया में तो लाया, लेकिन इसके सिवा और कुछ नहीं कर सका!.. मगर अब... अब तो जिधर चाहूंगा, उधर ही चला जाऊंगा! जन्नत की चिड़िया की तलाश में सारी दुनिया की खाक छान मारूंगा!

अकुलीना इवानोव्ना : चले कैसे जाओगे! ख़ुशक़िस्मती से भी कोई दूर भागता है...

पेर्चीख़िन : ख़ुशक़िस्मती? मेरी ख़ुशक़िस्मती यही है कि यहां से चलता बनूं... और पोल्या तो सुखी रहेगी... ज़रूर सुखी रहेगी! नील के साथ? क्या इसमें भी कोई शक हो सकता है? कैसा तगड़ा, हंसमुख और सीधा-सादा है वह!.. मेरा तो दिमाग़ भी ख़ुशी से नाच रहा है... दिल में चिड़ियां चहचहा रही हैं! ओह, कितना ख़ुशक़िस्मत हूं मैं! (**नाचते हुए**) पोल्या ने नील को फांस लिया, बहुत ही बढ़िया काम किया... वाह, री, वाह। तूने बढ़िया काम किया!

बेस्सेमेनोव (प्रवेश करता है। वह कोट पहने है और हाथ में टोपी लिये हुए है) : फिर नशे में हो!

पेर्चीख़िन : ख़ुशी के नशे में हूं! सुना तुमने? पोल्या के बारे में? (**ख़ुशी से हंसता है**) वह नील से शादी करने जा रही है! क्यों, कैसी रही? मज़ा आ गया न?

बेस्सेमेनोव (कठोरता और रूखेपन से) : हमें

इससे कोई मतलब नहीं ... हम तो उससे अपनी कौड़ी-कौड़ी वसूल कर लेंगे ...

पेर्चीखिन : और मैं तो यही सोचता था कि नील तत्याना से शादी करेगा ...

बेस्सेमेनोव : क्या ?

पेर्चीखिन : क़सम खाकर कहता हूं ! क्योंकि साफ़ नज़र आ रहा था कि तत्याना उसे चाहती है ... और कैसे वह उसे देखती थी ... कुछ ऐसे, जानते हो न यह आंखों की निशानेबाज़ी कैसे होती है ... और फिर अचानक ही ...

बेस्सेमेनोव (गुस्से से, मगर शान्त रहते हुए) : मैं तुमसे यह कहना चाहता हूं, प्यारे ... बेशक तुम हो पाजी, लेकिन तुम्हें इतना तो समझना चाहिए कि किसी लड़की के बारे में ऐसी घटिया बातें कहना अच्छा नहीं। यह तो रही पहली बात ! **(आवाज़ ऊंची करते हुए)** अब आगे सुनो। तुम्हारी बेटी किसे और कैसे ताकती-झांकती थी, कौन उसे और कैसे घूरता था और वह किस क़िस्म की लड़की है, मैं इसका ज़िक्र नहीं करूंगा, सिर्फ़ इतना ही कहूंगा – अगर वह नील से शादी करती है, तो वह इससे ज़्यादा और किसी के लायक़ नहीं। क्योंकि उन दोनों की एक कौड़ी क़ीमत नहीं। बेशक मैंने उन दोनों पर बहुत एहसान किये हैं, मगर अब मैं उन पर थूकता हूं ! यह हुई दूसरी बात ! और अब आगे सुनो – चाहे तुम मेरे दूर के रिश्तेदार हो, मगर ज़रा अपनी सूरत तो देखो – क्या लगते हो ? बिल्कुल उठाईगीरे !

ऐसे हुलिये में तुम्हें किसने एक साफ़-सुथरे घर में आने की इजाज़त दी ... इन चिथड़ों में, इन गंवारू चप्पलों में, ऐसी बांकी सजधज में?

पेर्चीखिन : यह तुम्हें हो क्या गया है, वसीली वसील्येविच? यह तुम कह क्या रहे हो? क्या मैं पहली बार ऐसे हुलिये में यहां आया हूं?..

बेस्सेमेनोव : कितनी बार तुम यहां आये हो, मैंने इसकी गिनती नहीं की और न ऐसा करने का मेरा इरादा है। मगर एक बात जानता हूं – अगर तुम ऐसा हुलिया बनाकर यहां आते हो तो इसका यह मतलब है कि तुम इस घर के मालिक की ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते। मैं फिर कहता हूं – तुम हो क्या? भिखमंगे, एक उठाईगीरे, आवारा ... सुना तुमने? यह हुई तीसरी बात! और अब दफ़ा हो जाओ यहां से!

पेर्चीखिन (भौचक्का-सा) : वसीली वसील्येविच! किसलिए? क्या किया है मैंने?..

बेस्सेमेनोव : दफ़ा हो जाओ! बकवास बन्द करो ...

पेर्चीखिन : तुम होश में आओ! मैंने तुम्हारा कुछ भी तो नहीं बिगाड़ा ...

बेस्सेमेनोव : क्या कहा है मैंने?! निकल जाओ ... नहीं तो ...

पेर्चीखिन (बाहर जाते हुए तिरस्कार और खेद से) : शर्म करो, बुड्ढे! तरस आ रहा है मुझे तुम पर! तो विदा!

(बेस्सेमेनोव कंधों को सीधे करके चुपचाप भारी और दृढ़ क़दमों से कमरे में टहलता है। उसके चेहरे पर कठोरता और खिन्नता है। अकुलीना इवानोव्ना चाय के बर्तन धोते हुए सहमी नज़रों से पति को देखती जाती है। उसके हाथ कांप रहे हैं और वह कुछ बुद-बुदाती जा रही है)

बेस्सेमेनोव : यह तुम क्या बुदबुदा रही है? क्या कोई जादू-टोना कर रही हो?..

अकुलीना इवानोव्ना : भगवान का नाम ले रही हूं, प्योत्र के पिता... भगवान का...

बेस्सेमेनोव : लगता है कि... इस बार मैं मुखिया न हो सकूंगा। ऐसा ही लगता है... बुरा हो इन कमीनों का!

अकुलीना इवानोव्ना : यह तुम क्या कह रहे हो? हाय राम... यह मैं क्या सुन रही हूं!.. भला क्यों? हो सकता है कि...

बेस्सेमेनोव : क्या—हो सकता है? वह मिस्तरियों के संघ का चौधरी... वह फ़्योदोर दोसेकिन... वह मुखिया की कुर्सी पर नज़र लगाये बैठा है... कल का छोकरा! लौंडा!

अकुलीना इवानोव्ना : हो सकता है कि वह चुना ही न जाये... अभी से मन छोटा न करो...

बेस्सेमेनोव : वे उसे ही चुनेंगे... आसार बिल्कुल ऐसे ही हैं... आज जब मैं वहां पहुंचा तो वह बैठा अपना गाना गा रहा था, दून की हांक रहा था।

कह रहा था: "बहुत बुरा वक़्त आ गया है, हवा का रुख़ हमारे ख़िलाफ़ है, हमें मिल-जुलकर हर क़दम उठाना होगा, कारीगरों, दस्तकारों को मिलकर हर क़दम उठाना होगा, हर मुश्किल का समना करना होगा... अब तो फ़ैक्टरियां बनती जा रही हैं, हम कारीगरों के लिए अपनी एक-एक ईंट की मसजिद बनाना ठीक नहीं।" मैंने कहा: "इस सबके लिए यहूदी ज़िम्मेदार हैं! उन्हें लगाम लगानी चाहिए! हमें उनके ख़िलाफ़ गवर्नर से शिकायत करनी चाहिए – वे हम रूसियों को कहीं भी आगे नहीं बढ़ने देते। हमें गवर्नर से कहना चाहिए कि वे उन्हें शहर से चलता कर दें।"

(तत्याना धीरे से दरवाज़ा खोलती है और फिर दबे पांवों लड़खड़ाती हुई अपने कमरे में चली जाती है)

उसने अपनी शैतान जैसी मुस्कान के साथ पूछा: "मगर हम उन रूसियों का क्या करें जो यहूदियों से भी गये-बीते हैं?" और बड़ी सावधानी से शब्द चुनते हुए मुझे अपना निशाना बनाने लगा... मैंने ऐसे ज़ाहिर किया मानो कुछ न समझता होऊं, मगर यह महसूस कर रहा था कि उसका इशारा किसकी तरफ़ है। कमीना कहीं का! कुछ देर उसकी बातें सुनकर मैं दूसरी तरफ़ को टल गया... कोई बात नहीं बच्चू, मैंने सोचा – अगर तुम्हारा भुरता बनाकर न छोड़ूं, तब कहना... तभी चूल्हे बनानेवाला मिखाईल क्र्यूकोव मेरे पास आकर बोला: "लगता है कि मुखिया तो दोसेकिन को ही होना चाहिए..." इतना कहकर

उसने घबराते हुए मुंह फेर लिया। मुझसे आंखें मिलाने की हिम्मत न हुई उसे ... मेरा मन हुआ कि उसे कहूं: "अरे ओ, हरामी छोटे मुंह बड़ी बात करते हो, कुत्ते की दुम ..."

येलेना (प्रवेश करती है) : नमस्ते, वसीली वसील्येविच ! नमस्ते, अकुलीना इवानोव्ना ...

बेस्सेमेनोव (रूखेपन से) : ओह ... आप ?.. कहिये ... क्या बात है ?

येलेना : किराया लायी हूं ...

बेस्सेमेनोव (कुछ नरम होकर) : नेकी और पूछ-पूछ ... कितने पैसे हैं ? पचीस रूबल ... गलियारे की खिड़की के शीशों के चालीस कोपेक और आपकी नौकरानी ने कबाड़ख़ाने की जो चूल तोड़ दी थी, उसके लिए भी कुछ देना होगा ... शायद बीस कोपेक ...

येलेना (व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए) : हिसाब के मामले में आप ... बहुत पक्के हैं, मगर मेरे पास रेज़गारी नहीं है ... यह तीन रूबल का नोट लीजिये ...

अकुलीना इवानोव्ना : आपने कोयले का एक बोरा भी तो लिया था ... मेरा मतलब, आपकी नौकरानी ने।

बेस्सेमेनोव : उसके कितने पैसे हैं ?

अकुलीना इवानोव्ना : पैंतीस कोपेक ...

बेस्सेमेनोव : तो कुल मिलाकर हो गये पचानवे कोपेक ... बाक़ी यह लीजिये – दो रूबल पांच कोपेक ... रही हिसाब में पक्का होने की बात, तो आप सोलह आने सही हैं, देवी जी। सारी दुनिया ही हिसाब से

चल रही है। इस दुनिया के पहले दिन से ही सूरज ठीक वक़्त पर निकलता है और ठीक वक़्त पर छिपता है... आसमान का हिसाब-किताब इतना बढ़िया है तो धरती पर भी ऐसा होना चाहिए... अब आप अपने को ही ले लीजिये–हमेशा वक़्त पर किराया अदा कर देती हैं...

येलेना : मुझे किसी के क़र्ज़ तले रहना पसन्द नहीं...

बेस्सेमेनोव : यह बहुत अच्छी बात है! इसीलिए सब आप पर भरोसा करेंगे...

येलेना : अच्छा तो, मैं चल दी! नमस्ते...

बेस्सेमेनोव : नमस्ते। **(उसे जाते हुए देखता है और फिर कहता है)** कमबख़्त है तो बड़ी प्यारी! फिर भी मैं बहुत ख़ुशी से उसे अपने घर से निकाल बाहर करना चाहूंगा...

अकुलीना इवानोव्ना : यह तो बहुत अच्छा हो, प्योत्र के पिता...

बेस्सेमेनोव : मगर यह भी ध्यान में रखो... जब तक वह यहां है, हम इस पर नज़र रख सकते हैं। अगर वह कहीं दूसरी जगह चली जाती है तो प्योत्र वहां उसके पास चक्कर काटने लगेगा। हमारी नज़र से दूर होने पर तो वह और भी आसानी से उसे फांस लेगी... फिर तुम्हें यह भी न भूलना चाहिए कि वह हमेशा ठीक वक़्त पर किराया अदा कर देती है... टूट-फूट के लिए पैसे देने में भी कभी चूं नहीं करती... हां, प्योत्र को लेकर ज़रूर डर लगता है... बहुत ज़्यादा डर लगता है...

अकुलीना इवानोव्ना : मुमकिन है कि वह उससे शादी करने का इरादा न रखता हो। बस, योंही ज़रा ...

बेस्सेमेनोव : अगर हमें यह मालूम हो जाता, तो बात ही ख़त्म हो जाती, हमारे मन पर बड़ा बोझ न रहता। हम मज़े की नींद सो सकते ... चकलों में मारे-मारे फिरने के बजाय वह घर पर ही जी ख़ुश कर ले, यह कहीं ज़्यादा अच्छा है ...

(तत्याना के कमरे से खरखरी-सी कराह सुनाई देती है)

अकुलीना इवानोव्ना (धीमे से) : यह आवाज़ सुनी ?

बेस्सेमेनोव (धीमे से) : यह क्या है ?

अकुलीना इवानोव्ना (खुसुर-फुसुर करती है और बेचैनी से इधर-उधर देखती रहती है, मानो कुछ सुन रही हो) : यह आवाज़ शायद ड्योढ़ी से आयी है ...

बेस्सेमेनोव (ऊंची आवाज़ में) : शायद बिल्ली होगी ...

अकुलीना इवानोव्ना (झिझकते हुए) : प्योत्र के पिता ! मैं तुमसे ... कुछ कहना चाहती थी ...

बेस्सेमेनोव : तो कहो भी ...

अकुलीना इवानोव्ना : क्या पेर्चीख़िन के साथ आज तुम कुछ ज़्यादा ही बुरी तरह पेश नहीं आये ? वह तो किसी का कुछ बुरा नहीं करता ...

बेस्सेमेनोव : बुरा नहीं करता तो बुरा भी नहीं मानेगा ... अगर बुरा मान जायेगा तो भी हमारा कुछ नहीं जायेगा ... उसकी दोस्ती से हमारी शान थोड़े ही बढ़ती है ...

(कराहने की आवाज़ फिर से और पहले से अधिक ऊंची सुनाई देती है)

यह कौन कराह रहा है तत्याना की मां ?..

अकुलीना इवानोव्ना (घबराकर) : मैं नहीं जानती ... कौन हो सकता है ?.. कौन ?..

बेस्सेमेनोव (प्योत्र के कमरे की तरफ़ दौड़ते हुए) : यहां कोई है ? प्योत्र !

अकुलीना इवानोव्ना (बेहद डरी हुई सी उसके पीछे भागती है) : प्योत्र ! प्योत्र ... प्योत्र ...

तत्याना (खरखरी आवाज़ से पुकारती है) : मुझे बचाइये ... अम्मां ... मुझे बचाइये ... बचाइये ...

(बेस्सेमेनोव और अकुलीना इवानोव्ना प्योत्र के कमरे से तत्याना के कमरे की तरफ़ भागते हैं। दोनों चुप हैं। दरवाज़े पर वे मानो झिझकते हुए घड़ी भर को रुकते हैं। फिर दोनों एकसाथ दरवाज़े की तरफ़ लपकते हैं। उन्हें तत्याना की चीख़ें सुनाई देती हैं)

ओह, मेरा ... कलेजा जला जा रहा है ! बेहद दर्द हो रहा है ... पानी ! पानी दीजिये !.. मुझे बचाइये !..

अकुलीना इवानोव्ना (भागकर कमरे से बाहर आती है और ड्योढ़ी में खड़ी होकर चिल्लाने लगती

है) : भले लोगो, मदद करो ! मदद ! प्योत्र ...

(तत्याना के कमरे से बेस्सेमेनोव की घबरायी-सी आवाज़ सुनाई देती है – "क्या बात है बिटिया ?.. क्या हुआ ?.. क्या हो गया तुम्हें ... बिटिया ?")

तत्याना : पानी ... मेरी जान निकल रही है ... सब कुछ जला जा रहा है ... हे भगवान !

अकुलीना इवानोव्ना : जल्दी से आइये जल्दी से ... भले लोगो ...

बेस्सेमेनोव (कमरे के भीतर से) : भागकर जाओ ... डाक्टर को बुला लाओ ...

प्योत्र (भागकर आते हुए) : क्या हुआ ? क्या हो गया ?

अकुलीना इवानोव्ना (उसकी आस्तीन पकड़कर हांफते हुए) : तत्याना ... वह मर रही है ...

प्योत्र (अपने को छुड़ाते हुए) : मुझे छोड़िये ... छोड़ दीजिये ...

तेतेरेव (कोट पहनते हुए अन्दर आता है) : क्या हुआ ? क्या आग लग गयी ?

बेस्सेमेनोव : डाक्टर !.. जल्दी से डाक्टर को बुला लाओ, प्योत्र ... उसे पच्चीस रूबल दे देना !..

प्योत्र (तत्याना के कमरे से दौड़ता हुआ बाहर आता है और तेतेरेव से कहता है) : डाक्टर ! जल्दी से डाक्टर को लेकर आइये ... कहिये – ज़हर पी लिया है ... औरत ने ... जवान लड़की ने ... अमोनिया स्पिरिट ... जल्दी जाइये ! जल्दी से !

(तेतेरेव ड्योढ़ी की तरफ़ दौड़ता है)

स्तेपानीदा (भागकर भीतर आती है) : हे भगवान ... हे भगवान ...

तत्याना : प्योत्र ... मैं जली जा रही हूं ! मैं मर रही हूं !.. मैं जीना चाहती हूं ! जीना ... पानी दीजिये !

प्योत्र : कितनी अमोनिया स्पिरिट पी है तुमने ? कब पी है ? बोलो ...

बेस्सेमेनोव : मेरी बिटिया ... मेरी प्यारी गुड़िया ...

अकुलीना इवानोव्ना : हाय, यह तुमने क्या कर लिया, अपनी जान पर यह आफ़त क्यों ले आई, मेरी लाड़ली बिटिया !

प्योत्र : अम्मां, आप यहां से चली जाइये ... स्तेपानीदा, इन्हें बाहर ले जाओ ... मैं कहता हूं, चली जाइये ...

(येलेना भागती हुई तत्याना के कमरे में जाती है)

मां को बाहर ले जाइये ...

(एक बुढ़िया आती है, दरवाज़े में खड़ी रहकर कमरे में झांकती और कुछ बड़बड़ाती है)

येलेना (अकुलीना इवानोव्ना को कमरे से बाहर ले जाती हुई बुदबुदाती है) : घबराने की कोई बात नहीं ... ख़तरे का मामला नहीं है ...

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी लाड़ली ! मेरी प्यारी

बिटिया... किस चीज़ से मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है? किस बात से नाराज़ कर दिया मैंने तुम्हें?

येलेना: चिन्ता की कोई बात नहीं है... सिर्फ़ डाक्टर के आने की देर है... सब ठीक हो जायेगा... ओह, कैसी मुसीबत आ गयी!

बुढ़िया (अकुलीना इवानोव्ना की दूसरी बांह थामते हुए): ऐसे घबराइये नहीं! इससे भी कहीं बुरी बातें हो जाती हैं... ओह, बेचारी... वह सौदागर है न, सितानोव... उसके कोचवान पर घोड़े ने ऐसी दुलत्ती चलाई कि आंतें ही बाहर निकाल आयीं...

अकुलीना इवानोव्ना: मेरी प्यारी बिटिया... तुम्हारे बिना मैं कैसे जीती रहूंगी? मेरी इकलौती बिटिया...

(उसे बाहर ले जाया जाता है। तत्याना के कमरे में उसकी चीख़ों के साथ उसके बाप की खरखरी आवाज़ और बीच-बीच में प्योत्र के असम्बद्ध और घबराये हुए शब्द सुनाई देते रहते हैं। कोई बर्तन खनकता है, कुर्सी उलट जाती है, पलंग के स्प्रिंगों की आवाज़ सुनाई देती है, तकिया धीरे से फ़र्श पर गिरता है। घबरायी, मुंह बाये और आंखें फाड़े स्तेपानीदा बार-बार भागी हुई आती है, अलमारी से तश्तरियां और प्याले निकालती है और हर बार कोई न कोई चीज़ तोड़ देती है। ड्योढ़ी के दरवाज़े में बहुत-से लोगों के चेहरे दिखाई देते हैं, मगर कोई भी भीतर आने की हिम्मत नहीं करता। किसी रंगसाज़ का शागिर्द छोकरा दरवाज़े में से फुदककर तत्याना

के कमरे में झांकता है, उसी वक़्त लौट आता है और फुसफुसाकर ऊंचे-ऊंचे कहता है – "वह मर रही है!" अहाते में बाजे पर कोई धुन बजने लगती है, लेकिन अगले ही क्षण बन्द हो जाती है। ड्योढ़ी से धीमी-धीमी भनभनाहट सुनाई देती है – "मार ही डाला? बाप ने... उसने ख़बरदार कर दिया था – सम्भल जाओ, लड़की!.. सिर पर चोट की... किस चीज़ से, मालूम है? झूठ क्यों बोल रहे हो – उसने ख़ुद ही अपने गला काट लिया है..." कोई औरत पूछती है – "शादीशुदा थी?" कोई हमदर्दी से "च-च" करता है)

बुढ़िया (बेस्सेमेनोव के कमरे से बाहर आती है, मेज़ के पास से गुज़रती हुई एक मीठी रोटी उठाकर अपनी शाल में छिपा लेती है और दरवाज़े के पास आकर कहती है): शोर नहीं करें! वह आख़िरी सांसें गिन रही है!..

पुरुष की आवाज़: उसका नाम क्या है?

बुढ़िया: लिज़ावेता ...

नारी की आवाज़: किसलिए उसने ऐसा किया?..

बुढ़िया: बहुत दिन पहले धार्मिक पर्व के वक़्त उसने उमसे कहा था – "लिज़ावेता ..."

(भीड़ में हलचल होती है। डाक्टर और तेतेरेव प्रवेश करते हैं। डाक्टर अपना कोट और टोप उतारे बिना सीधे तत्याना के कमरे में चला जाता है। तेतेरेव कमरे में झांककर माथे पर बल डाले हुए एक तरफ़

को हट जाता है। तत्याना के कमरे से कराहें और कुछ आवाज़ें सुनाई देती रहती हैं। बेस्सेमेनोव के कमरे से अकुलीना इवानोव्ना का बिलखना और चिल्लाना सुनाई देता है – "मुझे जाने दो! मुझे उसके पास जाने दो!" ड्योढ़ी में जमा भीड़ के दबे-घुटे शोर में से कुछ ऐसा सुनाई देता है – "यह गम्भीर आदमी है... यह भजन-मण्डली का गायक... सच?.. हां, वही है।")

तेतेरेव (ड्योढ़ी की तरफ़ जाते हुए): तुम सब यहां क्या कर रहे हो? चलो, भागो यहां से! सुना?

बुढ़िया (दरवाज़े के पास आकर): जाओ, जाओ, भले लोगो... तुम्हारा कुछ मतलब नहीं है यहां...

तेतेरेव: तुम ख़ुद कौन हो? क्या चाहिए तुम्हें?..

बुढ़िया: भैया, मैं कुंजड़न हूं... हरे प्याज़, खीरे...

तेतेरेव: तुम्हें क्या चाहिए?

बुढ़िया: भैया, मैं सेम्यागिना के यहां जा रही थी... वह मेरी रिश्तेदार है...

तेतेरेव: तो? मैं पूछता हूं, तुम्हें यहां क्या लेना-देना है?

बुढ़िया: मैं पास से जा रही थी... शोर सुनाई दिया... सोचा, कहीं आग लग गयी है...

तेतेरेव: फिर?

बुढ़िया: भीतर चली आयी... देखूं कि क्या मुसीबत आ गयी है...

तेतेरेव: चलो यहां से... तुम सब लोग यहां से

चलते-फिरते नज़र आओ! चलो, भागो ड्योढ़ी से!..

स्तेपानीदा (**भागती हुई आकर तेतेरेव से कहती है**): पानी की एक बालटी ले आओ... जल्दी से!

(**एक सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा कमरे में झांकता है। उसके चेहरे पर रूमाल बंधा हुआ है, वह तेतेरेव को आंख से इशारा करके कहता है – "महानुभाव! इसने तुम्हारी मेज़ से एक मीठी रोटी उड़ा ली है..." तेतेरेव ड्योढ़ी में जाकर लोगों को धकेलता हुआ बाहर निकालता है। शोर और गड़बड़। कोई छोकरा चिल्लाता है – "ऊई-ऊई!" कोई हंसता है, कोई बुरा मानते हुए कहता है – "भई, धक्के मत दो!"**)

तेतेरेव (**दिखाई न देता हुआ**): दफ़ा हो जाओ! भागो!

प्योत्र (**दरवाज़े में से सिर निकालकर**): शोर नहीं करो... (**कमरे की तरफ़ मुंह करके**) जाइये, पिता जी, अम्मां के पास जाइये! जाइये भी! (**ड्योढ़ी में चिल्लाकर कहता है**) किसी को भी भीतर मत आने दीजिये!..

(**बेस्सेमेनोव लड़खड़ाता हुआ तत्याना के कमरे से बाहर आता है। मेज़ के पास पहुंचकर धम से कुर्सी पर बैठ जाता है और कुछ क्षण तक बहकी-बहकी नज़र से अपने सामने ताकता रहता है। इसके बाद उठकर अपने कमरे की तरफ़ जाता है, जहां से अकुलीना इवानोव्ना और येलेना की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं**)

अकुलीना इवानोव्ना : क्या मैं उसे प्यार नहीं करती थी ! क्या मैं उसे अपने दिल का टुकड़ा नहीं मानती थी ?

येलेना : कृपया धीरज से काम लीजिये मेरी प्यारी ...

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता ! प्योत्र के पिता ! ओह, मेरे प्यारे ...

(दरवाज़ा बन्द होने से पूरी बात सुनाई नहीं देती। बड़ा कमरा अब ख़ाली है। उसमें दोनों तरफ़ से शोर सुनायी देता है। बेस्सेमेनोव के कमरे से आवाज़ें और तत्याना के कमरे से धीमी-धीमी बातचीत, तत्याना की आहें-कराहें और उसकी देखभाल करनेवालों का हल्का शोर सुनाई देता है। तेतेरेव पानी की बालटी लाकर तत्याना के कमरे के बाहर रखता है और बहुत धीरे से दस्तक देता है। स्तेपानीदा दरवाज़ा खोलकर बालटी भीतर ले जाती है और फिर माथे का पसीना पोंछती हुई बड़े कमरे में आती है)

तेतेरेव : कैसा हाल है उसका ?

स्तेपानीदा : लगता है कि सब ठीक हो जायेगा ...

तेतेरेव : डाक्टर ने ऐसा कहा है ?

स्तेपानीदा : हां। मगर यह भी कोई बात हुई ... **(निराशा से हाथ झटकती है)** मां-बाप को भीतर जाने से मना कर दिया है ...

तेतेरेव : वह अब पहले से अच्छी है ?

स्तेपानीदा : भगवान जाने ! कराहना तो बन्द कर

दिया है... चेहरा एकदम पीला हो गया है... और आंखें ऐसी बड़ी-बड़ी हो गयी हैं... बिल्कुल बेजान-सी पड़ी है... (**तिरस्कार से फुसफुसाती है**) मैंने उनसे कहा था... कितनी बार उनसे कहा था – इसका ब्याह कर दें! इसकी शादी कर डालें! मेरी नहीं सुनी... देख लिया उसका नतीजा! तगड़ी, जवान लड़की इस उम्र तक बिन ब्याही बैठी रहे, यह भी कोई बात हुई?.. फिर न तो पूजा-पाठ से कोई मतलब, न धर्म-कर्म से वास्ता... तो यह है इस सबका फल!

तेतेरेव: बन्द करो अपनी कांय-कांय!

येलेना (इस कमरे में आकर): कैसी है, कैसी है तत्याना?

तेतेरेव: मालूम नहीं... डाक्टर ने कहा है कि खतरे की कोई बात नहीं...

येलेना: मां-बाप को बहुत बड़ा सदमा पहुंचा है!.. उन पर तरस आता है!..

(**तेतेरेव कोई जवाब दिये बिना कंधे झटककर रह जाता है**)

स्तेपानीदा (कमरे से बाहर भागते हुए): हे भगवान! मैं चूल्हे-चौके को तो भूल ही गयी...

येलेना: आख़िर उसने ऐसा किया क्यों? क्या बात आ गयी थी? बेचारी तत्याना... बहुत तकलीफ़ हो रही होगी उसे... (**अजीब-सी सूरत बनाती है और कांपती है**) ज़रूर बहुत तकलीफ़ हुई होगी? बहुत ज़्यादा? दिल कांप उठता है न?

तेतेरेव : मालूम नहीं। अमोनिया स्पिरिट मैंने कभी नहीं पी ...

येलेना : आपको इस वक़्त भी मज़ाक़ करने की कैसे सूझ सकती है ?

तेतेरेव : मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं ...

येलेना (प्योत्र के कमरे के पास जाकर उसमें झांकती है) : और प्योत्र ... प्योत्र वसील्येविच अभी भी उसके कमरे में है ?

तेतेरेव : लगता तो ऐसा ही है ... क्योंकि वहां से बाहर नहीं आया ...

येलेना (सोच में डूबते हुए) : मैं कल्पना कर सकती हूं कि उसके दिल पर क्या बीत रही होगी !..

(ख़ामोशी)

जब कभी मैं ... जब कभी मैं कोई ऐसी बात देखती हूं तो मैं ... ओह, मैं दुख-मुसीबतों से बेहद नफ़रत करती हूं ...

तेतेरेव (मुस्कराते हुए) : यह तो तारीफ़ की बात है ...

येलेना : आप समझते हैं मेरा मतलब ? मन चाहता है कि मैं इन्हें ऐसे पकड़ लूं, पैरों तले दबाकर रौंद डालूं ... बस, हमेशा के लिए !

तेतेरेव : दुख-मुसीबतों को ?

येलेना : हां ! मैं उनसे डरती नहीं हूं, नफ़रत करती हूं ! मुझे हंसी-ख़ुशी की, रंग-रंगीली ज़िन्दगी बिताना पसन्द है, मैं चाहती हूं कि मेरे चारों ओर

लोग ही लोग हों... मैं यह गुर जानती हूं कि कैसे अपनी और अपने आस-पास के लोगों की ज़िन्दगी आसान, सुहानी और ख़ुशीभरी बनाऊं...

तेतेरेव: वाह! बड़ी तारीफ़ की बात है!

येलेना: एक और बात भी बताऊं? मैं आपके सामने यह स्वीकार करती हूं... मैं कठोर हूं... बेहद संगदिल! मुझे क़िस्मत के मारे लोग ज़रा भी अच्छे नहीं लगते। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो हमेशा क़िस्मत का रोना रोते रहते हैं, आप चाहे कुछ भी क्यों न करें उनके लिए, बेशक आकाश के तारे तोड़ लायें। आप उनके सिर पर सूरज का ताज रख दें, वे फिर भी रोयेंगे, शिकवा-शिकायत करेंगे! सूरज के ताज से बढ़कर भला क्या हो सकता है? मगर ऐसा आदमी फिर भी यही कहेगा – "मैं कितना बदक़िस्मत हूं! दुनिया में मेरा कोई नहीं! मुझे कोई भी नहीं चाहता... ज़िन्दगी निरी आफ़त है, मुसीबत है... ओह! आह! हाय! वाय!.." जब कोई ऐसा हज़रत मेरे सामने आ जाता है, तो मेरे मन में यह दुर्भावना पैदा होती है कि उसे और भी बदक़िस्मत बना डालूं...

तेतेरेव: प्यारी सुन्दरी! मैं भी आपके सामने अपनी एक कमज़ोरी मानना चाहता हूं... औरतों का फ़लसफ़ा बघारना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। मगर जब आप ऐसा करती हैं तो मेरा मन होता है कि बढ़कर आपका हाथ चूम लूं...

येलेना (शरारत और चंचलता से): सिर्फ़ मेरा हाथ ही? और वह भी तभी, जब मैं फ़लसफ़ा बघारती

हूं ?.. (**अपने को सम्भालते हुए**) हाय, हाय ! मैं यहां मज़ाक़ और बेहूदा बातें कर रही हूं और वहां – वहां कोई यातना भोग रहा है ...

तेतेरेव (बेस्सेमेनोव के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ इशारा करते हुए): और वहां भी कोई यातना भोग रहा है। आप किसी भी तरफ़ उंगली उठायें, हर जगह ही कोई न कोई मुसीबत में फंसा हुआ है ! लोगों की ऐसी आदत ही है ...

येलेना: फिर भी उन्हें तकलीफ़ तो होती है ...

तेतेरेव: ज़ाहिर है ...

येलेना: और आदमी पर तरस खाना चाहिए।

तेतेरेव: हमेशा नहीं ... शायद कभी भी नहीं ... तरस खाने के बजाय उसकी मदद करना कहीं अच्छा होगा।

येलेना: सभी की तो मदद नहीं की जा सकती ... और अगर तरस नहीं आयेगा तो मदद भी नहीं की जायेगी ...

तेतेरेव: देवी जी ! मैं ऐसे समझता हूं इस बात को – यातनायें इसलिए हैं कि इच्छायें हैं। और इच्छायें होती हैं दो तरह की – एक वे, जिनका हमें आदर करना चाहिए, दूसरी वे, जो इस लायक़ नहीं हैं। हमें शरीर की उन इच्छाओं को पूरा करने में लोगों की मदद करनी चाहिए जो उन्हें बेहतर और मज़बूत बना सकें, जो उन्हें निखारें और नेक बनाकर जानवर की हालत से ऊपर उठायें ...

येलेना (उसकी बात की ओर ध्यान न देते हुए):

शायद ... शायद ऐसे ही है ... मगर वहां भीतर क्या हो रहा है? शायद वह सो गयी है? कैसा सन्नाटा है ... कुछ कानाफूसी हो रही है ... दोनों बुज़ुर्ग भी अपने दरबे में जा छिपे हैं ... कैसी अजीब बात है यह! अचानक आहें-कराहें, ऐसा शोर-शराबा, चीख़पुकार, दौड़-धूप ... और फिर अचानक जैसे सबको सांप सूंघ गया — एकदम ख़ामोशी, कहीं कोई हरकत नहीं ...

तेतेरेव : यही ज़िन्दगी है! लोग गला फाड़-फाड़कर चीख़ते-चिल्लाते हैं, थककर ख़ामोश हो जाते हैं ... सुस्ताकर फिर चीख़ने-चिल्लाने लगते हैं। यहां — इस घर में तो हर चीज़ ही बहुत जल्दी से दम साध लेती है ... दर्दभरी चीख़ें भी और ख़ुशी के ठहाके भी ... दिल दहलानेवाली हर चीज़ कीचड़ में डंडा मारकर छींटे उड़ाने जैसी होती है ... नीचता ही हर क़िस्से, हर कहानी का अन्त होती है। वही यहां की आराध्य-देवी है। जीत का डंका बजे, या हार का मातम हो, आख़िरी बाज़ी इसी के हाथ रहती है ...

येलेना (सोच में डूबते हुए) : बहुत अच्छे दिन थे वे मेरे, जब मैं जेल में रहती थी ... वहां ज़िन्दगी कहीं अधिक दिलचस्प थी। मेरा पति जुआरी था ... ख़ूब पीता था और अक्सर शिकार को जाता था। हमारा शहर छोटा-सा और दूर-दराज़ के इलाक़े में था ... और वहां के लोग थे बेलुत्फ़, बेरंग ... ख़ाली वक़्त की कमी न होती थी, मैं क़ैदियों के सिवा न तो किसी के यहां जाती थी, न किसी से मिलती-जुलती थी। वे मुझे बहुत चाहते थे ... उन्हें बस,

९*

अच्छी तरह से जान-समझ लीजिये, तब पता चलता है कि बहुत ही कमाल के लोग होते हैं वे। यक़ीन मानिये, बेहद प्यारे और बड़े ही सीधे-सादे! कभी-कभी तो उन्हें देखकर मन को यह विश्वास ही न होता कि फलां हत्यारा है, फलां चोर है या फलां ने ऐसा ही कोई दूसरा जुर्म किया है। कभी-कभी मैं किसी हत्यारे से पूछती – "क्या सचमुच तूने हत्या की थी?" – "हां, येलेना निकोलायेव्ना," वह कहता, "सचमुच हत्या की थी... क्या किया जाये?" और मुझे लगता कि उसने किसी दूसरे के जुर्म को अपने सिर ले लिया है... वह तो किसी दूसरे के हाथ का खिलौना बना है... हां। मैं उन्हें किताबें ख़रीद देती थी, हर कोठरी में ताश और शतरंज पहुंचा देती थी... तम्बाकू भी... और कभी-कभी थोड़ी-सी शराब भी दे देती... जब उन्हें हवाख़ोरी के लिए बाहर निकाला जाता तो वे गेंद और गुल्ली-डंडा खेलते – बिल्कुल बच्चों की तरह, क़सम खाती हूं! कभी-कभी मैं उन्हें हंसी-मज़ाक़ की कहानियां पढ़कर सुनाती और वे बच्चों की तरह ठहाके लगाते और हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते। मैंने चिड़ियां और पिंजरे ख़रीदे और हर कोठरी की अपनी चिड़िया हो गयी... वे उसे भी मेरे ही तरह प्यार करते! और यह भी बताऊं कि जब मैं भड़कीले कपड़े पहनती – लाल या पीला ब्लाउज़... तो वे बहुत ही ख़ुश होते। यक़ीन कीजिये, उन्हें चमकीले और शोख़ रंग बहुत अच्छे लगते हैं! मैं उन्हें ख़ुश करने के लिए जान-

बूझकर भड़कीले रंगों की पोशाकें पहना करती थी... (**निःश्वास छोड़ती है**) उनके साथ ज़िन्दगी में बहुत मज़ा था! पता भी नहीं चला और तीन बरस बीत गये... जब घोड़े ने मेरे पति की जान ले ली तो मुझे उसके मरने से कहीं ज़्यादा जेल छोड़ने का दुख हुआ... बेहद अफ़सोस हुआ मुझे उसे छोड़ते वक़्त... क़ैदियों को भी... उन्हें भी बहुत दुख हुआ... (**कमरे में इधर-उधर नज़र दौड़ाती है**) यहां, इस शहर में ज़िन्दगी वैसी नहीं है... इस घर में तो ज़रूर कोई मनहूस बात है... लोग बुरे नहीं हैं... कोई और ही बात है... लेकिन अब मेरा मन उदास हो गया है... मन भारी हो रहा है... हम यहां बैठे हैं, बातें कर रहे हैं... और वहां शायद वह अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांसें गिन रही हो...

तेतेरेव (शान्त भाव से): और हमें इसका कोई अफ़सोस नहीं...

येलेना (जल्दी से): आपको अफ़सोस नहीं?..

तेतेरेव: और आपको भी नहीं...

येलेना (धीमे से): हां, आप ठीक कह रहे हैं!.. यह... अच्छी बात नहीं, मैं समझती तो हूं... मगर मैं महसूस नहीं करती कि यह बुरी बात है! जानते हैं, कभी-कभी ऐसा भी होता है–दिमाग़ समझता है कि यह बुरी बात है, मगर दिल महसूस नहीं करता... एक और बात बताऊं–मुझे तत्याना के बजाय प्योत्र वसील्येविच के लिए ज़्यादा अफ़सोस होता है... उसके लिए तो योंही अफ़सोस होता है... बहुत बुरी

है यहां उसकी ज़िन्दगी ... है न?

तेतेरेव : यहां सभी की ज़िन्दगी बुरी है ...

पोल्या (प्रवेश करते हुए) : हलो ! ..

येलेना (उछलकर उसके पास जाती है) : शी ! धीरे बोलिये ! जानती हैं, यहां क्या गुल खिल गया है ? .. तत्याना ने ज़हर खा लिया है !

पोल्या : क्-या ?

येलेना : हां, हां ! सच कह रही हूं ... डाक्टर और उसका भाई वहां उसके पास हैं ...

पोल्या : क्या दम तोड़ रही है ? .. मर जायेगी क्या ?

येलेना : कौन जाने ...

पोल्या : उसने ऐसा किया क्यों ? कुछ बताया ?

येलेना : मालूम नहीं ! कुछ नहीं बताया !

प्योत्र (दरवाज़े में से झांकता है, उसके बाल अस्त-व्यस्त हैं) : येलेना निकोलायेव्ना ... ज़रा इधर आइये ...

(येलेना जल्दी से जाती है)

पोल्या (तेतेरेव से) : आप मुझे ... ऐसे घूर क्यों रहे हैं ?

तेतेरेव : कितनी बार आप मुझसे यह पूछ चुकी हैं ?

पोल्या : अगर आप हमेशा ऐसा ही करेंगे तो मैं पूछे बिना कैसे रह सकती हूं ? .. हमेशा एक ख़ास नज़र से देखते हैं – भला क्यों ? **(उसके पास जाकर कड़ाई से बोलते हुए)** क्या ... आप इसके लिए मुझे दोषी मानते हैं ?

तेतेरेव (ज़रा हंसकर): क्या आप अपने को किसी तरह से दोषी ... अनुभव करती हैं?

पोल्या: यह अनुभव करती हूं कि ... मैं पहले मे कहीं ज़्यादा आपसे बेज़ार हो गयी हूं! ख़ैर, यह बताइये कि यह सब हुआ कैसे?

तेतेरेव: कल उसे हल्का-सा धक्का दे दिया गया, झकझोरा गया, उसकी टांगें पहले ही लड़खड़ा रही थीं, आज वह गिर गयी ... बस, इतना ही हुआ!

पोल्या: यह सच नहीं है!

तेतेरेव: क्या सच नहीं है?

पोल्या: मैं जानती हूं कि आप किस चीज़ की तरफ़ इशारा कर रहे हैं ... मगर यह सच नहीं है! नील ...

तेतेरेव: नील? नील का इससे क्या सरोकार?

पोल्या: न उसका ... न मेरा, हम दोनों का कोई सरोकार नहीं ... आप ... आपकी बात ग़लत है! मैं जानती हूं कि आप हमें कुसूरवार मानते हैं ... मगर हम ... हम क्या कर सकते थे? मैं उसे प्यार करती हूं ... और वह मुझे ... बहुत अरसा हो गया प्यार की इस आग को दहकते हुए!

तेतेरेव (गम्भीर होकर): मैं किसी तरह का भी दोष नहीं देता हूं ... आपको ... आप ख़ुद अपने को किसी चीज़ के लिए दोषी मान रही हैं और सामने आनेवाले पहले आदमी के आगे ही अपनी सफ़ाई पेश कर रही हैं। किसलिए? मैं आपकी ... बहुत इज़्ज़त करता हूं ... हमेशा, बार-बार और ज़ोर देकर आप-से यह कहता रहा हूं – जल्दी कीजिये, इस घर

से चली जाइये, इस घर में नहीं आइये, यहां कोई मनहूस चीज़ है, यहां आपकी आत्मा में ज़हर घोला जाता है? मैं ही तो यह कहता रहा हूं...

पोल्या: तो क्या हुआ?

तेतेरेव: कुछ नहीं। मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता था कि अगर आपने मेरी बात पर कान दिया होता तो... आज उस परेशानी से दो-चार न होना पड़ता, जिसका सामना इस वक़्त आप कर रही हैं... बस, इतना ही!

पोल्या: समझी... मगर उसने ऐसी हरकत की क्यों? क्या उसकी ज़िन्दगी ख़तरे में है? क्या खाया है उसने?

तेतेरेव: मुझे मालूम नहीं...

(प्योत्र और डाक्टर कमरे से बाहर आते हैं)

प्योत्र: पोल्या! ज़रा जाकर येलेना निकोलायेव्ना की मदद कीजिये...

तेतेरेव (प्योत्र से): वह कैसी है?

डाक्टर: बड़ी मामूली-सी बात है! अगर लड़की घबरानेवाली तबीयत की न होती तो शायद उस पर कुछ भी बुरा प्रभाव न पड़ता... बहुत थोड़ी-सी स्पिरिट पी थी उसने... थोड़ी-सी ग्रासनली जल गयी... और ज़रा-सी स्पिरिट उसके मेदे में चली गयी थी... मगर वह उसी दम बाहर आ गयी...

प्योत्र: आप थक गये होंगे, डाक्टर! बैठकर थोड़ा आराम कर लीजिये...

डाक्टर: धन्यवाद ... कोई एक सप्ताह तक वह ऐसी ढीली-ढाली ही रहेगी ... अभी – थोड़े दिन की बात है – मेरे पास एक बहुत दिलचस्प केस आया था ... नशे में धुत्त एक रंगसाज़ ने बियर की जगह वारनिश का गिलास चढ़ा लिया था ...

(बेस्सेमेनोव अपने कमरे का दरवाज़ा खोलकर चुपचाप खड़ा रहता है, बहुत उदास और प्रश्नसूचक दृष्टि से डाक्टर की तरफ़ देखता है)

प्योत्र: घबराइये नहीं, पिता जी! डर की कोई बात नहीं है!

डाक्टर: हां, हां! बिल्कुल ऐसी कोई बात नहीं! दो-तीन दिन में वह चलने-फिरने लगेगी ...

बेस्सेमेनोव: सच?

डाक्टर: आपको यक़ीन दिलाता हूं!

बेस्सेमेनोव: धन्यवाद! .. अगर यह सच है ... अगर उसकी ज़िन्दगी ख़तरे में नहीं है तो धन्यवाद! प्योत्र ... तुमने वह ... ज़रा इधर आओ ...

(प्योत्र उसके पास जाता है। वे दोनों भीतर वाले कमरे में जाते हैं। भीतर से उनकी खुसुर-फुसुर और सिक्कों की खनक सुनाई देती है)

तेतेरेव (डाक्टर से): उस रंगसाज़ का क्या हुआ?

डाक्टर: क्या? .. क्या पूछा आपने?

तेतेरेव: उस रंगसाज़ का क्या हुआ?

डाक्टर: अरे हां! रंगसाज़ का? .. होना क्या था,

ठीक हो गया... सुनिये... मुझे लगता है कि मैंने आपको पहले कहीं देखा है?

तेतेरेव : हो सकता है...

डाक्टर : आप... आप टाइफ़ायड से बीमार होकर अस्पताल में रहे थे न?

तेतेरेव : हां, रहा था!..

डाक्टर (खुश होते हुए) : देखा? हां, हां, मुझे लगा कि मैंने आपको पहले कहीं देखा है!.. यह... शायद पिछले वसन्त की बात है? लगता है कि मुझे तो आपका नाम भी याद है...

तेतेरेव : और मैं भी आपको नहीं भूला हूं...

डाक्टर : सच?

तेतेरेव : हां। जब मैं अच्छा होने लगा था तो मैंने आपसे खुराक का राशन बढ़ाने के लिए कहा था और आपने मुंह बनाकर जवाब दिया था – "जितना मिलता है, उसे ही ग़नीमत समझो। तुम जैसे पियक्कड़ों और आवारा लोगों की कुछ कमी तो है नहीं..."

डाक्टर (चकराया-सा) : मगर वह... वह तो... मैं माफ़ी चाहता हूं!.. आपका नाम... यानी... मैं... मुझे डाक्टर निकोलाई त्रोयेकूरोव कहते हैं... और...

तेतेरेव (उसके पास जाकर) : और मैं हूं मशहूर तेरेन्ती, खानदानी पियक्कड़, लाल परी का दीवाना।

(डाक्टर थोड़ा पीछे हट जाता है)

डरिये नहीं, मैं आप पर हाथ नहीं उठाऊंगा... **(उसके पास से गुज़रकर ड्योढ़ी में चला जाता है)**

(**डाक्टर हक्का-बक्का-सा उसे देखता रह जाता है, अपने टोप से पंखा झलता है। प्योत्र आता है**)

डाक्टर (**कनखियों से ड्योढ़ी की तरफ़ देखते हुए**): अच्छा, अब मुझे जाना चाहिए। और लोग मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे... अगर वह दर्द की शिकायत करे तो उसे फिर एक बार दवा की कुछ बूंदें पिला दीजिये... अब तेज़ दर्द नहीं होना चाहिए... नमस्ते!.. अरे हां, वह... साहब, जो अभी-अभी यहां थे... बहुत अनूठे आदमी हैं... क्या वह... वह आपके कोई .रिश्तेदार हैं?

प्योत्र: नहीं, हमारे यहां रहता है...

डाक्टर: समझा!.. जानकर ख़ुशी हुई!.. बहुत निराला आदमी है! नमस्ते... धन्यवाद! (**जाता है**)

(**प्योत्र उसे दरवाज़े तक छोड़ने जाता है। बेस्सेमेनोव और अकुलीना इवानोव्ना अपने कमरे से बाहर आते हैं और पंजों के बल चलते हुए तत्याना के कमरे के दरवाज़े पर जाते हैं**)

बेस्सेमेनोव: रुक जाओ, भीतर नहीं जाओ... वहां बिल्कुल सन्नाटा है। शायद वह सो रही है... हमें उसकी नींद में ख़लल नहीं डालना चाहिए... (**अकुलीना इवानोव्ना को कोने में पड़े हुए सन्दूक़ के पास ले जाता है**) तो तत्याना की मां! हमें ऐसी ख़ुशी का दिन भी देखना था... लोग लगातार तरह-तरह की बातें करेंगे, अफ़वाहें फैलायेंगे – जितने मुंह, उतनी ही बातें होंगी...

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र के पिता ! यह तुम क्या कह रहे हो ? कैसी बात कह रहे हो ? बड़ी परवाह पड़ी है हमें दुनिया की !.. बेशक ढोल बजाते रहें लोग ! बस, किसी तरह बेटी की जान बच जाये ! लोग बेशक गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते रहें ...

बेस्सेमेनोव : हां, यह तो ठीक है ... मैं जानता हूं ... तुम ठीक कहती हो !.. लेकिन तुम ... ओह ! तुम समझती नहीं ! हमारी इज़्ज़त ख़ाक में मिल गयी, नाक कट गयी !

अकुलीना इवानोव्ना : नाक कट गयी ?.. क्यों ?

बेस्सेमेनोव : हमारी बेटी ने ज़हर खा लिया, समझती हो ! हमने उसके साथ कौनसी बुराई की थी ? हमने उसके साथ कौनसा बुरा सलूक किया था ? क्या हम उसके लिए दरिन्दे हैं ? वे हमारे बारे में तरह-तरह की बातें करेंगे ... मेरी बला से, मैं अपने बच्चों के लिए सब कुछ बर्दाश्त कर सकता हूं ... मगर मैं यह सब बर्दाश्त करूं किसलिए ?.. कौनसे गुनाहों की सज़ा है यह ? मैं सिर्फ़ यह जानना चाहता हूं ... और ये मेरे बच्चे हैं ! कभी मुंह से एक शब्द भी तो नहीं निकालते, गूंगे पत्थर बने रहते हैं ... इनके दिल में क्या है ? कुछ मालूम नहीं ! इनके दिमाग़ में क्या है ? क्या मजाल कि कभी बतायें ! यही चीज़ तो घुन की तरह मुझे खाये जा रही है !

अकुलीना इवानोव्ना : मैं यह समझती हूं ... मेरे दिल पर भी बहुत भारी गुज़रती है ! आख़िर मैं उनकी मां हूं ... रात और दिन इन्हीं के लिए मरती-

खपती रहती हूं और कभी कोई शुक्रिया तक नहीं कहता... मैं यह सब समझती हूं! फिर भी कोई बात नहीं थी... अगर ये खुश और ठीक-ठाक रहते... आज जैसी बुरी बात भी होनी थी!

पोल्या (तत्याना के कमरे से बाहर आते हुए) : उसे झपकी आने लगी है... आप ज़रा धीरे बोलें...

बेस्सेमेनोव (उठते हुए) : वह अब कैसी है? हम उसे जाकर देख लें?

अकुलीना इवानोव्ना : मैं तो बिल्कुल दबे पांव जाऊं-गी? हम दोनों...

पोल्या : डाक्टर ने तो सभी को भीतर जाने से मना किया है...

बेस्सेमेनोव (विश्वास न करते हुए) : तुम कैसे जानती हो? डाक्टर के यहां होने के वक़्त तो तुम थीं नहीं...

पोल्या : येलेना निकोलायेव्ना ने मुझसे ऐसा कहा है।

बेस्सेमेनोव : और वह उसके पास ही है? देखा... पराये उसके पास जा सकते हैं, मगर अपने नहीं। कमाल की बात है...

अकुलीना इवानोव्ना : खाना रसोईघर में ही खाना चाहिए... ताकि उसकी नींद में खलल न पड़े... मेरी प्यारी बिटिया!.. कमरे में झांकने तक की इजाज़त नहीं... **(निराशा से हाथ झटककर वह कमरे से बाहर चली जाती है)**

(पोल्या अलमारी का सहारा लेकर खड़ी रहती है

और तत्याना के कमरे की तरफ़ देखती है। उसकी भौंहें तनी हुई, होंठ भिंचे हुए हैं और वह तनकर खड़ी है। बेस्सेमेनोव मेज़ के पास ऐसे बैठा है, जैसे किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा हो)

पोल्या (धीमे से): मेरे पिता आज यहां आये थे?

बेस्सेमेनोव: तुम पिता के बारे में नहीं जानना चाहतीं, तुम्हें क्या ज़रूरत है उसकी? मैं जानता हूं कि तुम्हें किसकी ज़रूरत है...

(पोल्या हैरानी से उसकी तरफ़ देखती है)

हां, तुम्हारा बाप गन्दे चिथड़े पहने हुए यहां आया था... भले आदमियों जैसा उसमें कुछ भी नहीं है... फिर भी तुम्हें उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए...

पोल्या: मैं इज़्ज़त करती हूं... आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?

बेस्सेमेनोव: ताकि तुम यह समझो... तुम्हारा बाप एक बेघर आवारा है, फिर भी तुम्हें उसकी इच्छा के सामने सिर झुकाना चाहिए... मगर बाप क्या है, क्या तुम लोग यह समझते हो?.. तुम लोगों के पास दिल नाम की कोई चीज़ ही नहीं है... मिसाल के तौर पर तुम... ग़रीब लड़की हो, तुम्हारा कोई घर-घाट नहीं... तुम्हें विनम्र होना चाहिए... सभी के साथ प्यार-मुहब्बत से पेश आना चाहिए... मगर तुम भी उसी रास्ते पर चल रही हो! अपनी राय ज़ाहिर करती हो, पढ़े-लिखे लोगों जैसे अन्दाज़ दिखाया

करती हो। तुम दुलहन बनने के फेर में हो... और वहां, उस कमरे में, एक ऐसी भी है जिसने तो बस अपनी जान ही ले डाली थी...

पोल्या : आप क्या कह रहे हैं, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा... किसलिए आप ऐसी बातें कह रहे हैं?

बेस्सेमेनोव (अपने विचारों में उलझनेवाले व्यक्ति की तरह खीझते हुए) : मेरी बात समझो... सोचो... मैं इसीलिए यह सब कह रहा हूं कि तुम समझ सको! तुम हो क्या? कुछ भी नहीं, फिर भी... शादी कर रही हो! लेकिन मेरी बेटी... तुम यहां खड़ी-खड़ी क्या मुंह ताक रही हो? जाओ रसोईघर में... कुछ काम-काज करो... यहां मैं ख़ुद निगरानी कर लूंगा... जाओ!

(पोल्या हतप्रभ-सी उसकी तरफ़ देखती है और बाहर जाना चाहती है)

ज़रा रुको! मैं... मैंने तुम्हारे बाप को आज कुछ खरी-खोटी सुनायी थी...

पोल्या : किस चीज़ के लिए?

बेस्सेमेनोव : तुम्हारा इससे कोई मतलब नहीं! चलो... जाओ!

(पोल्या हैरान-सी बाहर जाती है। बेस्सेमेनोव तत्याना के दरवाज़े तक दबे पांव जाकर उसे थोड़ा-सा खोलता है, भीतर झांकना चाहता है। येलेना बाहर आती है और अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर देती है)

येलेना : अन्दर नहीं जाइये। लगता है कि वह सो रही है। उसे परेशान नहीं करना चाहिए...

बेस्सेमेनोव : हुंह... हमें सभी परेशान करते हैं... यह कोई बात नहीं! मगर हमें आपको परेशान नहीं करना चाहिए...

येलेना (हैरान होकर) : यह आप क्या कह रहे हैं? वह तो बीमार है!..

बेस्सेमेनोव : मैं जानता हूं... मैं सब कुछ जानता हूं... **(ड्योढ़ी में जाता है)**

(येलेना उसे देखती हुई कंधे झटकती है। इसके बाद खिड़की की तरफ़ जाती है, सोफ़े पर बैठकर सिर के पीछे अपने हाथ बांध लेती है। वह विचारों में खो जाती है। उसके होंठों पर मुस्कान दिखाई देती है और वह इस तरह अपनी आंखें मूंद लेती है मानो कोई सपना देख रही हो। प्योत्र आता है, वह उदास है, उसके बाल अस्त-व्यस्त हैं। वह ऐसे सिर झटकता है मानो किसी विचार को उससे निकाल देना चाहता हो। येलेना को देखकर वह रुकता है)

येलेना (अपनी आंखें खोले बिना) : कौन है?

प्योत्र : आप किस बात पर हंस रही हैं? बड़ा अजीब लग रहा है अब... इस घटना के बाद किसी के चेहरे पर मुस्कान देखना...

येलेना (उसे देखते हुए) : आप खीझे हुए हैं? थक गये हैं? बेचारा लड़का... मुझे बड़ा अफ़सोस होता है आपके लिए...

प्योत्र (उसके पास कुर्सी पर बैठते हुए) : मुझे भी अपने लिए अफ़सोस होता है।

येलेना : आपको यहां से कहीं चले जाना चाहिए ...

प्योत्र : हां, मुझे ऐसा करना चाहिए। आखिर मैं यहां कर भी क्या रहा हूं? इस तरह की ज़िन्दगी बहुत बोझल है ...

येलेना : आप कैसी ज़िन्दगी बिताना चाहेंगे? बताइये!.. मैं बहुत बार आपसे यह पूछ चुकी हूं ... मगर आपने कभी जवाब ही नहीं दिया ...

प्योत्र : साफ़-साफ़ कहना टेढ़ी खीर है ...

येलेना : मुझसे भी?

प्योत्र : आपसे भी ... भला मुझे यह क्या मालूम है कि मैं आपको कैसा लगता हूं ... या फिर मैं जो कुछ कहना चाहूंगा, उसके बारे में आपका रवैया क्या होगा? कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि आप ...

येलेना : मैं क्या? कहिये तो ...

प्योत्र : कि आप ... अच्छा ...

येलेना : आप मुझे अच्छे लगते हैं, बहुत अच्छे लगते हैं! प्यारे लड़के!

प्योत्र (जोश से) : मैं लड़का नहीं हूं! मैंने बहुत सोच-विचार किया है ... मेरी बात सुनिये और बताइये... नील, शीश्किन, त्स्वेतायेवा और उन जैसे हो-हल्ला करनेवाले दूसरे लोग जो दौड़-धूप करते रहते हैं, आपको वह पसन्द है?.. क्या आप यह यक़ीन कर सकती हैं कि समझदारी की किताबों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना, मज़दूरों के लिए नाटक खेलना – क्या

यह मनबहलाव का अच्छा तरीक़ा है?.. और उनकी सभी तरह की दूसरी दौड़-धूप – क्या वह सचमुच ही इतनी महत्त्वपूर्ण और इस लायक़ है कि आदमी उसी के लिए जिये? आप बताइये ...

येलेना : मेरे प्यारे! मैं अनपढ़ औरत हूं ... इन बातों के बारे में कुछ फ़ैसला नहीं कर सकती, मैं यह सब समझती नहीं हूं। मैं तो गम्भीर, संजीदा प्राणी नहीं हूं ... नील, शीश्किन और इनके साथी मुझे अच्छे लगते हैं ... ख़ुशमिज़ाज लोग हैं, हमेशा कुछ न कुछ करते हैं ... मुझे हंसने-हंसानेवाले ज़िन्दादिल लोग अच्छे लगते हैं ... मैं ख़ुद भी ऐसी ही हूं ... मगर आपने यह किसलिए पूछा है?

प्योत्र : लेकिन ... मुझे इस सब से झल्लाहट होती है! अगर उन्हें इस तरह से जीना पसन्द है, अगर उन्हें इसमें लुत्फ़ मिलता है तो ख़ुशी से ऐसे जियें! मैं उनके आड़े नहीं आता हूं ... मैं किसी के रंग-ढंग में दख़ल नहीं देना चाहता, लेकिन मैं जैसे जीना चाहता हूं, उसमें वे भी टांग न अड़ायें! अपने कामों को वे ख़ास अर्थ क्यों देते हैं?.. मुझे क़ायर और स्वार्थी क्यों कहते हैं?..

येलेना (उसके सिर पर हाथ रखते हुए) : बेचारे को परेशान कर डाला है, बेचारा थक गया है ...

प्योत्र : नहीं, मैं थका नहीं हूं ... खीझ उठा हूं। मुझे जैसे पसन्द है, मैं वैसे जीने का अधिकार रखता हूं, जैसे भी चाहूं! मुझे इसका हक़ है न?

येलेना (उसके बालों से खेलते हुए) : यह फिर

से मेरी समझ के परे की बात है... मैं तो बस, इतना जानती हूं कि ख़ुद जैसे चाहती हूं, वैसे रहती हूं, जो मन में आता है, वही करती हूं... और अगर कोई मुझे यह यक़ीन दिलाने की कोशिश करेगा कि मुझे धर्म-मठ में जाकर रहना चाहिए – तो नहीं जाऊंगी! अगर ज़बरदस्ती की जायेगी, तो वहां से भाग जाऊंगी या नदी में डूब मरूंगी...

प्योत्र: आप उनके साथ ज़्यादा और मेरे साथ कम वक़्त बिताती हैं... आप उन्हें मुझसे ज़्यादा चाहती हैं! मैं ऐसा महसूस करता हूं... मगर मैं यह कहना चाहता हूं – मैं यह कह सकता हूं कि वे ख़ाली ढोल हैं!

येलेना (हैरान होकर): क्या? क्या हैं वे?..

प्योत्र: ख़ाली ढोल... ढोलों के बारे में एक क़िस्सा है...

येलेना: अरे हां... वह मैं जानती हूं... इसका मतलब, तब तो मैं भी... ख़ाली ढोल हूं?

प्योत्र: ओह, नहीं! आप नहीं! आपमें तो ज़िन्दगी मचलती है, आप तो झरने की तरह आदमी को ताज़गी देती हैं!

येलेना: यह ख़ूब रही! तो आपके मुताबिक़ मैं ऐसी ठण्डी हूं?

प्योत्र: मज़ाक़ नहीं कीजिये! मैं आपकी मिन्नत करता हूं! मेरे लिए यह क्षण... मगर आप हंस रही हैं! भला क्यों? क्या मैं मसख़रे जैसा लगता हूं? मैं जीना चाहता हूं! अपनी समझ के मुताबिक़...

अपनी इच्छा के अनुसार...

येलेना : ख़ुशी से जियें! कौन आड़े आ रहा है?

प्योत्र : कौन? कोई तो आड़े आ रहा है... कुछ तो आड़े आ रहा है! जब कभी मैं यह सोचता हूं कि मुझे आज़ाद और अकेले रहना चाहिए तो मुझे लगता है कि जैसे कोई कह रहा हो – नहीं, यह असम्भव है!

येलेना : आपकी आत्मा?

प्योत्र : आत्मा का क्या सवाल पैदा होता है? मैं... मैं क्या कोई जुर्म करना चाहता हूं? मैं सिर्फ़ आज़ाद होना चाहता हूं... मैं यह कहना चाहता हूं...

येलेना (उसकी तरफ़ झुकते हुए) : यह ऐसे नहीं कहा जाता है! इसे तो कहीं सीधे-सादे ढंग से कहना चाहिए! मैं आपकी, बेचारे लड़के की मदद करूंगी... ताकि आप ऐसी मामूली बातों में गड़बड़ा न जायें...

प्योत्र : येलेना निकोलायेव्ना! आप अपने मज़ाक़ों से... आप मुझ पर सरासर जुल्म कर रही हैं! यह बड़ी बेरहमी है! मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मैं... मैं पूरी तरह से आपके सामने हूं!

येलेना : इस बार भी बात नहीं बनी!

प्योत्र : लगता है कि मैं कमज़ोर आदमी हूं... इस ज़िन्दगी का बोझ उठाना मेरे बस की बात नहीं! मैं इसके घटियापन को महसूस करता हूं, मगर इसे ज़रा भी नहीं बदल सकता, कुछ भी तो बेहतर नहीं बना सकता... मैं यहां से जाना चाहता हूं, अकेला रहना चाहता हूं...

येलेना (उसका सिर अपने हाथों में लेते हुए) : मेरे साथ-साथ बोलिये, दोहराइये – "मैं आपको प्यार करता हूं!"

प्योत्र : प्यार! हां, वह तो है... वह तो मैं करता हूं!.. मगर... नहीं। आप मज़ाक़ कर रही हैं!..

येलेना : नहीं, यह मज़ाक़ नहीं है। मैं बहुत पहले और बड़ी संजीदगी से आपसे शादी करने का फ़ैसला कर चुकी हूं! शायद ऐसा करना अच्छा नहीं... मगर मैं जी-जान से यह चाहती हूं...

प्योत्र : ओह, कितना ख़ुश हूं मैं! मैं आपको प्यार करता हूं... ऐसे प्यार करता हूं...

(तत्याना का कराहना सुनाई देता है। प्योत्र उछलकर खड़ा हो जाता है और घबराकर इधर-उधर देखता है। येलेना इतमीनान से खड़ी होती है। प्योत्र धीमे से कहता है)

यह तत्याना की ही आवाज़ है न? और यहां... हम...

येलेना (प्योत्र के पास से तत्याना के कमरे की तरफ़ जाते हुए) : हमने कोई बुरी बात नहीं की...

तत्याना की आवाज़ : पानी... पानी दीजिये...

येलेना : मैं आ रही हूं... **(प्योत्र की ओर मुस्कराती है और जाती है)**

(प्योत्र अपना सिर हाथों में थामे हुए चकराया-सा अपने सामने देखता रहता है। ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुलता है और अकुलीना इवानोव्ना ऊंचे फुसफुसाती है)

अकुलीना इवानोव्ना : प्योत्र ! प्योत्र ! तुम कहां हो ?..

प्योत्र : यहां ...

अकुलीना इवानोव्ना : चलकर खाना खा लो ...

प्योत्र : मेरा मन नहीं है ... मैं नहीं खाऊंगा ...

येलेना (तत्याना के कमरे से बाहर आते हुए) : वह मेरे यहां जा रहा है ...

(अकुलीना इवानोव्ना उसे नाराज़गी से देखते हुए बाहर जाती है)

प्योत्र (जल्दी से येलेना के पास जाकर) : कितना बुरा हुआ ... है यह ! वह वहां ऐसी हालत में है ... और हम ...

येलेना : चलिये मेरे साथ ... इसमें बुराई की क्या बात है ? थियेटर में भी दुखद दृश्य के बाद हंसी-मज़ाक़ का हल्का-फुल्का दृश्य प्रस्तुत किया जाता है ... वास्तविक जीवन में तो यह और भी ज़्यादा ज़रूरी है ...

(प्योत्र येलेना के साथ सट जाता है और वह उसकी बांह में बांह डालकर उसे अपने साथ ले जाती है)

तत्याना (खरखरी आवाज़ से कराहते हुए) : येलेना !.. येलेना !..

(पोल्या दौड़ती हुई आती है)

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(संध्या। मेज़ पर जल रहे लैम्प की रोशनी कमरे में फैली हुई है। पोल्या चाय के बर्तन मेज़ पर रख रही है। बीमार-सी तत्याना कोने में सोफ़े पर लेटी हुई है जहां बहुत मद्धिम रोशनी है। त्स्वेतायेवा उसके पास कुर्सी पर बैठी है।)

तत्याना (धीमे, उदासी से) : तुम क्या सोचती हो कि मैं भी तुम्हारी तरह ज़िन्दगी की तरफ़ हंसी-ख़ुशी और मस्ती का अन्दाज़ नहीं अपनाना चाहती ? ओह, मैं बेहद चाहती हूं, मगर... ऐसा कर नहीं पाती ! मैं दिल पर भरोसा करूं, यह मेरी घुट्टी में ही नहीं है... मुझे हर चीज़ पर सोचने की आदत पड़ गयी है...

त्स्वेतायेवा : मेरी प्यारी ! तो तुम बहुत ज़्यादा सोच-विचार करती हो... तुम्हें यह मानना होगा कि सिर्फ़ सोचने के लिए आदमी के अक़्लमन्द होने में कोई तुक नहीं है... सोचना-विचारना अच्छी चीज़ है, लेकिन... अगर आदमी यह चाहता है कि उसकी ज़िन्दगी बोझल और उकतानेवाली न हो, तो उसे कुछ कल्पना से भी काम लेना चाहिए – अक्सर तो नहीं, मगर कभी-कभी आगे की तरफ़ देखने, भविष्य

के गर्भ में भी झांकने की कोशिश करनी चाहिए...

(त्स्वेतायेवा की बात सुनते हुए पोल्या सोच में डूबी, सस्नेह मुस्कराती है)

तत्याना : और क्या दिखाई देता है भविष्य के गर्भ में?

त्स्वेतायेवा : जो कुछ भी हम देखना चाहें, सब कुछ!

तत्याना : हां... कल्पना के महल खड़े करने चाहिए!

त्स्वेतायेवा : विश्वास करना चाहिए...

तत्याना : किस चीज़ पर?

त्स्वेतायेवा : अपनी कल्पना, अपने मन के सपने पर... जब मैं अपने स्कूल के छात्रों की आंखों में झांककर देखती हूं तो उनके बारे में सोचती भी हूं – यह रहा नोविकोव। स्कूल की पढ़ाई ख़त्म करके कालेज में जायेगा... और उसके बाद यूनिवर्सिटी में... शायद डाक्टर बनेगा! यह होनहार बालक है, बहुत भला और गम्भीर... उसका माथा चौड़ा है। वह सभी की चिन्ता करता है, बड़ा मिलनसार है... वह एड़ी-चोटी का पसीना एक करेगा, अपने ही फ़ायदे की नहीं सोचेगा, दूसरों के साथ नेकी करेगा... लोग उसे बहुत प्यार करेंगे, उसकी बड़ी इज़्ज़त करेंगे, उसे सिर-आंखों पर बिठायेंगे... मुझे इसका यक़ीन है! और कभी अपने बचपन की याद आने पर उसे यह भी याद आयेगा कि कैसे उसकी अध्यापिका त्स्वेतायेवा ने आधी छुट्टी के समय उसके साथ खेलते हुए उसकी

नाक घायल कर दी थी ... हो सकता है कि उसे यह न भी याद आये ... इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता !.. मगर मैं सोचती हूं कि उसे यह याद आयेगा ही ... वह मुझे बहुत चाहता है। और यह रहा दूसरा लड़का – क्लोकोव। हर समय खोया-खोया, बाल बिखरे-बिखराये, गन्दा-मन्दा। हर वक़्त बहस करता और झगड़ता रहता है, हमेशा उसे कोई न कोई शरारत सूझती रहती है। यतीम है वह – अपने मामा के पास रहता है ... मामा रात को चौकीदारी करता है ... रोटियों के लाले हैं, मगर लड़के में बड़ा स्वाभिमान है, वह बड़ा दिलेर है ! सोचती हूं, बड़ा होकर पत्रकार बनेगा। ओह, मेरे क्लास में कैसे-कैसे दिलचस्प लड़के हैं ! मैं अनजाने ही हमेशा यह अनुमान लगाती रहती हूं कि वे बड़े होकर क्या बनेंगे, ज़िन्दगी में क्या भूमिका निभायेंगे ... इस बात की कल्पना करना बड़ा दिलचस्प है कि मेरे शागिर्द आगे चलकर कैसी ज़िन्दगी बितायेंगे ... देखती हो न तत्याना, यह तो मामूली-सी बात है ... लेकिन काश, तुम यह जानतीं कि इससे मुझे कितनी ख़ुशी होती है !

तत्याना : और तुम ? तुम अपने बारे में क्या सोचती हो ? शायद तुम्हारे छात्रों का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो ... मगर तुम उस वक़्त तक ?..

त्स्वेतायेवा : क़ब्र में पहुंच जाऊंगी ? अरे नहीं ! मैं बहुत अरसे तक जीने का इरादा रखती हूं ...

पोल्या (धीरे-धीरे, स्नेह से, मानो निःश्वास छोड़ते हुए) : आप कितनी अच्छी हैं मरीया ! कितनी प्यारी ...

त्स्वेतायेवा (**पोल्या की ओर मुस्कराते हुए**)**:** चहक उठीं, मेरी बुलबुल ... तत्याना, मैं भावुक नहीं हूं, कोरी भावनाओं की लहरों में नहीं बहती हूं। पर जब मैं भविष्य की बात सोचती हूं ... भावी लोगों, भावी जीवन की बात सोचती हूं तो मीठी-मीठी उदासी मेरे दिल-दिमाग़ में घर कर लेती है ... जैसे कि मेरे अन्तर में पतझर का उजला, प्यारा दिन चमक उठता है ... जानती हो न – पतझर में ऐसे दिन भी होते हैं – निर्मल आकाश में प्यारा-प्यारा सूरज चमकता होता है, हवा बिल्लौरी और मस्तीभरी होती है, जब दूर-दूर तक हर चीज़ साफ़ दिखाई देती है ... जब ताज़गी होती है, मगर ठंडक नहीं, हल्की उष्णता होती है, लेकिन गर्मी नहीं ...

तत्याना: ये सब ... मनगढ़न्त क़िस्से हैं ... वैसे ... मैं यह मानने को तैयार हूं कि ... शायद तुम, नील, शीश्किन – और तुम्हारे जैसे दूसरे सभी लोग सचमुच सपनों के सहारे जी सकते हैं ... मगर मैं नहीं जी सकती।

त्स्वेतायेवा: लेकिन, ज़रा रुको ... ये केवल सपने ही नहीं हैं ...

तत्याना: मुझे तो कभी, कुछ भी वास्तविक नहीं लगा ... इसके सिवा कि यह दीवार है और यह मैं हूं ... जब मैं "हां" या "नहीं" कहती हूं ... तो किसी विश्वास से ऐसा नहीं करती ... बल्कि इसलिए कि मुझे कुछ तो जवाब देना ही है। सच ! जब मैं "नहीं" कहती हूं तो उसी वक़्त मन में सोचने लगती हूं कि मुझसे ग़लती तो नहीं हो गयी ? शायद मुझे "हां"

कहना चाहिए था ?

त्स्वेतायेवा : तुम्हें ऐसा करने में मज़ा आता है ... अपने मन में झांककर जवाब दो – क्या तुम्हें अपनी आत्मा का यह दुरंगापन अच्छा नहीं लगता ? या फिर शायद तुम किसी भी चीज़ पर यक़ीन करते हुए डरती हो ... यक़ीन करने से आदमी पर ज़िम्मेदारी भी आ जाती है ...

तत्याना : मैं नहीं जानती ... नहीं जानती। मुझे यक़ीन करना सिखा दो। दूसरों को तो तुम लोग अपने पर यक़ीन करना सिखाते हो न ... (**धीरे से हंसती है**) मुझे उन लोगों पर तरस आता है जो तुम्हारी बातों पर यक़ीन करते हैं ... तुम लोग तो उनकी आंखों में धूल झोंकते हो ! ज़िंदगी तो हमेशा ऐसी ही थी , जैसी आज है – धुंधली-धुंधली , घुटी-घुटी और आगे भी हमेशा ऐसी ही रहेगी !

त्स्वेतायेवा (मुस्कराते हुए) : सच ? लेकिन शायद ऐसी ही नहीं रहेगी ?

पोल्या (मानो अपने आपसे) : ऐसी नहीं रहेगी !

तत्याना : तुमने क्या कहा ?

पोल्या : मैंने कहा कि ज़िन्दगी हमेशा ऐसी ही नहीं रहेगी !

त्स्वेतायेवा : शाबाश , मेरी शान्त बुलबुल !

तत्याना : यह भी तुम पर यक़ीन करनेवालों में से एक है ... क़िस्मत की मारी ! .. मगर इससे पूछो कि ऐसी ही क्यों नहीं रहेगी ज़िन्दगी ? क्यों बदल जायेगी वह ? इससे यह पूछो ...

पोल्या (धीरे से उसके पास जाकर) : बात यह है कि अभी तो सभी लोग जी नहीं पाते हैं ! बहुत कम लोग ही ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाते हैं ... बहुतों को तो जीने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती ... वे तो रोटी कमाने के लिए काम में ही जुटे रहते हैं ... मगर जब वे भी ...

शीश्किन (तेज़ी से आता है) : सभी को नमस्ते ! **(पोल्या से)** प्रणाम, महाराजा डंकन की सुनहरे बालोंवाली सुन्दर बेटी !

पोल्या : क्या ? किस महाराजा की बेटी ?

शीश्किन : अहा, पकड़ी गयीं ! देख रहा हूं कि आपने हाइने को नहीं पढ़ा, गो किताब दो हफ़्ते से आपके पास है। नमस्ते, तत्याना वसील्येव्ना !

तत्याना (हाथ बढ़ाते हुए) : अब उसे किताबों से क्या लेना-देना है ... वह दुलहन बननेवाली है ...

शीश्किन : सच ? किसकी ?

त्स्वेतायेवा : नील की ...

शीश्किन : अरे ! तब तो मैं आपको बधाई भी दे सकता हूं ... वैसे शादी-ब्याह करना, घर-गिरस्ती के चक्कर में पड़ना कोई अक़्ल की बात नहीं ... आज के ज़माने में शादी ...

तत्याना : बस, बस रहने दीजिये ! हम पर रहम कीजिये ! इसके बारे में आप पहले भी कई बार बहुत कुछ कह चुके हैं ...

शीश्किन : चलिये, तब बख़्श देता हूं ! यों भी मेरे पास वक़्त नहीं है। **(त्स्वेतायेवा से)** आप मेरे साथ

चल रही हैं न? अच्छी बात है! प्योत्र घर पर नहीं है?

पोल्या : ऊपर है...

शीश्किन : हुंह... नहीं, मैं अब उसके पास नहीं जाऊंगा! तत्याना वसील्येव्ना... या, पोल्या, आप ज़रा उसे यह बता दीजिये... कह दीजिये... मेरा मतलब है... प्रोख़ोरोव की ट्यूशन से मेरी छुट्टी हो गयी है...

त्स्वेतायेवा : फिर वही मुसीबत? आप भी तक़दीर के सिकन्दर हैं!

तत्याना : क्या उससे झगड़ा हो गया?

शीश्किन : कुछ ख़ास तो नहीं!.. मैंने बहुत संयम से काम लिया...

त्स्वेतायेवा : लेकिन फिर भी यह ऐसा हुआ किसलिए? आपने तो ख़ुद ही प्रोख़ोरोव की तारीफ़ की थी?..

शीश्किन : जी हां! तारीफ़ की थी... गोली मारो! वैसे वह बहुतों से अच्छा है... दिमाग़ में भूसा नहीं है... लेकिन शेख़ीख़ोर है... बड़ा बातूनी है और कुल मिलाकर... (**सहसा भड़कते हुए**) जंगली जानवर है!

तत्याना : अब तो शायद ही प्योत्र आपको कोई ट्यूशन दिलवाये...

शीश्किन : हां, शायद वह मुझसे नाराज़ हो जायेगा...

त्स्वेतायेवा : आख़िर प्रोख़ोरोव के साथ आपका झगड़ा क्यों हुआ?

शीश्किन : आप कल्पना कीजिये – वह यहूदियों से नफ़रत करता है!

तत्याना : आपको इससे क्या लेना-देना है?

शीश्किन : मगर... यह तो घटिया बात हुई न! सभ्य आदमी को ऐसा शोभा नहीं देता! और फिर वह ओछा टुटपुंजिया है! अब इसी क़िस्से को ले लीजिये – उसकी नौकरानी रविवार के स्कूल में जाती थी। बहुत अच्छा करती थी! ख़ुद उसने रविवार के इन स्कूलों के फ़ायदे साबित करने के लिए भाषण झाड़ा था... जिसके लिए मैंने उससे बिल्कुल नहीं कहा था! उसने यह शेख़ी भी बघारी कि वह ऐसे स्कूलों को चलाने की पहलक़दमी करनेवालों में से एक है। ख़ैर, अभी कुछ दिन पहले, एक इतवार को जब वह घर आया तो – बस, कुछ न पूछो! – नौकरानी की जगह आया ने दरवाज़ा खोला! "नौकरानी कहां है?" उसने पूछा। "स्कूल गयी है," आया ने जवाब दिया। अहा! उस दिन के बाद वह नौकरानी आज स्कूल जाती है। क्यों, कैसी रही?

(तत्याना सिर्फ़ कंधे झटककर रह जाती है)

त्स्वेतायेवा : और बातें करने में कितना तेज़ है...

शीश्किन : न जाने प्योत्र कहां से मेरे लिए सदा ऐसे ही ढोंगी चेले ढूंढ़ देता है।

तत्याना (रूखेपन से) : मुझे याद आ रहा है कि आप उस ख़ज़ांची से बहुत ख़ुश थे जिसे पहले पढ़ाते थे...

शीशिकन : हां ... बेशक ... वह प्यारा-सा बुड्ढा है ! मगर उसे सिक्के इकट्ठे करने की बीमारी है ! हर वक़्त मेरे सामने तांबे के सिक्के लेकर बैठा रहता और कहता – यह सीज़र है, यह फ़राऊं है अपने रथ में और यह फलां बादशाह है। जब तक हो सका, मैंने यह बर्दाश्त किया और फिर तंग आकर एक दिन कह उठा – "सुनिये, विकेन्ती वसील्येविच ! मेरे ख़्याल में यह सब बकवास है ! सड़क पर पड़ा हुआ हर पत्थर आपके इन सिक्कों से अधिक पुराना है।" बूढ़े पर तो जैसे गाज गिर गयी। "आपका मतलब है कि मैंने अपनी ज़िन्दगी के पन्द्रह बरस बकवास के काम में बरबाद कर दिये ?" मैंने जवाब दिया कि ऐसा ही है। मेरा हिसाब चुकता करते वक़्त उसने आधा रूबल मार लिया ... मेरे ख़्याल में अपने सिक्कों की गिनती बढ़ाने के लिए। ख़ैर, यह कोई बात नहीं ... मगर यह प्रोख़ोरोव वाला मामला ... हां, क्या कहा जाये ... (**उदास-सा होकर**) मेरा मिज़ाज भी ख़ासा टेढ़ा है ! (**जल्दी से**) मरीया निकीतिश्ना, अब हमें चलना चाहिए !

त्स्वेतायेवा : मैं बिल्कुल तैयार हूं। नमस्ते, तत्याना ! कल इतवार है ... मैं सुबह ही तुम्हारे पास आ जाऊंगी ...

तत्याना : धन्यवाद। वैसे ... मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मैं लोगों के पैरों में उलझनेवाली जंगली घास जैसी हूं ... जिसमें न कोई ख़ूबसूरती है और जो न किसी को ख़ुशी देती है ... मैं लोगों के रास्ते में आती

हूं, पैरों में उलझती हूं ...

शीश्किन : उफ़, ये कैसे भयानक विचार हैं!

त्स्वेतायेवा : तुम्हारे मुंह से ऐसी बातें सुनकर दिल को बड़ा दुख होता है, तत्याना ...

तत्याना : मगर सुनो ... मैं सोचती हूं ... मैं समझती हूं ... हां, आख़िर ज़िन्दगी की एक कड़वी सचाई को समझ गयी हूं ... जो किसी चीज़ में यक़ीन नहीं रखता, वह ज़िन्दा नहीं रह सकता ... उसे मर जाना चाहिए ... हां, मर जाना चाहिए!

त्स्वेतायेवा (मुस्कराते हुए) : सच? शायद नहीं मरना चाहिए?

तत्याना : तुम मेरी खिल्ली उड़ा रही हो ... क्या ऐसा करना अच्छा है? मेरा मज़ाक़ उड़ाना? क्या ऐसा करना अच्छा है?

त्स्वेतायेवा : नहीं तत्याना, नहीं मेरी प्यारी! यह तुम नहीं, तुम्हारी बीमारी बोल रही है, तुम्हारी थकान – अच्छा , तो कल फिर मिलेंगी! और हमें इतने कठोर और बुरे दिल के आदमी नहीं मानो ...

तत्याना : जाइये ... नमस्ते!

शीश्किन (पोल्या से) : तो कहिये, हाइने कब पढ़ेंगी? अरे हां, आप तो दुलहन बननेवाली हैं ... शादी के ख़िलाफ़ कुछ कहा तो ज़रूर जा सकता है ... लेकिन ख़ैर, नमस्ते! **(त्स्वेतायेवा के पीछे-पीछे बाहर जाता है)**

(ख़ामोशी)

पोल्या : मेरे ख़्याल में प्रार्थना तो जल्द ही ख़त्म हो जायेगी ... क्या मैं समोवार लाने को कह दूं?

तत्याना : अम्मां और पिता जी शायद ही चाय पियें ... पर, जैसा तुम ठीक समझो, करो।

(ख़ामोशी)

पहले ख़ामोशी मुझे मानो काटती थी, मगर अब मैं उसके लिए बेचैन रहती हूं।

पोल्या : आपके दवा पीने का वक़्त हो गया न?

तत्याना : अभी नहीं ... पिछले दिनों में यहां बहुत ज़्यादा दौड़-धूप और हो-हल्ला रहा है। शीश्किन कितना शोर मचाता है यह ...

पोल्या : (उसके पास जाकर) : वह बहुत भला है ...

तत्याना : रहमदिल ... मगर बुद्धू ...

पोल्या : वह बहुत अच्छा है और दिलेर भी। जहां बेइंसाफ़ी देखता है, वहीं सामने डट जाता है। देखिये न, कैसे नौकरानी की हिमायत की उसने। अमीरों के यहां काम करनेवाले नौकर-नौकरानियां और दूसरे लोग कैसी ज़िन्दगी बिताते हैं, कौन इस बात की तरफ़ ध्यान देता है? कोई ध्यान भी देता है तो उनकी हिमायत कौन करता है?

तत्याना (पोल्या की तरफ़ देखे बिना ही) : पोल्या, मुझे यह बताओ ... क्या तुम्हें ... नील से शादी करते हुए डर नहीं लगता?

पोल्या (हैरान होकर, इतमीनान से) : डरने की कौनसी बात है? नहीं, मुझे किसी चीज़ से डर

नहीं लगता ...

तत्याना : किसी चीज़ से डर नहीं लगता ? मगर मुझे तो ज़रूर डर लगता। मैं तुमसे इसलिए यह कह रही हूं ... मैं तुम्हें ... प्यार करती हूं ! तुम उसके जैसी नहीं हो। तुम सीधी-सादी हो ... मगर उसने बहुत कुछ पढ़ा-पढ़ाया है, वह सुशिक्षित है। हो सकता है कि उसे तुम्हारे साथ ऊब महसूस हो ... तुमने इसके बारे में सोचा है, पोल्या ?

पोल्या : नहीं। मैं जानती हूं कि वह मुझे प्यार करता है ...

तत्याना (चिढ़कर) : जैसे कि यह जाना जा सकता है ...

(तेतेरेव समोवार लिये हुए आता है)

पोल्या : धन्यवाद ! मैं दूध ले आती हूं। **(बाहर जाती है)**

तेतेरेव (ख़ुमार से उसका चेहरा भारी-सा लग रहा है) : मैं रसोईघर के पास से गुज़र रहा था कि स्तेपानीदा गिड़गिड़ाने लगी – " भैया, समोवार भीतर लेते जाओ ! इसके बदले में मैं तुम्हें जब भी कहोगे, अचारी खीरे दे दूंगी ... " झट से मुंह में पानी भर आया – पेटू जो ठहरा ...

तत्याना : आप प्रार्थना से लौटे हैं ?

तेतेरेव : नहीं, मैं आज वहां नहीं गया। सिर फटा जा रहा है। आप कैसी हैं ? तबीयत पहले से बेहतर है न ?

तत्याना : हां, बुरी नहीं, शुक्रिया। दिन में कम से कम बीस बार तो मुझसे पूछा ही जाता है... अगर हमारे यहां कुछ कम शोर-शराबा रहता तो मेरी तबीयत और भी ज़्यादा अच्छी हो जाती। मुझे यह हो-हल्ला परेशान कर देता है—सभी कहीं भागते रहते हैं, चीख़ते-चिल्लाते हैं... पिता जी नील पर बिगड़ते रहते हैं, अम्मां लगातार आहें भरा करती हैं... और मैं यहां पड़ी-पड़ी ये सब नाटक देखा करती हूं... और मुझे उसमें कोई तुक नज़र नहीं आती जिसे ये लोग... ये सभी लोग... ज़िन्दगी कहते हैं...

तेतेरेव : नहीं, बहुत कुछ विचित्र है इसमें! मुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, मैं इस धरती के झमेलों में नहीं पड़ता... तमाशा देखने के लिए जी रहा हूं, फिर भी मुझे लगता है कि काफ़ी दिलचस्प है यह ज़िन्दगी।

तत्याना : आप ज़िन्दगी से कोई मांग नहीं करते, बिल्कुल फक्कड़ हैं, यह मैं जानती हूं। मगर आपको इसमें दिलचस्प क्या दिखाई देता है?

तेतेरेव : दिलचस्प यह है कि सभी लोग जीने के लिए अपने साज़ों के सुर-ताल ठीक करने में लगे हुए हैं। थियेटर में जब वादक अपने साज़ों के सुर मिलाते हैं, तो मुझे उनकी आवाज़ें सुनना बहुत अच्छा लगता है। अलग-अलग, अनेक सुरीली ध्वनियां कानों में पड़ती हैं, कभी कोई प्यारी-सी तान भी सुनाई दे जाती है... दिल जल्दी से जल्दी यह जानने को बेक़रार हो उठता है कि ये कौनसी धुन बजायेंगे?

न जाने प्रमुख गायक कौन होगा? नाटक कैसा होगा? ज़िन्दगी में भी यही कुछ हो रहा है... लोग अपने बाजों के सुर-ताल मिला रहे हैं।

तत्याना: थियेटर के बारे में... ऐसा कहा जा सकता है... वहां संगीत-निदेशक आता है, अपनी छड़ी हिलाता है और वादक किसी पुरानी और घिसी-पिटी धुन को भद्दे और नीरस ढंग से बजाना शुरू कर देते हैं। मगर यहां?.. हमारे ये लोग? कौनसी धुन बजा सकते हैं? मैं नहीं जानती।

तेतेरेव: शायद कोई बहुत ही ज़ोरदार धुन...

तत्याना: यह तो वक़्त बतायेगा।

(ख़ामोशी)

(तेतेरेव अपना पाइप जलाता है)

आप पाइप क्यों पीते हैं? सिगरेट क्यों नहीं?

तेतेरेव: ज़्यादा सुविधा रहती है। मैं ठहरा आवारा आदमी, सड़कें नापते हुए ही साल का अधिकतर समय बीतता है। जल्द ही फिर से चला जाऊंगा। जाड़ा आते ही चल दूंगा।

तत्याना: किधर?

तेतेरेव: मालूम नहीं... कहीं भी चला जाऊंगा...

तत्याना: नशे में धुत्त कहीं पड़े-पड़े बर्फ़ हो जायेंगे...

तेतेरेव: सफ़र में मैं कभी नहीं पीता... और अगर मैं ठिठुरकर मर भी जाऊंगा तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ेगा?

एक ही जगह बैठे-बैठे सड़ने के बजाय चलते-फिरते मर जाना कहीं बेहतर है ...

तत्याना : आप मेरी तरफ़ इशारा कर रहे हैं ?

तेतेरेव (घबराकर उछलता है) : भगवान बचाये ! यह आप क्या कह रही हैं ? मैं भला ऐसी बात कह सकता हूं ... मैं दरिन्दा नहीं हूं !

तत्याना (मुस्कराते हुए) : परेशान होने की ज़रूरत नहीं ! मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगता – दर्द नाम की कोई चीज़ अब मुझ पर असर नहीं करती। (**कटुता से**) सभी जानते हैं कि मुझे किसी बात से ठेस नहीं लगती। नील, पोल्या, येलेना, मरीया ... वे सभी उन रईसों जैसा बर्ताव करते हैं जिन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं कि किसी भिखमंगे के दिल पर क्या गुज़रती है ... वह बेचारा उस वक़्त क्या सोचता है जब उन्हें बढ़िया पकवान खाते हुए देखता है ...

तेतेरेव (मुंह बनाता है और दांतों को भींचकर बोलता है) : आप अपने को इतना गिरा क्यों रही हैं ? आपमें आत्म-सम्मान होना चाहिए ...

तत्याना : चलिये ... हटाइये इस क़िस्से को !

(ख़ामोशी)

मुझे अपने बारे में ... कुछ बताइये। आप अपनी चर्चा कभी नहीं करते ... क्यों ?

तेतेरेव : यह बड़ा, किन्तु नीरस विषय है।

तत्याना : नहीं, बताइये ! क्यों आप ... इस अजीब ढंग से ज़िन्दगी बिता रहे हैं ? मुझे आप ख़ासे समझ-

दार और गुणी आदमी लगते हैं ऐसा क्या हो गया है आपकी ज़िन्दगी में?..

तेतेरेव (दांत निकालते हुए) : क्या हो गया है मेरी ज़िन्दगी में? अगर मैं अपने शब्दों में बताऊंगा तो यह बेहद लम्बी और उबानेवाली बात हो जायेगी... यों कहा जा सकता है—

गया ख़ुशी की खोज में
लौटा नंग-धड़ंग।
कपड़े, जूते भी गये
सपने और उमंग।

इतनी ही बात है... बेशक बहुत नपी-तुली, मगर मेरे मामले में कुछ ज़्यादा ही ख़ूबसूरत। इसमें मुझे इतना और जोड़ना होगा कि रूस में एक सच्चे और ईमानदार आदमी के मुक़ाबले में किसी आवारा और शराबी की ज़िन्दगी कहीं ज़्यादा आराम से गुज़रती है।

(प्योत्र और नील आते हैं)

तलवार की तरह सख़्त और मज़बूत लोग ही इस ज़िन्दगी में अपना रास्ता बना सकते हैं... अरे! नील! कहां से आ रहे हो?

नील : रेलवे के डिपो से। बहुत ही शानदार बाज़ी मारकर। उस काठ के उल्लू से, हमारे उस सबसे बड़ा अफ़सर से...

प्योत्र : शायद जल्द ही तुम्हारी वहां से छुट्टी कर दी जायेगी...

नील : मैं दूसरी नौकरी ढूंढ़ लूंगा...

तत्याना : सुनो प्योत्र, शीश्किन प्रोख़ोरोव से झगड़ा कर आया है। ख़ुद तुमसे यह कहने की हिम्मत नहीं हुई उसकी ...

प्योत्र (खीझकर) : बेड़ा ग़र्क़ हो जाये उसका ! बेवक़ूफ़ी की भी कोई हद होती है ! अब मैं प्रोख़ोरोव को क्या मुंह दिखाऊंगा ? इससे भी बुरी बात यह है कि अब मैं किसी दूसरे की भी मदद नहीं कर सकूंगा ...

नील : ऐसे लाल-पीले होने से पहले यह तो जान लो कि ग़लती किसकी है ?

प्योत्र : यह मैं जानता हूं !

तत्याना : शीश्किन को यह अच्छा नहीं लगा कि प्रोख़ोरोव यहूदियों से नफ़रत करता है ...

नील (हंसते हुए) : अरे, वाह रे प्यारे !

प्योत्र : हां, हां, तुम्हें तो बहुत अच्छा लगेगा ही ! तुम ख़ुद भी तो दूसरों के दृष्टिकोण का आदर नहीं करते ... जंगली लोग !

नील : लेकिन यह बताओ, क्या तुम यहूदियों से नफ़रत करनेवालों का आदर करते हो ?

प्योत्र : मैं किसी भी हालत में अपने को यह हक़ नहीं दूंगा कि किसी को गले से जा पकड़ूं !

नील : मगर मैं ऐसा करूंगा ...

तेतेरेव (दोनों को बारी-बारी से देखकर) : तो पकड़ लो !

प्योत्र : किसने ... किसने तुम्हें यह अधिकार दिया है ?

नील : अधिकार कोई देता नहीं, अधिकार लिये जाते हैं... अगर कोई कर्त्तव्यों के बोझ तले दबकर कुचला नहीं जाना चाहता, तो उसे लड़कर अपने अधि-कार लेने ही होंगे...

प्योत्र : भई, वाह!..

तत्याना (क्षुब्ध होकर) : फिर से बहस शुरू हो रही है... कभी न ख़त्म होनेवाली बहस! क्या तुम लोग इससे कभी तंग नहीं आते?..

प्योत्र (अपने पर क़ाबू पाते हुए) : माफ़ी चाहता हूं, मैं और बहस नहीं करूंगा। मगर यह तो सच है न कि शीश्किन ने मुझे अटपटी स्थिति में डाल दिया है...

तत्याना : मैं जानती हूं... वह बुद्धू है!

नील : वह बहुत भला आदमी है! वह कभी यह नहीं होने देगा कि कोई उसे कुचलता हुआ निकल जाये, मगर ज़रूरत पड़ने पर ख़ुद ऐसा करने से कभी नहीं चूकेगा! अपनी प्रतिष्ठा की चेतना होना अच्छी बात है...

तत्याना : तुम्हारा मतलब बचकाना हरकतें करने से है?

नील : नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था। बेशक यह बचकाना हरकत ही हो, फिर भी अच्छी है!

प्योत्र : हंसी आती है...

नील : जब कोई रोटी का आख़िरी टुकड़ा भी सिर्फ़ इसलिए फेंक देता है कि उसे देनेवाला हाथ घिनौना है...

प्योत्र : मतलब यह है कि रोटी का टुकड़ा फेंकने-वाला बहुत भूखा नहीं है ... मैं जानता हूं कि तुम मेरी इस बात को काटोगे। तुम ख़ुद भी वैसे ही हो ... तुममें भी बचपन है ... तुम हर वक़्त पिता जी को यह जताने के फेर में पड़े रहते हो कि तुम उनकी ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते ... भला क्यों ?

नील : मैं इसे छिपाऊं भी तो, किसलिए ?

तेतेरेव : मेरे दोस्त ! शिष्टता यह मांग करती है कि आदमी झूठ बोले ...

प्योत्र : लेकिन ऐसा करने में तुक क्या है ? क्या तुक है ?

नील : मेरे भाई, हम एक दूसरे को कभी नहीं समझ पायेंगे ... बेकार है तुमसे इसके बारे में बात करना। तुम्हारे पिता जो कुछ करते और कहते हैं, मुझे उस सब से नफ़रत होती है ...

प्योत्र : मुमकिन है कि ... मुझे भी नफ़रत होती हो, मगर मैं उसे दिल में ही पी जाता हूं। तुम हमेशा मुंह पर ही खरी-खरी सुनाकर उन्हें चिढ़ाते रहते हो ... और इसका बदला हमें चुकाना पड़ता है – मुझे और मेरी बहन को।

तत्याना : ओह, बस भी करो, प्योत्र ! वही, बेसुरा गाना !

(नील उसकी तरफ़ देखकर मेज़ के पास चला जाता है)

प्योत्र : तुम्हें हमारी बातचीत से परेशानी होती है ?

तत्याना : मैं ऐसी बातों से तंग आ गयी हूं! बार-बार वही क़िस्सा... कान पक गये हैं सुन-सुनकर!

(पोल्या दूध का जग लिये हुए आती है। नील के चेहरे पर स्वप्निल-सी मुस्कान देखकर सभी पर नज़र डालती है और कहती है)

पोल्या : देखिये तो, लगता है न किसी महात्मा जैसा?

तेतेरेव : तुम्हें हंसी किसलिए आ रही है?

नील : मुझे? अपने बड़े अफ़सर को आज जो खरी-खोटी सुनाकर आया हूं, उसे याद कर रहा था... दिलचस्प चीज़ है यह ज़िन्दगी हमारी!

तेतेरेव (भारी आवाज़ में) : तथास्तु!

प्योत्र (कंधे झटकते हुए) : बड़ी हैरानी होती है मुझे! ज़िन्दगी के सिर्फ़ उजले पहलू को देखनेवाले आशावादी क्या अंधे पैदा होते हैं?

नील : मैं आशावादी हूं या कुछ और – इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता – मगर जीना मुझे बहुत अच्छा लगता है! **(उठकर इधर-उधर टहलने लगता है)** बहुत मज़ा है इस धरती पर जीने में!

तेतेरेव : हां, दिलचस्प है ज़िन्दगी!

प्योत्र : अगर तुम ईमानदारी से ऐसा कह रहे हो, तो दोनों मसखरे हो!

नील : और तुम कौन हो – मैं नहीं जानता कि तुम्हें क्या उपाधि दूं? मैं जानता हूं – और वैसे तो यह किसी से भी छिपा हुआ नहीं है – कि तुम उमके

दीवाने हो और वह भी तुम्हें प्यार करती है। और कुछ नहीं, तो क्या इसी वजह से तुम्हारा मन नहीं चाहता कि तुम गाओ, नाचो? क्या तुम्हें इससे भी ख़ुशी नहीं होती?

(पोल्या समोवार के पीछे से सबको गर्व से देखती है। तत्याना सोफ़े पर बेचैनी से इधर-उधर हिल-डुलकर नील के चेहरे की झलक पाने की कोशिश करती है। तेतेरेव मुस्कराते हुए पाइप से राख झाड़ता है)

प्योत्र: तुम कुछ बातें भूल रहे हो। पहली बात तो यह है कि विद्यार्थियों को शादी करने की इजाज़त नहीं है। दूसरे, अभी मुझे अपने माता-पिता से मोर्चा लेना होगा, और तीसरे...

नील: हे भगवान! कैसी बेसिर-पैर की बातें कर रहे हो? तुम्हारे लिए तो अब सिर्फ़ यही रह गया है – भाग जाओ! किसी वीराने में भाग जाओ!..

(पोल्या मुस्कराती है)

तत्याना: तुम मसख़रापन दिखा रहे हो, नील...

नील: नहीं, प्योत्र, नहीं! किसी के प्यार में दीवाना न होने पर भी जीने में बड़ा लुत्फ़ है! पतझर की रात में, मूसलाधार बारिश और अंधड़ में... या फिर जाड़े में जब बर्फ़ का तूफ़ान चारों तरफ़ से सांय-सांय करता हो, आस-पास की दुनिया का कहीं अता-पता न हो, उसे अंधेरे ने निगल लिया हो, वह बर्फ़ के नीचे दब गयी हो, ऐसी रात में छकड़े जैसे ख़स्ता-

हाल इंजन को चलाना बेहद थका देनेवाला, मुश्किल और कहा जा सकता है कि ख़तरनाक भी होता है... मगर इसका भी अपना एक मज़ा है! बेशक है! हां, एक चीज़ है जो अच्छी नहीं लगती। वह यह कि मुझ पर, मेरे जैसे दूसरे ईमानदार लोगों पर गधे, उल्लू और चोर-उचक्के हुक्म चलाते हैं... लेकिन ज़िन्दगी इन्हीं लोगों के लिए नहीं है! ये भी नहीं रहेंगे, ये भी मिट जायेंगे, जैसे तन्दुरुस्त जिस्म से नासूर मिट जाते हैं। कोई भी तो ऐसी समय-सारिणी नहीं जो बदली न जाती हो!..

प्योत्र: तुम्हारे ये भाषण मैंने बहुत बार सुने हैं। देखेंगे कि ज़िन्दगी तुम्हें इनके क्या जवाब देती है!

नील: मैं जैसे चाहूंगा, ज़िन्दगी को वैसे ही जवाब देने के लिए मजबूर करूंगा। तुम मुझे डराओ नहीं! मैं तुमसे कहीं बेहतर यह जानता हूं कि ज़िन्दगी काफ़ी मुश्किल चीज़ है, कभी-कभी इसके थपेड़े इतने ज़ोरदार होते हैं कि होश हवा हो जाते हैं। मैं यह भी जानता हूं कि ज़ुल्म और अत्याचार का मज़बूत पंजा लोगों की गर्दन दबोचता जा रहा है। मैं यह सब कुछ जानता हूं। मुझे यह सब नापसन्द है, इससे मेरा ख़ून खौलने लगता है! मैं ज़िन्दगी को इसी रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं हूं! मैं जानता हूं कि ज़िन्दगी कोई खेल नहीं, गम्भीर मामला है, इसकी शक्ल बिगड़ी हुई है... इसे ख़ूबसूरत शक्ल देने के लिए मुझे एड़ी-चोटी का ज़ोर और दिमाग़ की पूरी ताक़त लगानी होगी। मैं यह भी जानता हूं कि मैं कोई सूरमा नहीं

हूं, सिर्फ़ एक मज़बूत और ईमानदार आदमी हूं। फिर भी मैं यह कहता हूं – कोई बात नहीं! – आख़िर जीत हमारी होगी! ज़िन्दगी को बदलने की अपनी इस चाह को पूरा करने के लिए मैं अपनी पूरी ताक़त लगा दूंगा, अपनी पूरी शक्ति से इस तूफ़ान में कूद पड़ूंगा... मैं इसे कभी इस सांचे में ढालूंगा, तो कभी दूसरे में... मैं कहीं अपना कंधा बढ़ाकर सहारा दूंगा, तो कहीं चट्टान बनकर खड़ा हो जाऊंगा... इसी में है ज़िन्दगी का मज़ा – जीने का मज़ा!

तेतेरेव (व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए) : यह है गहरी से गहरी विद्या का सार! यह है सभी दर्शनों का निचोड़! बाक़ी सारे फ़लसफ़े, जायें भाड़ में!

येलेना (दरवाज़े से) : किस वजह से यहां चीख़ा-चिल्लाया और हाथों को लहराया जा रहा है?

नील (येलेना की ओर लपकते हुए) : अरे, आप मेरी बात को ज़रूर समझ जायेंगी! मैंने अभी-अभी ज़िन्दगी का स्तुति-गान किया है! आप कहिये – ज़िन्दगी में बहुत मज़ा है न!

पोल्या (धीरे से) : जीने में बड़ा सुख है!

येलेना : कौन इसे मानने से इन्कार करता है?

नील (पोल्या से) : अरी मेरी... शान्त बुलबुल!

येलेना : मेरे सामने – यह प्यार-मुहब्बत!

प्योत्र : शैतान ही जानता है कि यह सब क्या है! यह नील तो जैसे नशे में है...

(तत्याना सोफ़े की पीठ पर सिर टिकाकर धीरे-धीरे

हाथ ऊपर उठाती है और अपने चेहरे को छिपा लेती है)

येलेना : अरे! आप लोग तो चाय की चुसकियां लेने की तैयारी में हैं? और मैं आपको अपने यहां बुलाने आयी थी... लेकिन अब मैं भी आपके साथ ही चाय पी लूंगी – आज यहां हंसी-ख़ुशी का रंग है। (**तेतेरेव से**) लेकिन आप, अक़्लमन्द कौवे, केवल आप ही बुत बने बैठे हैं – भला क्यों?

तेतेरेव : मैं भी बड़े रंग में हूं। लेकिन मुझे ख़ुशी में ख़ामोश रहना और ऊब में शोर मचाना अच्छा लगता है...

नील : सभी बड़े, समझदार और उदास कुत्तों की तरह...

येलेना : मैंने तो आपको न कभी उदास और न कभी ख़ुश, बल्कि हमेशा फ़लसफ़े की टांग तोड़ते देखा है। महानुभाव, आप जानते हैं, तत्याना, तुम्हें मालूम है, ये हज़रत मुझे फ़लसफ़ा पढ़ा रहे हैं। कल इन्होंने मुझे अस्तित्व के पर्याप्त आधार के नियम पर एक लम्बा-चौड़ा लेक्चर पिलाया था... ओह, मैं भी क्या भुलक्कड़ हूं, कैसे व्यक्त किया जाता है यह अद्भुत नियम... किन शब्दों में? किन शब्दों में?

तेतेरेव (मुस्कराते हुए) : हर चीज़ की कोई जड़ होती है, क्योंकि जड़...

येलेना : सुना आपने? ज़रा सोचिये तो, मैं कैसी-कैसी अक़्ल की बातें जानती हूं! आप लोग नहीं जानते कि यह नियम क्या है, यह नियम किस चीज़ का

प्रतीक है। यह प्रतीक है दाढ़ का, क्योंकि उसकी चार जड़ें होती हैं... मैं ठीक कह रही हूं न?

तेतेरेव: आपकी बात काटने की हिम्मत नहीं कर सकता ...

येलेना: बेशक नहीं कर सकते! ज़रा कोशिश कर देखिये! पहली जड़, हो सकता है कि यह पहली न हो, – यही है अस्तित्व के पर्याप्त आधार का नियम – यह क्या है? शक्लधारी पदार्थ... मुझे देखो, मैं क्या हूं? मैं पदार्थ हूं, जिसने – किसी आधार के बिना ही – औरत का रूप ले लिया है... मगर – इस बार किसी आधार के बिना ही मैं अस्तित्वहीन हो जाती हूं। अस्तित्व कभी ख़त्म नहीं होता, मगर पदार्थ कभी एक और कभी दूसरा रूप धारण करता रहता है – यह आनी-जानी चीज़ है! मैं ठीक कह रही हूं न?

तेतेरेव: कोई बात नहीं, यह भी चलेगा ...

येलेना: इसके अलावा मैं यह भी जानती हूं कि एक कारण के साथ उसकी दूसरी कड़ी जुड़ी रहती है – यानी यों कह लो कि मुर्ग़ी से अण्डा और अण्डे से फिर मुर्ग़ी, – मगर यह सिलसिला कैसे चलता जाता है, यह तो मैं दस जन्म भी याद नहीं कर पाऊंगी! अगर अक़्ल की इन बातों से चांद गंजी न हो गयी तो ज़रूर अक़्लमन्द हो जाऊंगी! मगर इस सारे फ़लसफ़े में जो सबसे दिलचस्प सवाल पैदा होता है, वह यह है कि, जनाब, तेरेन्ती ख़्रीसान्फ़ोविच, आपके दिमाग़ में मुझे फ़लसफ़ा सिखाने की सनक क्यों आई?

तेतेरेव: पहली बात तो यह है कि आपको अपने

नज़दीक देखते रहने से मेरा जी ख़ुश होता है ...

येलेना : शुक्रिया ! दूसरी बात शायद बेमज़ा हो ...

तेतेरेव : दूसरी बात यह है कि सिर्फ़ फ़लसफ़ा छांटते वक़्त ही आदमी झूठ नहीं बोलता, क्योंकि फ़लसफ़ा तो सिर्फ़ दिमाग़ी उड़ान होती है ...

येलेना : कुछ भी दिमाग़ में नहीं घुसा ! अरे हां, तत्याना ! कैसी तबीयत है तुम्हारी ? (**जवाब की प्रतीक्षा किये बिना ही**) प्योत्र ... वसील्येविच ? आप किससे रूठे बैठे हैं ?

प्योत्र : अपने से।

नील : और बाक़ी सब से भी ?

येलेना : जानते हैं, अचानक मेरा गाने को मन बेक़रार हो रहा है ! बड़े अफ़सोस की बात है कि आज शनिवार है और संध्या की प्रार्थना अभी तक ख़त्म नहीं हुई ...

(बेस्सेमेनोव और अकुलीना इवानोव्ना प्रवेश करते हैं)

अरे ! लीजिये, वे आ रहे हैं भगवान का नाम जपनेवाले ! नमस्ते !

बेस्सेमेनोव (रुखाई से) : अभिवादन करता हूं आपका ...

अकुलीना इवानोव्ना (उसी के अन्दाज़ में) : नमस्ते, देवी जी ! मगर हम तो आज एक बार पहले भी मिल चुकी हैं।

येलेना : ओह, हां ! मैं भूल गयी थी ... तो, तो ... क्या गिरजे में बहुत गर्मी थी ?

बेस्सेमेनोव : हम तापमान लेकर गर्मी मापने के लिए गिरजे में नहीं गये थे ...

येलेना (सहमकर) : जी, सो तो ज़ाहिर है ... मगर मैं यह नहीं ... मैं तो यह पूछना चाहती थी कि क्या वहां बहुत लोग थे ?

अकुलीना इवानोव्ना : हमने गिनती नहीं की ...

पोल्या (बेस्सेमेनोव से) : चाय पियेंगे ?

बेस्सेमेनोव : पहले खाना खायेंगे ... तत्याना की मां, जाओ, जाकर कुछ तैयार कर लो।

(अकुलीना इवानोव्ना नाक फरफराती हुई बाहर जाती है। सब ख़ामोश रहते हैं। तत्याना उठती है, येलेना का सहारा लेकर मेज़ तक पहुंचती है। नील तत्याना की जगह सोफ़े पर जा बैठता है। प्योत्र इधर-उधर टहलता है। तेतेरेव पियानो के पास बैठा हुआ इन सबको देखता और मुस्कराता है। पोल्या समोवार के पास बैठी है। बेस्सेमेनोव कोने में सन्दूक़ पर बैठा है)

कैसा ज़माना आ गया है – हद हो गयी ! लोग कैसे चोर हो गये हैं। थोड़ी देर पहले, जब हम गिरजे को जा रहे थे, तो मैंने फाटक के पास कीचड़ को लांघने के लिए उस पर एक तख़्ता डाल दिया था। अब लौटे तो देखा कि तख़्ता ग़ायब है ... कोई चोर ले उड़ा। लोगों का कोई धर्म-ईमान तो रहा ही नहीं ...

(ख़ामोशी)

पुराने ज़माने में ऐसे चोर-उचक्के कम थे, लोग

बड़े-बड़े डाके डालते थे, क्योंकि उनके दिल बड़े थे, छोटी-मोटी चीज़ों के लिए अपना ईमान नहीं बिगाड़ते थे ...

(सड़क पर गाना-बजाना सुनाई देता है)

अरे वाह ... गा रहे हैं। शनिवार, प्रार्थना का दिन है और वे गा रहे हैं ...

(गाने की आवाज़ पास आ जाती है। दो व्यक्ति मिलकर गा रहे हैं)

ज़रूर मज़दूर होंगे। काम से छुट्टी मिली कि सीधे पहुंचे शराबख़ाने में, कमाई कर दी शराब की नज़र और अब गला फाड़ रहे हैं ...

(गाना खिड़कियों के नीचे सुनाई देता है। नील खिड़की के शीशे से चेहरा सटाकर बाहर देखता है)

एक साल, दो साल तक ये ऐसी ज़िन्दगी बितायेंगे और बस, फिर इन्हें चौपट समझो। चोर-उचक्के बन जायेंगे ...

नील : लगता है कि यह पेर्चीख़िन है ...

अकुलीना इवानोव्ना (दरवाज़े से) : प्योत्र के पिता, खाना तैयार है ...

बेस्सेमेनोव (उठते हुए) : पेर्चीख़िन ... वह भी ... इन निकम्मों में से एक है ... **(बाहर जाता है)**

येलेना (आंखें उसका पीछा करती हैं) : मेरे यहां ... चाय पीना ज़्यादा अच्छा रहेगा ...

नील : आज बुज़ुर्गों से आपकी बातचीत ख़ूब बढ़िया रही।

येलेना : मेरी बातचीत... बुज़ुर्ग की बातें सुनकर मुझे घबराहट होने लगती है... बड़े मियां को फूटी आंखों नहीं सुहाती... मुझे यह अच्छा नहीं लगता... दिल को ठेस भी लगती है! भला मैंने क्या बिगाड़ा है उनका? वह मुझे क्यों पसन्द नहीं करते?

प्योत्र : वह दिल के बुरे नहीं हैं... मगर उनमें अकड़ ज़रूर है...

नील : कुछ लालची... और कुछ झगड़ालू भी हैं।

पोल्या : शी!.. किसी के पीठ पीछे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। यह अच्छा नहीं!

नील : लालची होना अच्छा नहीं...

तत्याना (रूखेपन से) : अब इस क़िस्से को यहीं ख़त्म कर देना चाहिए... पिता जी किसी दम भी भीतर आ सकते हैं... पिछले तीन दिनों से उन्होंने किसी को डांटा-डपटा नहीं... सभी के साथ प्यार-मुहब्बत से पेश आने की कोशिश कर रहे हैं...

प्योत्र : उनके लिए यह आसान नहीं है...

तत्याना : हमें इस चीज़ की तारीफ़ करनी चाहिए... वह बूढ़े हैं... इसमें उनका कोई कुसूर नहीं कि वह हमसे पहले इस दुनिया में आये... और वह वैसे नहीं सोचते, जैसे हम... (**खीझकर**) लोग कितने निर्मम होते हैं! हम सभी कितने रूखे और पत्थरदिल हैं... हमें सिखाया जाता है कि हम एक दूसरे को

प्यार करें... हमसे कहा जाता है कि हमें नम्र और रहमदिल होना चाहिए...

नील (उसी के अन्दाज़ में) : ताकि दूसरे लोग हम पर सवारी करें...

(येलेना खिलखिलाकर हंसती है। पोल्या और तेतेरेव मुस्कराते हैं। प्योत्र नील से कुछ कहना चाहता है और उसके पास जाता है। तत्याना तिरस्कारपूर्ण ढंग से सिर हिलाती है)

बेस्सेमेनोव (भीतर आते हुए येलेना को कड़ी नज़र से देखता है) : पोल्या, तुम्हारा बाप... वहां रसोईघर में है... जाकर उससे कहो... कि वह फिर कभी आये... जब वह... नशे में न हो... उससे कह दो कि घर चला जाये!

(पोल्या जाती है और उसके पीछे-पीछे नील)

हां, हां... तुम भी जाओ... अच्छी तरह देख लो अपने होनेवाले... मेरा मतलब... **(अपनी बात अधूरी छोड़कर मेज़ के पास बैठ जाता है)** तुम सब लोग चुप क्यों हो? देखता हूं कि जैसे ही मैं यहां आता हूं, तुम सबको सांप सूंघ जाता है...

तत्याना : जब आप यहां नहीं होते, हम तो... तब भी बहुत कम बातचीत करते हैं...

बेस्सेमेनोव (येलेना की तरफ़ भृकुटी चढ़ाकर देखते हुए) : किस बात पर हंसी आ रही थी?

प्योत्र : कोई ख़ास बात नहीं... नील...

बेस्सेमेनोव : नील ! सभी मुसीबतों की जड़ में नील ही होता है ... यह मैं जानता हूं ...

तत्याना : आपके लिए चाय डाल दूं ?

बेस्सेमेनोव : डाल दो ...

येलेना : तत्याना, मैं डाल देती हूं ...

बेस्सेमेनोव : आपको तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं। मेरी बेटी यह काम कर देगी ...

प्योत्र : मेरे ख़्याल में इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा कि कौन चाय डालकर देता है ? तत्याना की तबीयत अच्छी नहीं है ...

बेस्सेमेनोव : इस मामले में तुम्हारा क्या ख़्याल है, मैंने तुमसे यह नहीं पूछा था। अगर तुम्हारे लिए पराये लोग अपनों से ज़्यादा नज़दीक हैं तो ...

प्योत्र : पिता जी ! आपको शर्म नहीं आती ?

तत्याना : लो, हो गये शुरू ! प्योत्र, समझ से काम लो।

येलेना (मुस्कराने की कोशिश करते हुए) : कोई तुक नहीं है इसमें ...

(दरवाज़ा चौपट खुलता है और पेर्चीख़िन अन्दर आता है। वह हल्के नशे में है)

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच ! तुम वहां से चले आये, सोचा होगा पिंड छूटा, मगर मैं यहां भी आ पहुंचा ... मैं तुम्हारे पास ... यहां आया हूं ...

बेस्सेमेनोव (उसकी तरफ़ देखे बिना) : आ गये तो बैठ जाओ ... चाय पी लो ...

पेर्चीख़िन : मुझे चाय नहीं चाहिए ! तुम पियो अपनी चाय ... मैं तुमसे कुछ बात करने आया हूं ...

बेस्सेमेनोव : क्या बात करोगे ? सब बकवास है।

पेर्चीख़िन : बकवास है ? अच्छा ? **(हंसता है)** बड़े अजीब आदमी हो तुम !

(नील भीतर आ जाता है, अलमारी का सहारा लेकर खड़ा हो जाता है और बेस्सेमेनोव को कठोर दृष्टि से देखता है)

पिछले चार दिन से मैं तुमसे बात करने की सोचता रहा हूं और ... आख़िर आज आ ही पहुंचा ...

बेस्सेमेनोव : बस, हटाओ यह क़िस्सा ...

पेर्चीख़िन : नहीं, यह क़िस्सा ऐसे ख़त्म नहीं होगा ! तुम बहुत अक़्लमन्द आदमी हो, वसीली वसील्येविच ! अमीर आदमी हो ... मैं तुम्हारी आत्मा से बात करने आया हूं !

प्योत्र (नील के पास जाकर दबी ज़बान से बात करते हुए) : तुमने इसे यहां क्यों आने दिया ?

नील : तुम अपनी टांग नहीं अड़ाओ ! इससे तुम्हारा कोई मतलब नहीं ...

प्योत्र : न जाने तुम हमेशा क्या करते रहते हो ...

पेर्चीख़िन (प्योत्र की आवाज़ को दबाते हुए) : तुम बूढ़े आदमी हो ... एक मुद्दत से मैं तुम्हें जानता हूं !

बेस्सेमेनोव (ग़ुस्से में आकर) : तुम मुझसे चाहते क्या हो ?

पेर्चीखिन : तुम मुझे यह बताओ कि तुमने उस दिन मुझे अपने घर से क्यों निकाला था ? मैंने बहुत सोचा, बार-बार सोचा, मगर मेरी समझ में कुछ नहीं आया ! मुझे बताओ, मेरे भाई ! तुमने ऐसा क्यों किया था ? मैं अपने दिल में कोई बुरी भावना नहीं ... प्यार लेकर आया हूं ...

बेस्सेमेनोव : और सिर में भूसा लेकर !

तत्याना : प्योत्र ! ज़रा मुझे सहारा दो ... नहीं, तुम पोल्या को बुलाओ ...

(प्योत्र बाहर जाता है)

पेर्चीखिन : अब पोल्या को ही ले लो ! मेरी प्यारी गुड़िया को ... मेरी पवित्र बुलबुल को ... उसी की वजह से तुमने मुझे उस दिन निकाला था ? ठीक है न ? इसलिए कि वह तुम्हारी तत्याना के चहेते को ले उड़ी ?

तत्याना : ओह, कैसी बेहूदा बात है !.. कितनी कमीनी बात !..

बेस्सेमेनोव (धीरे से उठते हुए) : होश में आओ, पेर्चीखिन ! ख़बरदार, जो फिर यह बात मुंह से ...

येलेना (नील को धीरे से) : इसे बाहर ले जाइये ! नहीं तो ये उलझ पड़ेंगे।

नील : मैं नहीं चाहता उसे बाहर ले जाना।

पेर्चीखिन : तुम मुझे दूसरी बार तो बाहर निकालने से रहे, वसीली वसील्येविच ! तुम्हें इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी ... पोल्या ... मैं उसे प्यार करता हूं ... वह

अच्छी लड़की है! मगर फिर भी उसने जो कुछ किया है, वह उसे नहीं करना चाहिए था... नहीं, भाई, उसे वह नहीं करना चाहिए था! दूसरे के माल पर हाथ क्यों साफ़ कर लिया? यह अच्छा नहीं...

तत्याना: येलेना! मैं... मैं अपने कमरे में जा रही हूं...

(येलेना उसकी बांह थामकर सहारा देती है। नील के पास से गुज़रते हुए तत्याना उसे धीरे से कहती है)

शर्म आनी चाहिए! उसे बाहर ले जाओ...

बेस्सेमेनोव (अपने पर क़ाबू पाते हुए): पेर्चीख़िन! तुम... अपनी ज़बान बन्द रखो! बैठ जाओ – ज़बान को बन्द रखो... नहीं तो घर जाओ...

(पोल्या आती है। उसके पीछे-पीछे प्योत्र आता है)

प्योत्र (पोल्या से): ज़रा शान्ति से काम लीजिये... मैं मिन्नत करता हूं!..

पोल्या: वसीली वसील्येविच! पिछली बार आपने मेरे बापू को यहां से निकाला क्यों था?

(बेस्सेमेनोव चुपचाप और गुस्से से उसकी तरफ़ और फिर बारी-बारी से सबकी ओर देखता है)

पेर्चीख़िन (अपनी उंगली दिखाकर धमकाते हुए): शी! बेटी! कुछ नहीं बोलो... तुम्हें समझना चाहिए... तत्याना ने ज़हर पी लिया – किसलिए? देखा?

देखा वसीली वसील्येविच ? भाई मेरे, मैं तो बस, सच्ची बात करूंगा ... सबके साथ इन्साफ़ करूंगा ! सीधे-सादे ढंग से ...

पोल्या : ज़रा रुक जाओ, बापू ...

प्योत्र : पोल्या, सुनिये तो ...

नील : तुम चुप रहो तो ...

बेस्सेमेनोव : पोल्या, तुम ... सुन लो, तुम गुस्ताख़ हो ...

पेर्चीख़िन : पोल्या ? अरे नहीं ... वह तो ...

बेस्सेमेनोव : चुप रहो ! मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं ... यह किसका घर है ? यहां मालिक कौन है ? यहां ग़लत और सही का फ़ैसला करनेवाला कौन है ?

पेर्चीख़िन : मैं ! मैं बारी-बारी से सबके बारे में फ़ैसला सुनाऊंगा ... पहली बात तो यह है कि पराया माल उड़ाना ज़्यादती है ! दूसरे, अगर ऐसा किया है, तो लौटा दो !

प्योत्र (पेर्चीख़िन से) : सुनो ! बातें बनाना बन्द करो ! आओ, मेरे कमरे में चलो ...

पेर्चीख़िन : तुम मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते, प्योत्र ! तुम घमण्डी हो ... अन्दर से खोखले हो ! तुम्हें न कुछ आता है, न जाता है ... ज़मीनदोज़ नाले-नालियां – यह क्या होता है ? यह भी नहीं जानते ! मुझे दूसरों ने बताया ...

(प्योत्र उसे आस्तीन से पकड़कर खींचता है)

मुझे मत छुओ, नहीं छेड़ो...

नील (प्योत्र से): उसे नहीं छेड़ो... रहने दो!

बेस्सेमेनोव (नील से): तुम यहां किसलिए खड़े हो? कुत्तों को भड़काने के लिए? यही करने के लिए न?

नील: नहीं, मैं यह जानना चाहता हूं कि मामला क्या है? पेर्चीख़िन का क्या कुसूर था? उसे किसलिए यहां से बाहर निकाला गया था?.. और पोल्या का इस मामले से क्या सरोकार है?

बेस्सेमेनोव: तुम क्या मुझ पर जिरह कर रहे हो?

नील: अगर कर भी रहा हूं, तो क्या हुआ? आप इनसान हैं, मैं भी...

बेस्सेमेनोव (ग़ुस्से में आकर): नहीं, तुम इनसान नहीं हो... तुम... ज़हर हो! तुम दरिन्दे हो!..

पेर्चीख़िन: शी-शी! हमें शान्ति से बात करनी चाहिए, ईमानदारी से...

बेस्सेमेनोव (पोल्या से): और तुम नागिन हो! तुम भिखमंगी!..

नील (दांत पीसकर): आप चिल्लायें नहीं!..

बेस्सेमेनोव: क्या कहा? दफ़ा हो जाओ यहां से! आस्तीन के सांप... मैंने ख़ून-पसीने की कमाई से तुम्हें पाला-पोसा है...

तत्याना (अपने कमरे से ही): पिता जी! चुप हो जाइये!

प्योत्र (नील से) : क्यों ? मिल गये न तुम्हें तुम्हारे मन के लड्डू ?.. ओह, डूब मरो !

पोल्या (धीरे से) : मुझ पर चीख़िये-चिल्लाइये नहीं ! मैं आपकी गुलाम नहीं हूं ... हर कोई आपकी धौंस बर्दाश्त नहीं करेगा ... मैं जानना चाहती हूं कि आपने मेरे बापू को यहां से क्यों निकाला था ?

नील (शान्ति से) : हां, मैं भी यह जानना चाहता हूं ... यहां कोई पागलखाना तो है नहीं ... हमें अपने किये-धरे का जवाब देना चाहिए ...

बेस्सेमेनोव (अपने को वश में करते हुए, धीरे से) : चले जाओ, नील, यहां से !.. कहीं कोई गुल न खिल जाये, चले जाओ ! तुम्हें यह न भूलना चाहिए कि तुम मेरे टुकड़ों पर पलकर बड़े हुए हो ... मैंने तुम्हें पाला-पोसा है ...

नील : आप अपने इन टुकड़ों के मुझे ताने नहीं दीजिये ! मैंने जो कुछ खाया है, उसके लिए कौड़ी-कौड़ी अदा कर चुका हूं !

बेस्सेमेनोव : तुम ... तुम मेरी आत्मा को खा गये हो ... तुम कमीने !..

पोल्या (नील का हाथ थामते हुए) : आओ, चलें यहां से !

बेस्सेमेनोव : जा ... जा रेंगनेवाली नागिन ! तू ही तो इस सारे क़िस्से की जड़ में है ... यह सब तेरी ही वजह से हुआ है ... तूने ही मेरी बेटी को डसा ... और अब इसे ... बुरा हो तेरा ... तेरी वजह से ही मेरी बेटी ...

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच ! शान्ति से ! इन्साफ़ से !

तत्याना (चिल्लाते हुए) : यह झूठ है ! यह झूठ है, पिता जी ! प्योत्र, तुम कुछ कहते क्यों नहीं ? **(अपने कमरे के दरवाज़े में दिखाई देती है और लड़खड़ाती तथा हाथ फैलाये हुए कमरे के बीच में आ खड़ी होती है)** प्योत्र, यह सब किसलिए ! हे भगवान ! तेरेन्ती ख्रीसान्फ़ोविच ! इनसे कहिये ... कहिये इनसे ... नील ! पोल्या ! चले जाओ यहां से ! भगवान के लिए चले जाओ यहां से ! यह सब किसलिए ...

(सब योंही कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगते हैं। तेतेरेव खींसे निपोरते हुए धीरे से उठकर खड़ा होता है। बेस्सेमेनोव अपनी बेटी के सामने से हट जाता है। प्योत्र तत्याना का हाथ थाम लेता है और परेशान-सा इधर-उधर देखता है)

पोल्या : आओ चलें !

नील : चलो ! **(बेस्सेमेनोव से)** हम जा रहे हैं ! यह क़िस्सा ऐसे हंगामे के साथ ख़त्म हो रहा है, इसका मुझे अफ़सोस है।

बेस्सेमेनोव : जाओ, जाओ !.. ले जाओ इसे भी अपने साथ ...

नील : अब मैं कभी लौटकर नहीं आऊंगा ...

पोल्या (ज़ोर से, कांपती आवाज़ में) : मेरे मत्थे यह कलंक मढ़ा जाये ... तत्याना के लिए मुझे दोषी ठहराया जाये ... क्या कोई ऐसा भी कर सकता है ?

इसमें भला मेरा क्या कुसूर है? शर्म आनी चाहिए आपको ...

बेस्सेमेनोव (बौखलाकर): तुम जाती हो या नहीं?!

नील: ऐसे गरजिये नहीं!

पेर्चीख़िन: बुरा नहीं मानो, बच्चो! तुम्हें नम्र होना चाहिए ...

पोल्या: तो विदा! चलो, बापू!

नील (पेर्चीख़िन से): आओ चलें!

पेर्चीख़िन: नहीं, मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा ... मेरा रास्ता अलग है ... मैं तो दम का दम हूं ... तेरेन्ती! ख़ुद अपने पैरों पर ... अपना मामला तो सीधा-सादा है ...

तेतेरेव: मेरे यहां चलो ...

पोल्या: चलो! चलो भी, इससे पहले कि कहीं फिर से न निकाल दें ...

पेर्चीख़िन: नहीं ... मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगा ... तेरेन्ती, मेरे और इनके रास्ते अलग-अलग हैं! मैं यह समझता हूं ...

प्योत्र (नील से): आख़िर जाओ भी यहां से!..

नील (प्योत्र से): जा रहा हूं ... विदा ... तुम भी ख़ूब नमूने हो ...

पोल्या (नील से): आओ चलें। आओ भी ...

(वे बाहर जाते हैं)

बेस्सेमेनोव (उनके पीछे चिल्लाकर कहता है):

मेरी बात याद रखना! यहीं आओगे एक दिन... यहीं आकर नाक रगड़ोगे!..

प्योत्र: हटाइये भी, पिता जी! बस भी कीजिये...

तत्याना: पिता जी! प्यारे पिता जी... चिल्लाइये नहीं...

बेस्सेमेनोव: थोड़े दिनों की बात है... हम भी देखेंगे...

पेर्चीख़िन: लो... अब तो वे चले गये... अच्छा हुआ! जाते हैं तो जायें!..

बेस्सेमेनोव: जाते-जाते उन्हें दिल की कुछ बातें तो बता देता... ख़ून चूसनेवाली जोंकें! खिलाया, पिलाया... (**पेर्चीख़िन से**) और तुम, शैतान बुड्ढे! उल्लू! आकर लगे बड़बड़ करने... क्या चाहिए तुम्हें? क्या?

प्योत्र: पिता जी! बस, काफ़ी है...

पेर्चीख़िन: वसीली वसील्येविच! चिल्लाओ नहीं... मैं तुम्हारी इज़्ज़त करता हूं – अजीब आदमी हो तुम भी! मैं बुद्धू हूं – यह ठीक है! लेकिन मैं भी अच्छे-बुरे का फ़र्क़ समझता हूं...

बेस्सेमेनोव (सोफ़े पर बैठ जाता है): मेरा दिमाग़ बिल्कुल काम नहीं कर रहा। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा... यह सब हो क्या गया? जैसे गर्मियों की आंधी से अचानक आग भड़क उठे... एक चला गया – कहता है कि कभी नहीं लौटेगा... भई वाह, कितना आसान है – यह जा... वह जा... मगर नहीं... मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता...

तेतेरेव (पेर्चीख़िन से) : तुम यहां क्या कर रहे हो? किसलिए बैठे हो?

पेर्चीख़िन : मामला ठीक करने के लिए ... मैं तो सीधे-सीधे बात निपटाता हूं ... दो और दो – चार, बस। वह मेरी बेटी है न? बड़ी अच्छी बात है ... इसका मतलब यह है कि उसका कर्त्तव्य है ... (**सहसा चुप हो जाता है**) मैं नालायक़ बाप साबित हुआ हूं ... मेरे प्रति कोई कर्त्तव्य नहीं है उसका ... जैसे चाहे, वैसे रहे! मगर मुझे तत्याना के लिए अफ़सोस होता है ... तत्याना, मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस होता है ... मुझे तुम सबके लिए अफ़सोस होता है! .. ओह! सच बात तो यह है कि तुम सभी मूर्ख हो! ..

बेस्सेमेनोव : चुप रहो ...

प्योत्र : तत्याना, क्या येलेना निकोलायेव्ना चली गयी?

येलेना (तत्याना के कमरे से) : नहीं, मैं यहां हूं ... दवा तैयार कर रही हूं ...

बेस्सेमेनोव : मेरे दिमाग़ में सब कुछ गड्डमड्ड हो गया है ... कुछ भी समझ में नहीं आ रहा! क्या नील ... सचमुच ही कभी वापस नहीं आयेगा?

अकुलीना इवानोव्ना (परेशान-सी आती है) : क्या बात हो गयी? नील और पोल्या वहां रसोईघर में हैं ... मैं तो स्टोर में थी ...

बेस्सेमेनोव : वे चले गये?

अकुलीना इवानोव्ना : नहीं ... पेर्चीखिन का इन्तज़ार कर रहे हैं ... पोल्या ने कहा है ... बापू से कह दीजिये ...

और उसके होंठ कांप रहे थे। नील बौखलाये कुत्ते की तरह गुर्रा रहा है ... मामला क्या है ?..

बेस्सेमेनोव (उठते हुए) : मैं अभी ... अभी जाकर उनके होश ठिकाने करता हूं ...

प्योत्र : नहीं, पिता जी ! नहीं जाइये ...

तत्याना : पिता जी ! कृपया यह सब नहीं कीजिये ...

बेस्सेमेनोव : क्या नहीं कीजिये ?

अकुलीना इवानोव्ना : मामला क्या है ?

बेस्सेमेनोव : मामला यह है कि नील जा रहा है ... हमेशा के लिए ...

प्योत्र : तो क्या हुआ ? जा रहा है – बड़ी अच्छी बात है ... आपको उसकी क्या ज़रूरत है ? वह शादी करना चाहता है ... अपना अलग घर बसाना चाहता है ...

बेस्सेमेनोव : अहा ! अपना अलग घर बसाना चाहता है ? क्या ... मैं ... क्या मैं उसके लिए पराया हूं ?

अकुलीना इवानोव्ना : तुम किसलिए इतने परेशान हो रहे हो, प्योत्र के पिता ? जाता है, तो जाये !.. हमारे अपने बच्चे हैं ... पेर्चीख़िन, तुम यहां क्या कर रहे हो ? जाओ उनके पास !

पेर्चीख़िन : मेरा और उनका रास्ता अलग-अलग है ...

बेस्सेमेनोव : नहीं, बात यह नहीं है ... जाता है, तो जाये ! लेकिन – कैसे ? वह गया किस तरह से ... जाते वक़्त कैसी आंखों से वह मुझे देख रहा था ?..

(येलेना तत्याना के कमरे से बाहर आती है)

तेतेरेव (पेर्चीख़िन का हाथ थामकार उसे दरवाज़े की तरफ़ ले जाते हुए) : चलो चलें, चलकर ढालें एक-एक जाम, तुम और मैं ...

पेर्चीख़िन : ओह, भगवान के भोंपू ! आदमी तुम ढंग के हो ...

(दोनों बाहर जाते हैं)

बेस्सेमेनोव : यह मैं जानता था कि एक दिन वह हमें छोड़ जायेगा ... मगर क्या इस तरह से ? और वह ... वह कैसे चिल्ला रही थी ... भिखारिन, कल की छोकरी ... नहीं, मैं अभी जाकर उनकी अक्ल ठिकाने करता हूं ...

अकुलीना इवानोव्ना : हटाओ भी, प्योत्र के पिता ! वे हमारे लिए पराये लोग हैं ! अफ़सोस भी क्या ? चले गये, तो चले गये !

येलेना (धीरे से प्योत्र को) : आओ, मेरे यहां चलें ...

तत्याना (येलेना से) : मैं भी चलती हूं ... मुझे भी अपने साथ ले चलो ! ..

येलेना : हां, हां, तुम भी चलो ...

बेस्सेमेनोव (उसकी बात सुनकर) : कहां ?

येलेना : मेरे यहां !

बेस्सेमेनोव : किसे चलने को कह रही हैं ? प्योत्र को ?

येलेना : हां, और तत्याना को भी ...

बेस्सेमेनोव : तत्याना का क्या सवाल पैदा होता

13-461

है ! और प्योत्र भी आपके यहां ... नहीं जायेगा !

प्योत्र : मगर पिता जी, मैं कोई बच्चा नहीं हूं ! मैं जाऊंगा या नहीं जाऊंगा यह ख़ुद ...

बेस्सेमेनोव : तुम नहीं जाओगे !

अकुलीना इवानोव्ना : मान लो, प्योत्र ! ओह, अपने पिता की बात मान लो !

येलेना (बिगड़ते हुए) : आप हद कर रहे हैं, वसीली वसील्येविच ! ..

बेस्सेमेनोव : नहीं, यह तो आप हद कर रही हैं ! चाहे आप पढ़े-लिखे लोग हैं ... चाहे आप लोग शर्म-हया को घोलकर पी गये हैं ... और किसी की इज़्ज़त नहीं करते ...

तत्याना (पागलों की तरह चीख़ती है) : पिता जी ! अब रहने दीजिये ...

बेस्सेमेनोव : चुप रहो ! अगर तुम ख़ुद अपनी तक़दीर से नहीं निपट सकतीं, तो चुप रहो ... रुको ! किधर चल दीं ?

(येलेना दरवाज़े की तरफ़ बढ़ती है)

प्योत्र (उसके पीछे लपककर उसका हाथ पकड़ लेता है) : ज़रा रुक जाइये ! हमें इस क़िस्से को अभी ... और हमेशा के लिए ... तय कर लेना चाहिए ...

बेस्सेमेनोव : मेरी पूरी बात सुन लीजिये ... मेहरबानी कीजिये, मेरी पूरी बात सुन लीजिये ! मुझे यह समझने दीजिये कि यह सब हो क्या रहा है ?

(पेर्चीख़िन रंग में और ख़ुश-ख़ुश आता है। उसके पीछे-पीछे तेतेरेव है। वह भी मुस्करा रहा है। ये दोनों दरवाज़े में खड़े रहकर एक-दूसरे से नज़रें मिलाते हैं। पेर्चीख़िन बेस्सेमेनोव की तरफ़ आंख मारता है और निराशा का भाव दिखाते हुए हाथ झटकता है)

सभी 'कहीं चले जा रहे हैं... अपने इरादे बताये बिना... कितनी बुरी बात है! कितने दुख और कैसी नादानी की बात है! तुम कहां जा सकते हो, प्योत्र! तुम... तुम हो क्या? कैसे जीना चाहते हो? क्या करना चाहते हो?

(अकुलीना इवानोव्ना धीरे-धीरे सिसकने लगती है। प्योत्र, येलेना और तत्याना एक दल-सा बनाकर बेस्सेमेनोव के सामने खड़े हो जाते हैं। मगर जब बेस्सेमेनोव यह कहता है – "तुम कहां जा सकते हो, प्योत्र?" – तो तत्याना उन्हें छोड़कर मेज़ के पास चली जाती है, जहां उसकी मां खड़ी है। पेर्चीख़िन इशारों से तेतेरेव को कुछ दिखाता है, सिर झटकता है और इस तरह अपने हाथों को हिलाता है मानो पक्षियों के झुंड को उड़ा रहा हो)

मुझे तुमसे यह पूछने का पूरा हक़ है... तुम अभी जवान और बेसमझ हो! मैं पिछले अट्ठावन वर्ष से कोल्हू के बैल की तरह काम कर रहा हूं – सिर्फ़ तुम बच्चों की ख़ातिर!..

प्योत्र : मैं यह सुन चुका हूं, पिता जी ! सैकड़ों बार ...

बेस्सेमेनोव : रुको ! चुप रहो !

अकुलीना इवानोव्ना : ओह प्योत्र, प्योत्र ...

तत्याना : अम्मां, आप ... कुछ भी तो नहीं समझतीं !

(अकुलीना इवानोव्ना अपना सिर हिलाती है)

बेस्सेमेनोव : चुप रहो ! तुम कह ही क्या सकते हो ? सिखा ही क्या सकते हो ? नहीं, कुछ भी नहीं ...

प्योत्र : पिता जी ! आप मुझे सता रहे हैं ! आप मुझसे क्या चाहते हैं ? आपको क्या चाहिए ?

अकुलीना इवानोव्ना (अचानक ऊंची आवाज़ में) : ठहरो, मैं भी दिल रखती हूं, मुझे भी कुछ कहने का हक़ है ! मेरे बेटे ! तुम यह क्या कर रहे हो ! क्या सोच लिया है तुमने दिल में ? तुमने हमसे पूछा, हमारी सलाह ली ?

तत्याना : बहुत भयानक है यह सब ! जैसे कोई दिल पर कुंद आरी चला रहा हो ... **(मां से)** आप मेरे तन और आत्मा दोनों के टुकड़े-टुकड़े किये दे रही हैं ...

अकुलीना इवानोव्ना : तुम्हारी मां – और कुंद आरी ? तुम्हारी मां ?

बेस्सेमेनोव : ज़रा रुक जाओ, बुढ़िया ! इसे ... प्योत्र को अपनी बात कहने दो ...

येलेना (प्योत्र से) : बस, बहुत हो चुका !.. मुझसे अब और बर्दाश्त नहीं होता – मैं जा रही हूं ...

प्योत्र: भगवान के लिए ज़रा रुक जाइये! अभी सब कुछ तय हो जायेगा...

येलेना: नहीं, यह तो पागलखाना है! यह...

तेतेरेव: येलेना निकोलायेव्ना, आप चली जाइये! भाड़ में जायें ये सब!

बेस्सेमेनोव: आप, जनाब! आप...

तत्याना: यह क़िस्सा कभी ख़त्म भी होगा या नहीं? जाओ, यहां से चले जाओ, प्योत्र!

प्योत्र (लगभग चीख़ते हुए): पिता जी... देखिये! अम्मां... यह है मेरी मंगेतर!

(ख़ामोशी। सभी की आंखें प्योत्र पर जमी हुई हैं। कुछ देर बाद अकुलीना इवानोव्ना स्तम्भित-सी हाथ पर हाथ मारती है और भयभीत-सी अपने पति को देखती है। बेस्सेमेनोव इस तरह पीछे की ओर हटता है, जैसे कि किसी ने उसे धक्का दे दिया हो। उसका सिर झुक जाता है। तत्याना गहरी सांस छोड़ती है और धीरे-धीरे पियानो की तरफ़ बढ़ती है। उसके हाथ दायें-बायें लटके हुए हैं)

तेतेरेव (धीमे से): क्या बढ़िया मौक़ा चुना है इसने...

पेर्चीख़िन (आगे बढ़कर): तो क़िस्सा ख़त्म हो गया! सभी पंछी... फुर हुए जा रहे हैं! अरे जवान लोगो, उड़ जाओ पिंजरे तोड़कर जैसे चिड़ियां उड़ती हैं मस्ती से...

येलेना (प्योत्र के हाथ से अपना हाथ छुड़ाते हुए) : मुझे जाने दो! मैं यह सब सहन नहीं कर सकती...

प्योत्र (बुदबुदाते हुए) : अब सब कुछ तय हो गया... आन की आन में...

बेस्सेमेनोव (अपने बेटे को सिर झुकाकर) : बहुत-बहुत शुक्रिया, मेरे बेटे!.. दिल ख़ुश कर दिया ऐसी बढ़िया ख़बर सुनाकर...

अकुलीना इवानोव्ना (रोते हुए) : तुमने अपने आपको बरबाद कर लिया, प्योत्र! क्या यह... यह तुम्हारे लायक़ है...

पेर्चीख़िन : क्या कहा? येलेना? प्योत्र के लायक़ नहीं? यह... तुम क्या कह रही हो बुढ़िया? दो कौड़ी का भी नहीं है तुम्हारा बेटा!

बेस्सेमेनोव (येलेना से धीमी आवाज़ में) : और आपका भी शुक्रिया, देवी जी! तो अब यह कहीं का नहीं रहा! उसे अभी पढ़ना चाहिए था... और अब?.. ख़ूब हाथ मारा! वैसे मैं यह पहले से ही महसूस कर रहा था... **(ज़हरीले ढंग से)** शिकार फांस लेने के लिए बधाई! तुम्हें मेरा आशीर्वाद नहीं मिलेगा, प्योत्र! और तुम... आख़िर तुमने उसे दबोच ही लिया? ले उड़ीं? बिल्ली... कमीनी...

येलेना : अपनी ज़बान को लगाम दें!..

प्योत्र : पिता जी! आप... पागल हो गये हैं!

येलेना : नहीं, ज़रा रुकिये! हां, यह सही है कि मैंने उसे आपसे छीन लिया है! हां, मैंने ही!.. मैंने ही उससे कहा था कि वह मुझसे शादी कर ले! सुनते

हैं आप झगड़ालू बुड्ढे ?.. मैंने ही उसे आप लोगों के चंगुल से निकाल लिया है! उस पर तरस खाकर! आप लोगों ने उसे सता-सताकर उसकी जान ले ली है ... आप आत्मा को खा जानेवाले घुन हैं! आपका प्यार – उसकी बरबादी बन जाता! आप सोचते हैं – ओह, मैं जानती हूं, आप क्या सोचते हैं! – आप सोचते हैं कि मैंने यह सब कुछ अपना उल्लू सीधा करने के लिए किया है? ख़ैर, आप जो चाहें, सोचते रहें – ओह, कितनी नफ़रत करती हूं मैं आपसे!

तत्याना : येलेना! येलेना! यह तुम क्या कह रही हो?

प्योत्र : येलेना ... आइये चलें!

येलेना : हो सकता है कि मैं उससे कभी शादी भी न करूं! आप खुश हैं न? यह बहुत मुमकिन है! अभी से नहीं घबराइये! मैं शादी किये बिना, किसी रस्म के बिना ... योंही इसके साथ रहूंगी ... मगर इसे आपके पास न फटकने दूंगी! इसे हरगिज़ आपको नहीं दूंगी! आप अब उसे और नहीं सता सकेंगे, नहीं सता सकेंगे! और वह अब कभी भी आपके पास नहीं आयेगा! कभी भी! कभी भी!

तेतेरेव : ज़िन्दाबाद, येलेना! ज़िन्दाबाद!

अकुलीना इवानोव्ना : हे भगवान! प्योत्र के पिता, यह सब क्या है?.. यह सब क्या है?..

प्योत्र (येलेना को दरवाज़े की तरफ़ धकेलते हुए) : जाओ ... जाइये ... जाइये ...

(येलेना बाहर जाती है और प्योत्र को भी अपने साथ खींच ले जाती है)

बेस्सेमेनोव (लाचारी की हालत में इधर-उधर देखता है) : क्यों, कैसी रही ?.. **(अचानक ग़ुस्से में आकर)** पुलिस को बुलाओ ! **(पांव पटकता है)** मैं इसका बिस्तर-बोरिया सड़क पर फिंकवा दूंगा ! कल ही ... ओह, कमीनी ! ..

तत्याना : पिता जी, अपने को सम्भालिये !

पेर्चीख़िन (हैरान होकर, कुछ न समझते हुए) : वसीली वसील्येविच ! मेरे प्यारे ! तुम्हें क्या हुआ है ? इस तरह चिल्ला क्यों रहे हो ? तुम्हें तो ख़ुश होना चाहिए ...

तत्याना (अपने पिता के पास जाकर) : सुनिये ...

बेस्सेमेनोव : तुम ? तुम अभी भी ... यहां हो ! तुम भी क्यों नहीं चली जातीं ? चलती बनो ... तुम्हारे जाने के लिए कोई जगह नहीं ? कोई ऐसा नहीं जिसके साथ जा सको ? पंछी उड़ गया ?

(तत्याना लड़खड़ाती हुई पीछे हटती है, जल्दी से पियानो की तरफ़ चली जाती है। परेशान और दयनीय-सी अकुलीना इवानोव्ना उसकी तरफ़ लपकती है)

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच, गोली मारो इस क़िस्से को ! अक़्ल से काम लो ! प्योत्र अब पढ़े-लिखेगा नहीं ... उसे ऐसा करने की ज़रूरत भी क्या है ?

(बेस्सेमेनोव बुझी-बुझी नज़रों से पेर्चीख़िन को देखता है और सिर हिलाता है)

मज़े की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए उसके पास काफ़ी पैसा है – तुमने जोड़ दिया है... बीवी बिल्कुल रसभरी है... और तुम चिल्ला रहे हो, शोर मचा रहे हो! तुम भी अजीब आदमी हो! होश में आओ!

(तेतेरेव ज़ोर से हंसता है)

अकुलीना इवानोव्ना (रोते हुए) : सभी छोड़कर चले गये! सभी हमें छोड़ गये!

बेस्सेमेनोव (इधर-उधर देखते हुए) : चुप रहो, तत्याना की मां! लौट आयेंगे... इतनी हिम्मत नहीं है इनमें। कहां जायेंगे? **(तेतेरेव से)** तुम क्या खड़े-खड़े दांत निकाल रहे हो? तुम सड़े नासूर! शैतान की आंत! निकल जाओ मेरे घर से! कल ही निकल जाओ! तुम लोगों का पूरा गिरोह है यहां...

पेर्चीख़िन : वसीली वसील्येविच!..

बेस्सेमेनोव : दफ़ा हो जाओ तुम भी! आवारा... उठाईगीरे...

अकुलीना इवानोव्ना : तत्याना! तत्याना! मेरी प्यारी बिटिया! मेरी बदक़िस्मत, फूटे नसीबवाली बेटी! जाने क्या होनेवाला है?

बेस्सेमेनोव : बेटी, तुम सब कुछ जानती थीं... तुमसे कुछ भी छिपा न था... मगर तुम चुप रहीं! बाप के ख़िलाफ़ साज़िश? **(सहसा ही उसके चेहरे पर**

भय दिखाई देता है) क्या वह इसको … इस बेहया औरत को धता नहीं बता देगा ? छिनाल … और बीवी ! मेरा बेटा … लानत के मारे हो तुम सब लोग ! तुम सब बेहया और गिरे हुए लोग !

तत्याना : बस, मेरा पिंड छोड़ दीजिये ! कहीं ऐसा न हो … कि मैं आपको नफ़रत करने लगूं …

अकुलीना इवानोव्ना : मेरी प्यारी गुड़िया ! मेरी बदक़िस्मत बेटी ! इन सबने तुम्हें बुरी तरह सता डाला है ! हम सभी को सता डाला है ! .. आखिर किसलिए ?

बेस्सेमेनोव : और किसने किया है यह सब ? यह सारी आग उस कमीने, उस बदमाश नील की लगायी हुई है ! उसीने हमारे बेटे का ग़लत रास्ते पर डाला है … उसी की वजह से हमारी बेटी ग़म में घुल रही है ! **(अलमारी के पास खड़े हुए तेतेरेव को देखकर)** अरे ओ घनचक्कर ! तुम यहां खड़े क्या कर रहे हो ? निकल जाओ मेरे घर से ! दफ़ा हो जाओ !

पेर्चीखिन : वसीली वसील्येविच ! इसने कौनसा गुनाह किया है ? ओह … बुड्ढे का बिल्कुल दिमाग़ ख़राब हो गया है !

तेतेरेव (शान्ति से) : चिल्लाओ नहीं, बुड्ढे ! वक़्त का जो तूफ़ान तुम्हारे ऊपर घिर रहा है, उसे रोकना तुम्हारे बल-बूते का काम नहीं … मगर घबराओ नहीं … तुम्हारा बेटा लौट आयेगा …

बेस्सेमेनोव (जल्दी से) : तुम … तुम यह कैसे जानते हो ?

तेतेरेव : वह तुमसे दूर नहीं जायेगा। थोड़ी देर को वह ऊपर उठ गया है, उसे ऊपर उठा लिया गया है ... मगर वह फिर से अपनी जगह पर लौट आयेगा ... इस दुनिया से तुम्हारे कूच करने की देर है और वह झट से तुम्हारे इस बाड़े में वापस आयेगा, इसे थोड़ा-बहुत बदलेगा, कुर्सियों-मेज़ों की जगह बदल देगा और फिर तुम्हारी तरह ही सुख-चैन की बंसी बजायेगा, समझदारी और आराम की ज़िन्दगी बितायेगा ...

पेर्चीख़िन (बेस्सेमेनोव से) : देखा तुमने ? अजीब आदमी हो ! योंही आपे से बाहर हुए जा रहे थे ! वह तुम्हारी भलाई चाहता है ... तुम्हारे दिल के चैन के लिए इतनी अच्छी-अच्छी बातें कह रहा है ... और तुम चिल्ला रहे हो ! तेरेन्ती, मेरे भाई, यह समझदार आदमी है ...

तेतेरेव : वह बस, मेज़ों-कुर्सियों को इधर-उधर कर देगा और यह मान लेगा कि ज़िन्दगी और लोगों के सामने उसने बहुत अच्छी तरह से अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है। वह भी तुम्हारे ही सांचे में ढला है, बिल्कुल तुम्हारे जैसा है ...

पेर्चीख़िन : एक ही पतीली के दो चावल !

तेतेरेव : बिल्कुल वैसा ही ... वैसा ही कायर, और वैसा ही मूर्ख ...

पेर्चीख़िन (तेतेरेव से) : ज़रा रुको ! यह तुम क्या कह रहे हो ?

बेस्सेमेनोव : तुम बात करो ... गाली-गलौज नहीं करो ... तुम्हारी यह मजाल ?

तेतेरेव : और वक़्त आने पर वह भी कौड़ी-कौड़ी को दांत से पकड़ेगा, चमड़ी से दमड़ी निकालेगा, तुम्हारी तरह ही अकड़बाज़ और पत्थरदिल बन जायेगा।

(पेर्चीख़िन यह न समझते हुए हैरान होकर तेतेरेव की तरफ़ देखता है कि वह बूढ़े को शान्त कर रहा है या उसे कोस रहा है। बेस्सेमेनोव भी हतप्रभ-सा दिखाई देता है, मगर तेतेरेव की बातें उसे दिलचस्प लगती है)

और अन्त में वह भी इसी तरह अपनी क़िस्मत को रोयेगा, जैसे आज तुम रो रहे हो... ज़िन्दगी आगे बढ़ती जा रही है, बुड्ढे। जो इसके साथ क़दम मिलाकर नहीं चलेगा, वह पीछे रह जायेगा, अकेला रह जायेगा...

पेर्चीख़िन : सुना तुमने ? मतलब यह कि सब कुछ वैसे ही हो रहा है जैसे होना चाहिए... और तुम आपे से बाहर हुए जा रहे हो !

बेस्सेमेनोव : रुको, बीच में नहीं टपको !

तेतेरेव : और इसी तरह तुम्हारे बदक़िस्मत और तुच्छ बेटे पर भी किसी को दया नहीं आयेगी। लोग उसके मुंह पर सब कुछ ऐसे दो टूक ही कह देंगे जैसे मैं इस वक़्त तुमसे कह रहा हूं – "उम्र भर तुमने क्या भाड़ झोंका है ? क्या नेक काम किया है ?" और जैसे इस वक़्त तुमसे, वैसे ही तुम्हारे बेटे से भी इसका कोई जवाब देते न बनेगा...

बेस्सेमेनोव : हां... तुम यह सब कह रहे हो... तुम हमेशा बड़े ढंग से अपनी बात कहते हो ! मगर तुम्हारी आत्मा में क्या है ? नहीं, मैं तुम पर विश्वास

नहीं कर सकता! और — सुनो — तुम यहां से चलते बनो! बस, बहुत हो चुका ... बहुत बर्दाश्त कर लिया तुम सबको! मेरे ख़िलाफ़ आग भड़काने में ... तुम्हारा कुछ कम हाथ नहीं है ...

तेतेरेव : काश, ऐसा होता! ओह, नहीं, मैंने यह नहीं किया ... नहीं ... (**बाहर जाता है**)

बेस्सेमेनोव (सिर झटकते हुए) : ख़ैर ... कोई बात नहीं ... हम सब बर्दाश्त करेंगे! इन्तज़ार करेंगे ... ज़िन्दगी भर बर्दाश्त करते रहे हैं ... और बर्दाश्त करेंगे! (**अपने कमरे में चला जाता है**)

अकुलीना इवानोव्ना (अपने पति के पीछे भागते हुए) : प्योत्र के पिता! मेरे प्यारे! हम क़िस्मत के मारे हैं! हमारे बच्चों ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? किस गुनाह की सज़ा दी है उन्होंने हमें? (**अपने कमरे में चली जाती है**)

(पेर्चीख़िन कमरे के बीच हक्का-बक्का-सा खड़ा हुआ आंखें मिचमिचाता है। पियानो के स्टूल पर बैठी हुई तत्याना बहकी-बहकी नज़रों से इधर-उधर देखती है। बेस्सेमेनोव के कमरे से दबी-दबी आवाज़ें सुनाई देती हैं)

पेर्चीख़िन : तत्याना! तत्याना ...

(तत्याना उसकी ओर न तो देखती है और न कोई जवाब देती है)

तत्याना! यह सब क्या है? किसलिए कुछ यहां से भाग गये और कुछ रो-धो रहे हैं? (**तत्याना को**

देखकर आह भरता है) अजीब लोग हैं! **(बेस्सेमेनोव के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ देखता है और फिर सिर हिलाता हुआ ड्योढ़ी की तरफ़ जाता है)** चलता हूं तेरेन्ती के पास ... बहुत अजीब हैं लोग ये !

(तत्याना धीरे-धीरे झुकते हुए पियानो के परदों पर कोहनियां टिकाती है। बहुत-से स्वर एकसाथ गूंज उठते हैं और फिर धीरे-धीरे उनकी आवाज़ समाप्त हो जाती है)

(परदा गिरता है)

रसातल

क० प० प्यात्नित्स्की को, समर्पित

मक्सिम गोर्की

पात्र

मिख़ाईल इवानोव कोस्तिल्योव, उम्र ५४ साल, घर का मालिक।

वसिलीसा कार्पोव्ना, उसकी पत्नी, उम्र २६ साल।

नताशा, वसिलीसा कार्पोव्ना की बहन, उम्र २० साल।

मेद्वेदेव, इनका चाचा, पुलिसवाला, उम्र ५० साल।

वास्या पेपेल, उम्र २८ साल।

क्लेश्च, अन्द्रेई मीत्रिच, मिस्तरी, उम्र ४० साल।

आन्ना, उसकी बीवी, उम्र ३० साल।

नास्त्या, युवती, उम्र २४ साल।

क्वाश्न्या, पेल्मेनी बेचनेवाली औरत, उम्र लगभग ४० साल।

बूब्नोव, टोपियां बनानेवाला, उम्र ४५ साल।

नवाब, उम्र ३३ साल।

सातिन, अभिनेता — कोई ४० साल के हमउम्र।

लुका, यात्री, उम्र ६० साल।

अल्योश्का, मोची, उम्र २० साल।

क्रिवोई ज़ोब, तातार — गोदी मज़दूर।

कुछ अन्य बेघर, बेनाम आवारा लोग।

पहला अंक

(गुफ़ा से मिलता-जुलता तहख़ाना। भारी पत्थरों की मेहराब वाली छत, जो कालिख से पुती हुई है और जिसका जहां-तहां पलस्तर उतरा हुआ है। दायीं ओर ऊपर की तरफ़ एक चौकोर खिड़की है जिससे रोशनी छन रही है। दायीं तरफ़ एक ओट डालकर पेपेल के लिए कमरा-सा बना दिया गया है, इस कमरे के दरवाज़े के पास बूब्नोव का तख़्ता पड़ा हुआ है। बायें कोने में बड़ा-सा रूसी तन्दूर* है। बायीं ओर पत्थर की दीवार में रसोईघर का दरवाज़ा है। रसोईघर में क्वाश्न्या, नवाब और नास्त्या रहते हैं। तन्दूर और दरवाज़े के बीच दीवार के पास एक चौड़ी चारपाई है जो छींट की गन्दी चादर से ढकी हुई है। सभी दीवारों के साथ सोने के तख़्ते लगे हुए हैं। बायीं ओर की दीवार के साथ मंच पर आगे की तरफ़ एक लट्ठा पड़ा है जिसके साथ शिकंजा और निहाई जुड़े हुए हैं। निहाई के सामने एक ऐसे ही छोटे लट्ठे पर क्लेश्च बैठा है और पुराने तालों में चाबियां डाल-डालकर देख रहा है। उसके पांवों के पास फ़र्श पर

---

* यह तन्दूर इतना बड़ा होता है कि इस पर सोया जा सकता है। – अनु०

तार में डाले हुए चाबियों के दो बड़े गुच्छे, टीन का एक टूटा हुआ समोवार, हथौड़ा और ऐतियां पड़ी हैं। तहख़ाने के बीचोंबीच एक बड़ी मेज़, दो बेंचें और एक स्टूल है। ये सभी चीज़ें गन्दी और बरंग हैं। मेज़ पर रखे समोवार की क्वाश्न्या देख-भाल कर रही है, नवाब कूटू की रोटी का टुकड़ा चबा रहा है, स्टूल पर बैठी नास्त्या मेज़ पर कोहनियां टिकाये हुए एक फटी-पुरानी पुस्तक पढ़ रही है। परदे के पीछे चारपाई से आन्ना के खांसने की आवाज़ आ रही है। अपने तख़्ते पर बैठा बूब्नोव घुटनों के बीच दबे टोपियों के सांचे पर पुराने पतलून के टुकड़े को टोपी के लिए माप रहा है। उसके निकट टोपियों के छज्जे बनाने के लिए गत्ते के डिब्बे के टुकड़े, मोमजामे के टुकड़े और चिथड़े पड़े हैं। सातिन की अभी-अभी आंख खुली है और वह अपने तख़्ते पर लेटा-लेटा गुर्रा रहा है। तन्दूर के ऊपर अभिनेता करवटें ले रहा है, खांस रहा है, किन्तु दर्शकों को नज़र नहीं आता है।)

(वसन्त का आरम्भ। सुबह का समय)

नवाब : तो आगे बता !

क्वाश्न्या : मैं बोली , मेरे प्यारे, अपने इस इरादे को लेकर तो मुझसे दूर रहना। मैं पहले भी यह भुगत चुकी हूं और अब तो दुनिया भर की दौलत भी अगर मेरे पांवों पर रख दी जाये तो मैं इस झांसे में नहीं आऊंगी, शादी के जाल में नहीं फंसूंगी !

बूब्नोव (सातिन से) : तू वहां पड़ा-पड़ा क्यों गुर्रा रहा है?

(सातिन गुर्राता है)

क्वाश्न्या : मैं बोली, मैं आज़ाद औरत, ख़ुद अपनी मर्ज़ी की मालिक, मैं जाकर किसी दूसरे के पासपोर्ट में नाम लिखाऊं, किसी मर्द की बांदी बन जाऊं? नहीं, ऐसा नहीं होने का! चाहे अमरीका का राजकुमार ही क्यों न हो, मैं शादी कभी नहीं करने की।

क्लेश्च : झूठ बोल रही है!

क्वाश्न्या : क्य-ा?

क्लेश्च : झूठ बोल रही है! तू अब्राम से शादी कर लेगी...

नवाब (नास्त्या के हाथ से किताब झपटकर उसका शीर्षक पढ़ता है) : 'तूफ़ानी मुहब्बत'... **(ठहाका लगाता है)**

नास्त्या (किताब की तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए) : लाओ... वापस दे दो! कह रही हूं न... शरारत नहीं करो!

(नवाब किताब को हवा में लहराता हुआ नास्त्या की तरफ़ देखता है)

क्वाश्न्या (क्लेश्च से) : तू है लाल बकरा! बड़ा आया यह कहनेवाला – मैं झूठ बोलती हूं! तू मुझे झूठा बताये, तेरी यह मजाल?

नवाब (नास्त्या के सिर पर किताब मारते हुए) : तू निरी उल्लू है, नास्त्या...

नास्त्या (किताब छीनते हुए) : लाओ, दे दो ...

क्लेश्च : वाह री, महारानी ! .. मगर अब्राम से तू शादी करके रहेगी ... इसी की राह देख रही है ...

क्वाश्न्या : हां, हां ! इसके सिवा और हो ही क्या सकता है ... क्यों नहीं ! खुद तूने तो अपनी बीवी को मौत के मुंह तक पहुंचा दिया ...

क्लेश्च : चुप रह, बूढ़ी कुतिया ! तुझे इससे मत-लब ...

क्वाश्न्या : अहा, देखा ! सचाई की तलवार – तीखी धार !

नवाब : लो, शुरू हो गया तमाशा ! नास्त्या, तू कहां है ?

नास्त्या (सिर उठाये बिना) : क्या है ? .. जाओ यहां से !

आन्ना (परदे के पीछे से झांकते हुए) : दिन निकलते ही हंगामा ! भगवान के लिए ... चिल्लाओ नहीं ... लड़ो-झगड़ो नहीं !

क्लेश्च : रोना-धोना शुरू कर दिया !

आन्ना : हर दिन यही मुसीबत ... कम से कम चैन से मरने तो दो !

बूब्नोव : शोर से मौत डरने की नहीं ...

क्वाश्न्या (आन्ना के पास जाकर) : बहन, कैसे तूने झेला ऐसे ज़ालिम को ?

आन्ना : मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो ... जाओ ...

क्वाश्न्या : बिगड़ नहीं ! ओह ... कितना सहती है तू ! .. क्यों, आज छाती में कुछ कम दर्द है न ?

नवाब : क्वाश्न्या ! बाज़ार जाने का वक़्त हो गया ...

क्वाश्न्या : बस, अभी चलते हैं ! (**आन्ना से**) कहे तो कुछ गर्मागर्म पेल्मेनियां * ला दूं तुझे ?

आन्ना : नहीं ... शुक्रिया ! मैं खाकर क्या करूंगी ?

क्वाश्न्या : तू खा ले। गर्म चीज़ खाने से बलग़म ढीला हो जायेगा। मैं प्याले में डालकर रख जाती हूं ... जब मन करे खा लेना ! आओ चलें, नवाब ... (**क्लेश्च से**) अरे, भूत-प्रेत ... (**रसोईघर में जाती है**)

आन्ना (खांसते हुए) : हे भगवान ...

नवाब (नास्त्या की गुद्दी को धीरे से झटका देता है) : छोड़ किताब का पिंड ... मूर्ख छोकरी !

नास्त्या (बड़बड़ाती से) : दफ़ा हो जाओ ... मैं तुम्हारा क्या बिगाड़ रही हूं।

(नवाब सीटी बजाता हुआ क्वाश्न्या के पीछे-पीछे जाता है)

सातिन (तख़्ते पर उठते हुए) : कल किसने मेरी पिटाई की थी ?

बूब्नोव : तुम्हारे लिए क्या इससे कोई फ़र्क़ पड़ता है ?

सातिन : चलो, मान लें कि कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ... लेकिन किसलिए पीटा गया मुझे ?

---

* मांस से भरा हुआ समोसे की शक्ल का रूसी पकवान जिसे उबालकर खाया जाता है। – अनु०

बूब्नोव : पत्ते खेले थे ?

सातिन : हां , खेले थे ...

बूब्नोव : इसीलिए पिटाई की गयी ...

सातिन : हरामी कहीं के ...

अभिनेता (तन्दूर से झांकते हुए) : किसी दिन वे पीट-पीटकर तुम्हारी जान ले लेंगे ...

सातिन : तुम गधे हो।

अभिनेता : वह क्यों ?

सातिन : क्योंकि दो बार किसी की जान नहीं ली जा सकती।

अभिनेता (कुछ देर चुप रहकर) : समझा नहीं ... क्यों ऐसा नहीं किया जा सकता ?

क्लेश्च : तुम तन्दूर से नीचे तो उतरो, घर की सफ़ाई करो ... वहां पड़े-पड़े क्या मौज कर रहे हो ?

अभिनेता : तुम्हें इससे क्या सरोकार है ...

क्लेश्च : अभी वसिलीसा आयेगी और तुम्हें समझायेगी कि किसका सरोकार है इससे ...

अभिनेता : भाड़ में जाये वसिलीसा ! आज सफ़ाई करने की बारी नवाब की है ... नवाब !

नवाब (रसोईघर से बाहर आता है) : मेरे पास वक़्त नहीं है सफ़ाई करने का ... मैं क्वाश्न्या के साथ बाज़ार जा रहा हूं।

अभिनेता : मेरी बला से ... तुम चाहो तो बेशक जेल चले जाओ ... लेकिन फ़र्श साफ़ करने की बारी आज तुम्हारी है ... मैं दूसरों के लिए अपनी जान खपाने से रहा ...

नवाब : जहन्नुम में जाओ तुम ! नास्त्या झाड़ू दे देगी ... अरी, ओ, तूफ़ानी मुहब्बत ! सुनती है ! **(नास्त्या के हाथ से किताब छीन लेता है)**

नास्त्या (उठते हुए) : क्या चाहिए तुम्हें ? किताब वापस दो ! शरारती कहीं के ! और फिर अपने को नवाब भी कहते हो ...

नवाब (किताब लौटाते हुए) : नास्त्या ! मेरी जगह फ़र्श पर झाड़ू दे देना, अच्छा ?

नास्त्या (रसोईघर में जाते हुए) : बड़ी ज़रूरत पड़ी है ... मेरी जूती यह करेगी !

क्वाश्न्या (रसोईघर के दरवाज़े से नवाब को) : तुम तो चलो ! तुम्हारे बिना भी यहां झाड़-बुहार हो जायेगी ... अभिनेता ! तुमसे कह रहे हैं – तुम ही यह कर दो ... कमर नहीं टूट जायेगी !

अभिनेता : हुंह ... हमेशा मेरे ही गले बला पड़ती है ... कुछ समझ में नहीं आता ...

नवाब (रसोईघर से बहंगी लिये हुए बाहर आता है। बहंगी से दो टोकरियां लटक रही हैं और टोकरियों में चिथड़ों से ढके हुए मटके हैं) : आज कुछ ज़्यादा बोझ मालूम हो रहा है ...

सातिन : तुम भी ख़ूब नवाब बनकर पैदा हुए हो ...

क्वाश्न्या (अभिनेता से) : देखो झाड़ू दे देना ! **(नवाब को अपने आगे भेजते हुए ड्योढ़ी की तरफ़ जाती है)**

अभिनेता (तन्दूर से नीचे उतरते हुए) : मेरे लिए धूल-मिट्टी फांकना अच्छा नहीं। **(गर्व से)** शराब

से मेरे सारे शरीर में ज़हर फैल गया है ... (**तख़्ते पर बैठा हुआ सोच में डूब जाता है**)

सातिन : शरीर ... ख़मीर ...

आन्ना : अन्द्रेई मीत्रिच ...

क्लेश्च : अब और क्या चाहिए ?

आन्ना : क्वाश्न्या मेरे लिए कुछ पेल्मेनियां रख गयी है ... तुम लेकर खा लो।

क्लेश्च (उसके पास जाकर) : और तुम – तुम नहीं खाओगी क्या ?

आन्ना : मन नहीं करता ... मैं खाकर क्या करूंगी ? तुम काम करते हो ... तुम्हें खाना चाहिए ...

क्लेश्च : डरती हो ? डरो नहीं ... कौन जाने, हो सकता है ...

आन्ना : जाकर खा लो ! मेरी तबीयत अच्छी नहीं ... लगता है कि जल्द ही ...

क्लेश्च (वहां से हटते हुए) : कोई बात नहीं ... मुमकिन है बिस्तर छोड़ दो ... ऐसा भी होता है (**रसोईघर की तरफ़ जाता है**)

अभिनेता (ऊंची आवाज़ में मानो अभी नींद से जागा हो) : कल अस्पताल में डाक्टर ने मुझसे कहा था – आपके शरीर में पूरी तरह से शराब का ज़हर फैल गया है ...

सातिन (मुस्कराते हुए) : ख़मीर में ...

अभिनेता (ज़ोर देकर) : ख़मीर नहीं, शरीर ...

सातिन : गधे का सींग ...

अभिनेता (उसकी तरफ़ हाथ झटकता है) : क्या

बक रहे हो! संजीदगी से कह रहा हूं... हां। अगर आदमी के शरीर में ज़हर फैल चुका है तो उसके लिए झाड़ू देना... धूल फांकना बहुत बुरा है...

सातिन : माइक्रोबयोटिक्स... अहा!

बूब्नोव : तुम क्या बड़बड़ा रहे हो?

सातिन : शब्द... एक और भी शब्द है – ट्रांसत्सेडेन्टल...

बूब्नोव : यह क्या बला है?

सातिन : मालूम नहीं... भूल गया...

बूब्नोव : तो बोल क्यों रहे हो?

सातिन : योंही... इनसानों के सभी शब्दों से ऊब गया हूं, मेरे भाई... हमारे सभी शब्दों को सुन-सुनकर कान पक गये हैं! शायद हर शब्द को हज़ार बार सुन चुका हूं...

अभिनेता : 'हैमलेट' ड्रामे में कहा गया है : "शब्द, शब्द, शब्द!" खूब ड्रामा है वह... मैंने उसमें क़ब्र खोदनेवाले का पार्ट अदा किया था...

क्लेश्च (रसोईघर से बाहर निकलते हुए) : और झाड़ू देने का पार्ट जल्द ही अदा करोगे?

अभिनेता : तुम्हें मतलब... **(छाती पर हाथ मारता है)** "ओफ़ील्या! ओह... मुझे मत भूलना अपनी प्रार्थनाओं में!.."

(रंगमंच के पीछे कहीं दबा-घुटा शोर, चीख़-चिल्लाहट और पुलिसवालों की सीटियां सुनाई देती हैं। क्लेश्च काम करने बैठ जाता है, तीखी आवाज़ पैदा करते हुए

रेती से किसी चीज़ को रगड़ता है)

सातिन : समझ में न आनेवाले, कम घिसे-पिटे शब्द अच्छे लगते हैं मुझे ... जब छोकरा था ... तो तारघर में काम करता था ... बहुत किताबें पढ़ता था ...

बूब्नोव : तो तुम तारघर के बाबू भी रह चुके हो ?

सातिन : हां, रह चुका हूं ... (**हंसता है**) बहुत अच्छी-अच्छी किताबें हैं ... और बहुत से दिलचस्प शब्द भी ... मैं ख़ासा पढ़ा-लिखा आदमी था ...

बूब्नोव : सुन चुका हूं – सैकड़ों बार ! थे तो क्या हुआ ... शान क्या दिखाते हो ! .. मुझे ही ले लो ... समूरों का धन्धा करता था ... अपनी दुकान थी ... समूरों को रंगता था, मेरे भाई, ऐसे पीले-पीले हाथ होते थे मेरे, कुछ पूछो नहीं – कोहनियों तक ! मैं सोचता था कि मरते दम तक यह रंग नहीं छूटेगा ... पीले हाथ लिये हुए ही क़ब्र में चला जाऊंगा ... लेकिन अब ये मेरे हाथ ... बस, गन्दे हैं ... हां !

सातिन : तो क्या हुआ ?

बूब्नोव : बस, और कुछ नहीं ...

सातिन : तुमने किसलिए यह सब कहा ?

बूब्नोव : योंही ... कुछ अक़्ल लड़ाने के लिए ... तो नतीजा यह निकलता है – बाहर से अपने पर चाहे कितना ही रंग क्यों न चढ़ाया जाये, सब उतर जाता है ... सब उतर जाता है, हां !

सातिन : हुं ... मेरी हड्डी-हड्डी दर्द कर रही है !

अभिनेता (घुटनों के गिर्द हाथ बांधे हुए) : पढ़ाई-लिखाई – यह सब बकवास है, असली चीज़ है गुण, हुनर। मैं एक ऐसे अभिनेता को जानता था जो शब्दों को जोड़-जोड़कर अपना पार्ट पढ़ता था, मगर उसे अदा ऐसे करता था कि... लोगों की तालियों और वाहवाही से थियेटर की दीवारें हिल उठती थीं...

सातिन : बूब्नोव, पांच कोपेक दे दो !

बूब्नोव : मेरे पास तो दो ही हैं...

अभिनेता : मैं कह रहा हूं – गुण, हुनर – इसकी ज़रूरत होती है हीरो बनने के लिए। और गुण का मतलब है – अपने पर, अपनी ताक़त पर भरोसा...

सातिन : मुझे पांच कोपेक दे दो और तब मैं यह मान लूंगा कि तुम बड़े गुणी हो, हीरो हो, मगरमच्छ हो, कोतवाल हो... क्लेश्च, पांच कोपेक दो !

क्लेश्च : जहन्नुम में जाओ ! तुम्हारे जैसों की यहां कमी नहीं है...

सातिन : गाली-गलौज क्यों करते हो ? मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं है...

आन्ना : अन्द्रेई मीत्रिच... मेरा दम घुटता है... सांस नहीं ली जाती...

क्लेश्च : तो मैं क्या करूं ?

बूब्नोव : ड्योढ़ी का दरवाज़ा खोल दो...

क्लेश्च : हां, तुम बैठे हो अपने तख़्ते पर और मैं – फ़र्श पर... मुझे अपनी जगह पर जाने दो और

फिर दरवाज़ा खोल देना... मुझे तो पहले ही ठण्ड लगी हुई है...

बूब्नोव (शान्ति से) : मैं नहीं, तुम्हारी बीवी कह रही है...

क्लेश्च (उदासी से) : आदमी तो बहुत कुछ करने को कहता रहता है...

सातिन : ओह, मेरा सिर कैसे भन्ना रहा है... न जाने क्यों लोग एक दूसरे की खोपड़ी तोड़ते रहते हैं?

बूब्नोव : खोपड़ी ही नहीं, सिर से पांव तक हड्डी-हड्डी तोड़ा करते हैं। **(उठता है)** जाकर कुछ धागा ख़रीद लाता हूं... आज हमारे मालिक लोग अभी तक यहां नहीं पधारे... जैसे कि उनका दम ही निकल गया हो। **(जाता है)**

(आन्ना खांसती है। सातिन हाथों को सिर के नीचे टिकाकर हिले-डुले बिना लेटा रहता है)

अभिनेता (उदास नज़रों से अपने इर्द-गिर्द देखता है और फिर आन्ना के पास जाता है) : क्यों? क्या तबीयत बहुत ख़राब है?

आन्ना : दम घुटता है।

अभिनेता : कहो तो तुम्हें ड्योढ़ी में ले चलूं? तो उठो। **(वह उसे उठने में मदद देता है, उसके कंधों पर गुदड़ी-सी डालता है और सहारा देकर ड्योढ़ी में ले जाता है)** हां, हां... मज़बूती से क़दम रखो! मैं ख़ुद भी बीमार आदमी हूं... शराब का ज़हर फैला हुआ है शरीर में...

कोस्तिल्योव (दरवाज़े पर) : सैर को चल दिये ? अहा, क्या ख़ूब जोड़ी है, एक अंधा और एक कोढ़ी है ...

अभिनेता : तुम एक तरफ़ को हो जाओ ... देखते नहीं हो, बीमार लोग आ रहे हैं ?

कोस्तिल्योव : मेहरबानी करके जाओ ... (**नकियाती आवाज़ में कोई भजन गुनगुनाता है, सन्देहपूर्वक इधर-उधर देखता है, बायीं ओर को सिर झुकाता है मानो पेपेल के कमरे से कुछ आहट लेना चाहता हो**)

(**क्लेश्च कनखियों से मकान-मालिक की गतिविधियों को देखता हुआ चाबियों को ज़ोर से खनखनाने और रेती को रगड़ने लगता है**)

रगड़ रहे हो ?

क्लेश्च : क्या ?

कोस्तिल्योव : मैंने कहा, रेती रगड़ रहे हो ?

(**ख़ामोशी**)

अरे हां ... मैं क्या पूछना चाहता था ? (**झटपट और धीरे से**) मेरी बीवी तो नहीं आई थी यहां ?

क्लेश्च : नज़र नहीं आई ...

कोस्तिल्योव (सावधानी से पेपेल के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते हुए) : महीने में दो रूबल किराया देते हो और जगह कितनी घेरते हो ! चार-

पाई... फिर ख़ुद फ़र्श पर बैठते हो... यह अलग से! भगवान की क़सम, पांच रूबल महीने की जगह है! तुमसे आधा रूबल तो और लेना ही पड़ेगा...

क्लेश्च: तुम मेरे गले में फंदा डालकर मेरा गला घोंट डालो... क़ब्र में टांगें लटकाये बैठे हो, मगर आध रूबल और ऐंठ लेने के फेर में पड़े हो...

कोस्तिल्योव: किसलिए घोंटूं तुम्हारा गला? किसको फ़ायदा होगा इससे? जियो, भगवान तुम्हारा भला करे... मगर तुम्हारा किराया मैं ज़रूर आध रूबल बढ़ा दूंगा – तेल खरीदूंगा, उसे देव-प्रतिमा के सामने दीपक में जलाऊंगा... मेरे और तुम्हारे भी पापों का प्रायश्चित्त हो जायेगा। तुम ख़ुद तो अपने पापों के बारे में कभी सोचते नहीं... ओह, अन्द्रेई, बड़े क़साई हो तुम! तुम्हारे ज़ुल्म से ही तुम्हारी बीवी की यह बुरी हालत हो गयी है... कोई तुम्हें चाहता नहीं, कोई तुम्हारी इज़्ज़त नहीं करता... काम तुम्हारा शोर मचानेवाला है, सभी को परेशान करनेवाला है...

क्लेश्च (**चिल्लाता है**): तुम क्या मुझे... ज़हर के घूंट पिलाने आये हो?

(**सातिन ज़ोर से गुर्राता है**)

कोस्तिल्योव (**चौंकता है**): हे भगवान, तुम भी ख़ूब हो...

अभिनेता (**अन्दर आता है**): बिठा आया उसको ड्योढ़ी में, अच्छी तरह से ढक-ढका दिया...

कोस्तिल्योव: बड़े रहमदिल हो, भैया! यह बहुत

अच्छी बात है ... तुम्हें इसका फल मिलेगा ...

अभिनेता : कब ?

कोस्तिल्योव : उस दुनिया में, भैया ... वहां हमारे हर काम का हिसाब-किताब तैयार किया जाता है ...

अभिनेता : मेरी रहमदिली का तुम मुझे यहीं इनाम दे दो न ...

कोस्तिल्योव : वह कैसे ?

अभिनेता : मेरे क़र्ज़ की आधी रक़म पर लकीर फेर दो ...

कोस्तिल्योव : ही-ही ! तुम तो हमेशा मज़ाक़ करते रहते हो, हमेशा अभिनय करते हो, मेरे प्यारे क्या रहमदिली को सिक्कों के तराज़ू में तोला जा सकता है ? भलाई तो सबसे बड़ी नेमत है। और तुम पर मेरा क़र्ज़, वह तो क़र्ज़ ही है ! मतलब यह कि उसे तुम्हें मुझे चुकाना ही चाहिए ... रही मुझ बुड्ढे के साथ तुम्हारी नेकी की बात, सो तो तुम्हें किसी इनाम के बिना करनी ही चाहिए ...

अभिनेता : बड़े घाघ हो तुम, बुड्ढे ... (**रसोईघर में जाता है**)

(**क्लेश्च उठकर ड्योढ़ी में चला जाता है**)

कोस्तिल्योव (सातिन से) : अरे, वह रेती रगड़ ? भाग गया, ही-ही ! फूटी आंखों नहीं सुहाता उसे मैं ...

सातिन : शैतान के सिवा तुम किसे सुहा सकते हो ...

कोस्तिल्योव (हंसी में टालते हुए) : तुम्हें तो

बस, गाली-गलौज ही आता है! और मैं तुम सबको प्यार करता हूं... मैं अच्छी तरह से समझता हूं कि तुम सभी क़िस्मत के मारे, ज़माने के हाथों सताये हुए हो, दीन-दुनिया से दुतकारे गये हो... (**अचानक तेज़ी से**) अरे हां... क्या वास्या घर पर है?

सातिन: ख़ुद देख लो...

कोस्तिल्योव (दरवाज़े पर जाकर उसे खटखटाता है): वास्या!

(अभिनेता रसोईघर के दरवाज़े पर निकलता है। वह कुछ चबा रहा है)

पेपेल: कौन है?

कोस्तिल्योव: मैं हूं... मैं, वास्या।

पेपेल: क्या चाहिए?

कोस्तिल्योव (दरवाज़े से ज़रा हटकर): दरवाज़ा खोलो...

सातिन (कोस्तिल्योव की तरफ़ देखे बिना): वह दरवाज़ा खोलेगा और वह... वहां होगी...

(अभिनेता नाक फरफराता है)

कोस्तिल्योव (बेचैनी से, धीमी आवाज़ में): क्या? क्या कहा? कौन है वहां? क्या... क्या कह रहे हो तुम?

सातिन: क्या बात है? क्या तुम मुझसे कुछ कह रहे हो?

कोस्तिल्योव: तुमने क्या कहा था?

सातिन : कुछ ख़ास नहीं... ख़ुद से बातें कर रहा था...

कोस्तिल्योव : ज़रा सम्भलकर, मेरे भाई! मज़ाक़ करो, मगर हद से आगे नहीं बढ़ो... समझे! (**ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाता है**) वास्या!

पेपेल (दरवाज़ा खोलते हुए) : क्या है? किसलिए परेशान कर रहे हो?

कोस्तिल्योव (कमरे में नज़र दौड़ाते हुए) : मैं... बात यह है... तुम...

पेपेल : पैसे लाये हो?

कोस्तिल्योव : मुझे तुमसे कुछ काम है...

पेपेल : पैसे लाये हो?

कोस्तिल्योव : कौनसे पैसे? ज़रा रुको तो...

पेपेल : घड़ी के सात रूबल?

कोस्तिल्योव : कौनसी घड़ी, वास्या?.. अरे... तुम भी...

पेपेल : देखो, चालाक नहीं बनो! कल गवाहों के सामने मैंने दस रूबल में तुम्हें घड़ी बेची थी... तीन रूबल तुमने उसी वक़्त दे दिये थे, बाक़ी सात निकालो! मुंह बाये क्या देख रहे हो? सारा दिन यहां सिर पर सवार रहते हो, लोगों को परेशान करते हो... अपने काम की अक़्ल नहीं...

कोस्तिल्योव : शी! बिगड़ो नहीं, वास्या... वह घड़ी...

सातिन : चोरी की है...

कोस्तिल्योव (कड़ाई से) : चोरी के माल से

मेरा क्या वास्ता ... तुम्हारी यह मजाल ...

पेपेल (उसे कंधे से पकड़ लेता है) : तुमने किसलिए मुझे परेशान किया है? क्या चाहिए तुम्हें?

कोस्तिल्योव : मुझे ... कुछ नहीं चाहिए ... अगर तुम्हारा पारा चढ़ा हुआ है ... तो मैं जाता हूं ...

पेपेल : जाओ, पैसे लेकर आओ!

कोस्तिल्योव (जाते हुए) : ओह, कैसे उजड्ड लोग हैं! हाय, हाय ...

अभिनेता : बढ़िया कामेडी रही!

सातिन : बहुत खूब! मुझे ऐसी कामेडी अच्छी लगती है ...

पेपेल : वह यहां क्या झक मार रहा था?

सातिन (हंसते हुए) : नहीं समझते? बीवी को ढूंढ रहा था ... तुम इसे इस दुनिया से चलता क्यों नहीं कर देते, वास्या?!

पेपेल : ऐसे कूड़े-करकट के लिए अपनी ज़िन्दगी बरबाद करूं ...

सातिन : तुम होशियारी से ऐसा करो। इसके बाद वसिलीसा से शादी कर लेना ... हमारे मालिक बन जाओगे ...

पेपेल : इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है? मेरी रहमदिली का फ़ायदा उठाओगे और मेरा माल-मता ही नहीं, मुझे भी बेचकर शराब पी जाओगे ... (**तख़्ते पर बैठ जाता है**) शैतान बुड्ढा ... मुझे जगा दिया ... और मैं एक बहुत बढ़िया सपना देख रहा था — सपने में मछली पकड़ रहा था और बहुत बड़ी मछली मेरे

कांटे में फंस गयी! सपने में ही ऐसी मछलियां नज़र आती हैं... तो मैं उसे बंसी पर उठाये हुए था – डर रहा था कि बंसी टूट जायेगी! मैंने झटपट जाल तैयार कर लिया... सोचा अब कहां जायेगी बचकर...

सातिन: यह मछली नहीं, वसिलीसा थी...

अभिनेता: वसिलीसा को तो वह कभी का फांस चुका है...

पेपेल (झल्लाकर): जहन्नुम में जाओ तुम... और उसे भी अपने साथ लेते जाओ!

क्लेश्च (ड्योढ़ी से आता है): उफ़, कैसी जान-लेवा ठण्ड है...

अभिनेता: तुम आन्ना को भी क्यों नहीं ले आये? ठिठुर जायेगी...

क्लेश्च: उसे नताशा अपने रसोईघर में ले गयी...

अभिनेता: बुड्ढा निकाल देगा...

क्लेश्च (काम करने बैठ जाता है): तो... नताशा उसे यहां ले आयेगी...

सातिन: वास्या! पांच कोपेक दे दो...

अभिनेता (सातिन से): अरे... पांच कोपेक! वास्या! हम दोनों को बीस कोपेक उधार दे दो...

पेपेल: जल्दी से देकर पिंड छुड़ाना चाहिए... नहीं तो ये रूबल मांगने लगेंगे... यह लो!

सातिन: जिबराल्टर! दुनिया में चोरों से बढ़कर कोई नहीं!

क्लेश्च (मुंह बनाकर): उनके पास मुफ़्त का माल आता है। वे काम नहीं करते...

सातिन: मुफ़्त का माल तो बहुतों को मिलता है, मगर आसानी से देता कोई नहीं... रही काम करने की बात? कुछ ऐसा करो कि काम मुझे अच्छा लगे... तब मैं शायद काम करने लगूं... हां! शायद काम करने लगूं! काम से जब ख़ुशी मिलती है तो ज़िन्दगी जन्नत बन जाती है! काम जब फ़र्ज़ हो जाता है, तो गले में ग़ुलामी का फन्दा बन जाता है! (**अभिनेता से**) चलो, मेरे फक्कड़! चलें...

अभिनेता: चलो, मेरे लक्कड़, चलो! ऐसे चढ़ाऊंगा कि चालीस हज़ार शराबियों का मुंह चिढ़ाऊंगा...

(**दोनों जाते हैं**)

पेपेल (**जम्हाई लेते हुए**): कैसी है तुम्हारी बीवी?

क्लेश्च: लगता है कि जल्दी ही...

(**ख़ामोशी**)

पेपेल: तुम्हें देखता और सोचता हूं—बेकार तुम ठोक-पीट करते रहते हो।

क्लेश्च: यह न करूं तो क्या करूं?

पेपेल: कुछ भी नहीं...

क्लेश्च: तो खाऊंगा क्या?

पेपेल: और लोग भी तो खाते हैं...

क्लेश्च: ये लोग? ये भी कोई लोग हैं? फटीचर, आवारा... ये भी लोग हैं! मैं मेहनत-मजूरी करनेवाला आदमी हूं... इन्हें देखकर मुझे शर्म आती है... मैं

बचपन से काम कर रहा हूं... तुम सोचते हो कि मैं इस दलदल से निकल नहीं पाऊंगा? निकल जाऊंगा... बेशक तन की खाल उधड़ जाये, मगर यहां से निकल जाऊंगा... बस थोड़ा रुको... बीवी के दम तोड़ने की देर है... मैं यहां छः महीने रहा हूं... और ऐसे लगता है कि छः साल बीत गये हों...

पेपेल: यहां तुमसे कोई उन्नीस नहीं है... बेकार तुम अपना गाना गा रहे हो...

क्लेश्च: उन्नीस नहीं है! न इनकी कोई इज्जत-आबरू, न इनमें आत्मा नाम की कोई चीज...

पेपेल (उदासीनता से): किसे ज़रूरत है इज्जत-आबरू और आत्मा की? जूतों की जगह न तो इज्जत-आबरू और न आत्मा को ही पैरों में पहना जा सकता है... इज़्ज़त-आबरू और आत्मा की ज़रूरत उन्हें है जिनके पास सत्ता है, शक्ति है...

बूब्नोव (अन्दर आता है): बाप, रे बाप... मेरी तो कुलफ़ी जम गयी!

पेपेल: बूब्नोव! तुम्हारे पास आत्मा है?

बूब्नोव: क्य-ा? आत्मा?

पेपेल: हां, आत्मा!

बूब्नोव: मुझे क्या उसका अचार डालना है? मैं अमीर नहीं हूं...

पेपेल: मैं भी यही कह रहा हूं – इज़्ज़त-आबरू और आत्मा की अमीरों को ज़रूरत होती है! लेकिन यह क्लेश्च हम लोगों पर बिगड़ रहा है – कहता है कि हमारे पास आत्मा नहीं है...

बूब्नोव: वह क्या उसे उधार लेना चाहता है?

पेपेल: उसके पास तो अपनी ही काफ़ी है...

बूब्नोव: तो बेचना चाहता है? लेकिन यहां उसे कोई नहीं ख़रीदेगा। गत्ते के डिब्बे मैंने ख़रीद लिये होते... वह भी अगर उधार मिल जाते...

पेपेल (अक़्ल देते हुए): बिल्कुल मूर्ख हो तुम, अन्द्रेई! आत्मा के बारे में तुम सातिन या फिर नवाब की बातें सुनते, तो तुम्हारा भला होता...

क्लेश्च: वे मुझे क्या सिखायेंगे...

पेपेल: बेशक शराबी हैं, मगर उनके भेजे में तुमसे ज़्यादा अक़्ल है...

बूब्नोव: शराबी और अक़्लमन्द भी – उसके दोनों हाथ लड्डू हैं...

पेपेल: सातिन कहता है कि हर कोई यह चाहता है कि उसके पड़ोसी के पास आत्मा हो। मगर यह किसी के लिए भी लाभदायक नहीं... यह बात सोलह आने सही है...

(नताशा आती है। उसके पीछे-पीछे हाथ में डंडा लिये और पीठ पर थैला लटकाये हुए लुका आता है। उसके कमरबन्द के साथ केतली और पतीली बंधी हुई है)

लुका: धर्म-ईमान वाले लोगों की सेवा में प्रणाम!

पेपेल (मूंछों पर ताव देते हुए): अरे, नताशा आयी है!

बूब्नोव (लुका से) : पार साल के वसन्त तक धर्म-ईमान वाला था ...

नताशा : यह नया किरायेदार है ...

लुका : मेरे लिए सब बराबर है! मैं तो चोर-उचक्कों की भी इज़्ज़त करता हूं। एक भी मक्खी नहीं बुरी, सभी काली, सभी उड़नेवाली ... सो यह बात है। हां, तो बिटिया, कहां डेरा लगाऊं मैं?

नताशा (रसोईघर के दरवाज़े की तरफ़ इशारा करते हुए) : वहां चले जाओ, बाबा ...

लुका : शुक्रिया बेटी, शुक्रिया! वहां, तो वहां सही ... बूढ़े आदमी को जहां चैन मिला, वहीं घर हुआ ...

पेपेल : यह भी दिलचस्प नमूना पकड़ लाई हो तुम, नताशा ...

नताशा : तुम से तो दिलचस्प ही है ... अन्द्रेई! तुम्हारी बीवी हमारे रसोईघर में है ... थोड़ी देर बाद उसे ले आना।

क्लेश्च : अच्छी बात है ... आ जाऊंगा लेने ...

नताशा : तुम अब तो उसके साथ प्यार-मुहब्बत का सलूक किया करो ... वह तो कुछ दिनों की ...

क्लेश्च : जानता हूं ...

नताशा : जानते हो ... जानना ही काफ़ी नहीं, कुछ समझना भी चाहिए। आख़िर मौत तो बड़ी डरावनी होती है ...

पेपेल : मैं नहीं डरता मौत से ...

नताशा : तुम कैसे डरोगे! .. सूरमा जो ठहरे ...

बूब्नोव (सीटी बजाते हुए) : धागे तो सड़े हुए हैं ...

पेपेल : सच, बिल्कुल नहीं डरता! मैं तो अभी मरने को तैयार हूं! छुरी लो और मेरे दिल में भोंक दो ... दम तोड़ दूंगा, उफ़ तक नहीं करूंगा! इतना ही नहीं, ख़ुशी से मरूंगा, क्योंकि पवित्र हाथ मेरी जान लेगा ...

नताशा (जाते हुए) : किसी और को ऐसी बातों से बेवक़ूफ़ बनाना।

बूब्नोव (आवाज़ को खींचते हुए) : धागे तो सड़े हुए हैं ...

नताशा (ड्योढ़ी के दरवाज़े के पास से) : अन्द्रेई, बीवी को नहीं भूल जाना ...

क्लेश्च : नहीं भूलूंगा ...

पेपेल : बहुत अच्छी छोकरी है!

बूब्नोव : लड़की – बुरी नहीं ...

पेपेल : न जाने क्यों मुझसे ऐसे ... खिंची-खिंची रहती है? बिदकती है ... यहां रही – तो बरबाद हो ही जायेगी ...

बूब्नोव : तुम्हारी बदौलत ...

पेपेल : मेरी बदौलत क्यों? मुझे तो उस पर तरस आता है ...

बूब्नोव : जैसे भेड़िये को भेड़ पर ...

पेपेल : झूठ बकते हो! मुझे उस पर ... बड़ा रहम आता है ... मैं देखता हूं ... बुरी ज़िन्दगी है उसकी यहां ...

क्लेश्च : बस, उस दिन की देर है जब वसिलीसा तुम्हें देख लेगी इससे मीठी बातें करते हुए...

बूब्नोव : वसिलीसा? हां, वह अपना शिकार योंही हाथ से नहीं जाने देगी... बड़ी भयानक औरत है...

पेपेल (तख़्ते पर लेट जाता है) : तुम दोनों जाओ जहन्नुम में... बड़े आये नजूमी!

क्लेश्च : देख लेना... थोड़ा रुक जाओ!..

लुका (रसोईघर में गाता है) : रात अन्धेरी... मंज़िल बहुत दूर है मेरी...

क्लेश्च (ड्योढ़ी में जाते हुए) : ओह, कैसे भौंक रहा है... एक और नमूना...

पेपेल : उफ़, कैसी ऊब है... क्यों ज़िन्दगी काटने को दौड़ने लगती है? दिन बीतते रहते हैं, बीतते रहते हैं – खूब मज़े से! और अचानक – जैसे झुरझुरी सी महसूस होती है: ज़िन्दगी बोझ बन जाती है...

बूब्नोव : बोझ? हुं...

पेपेल : भारी बोझ!

लुका (गाता है) : रात अन्धेरी... मंज़िल बहुत दूर है मेरी...

पेपेल : ए! बुड्ढे!

लुका (दरवाज़े में से झांकता है) : क्या मुझसे कुछ कहा?

पेपेल : हां, तुमसे! तुम गाओ नहीं।

लुका (रसोईघर से बाहर आता है) : अच्छा नहीं लगता?

पेपेल : जब कोई अच्छा गाता है – तो अच्छा लगता है...

लुका : मतलब यह हुआ कि मैं अच्छा नहीं गाता ?

पेपेल : हां, यही मतलब है...

लुका : भई वाह! और मैं सोचता था कि मैं अच्छा गाता हूं। हमेशा ऐसा ही होता है—आदमी तो यह सोचता है कि मैं अच्छा काम कर रहा हूं! और अचानक पता यह चलता है कि लोगों को वह पसन्द नहीं...

पेपेल (हंसता है) : बिल्कुल ठीक !

बूब्नोव : अभी तो ऊब का रोना रो रहते थे और अब ठहाके लगा रहे हो।

पेपेल : तुम्हें मतलब ? बेकार की कांय-कांय...

लुका : किसे ऊब महसूस हो रही है ?

पेपेल : मुझे...

(नवाब अन्दर आता है)

लुका : भई वाह! और वहां, रसोईघर में एक लड़की बैठी है, किताब पढ़ रही है और रो रही है! सच! आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी... मैंने उससे कहा : बिटिया, किसलिए रो रही हो ? उसने जवाब दिया—तरस आ रहा है!—किस पर ?—मैंने पूछा। बोली इस बेचारे पर, इस किताब में... किस चीज़ में वह वक़्त बरबाद कर रही है ? शायद वह भी ऊब के कारण ही...

नवाब : वह तो सिरफिरी है...

पेपेल : नवाब! तुमने चाय पी ?

नवाब : पी... आगे कहो!

पेपेल : चाहते हो—अद्धा पेश करूं ?

नवाब : बेशक चाहता हूं... आगे कहो!

पेपेल : हाथों-पैरों के बल होकर कुत्ते की तरह भौंको!

नवाब : उल्लू! तुम कोई धन्ना सेठ हो या चढ़ाये हुए हो?

पेपेल : अरे, भौंको भी! मेरा दिल बहलेगा... तुम नवाब जो ठहरे... कभी तुम्हारा भी ज़माना था, जब तुम हमारे जैसों को इनसान नहीं मानते थे...

नवाब : आगे कहो!

पेपेल : और अब? और अब मैं तुम्हें कुत्ते की तरह भौंकने के लिए मजबूर करूंगा... और तुम भौंकोगे... भौंकोगे न?

नवाब : हां, भौंकूंगा! उल्लू कहीं के! तुम्हें इससे भला क्या खुशी हासिल होगी, जब मैं खुद यह जानता हूं कि तुमसे गया-बीता हो चुका हूं? जब मैं तुम्हारे बराबर नहीं था, तब तुम मुझे हाथों-पैरों के बल होने को मजबूर करते तो मैं जानता...

बूब्नोव : बिल्कुल ठीक!

लुका : और मैं भी कहूंगा—बहुत ठीक कहा!..

बूब्नोव : जो था सो था, अब तो कचरा ही रह गया... यहां रईसज़ादे नहीं हैं... सब मुलम्मे उतर गये, सिर्फ़ नंगा इनसान बाक़ी रह गया...

लुका : मतलब यह कि सब बराबर हैं... तुम, मेरे प्यारे, तुम नवाब थे?

नवाब : यह नया जानवर कहां से आ गया? तुम कौन हो, भूत?

लुका (हंसता है) : मैंने काउंट देखा, राजा देखा, मगर नवाब पहली बार देख रहा हूं और वह भी फटेहाल नवाब ...

पेपेल (ज़ोर से हंसता) : नवाब साहब! कैसी बेतुकी बात है ...

नवाब : तुम्हें अब तक तो अक़्ल आ जानी चाहिए थी, वास्या ...

लुका : ओह-हो! मैं तुम्हें देखता हूं, मेरे भाइयो, तुम्हारी ज़िन्दगी को ... हाय, हाय! ..

बूब्नोव : बस, ऐसी ही है हमारी ज़िन्दगी – जागे तो आहें, सोये तो कराहें ...

नवाब : मगर कभी तो अच्छे ढंग से जीते थे ... हां! याद है मुझे ... सुबह आंख खुलती और बिस्तर पर लेटे-लेटे ही कॉफ़ी की चुसकियां लेता ... कॉफ़ी की! क्रीमवाली कॉफ़ी की ... सच!

लुका : मगर हैं सभी इनसान! चाहे कुछ भी ढोंग करें, चाहे किसी भी रंग में अपने को पेश करें, इनसान तो इनसान ही पैदा हुआ है और ऐसे ही मरेगा ... मैं देखता हूं कि आदमी ज़्यादा समझदार, ज़्यादा दिलचस्प होता जा रहा है ... बेशक लोगों की ज़िन्दगी पहले से बदतर होती जा रही है, मगर वे और बेहतर जीना चाहते हैं ... बड़े हठी हैं!

नवाब : तुम कौन हो, बुड्ढे? .. कहां से आ धमके हो?

लुका : मैं?

नवाब : यात्री?

लुका : इस धरता पर हम सभी यात्री हैं ... मैंने कहते सुना है कि हमारी धरती भी आकाश में यात्री है।

नवाब (कड़ाई से) : यह तो ठीक है, मगर पास-पोर्ट है तुम्हारे पास ?

लुका (ज़रा रुककर) : तुम कौन हो – जासूस ?

पेपेल (ख़ुश होकर) : वाह, ख़ूब जवाब दिया, बुड्ढे ! क्यों, नवाब की दुम, हो गयी न तबीयत साफ़ ?

बूब्नोव : हां, मिल गया नवाब को टके-सा जवाब ...

नवाब (भौचक्का-सा होकर) : इसमें क्या ख़ास बात है ? मैं तो ... मैं तो मज़ाक़ कर रहा था, बाबा ! ख़ुद मेरे पास भी कोई काग़ज़-पत्तर नहीं है ...

बूब्नोव : झूठ बोलते हो !

नवाब : मेरा मतलब था ... काग़ज़ तो हैं मेरे पास ... मगर किसी काम के नहीं ...

लुका : वे सब ऐसे ही हैं ... सभी किसी काम के नहीं हैं।

पेपेल : नवाब ! तो चलें शराबख़ाने में ...

नवाब : मैं तैयार हूं ! अच्छा विदा, बुड्ढे ... बड़े शैतान हो !

लुका : सभी तरह के पंछी होते हैं, मेरे प्यारे ...

पेपेल (ड्योढ़ी के दरवाज़े पर) : आते हो, तो आओ ! **(जाता है)**

(नवाब जल्दी से उसके पीछे-पीछे हो लेता है)

लुका : क्या यह सचमुच नवाब था ?

बूब्नोव: कौन जाने? रईसज़ादा है—यह पक्की बात है... अभी भी कभी कोई ऐसी हरकत कर देता है जो उसके रईसज़ादा होने की गवाही देती है। लगता है कि अभी भूला नहीं है पुरानी आदतों को।

लुका: रईस होना—तो जैसे चेचक से बीमार होना है... जान बच जाती है तो भी निशान रह जाते हैं...

बूब्नोव: वैसे, आदमी कुछ बुरा नहीं... बस, कभी-कभी अपनी शान दिखाने लगता है... जैसे आज तुम्हारे पासपोर्ट के बारे में...

अल्योश्का (हाथों में बाजा लिये और पिये हुए अन्दर आता है। वह सीटी बजा रहा है): ए, घर-वासियो!

बूब्नोव: चिल्ला क्यों रहा है?

अल्योश्का: माफ़ी चाहता हूं... माफ़ कीजिये! मैं हूं तमीज़ वाला आदमी...

बूब्नोव: फिर ऐश हो रही है?

अल्योश्का: जी भर कर! अभी-अभी पुलिसवाले मेद्याकिन ने मुझे निकाल बाहर किया, बोला—ख़बरदार जो फिर कभी सड़क पर तुम्हारी सूरत नज़र आयी... किसी हालत में भी नहीं! लेकिन मैं हूं अपनी धुन का पक्का आदमी, किसी से डरने-दबने-वाला नहीं... मेरा मालिक भी मुझ पर गुर्राता है... मगर मालिक है ही क्या चीज़? छि, छि! बस, एक ग़लतफ़हमी... शराबी है, वह मेरा मालिक तो... लेकिन मैं ठहरा ऐसा आदमी—मुझे तो कुछ भी नहीं

चाहिए! कुछ भी तो नहीं चाहिए और—बस! एक कम्बल दे दो—मैं तुम्हारा हो गया! लेकिन मुझे कुछ भी नहीं चाहिए!

(रसोईघर से नास्त्या बाहर आती है)

मुझे दस लाख दो—मैं ठोकर मार दूंगा! मगर मुझ पर, एक अच्छे इनसान पर, कोई मेरा साथी... कोई शराबी हुक्म चलाये—यह नहीं चाहता! हरगिज़ नहीं चाहता!

(दरवाज़े के पास खड़ी नास्त्या अल्योश्का को देखती हुई सिर हिलाती है)

लुका (नर्मी से) : अरे, छोकरे, तुम किस फेर में पड़ गये हो...

बूब्नोव : दिमाग़ के पेच ढीले हैं...

अल्योश्का (फ़र्श पर लेट जाता है) : लो, खा जाओ मुझे! लेकिन मुझे—मुझे कुछ नहीं चाहिए! मैं बिल्कुल हर चीज़ के लिए तैयार हूं। मुझे बताइये—मैं किसमे कम हूं? मैं दूसरों से किस बात में घटिया हूं? वह पुलिसवाला मेद्याकिन कहता है कि सड़क पर देख लूंगा तो तोबड़ा तोड दूंगा! लेकिन मैं सड़क पर जाऊंगा... सड़क के बीच लेट जाऊंगा—लो, कुचल दो! मुझे कुछ नहीं चाहिए!

नास्त्या : बेचारा, क़िस्मत का मारा!.. उठती जवानी और... अभी से यह बुरा हाल...

अल्योश्का (नास्त्या को देखकर घुटनों के बल हो

जाता है) : ओह, महारानी! शाहज़ादी! फ़्रांसीसी बोलती हैं?.. मैं रंग-पानी कर आया हूं...

नास्त्या (ऊंचे फुसफुसाती है) : वसिलीसा!

वसिलीसा (जल्दी से दरवाज़ा खोलकर, अल्योश्का से) : तू फिर यहां आ मरा?

अल्योश्का : नमस्ते... पधारिये...

वसिलीसा : मैंने तुझसे, कुत्ते के पिल्ले से कहा था कि तेरी छाया भी यहां नज़र नहीं आनी चाहिए... तू फिर यहां आ गया कलमुंहे?

अल्योश्का : वसिलीसा कार्पोव्ना... कहो तो मैं तुम्हें... मातमी धुन बजाकर सुनाऊं?

वसिलीसा (उसे कंधे से धकेलते हुए) : दफ़ा हो जा!

अल्योश्का (दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते हुए) : ज़रा ठहरो... ऐसे नहीं करना चाहिए! मातमी धुन... कुछ ही दिन पहले सीखी है! बिल्कुल ताज़ा-ताज़ा संगीत है... ज़रा ठहरो! ऐसे नहीं करना चाहिए!

वसिलीसा : मैं बताती हूं तुझे – ऐसा नहीं करना चाहिए... सारी गली को मैं तेरे पीछे लगा दूंगी... वकवासी कुत्ते... कल का छोकरा और कैसी-कैसी बकवास करता फिर रहा है मेरे बारे में...

अल्योश्का (भागते हुए) : तो मैं चल दिया...

वसिलीसा (बूब्नोव से) : ख़बरदार जो अब फिर कभी यह यहां दिखाई दिया! सुना तुमने?

बूब्नोव : मैं यहां कोई चौकीदार नहीं हूं...

वसिलीसा : तुम कौन हो, मेरी बला से! यह मत

भूलना कि भीख पर जी रहे हो! कितना क़र्ज़ चुकाना है तुम्हें मेरा?

बूब्नोव (इतमीनान से): हिसाब नहीं लगाया...

वसिलीसा: कोई बात नहीं – मैं हिसाब लगा दूंगी!

अल्योश्का (दरवाज़ा खोलकर चिल्लाता है): वसिलीसा कार्पोव्ना! तुमसे डरे मेरी जूती... हां, मेरी जूती! **(ग़ायब हो जाता है)**

(लुका हंसता है)

वसिलीसा: तुम कौन हो?

लुका: रमता जोगी... यात्री...

वसिलीसा: रात काटोगे या टिकोगे?

लुका: देखा जायेगा...

वसिलीसा: पासपोर्ट!

लुका: दे सकता हूं...

वसिलीसा: लाओ!

लुका (व्यंग्य से): मैं ख़ुद पहुंचा दूंगा... तुम्हारे घर पर पहुंचा दूंगा...

वसिलीसा: बड़ा आया... रमता जोगी, यात्री! कहो कि उठाईगीरा हूं... यह कहीं अधिक सच होता...

लुका (आह भरकर): ओह, बड़ी कठोर हो तुम तो...

(वसिलीसा पेपेल के कमरे के दरवाज़े के पास जाती है)

अल्योश्का (रसोईघर में से झांकता है, फुसफुसाकर पूछता है): चली गयी क्या?

16-461

वसिलीसा (उसकी ओर मुड़ती है) : तू अभी भी यहां मर रहा है?

(अल्योश्का छिप जाता है, सीटी बजाता है, नास्त्या और लुका हंसते हैं)

बूब्नोव (वसिलीसा से) : वह नहीं है ...

वसिलीसा : कौन नहीं है?

बूब्नोव : वास्या ...

वसिलीसा : क्या मैंने तुमसे पूछा था उसके बारे में?

बूब्नोव : देख तो रहा हूं ... तुम जहां-तहां ताक-झांक कर रही हो ...

वसिलीसा : मैं यह देख रही हूं कि यहां सब ठीक-ठाक है या नहीं – समझे? तुम्हारे यहां अभी तक झाड़ू क्यों नहीं दी गयी? कितनी बार कह चुकी हूं कि सफ़ाई होनी चाहिए?

बूब्नोव : आज अभिनेता की झाड़ू देने की बारी है ...

वसिलीसा : मुझे इससे मतलब नहीं कि किसकी बारी है! अगर सफ़ाई का दारोग़ा आ गया और उसने जुर्माना कर दिया तो ... मैं तुम सभी को निकाल बाहर करूंगी!

बूब्नोव (इतमीनान से) : तब खाओगी क्या?

वसिलीसा : एक तिनका तक भी नज़र नहीं आना चाहिए! **(रसोईघर में जाती है, नास्त्या से)** तुम यहां खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो? तोबड़ा क्यों सूजा हुआ है? बुत बनी क्यों खड़ी हो? फ़र्श बुहार दो! नताशा को ... देखा था? वह यहां आई थी?

नास्त्या : मालूम नहीं ... मैंने तो नहीं देखा ...

वसिलीसा : बूब्नोव ! मेरी बहन यहां आई थी ?

बूब्नोव : अरे हां ... वही तो इसे लायी थी ...

वसिलीसा : यह ... घर पर था ?

बूब्नोव : वास्या ? घर पर था ... नताशा ने यहां क्लेश्च से कुछ बातचीत की थी ...

वसिलीसा : मैं तुमसे यह नहीं पूछ रही हूं कि नताशा ने किससे बात की थी ! जहां देखो गन्दगी, हर तरफ़ गन्दगी ! ओह ... सब सूअर हैं ! अभी सफ़ाई करो सुना तुमने ! (**जल्दी से जाती है**)

बूब्नोव : है न पूरी डायन !

लुका : बड़ी सख़्त औरत है ...

नास्त्या : ऐसी ज़िन्दगी होने पर कोई भी औरत डायन बन जायेगी ... उसके पति जैसे आदमी के साथ किसी का भी पल्लू बांध दो, तो यही होगा ...

बूब्नोव : पल्लू बहुत कसकर तो बंधा नहीं है ...

लुका : क्या यह हमेशा ही ऐसे चिल्लाया करती है ?

बूब्नोव : हमेशा ... अभी भी आई तो थी अपने यार के पास, मगर वह मिला नहीं ...

लुका : तब तो बुरा लगना ही था। ओहो ! न जाने कितने लोग इस दुनिया में अपना-अपना सिक्का चलाते है ... हर कोई दूसरे को डराता-धमकाता है, फिर भी ज़िन्दगी में न कोई तौर-तरीक़ा है और न निर्मलता ...

बूब्नोव : तौर-तरीक़ा तो सभी चाहते हैं, मगर इसके

लिए अक़्ल कहां से आये। ख़ैर झाड़ू तो देनी चाहिए... नास्त्या!.. तुम कर दो न यह काम...

नास्त्या: क्यों नहीं! बांदी जो ठहरी तुम सबकी... (**कुछ देर चुप रहकर**) आज मैं ख़ूब चढ़ाऊंगी... इतनी अधिक चढ़ाऊंगी कि पूछो नहीं!

बूब्नोव: यह भी बुरा नहीं...

लुका: अरी बिटिया, तू ऐसे चढ़ाना क्यों चाहती है? अभी-अभी तू आंसू बहा रही थी और अब कहती है कि ख़ूब चढ़ाऊंगी!

नास्त्या (चुनौती देते हुए): चढ़ाकर नशे में धुत्त हो जाऊंगी और फिर से आंसू बहाऊंगी... बस!

बूब्नोव: यह तो कोई बड़ी बात नहीं...

लुका: लेकिन यह बता कि किस कारण? कारण के बिना तो फुंसी भी नहीं निकलती...

(नास्त्या चुप रहकर सिर हिलाती है)

ओह... भले लोगो! क्या हाल होगा तुम्हारा? लाओ, मैं ही यहां झाड़ू दे दूं। झाड़ू कहां है?

बूब्नोव: ड्योढ़ी में, दरवाज़े के पीछे...

(लुका ड्योढ़ी में जाता है)

नास्त्या!

नास्त्या: क्या है?

बूब्नोव: वसिलीसा आज अल्योश्का पर ऐसे क्यों बिगड़ रही थी?

नास्त्या : अल्योश्का उसके बारे में कहता फिरता है कि वास्या का मन उससे भर गया है, वह उससे अपना पिंड छुड़ाना चाहता है... और अब नताशा को फांसना चाहता है... मैं यहां से चली जाऊंगी किसी दूसरी जगह।

बूब्नोव : वह किसलिए? कहां जाओगी?

नास्त्या : तंग आ गयी हूं मैं यहां... किसी को भी मेरी यहां ज़रूरत नहीं...

बूब्नोव (इतमीनान से) : तुम्हारी कहीं भी जरूरत नहीं... इस धरती पर किसी को किसी की भी जरूरत नहीं...

(नास्त्या सिर हिलाती है। उठती है, धीरे-धीरे ड्योढ़ी में जाती है। मेद्वेदेव अन्दर आता है। उसके पीछे-पीछे झाड़ू लिये हुए लुका)

मेद्वेदेव : लगता है कि मैं तुम्हें नहीं जानता...

लुका : बाक़ी सब लोगों को जानते हो?

मेद्वेदेव : अपने हलक़े में मुझे सभी को जानना चाहिए... लेकिन तुम्हें मैं नहीं जानता...

लुका : वह इसलिए, चचा, कि सारी धरती तुम्हारे हलक़े में नहीं आ गयी... थोड़ी-सी उसके बाहर रह गयी है... **(रसोईघर में जाता है)**

मेद्वेदेव (बूब्नोव के पास जाकर) : यह सही है कि मेरा हलक़ा बड़ा नहीं है... मगर वह किसी भी बड़े हलक़े से बुरा है... अभी ड्यूटी छोड़ने से पहले अल्योश्का मोची को थाने में पहुंचाकर आया हूं...

कमबख़्त, सड़क के बीचोंबीच लेट गया, बाजा बजाते हुए चिल्लाने लगा – मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं कुछ भी नहीं चाहता! वहां घोड़े दौड़ रहे हैं, गाड़ियां-बग्घियां आ-जा रही हैं – चलती सड़क है – किसी घोड़े या बग्घी के नीचे आकर कुचला जा सकता था... एकदम सिरफिरा छोकरा है... लेकिन इस बार मैंने उसे – ठीक जगह पर पहुंचा दिया है। उसे हंगामा करना बहुत अच्छा लगता है...

बूब्नोव: आज शाम को ड्राफ़्ट की बाज़ी जमाने आओगे?

मेद्वेदेव: हां, आऊंगा। हुं... वास्या का क्या हालचाल है?

बूब्नोव: ठीक-ठाक है... पहले जैसा ही...

मेद्वेदेव: मतलब यह कि... जी रहा है?

बूब्नोव: वह क्यों नहीं जियेगा? वह तो मज़े से जी सकता है...

मेद्वेदेव (सन्देह प्रकट करते हुए): जी सकता है?

(लुका हाथ में बालटी लिये हुए ड्योढ़ी में जाता है)

हुं... यहां वास्या के बारे में इधर-उधर की बातें हो रही हैं... तुमने कुछ सुना है?

बूब्नोव: मैं तरह-तरह की बातें सुनता रहता हूं...

मेद्वेदेव: वसिलीसा को लेकर... तुम्हारी नज़र में कुछ आया?

बूब्नोव: क्या आया मेरी नज़र में?

मेद्वेदेव: ऐसे ही... कोई बात... शायद तुम जानते

हो, मगर झूठ बोल रहे हो? सभी तो जानते हैं... (कड़ाई से) झूठ बोलना अच्छा नहीं, मेरे भाई...

बूब्नोव: मैं किसलिए झूठ बोलूंगा!

मेद्वेदेव: यही तो मैं कहता हूं!.. ओह, वे कुत्ते के पिल्ले! उड़ा रहे हैं कि वास्या और वसिलीसा में सांठ-गांठ... लेकिन... मुझे क्या लेना-देना है? मैं उसका बाप नहीं, चाचा ही हूं... भला मुझ पर क्यों हंसते हैं?

(क्वाश्न्या अन्दर आती है)

लोग न जाने कैसे हो गये हैं... सभी की खिल्ली उड़ाते हैं... अरे! तुम... आ गयीं...

क्वाश्न्या: मेरे मेहरबान अफ़सर साहब! बूब्नोव! यह फिर आज बाज़ार में मेरे पीछे पड़ गया कि मुझसे शादी करो...

बूब्नोव: तो कर लो... देर क्यों कर रही हो? जेब में माल है और ख़ुद अभी पट्ठा है...

मेद्वेदेव: कौन – मैं? हो-हो!

क्वाश्न्या: ओह, तुम बुद्धू! तुम मेरे घाव पर नमक नहीं छिड़को! मैं भुगत चुकी हूं यह, मेरे प्यारे... औरत का शादी करना तो कड़ाके की ठण्ड में बर्फ़ीले पानी में कूदने के बराबर है – एक बार कूदकर देख लिया – ज़िन्दगी भर भूलने की नहीं...

मेद्वेदेव: लेकिन सुनो तो – मर्द भी अलग-अलग होते हैं।

क्वाश्न्या: लेकिन मैं तो वही हूं! जैसे ही मेरे

प्यारे पति के प्राण-पखेरू उड़े – वह सदा नरक की आग में जलता रहे – तो दिन भर ख़ुशी के मारे जहां की तहां बैठी रही – बैठी रही और किसी भी तरह मुझे यह यक़ीन नहीं होता था कि मेरी क़िस्मत का सितारा चमक उठा है...

मेद्वेदेव : अगर तुम्हारा पति तुम्हें अकारण पीटता था... तो तुम्हें पुलिस में उसकी रपट लिखवानी चाहिए थी...

क्वाश्न्या : मैं आठ बरस तक भगवान की अदालत में रपट लिखाती रही – कोई फ़ायदा नहीं हुआ !

मेद्वेदेव : अब बीवियों को मारने-पीटने की मनाही है... अब हर चीज़ में क़ानून-क़ायदा और व्यवस्था है ! किसी वजह के बिना पीटना मना है... सिर्फ़ क़ानून-क़ायदे के लिए ही पिटाई की जाती है...

लुका (आन्ना को लेकर आता है) : लो, रेंगते-रेंगते पहुंच गये... हाय बेचारी ! तुम इतनी कमज़ोर और अकेली चलो-फिरो, यह भी कोई बात हुई ? तुम्हारी जगह कहां है ?

आन्ना (इशारा करते हुए) : शुक्रिया, बाबा...

क्वाश्न्या : लो, यह रही पति वाली सुहागन... देख लो इसकी हालत !

लुका : बेचारी में ज़रा भी जान नहीं है... ड्योढ़ी में से आ रही थी, दीवार थाम-थामकर और कराह रही थी... तुम लोग इसे अकेली क्यों जाने देते हो ?

क्वाश्न्या : ध्यान नहीं रहा हुज़ूर, माफ़ कर दीजिये ! लगता है कि इसकी बांदी आज सैर-सपाटा कर रही है...

लुका : तुम तो मेरी हंसी उड़ा रही हो ... लेकिन आदमी के साथ ऐसा बर्ताव थोड़े ही किया जाता है। आदमी कैसा भी क्यों न हो – उसकी हमेशा अपनी क़ीमत होती है ...

मेद्वेदेव : हां, इस पर नज़र रखनी चाहिए! जाने कब चल बसे? तब झंझट हो जायेगा ... इसका ध्यान रखना चाहिए!

लुका : बिल्कुल ठीक कहा, थानेदार साहब

मेद्वेदेव : हुं ... यों ... मैं अभी थानेदार नहीं हूं ...

लुका : सच? मगर देखने में तो बिल्कुल सूरमा लगते हैं!

(ड्योढ़ी में शोर और दौड़-धूप। दबी-घुटी चीख सुनाई देती है)

मेद्वेदेव : शायद फिर मार-पीट?

बूब्नोव : लगता तो ऐसा ही है ...

क्वाश्न्या : जाकर देखती हूं ...

मेद्वेदेव : और मुझे भी जाना पड़ेगा ... ओह, यह नौकरी! लोग जब मार-पीट करते हैं तो बीच-बचाव किया ही क्यों जाये? ख़ुद ही बन्द कर देंगे ... थक जायेंगे लड़ते-झगड़ते ... जिसका जितना बस चले, ख़ूब करने दो एक-दूसरे की ठुकाई ... फिर कम मार-पीट करेंगे, दर्द तो बहुत दिनों तक याद रहेगा ...

बूब्नोव (तख़्ते से नीचे उतरते हुए) : तुम अपने अफ़सर को यह अक़्ल सिखाओ ...

कोस्तिल्योव (दरवाज़े को चौपट खोलते हुए चिल्लाता

है) : अब्राम ! जल्दी से चलो ... वसिलीसा तो ... जान ही ले लेगी नताशा की ... जल्दी करो !

(क्वाश्न्या, मेद्वेदेव, बूब्नोव ड्योढ़ी की तरफ़ भागते हैं। लुका सिर हिलाता हुआ उन्हें जाते देखता है)

आन्ना : हे भगवान ... बेचारी नताशा !

लुका : कौन मार-पीट कर रहा है ?

आन्ना : हमारी मालकिनें ... दोनों बहनें हैं ...

लुका (आन्ना के पास जाकर) : किसलिए लड़ रही हैं ?

आन्ना : योंही ... दोनों को भरपेट खाने को मिलता है ... ख़ून गर्म है ...

लुका : तुम्हारा नाम क्या है ?

आन्ना : आन्ना ... तुम्हें देखती हूं तो मुझे अपने बापू की याद आ जाती है ... उसके जैसे हो ... उसी तरह से प्यार करनेवाले ... नर्मदिल ...

लुका : बहुत घिसा गया हूं, इसीलिए नर्म हो गया हूं ... **(झनझनाता ठहाका लगाता है)**

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

मंच-सज्जा पहले जैसी ही है

(शाम का वक़्त। तन्दूर के पास तख़्तों पर बैठे हुए सातिन, नवाब, क्रिवोई ज़ोब और तातार ताश खेल रहे हैं। क्लेश्च और अभिनेता खेल देख रहे हैं। बूब्नोव अपने तख़्ते पर मेद्वेदेव के साथ ड्राफ़्ट खेल रहा है। आन्ना के बिस्तर के पास लुका स्टूल पर बैठा है। दो लैम्प जल रहे हैं – एक ताश खेलनेवालों के पास दीवार पर लटका हुआ है और दूसरा – बूब्नोव के तख़्ते पर।)

तातार : एक बाज़ी और खेलूंगा, बस ...

बूब्नोव : ज़ोब ! गाओ ! **(ख़ुद शुरू करता है)**

हर सुबह निकलता सूरज ...

क्रिवोई ज़ोब (गाने को आगे बढ़ाता है) :

पर बन्दीघर अंधियारा ...

तातार (सातिन से) : पत्तों को फेंट लो ! अच्छी तरह से फेंट लो ! हमें मालूम है कि तुम कैसे तिकड़मी हो ...

बूबनोव और क्रिवोई ज़ोब (एकसाथ) :

दिन-रात घूमता पहरा ... ओहो !
मेरी खिड़की के आगे ...

आन्ना : पिटाई ... गलियां, बेइज़्ज़ती ... बस, यही कुछ जाना है मैंने ... और कुछ भी नहीं !

लुका : ओह, बिटिया ! ऐसे दु:खी नहीं होओ !

मेद्वेदेव : यह क्या चाल चल रहे हो ? ज़रा देखो तो ! ..

बूब्नोव : अरे ! हां, हां, हां ...

तातार (सातिन को घूंसा दिखाकर धमकाते हुए) : तुम पत्ता क्यों छिपाना चाहते हो ? मैं सब देख रहा हूं ... बदमाश कहीं के !

क्रिवोई ज़ोब : यह सब बेकार है, हसन ! ये हर हालत में हमारी आंखों में धूल झोंक देंगे ... बूब्नोव, गाना आगे बढ़ाओ !

आन्ना : कब मैंने भर-पेट खाया था – यह भी याद नहीं ... रोटी का हर टुकड़ा मुंह में डालते हुए डरती थी ... सारी उम्र दिल कांपता रहा ... यही दहशत बनी रही कि कहीं दूसरे से ज़्यादा न खा लूं ... ज़िन्दगी भर चिथड़े पहनती रही ... क़िस्मत की मारी अपनी पूरी ज़िन्दगी भर ... आख़िर क्यों ?

लुका : बेचारी बिटिया ! थक गयी हो न ? कोई बात नहीं !

अभिनेता (क्रिवोई ज़ोब से) : गुलाम चलो ... कमबख़्त, गुलाम !

नवाब : और हमारे पास बादशाह है।

क्लेश्च : ये तो हमेशा बाज़ी मार लेते हैं।

सातिन : हम हैं आदत से मजबूर ...

मेद्वेदेव : बेगम !

बूब्नोव : और मेरे पास भी ... तो अब ...

आन्ना : और अब, मैं मरनेवाली हूं ...

क्लेश्च : देखो, देखो, फिर चालाकी! हसन, पत्ते फेंक दो! मैं कहता हूं, फेंक दो पत्ते!

अभिनेता : क्या उसके पास अपनी अक़्ल नहीं है?

नवाब : अन्द्रेई, तुम अपनी टांग अड़ाना बन्द कर दो वरना मैं तुम्हें जहन्नुम में भेज दूंगा!

तातार : एक बार और पत्ते बांटेंगे! चला था मालदार होने, जेब की दमड़ी भी गयी ... यही मेरा हाल है!

(क्लेश्च अफ़सोस से सिर हिलाता हुआ बूब्नोव के पास चला जाता है)

आन्ना : मैं यही सोचती रहती हूं – हे भगवान! क्या उस दुनिया में भी मैं ऐसे ही तड़पती रहूंगी? क्या वहां भी दुःख-दर्द हैं मेरी क़िस्मत में?

लुका : नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा! चैन से लेटी रहो! कोई बात नहीं! वहां आराम कर लोगी! .. थोड़ा और सब्र करो! सभी सब्र करते हैं, मेरी बिटिया ... हर कोई अपने-अपने ढंग से बर्दाश्त करता है ज़िन्दगी को ... **(उठकर तेज़ क़दमों से रसोईघर की तरफ़ चला जाता है)**

बूब्नोव (गाता है) :

बेकार तुम्हारे पहरे ...

क्रिवोई ज़ोब :

मैं नहीं भागनेवाला ...

(दोनों मिलकर)

आज़ादी मुझको प्यारी ... ओहो !
पर , ज़ंजीरों से पाला ...

तातार (चिल्लाता है) : अच्छा ! पत्ता आस्तीन में घुसेड़ लिया !

नवाब (चकराते हुए) : तो ... क्या मैं उसे ... तुम्हारी नाक में घुसेड़ दूं ?

अभिनेता (यक़ीन दिलाते हुए) : हसन ! तुम्हें ग़लतफ़हमी हुई है ... किसी ने, कभी भी ऐसा नहीं किया ...

तातार : मैंने अपनी आंखों से देखा है ! उचक्का ! मैं नहीं खेलूंगा !

सातिन (पत्ते सेमेटते हुए) : तो चलते बनो। हम उचक्के हैं – तुम यह जानते हो। तो फिर हमारे साथ खेलते क्यों हो ?

नवाब : हारे हो सिर्फ़ चालीस कोपेक और शोर ऐसे कर रहे हो मानो तीन रूबल हार गये हो ... इस पर अपने को कहते हो बादशाह !

तातार (गुस्से में आते हुए) : ईमानदारी से खेलना चाहिए !

सातिन : भला क्यों ?

तातार : क्या मतलब है – क्यों का ?

सातिन : यही – भला क्यों ?

तातार : तुम नहीं जानते ?

सातिन : नहीं जानता। तुम जानते हो?

(तातार ग़ुस्से से थूकता है। सब उस पर हंसते हैं)

क्रिवोई ज़ोब (शान्ति से) : तुम भी अजीब आदमी हो हसन! इतना भी नहीं समझते कि अगर ये ईमानदारी से जीने लगें तो तीन ही दिन में भूखों मर जायें...

तातार : मेरी बला से! ईमानदारी से जीना चाहिए!

क्रिवोई ज़ोब : अपनी रट लगाये जा रहे हो! आओ, चाय पीने चलें... बूब्नोव!

ये लोहे की ज़ंजीरें...

बूब्नोव :

ये लोहे के दरवाज़े...

क्रिवोई ज़ोब : चलो, हसन! **(गाते हुए जाता है)**

मैं इनको खोल न सकता,
मैं इनको तोड़ न सकता...

(तातार घूंसा दिखाकर नवाब को धमकाता है और साथी के पीछे-पीछे बाहर जाता है)

सातिन (नवाब से, हंसते हुए) : हुज़ूर, नवाब साहब, फिर पकड़े गये रंगे हाथों! पढ़े-लिखे आदमी हो और पत्ता छिपाना नहीं जानते...

नवाब (हाथ झटकते हुए) : शैतान ही जाने, यह कमबख़्त पत्ता कैसे...

अभिनेता: हुनर नहीं है ... अपने पर भरोसा नहीं है ... और इसके बिना ... कभी, कुछ नहीं ...

मेद्वेदेव: मेरे पास एक बेगम है ... लेकिन तुम्हारे पास दो ... हां!

बूब्नोव: एक भी कुछ कम नहीं, अगर भेजे में अक़्ल हो ... चलो, चाल तुम्हारी है!

क्लेश्च: आप बाज़ी हार गये, अब्राम इवानिच!

मेद्वेदेव: तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं ... समझे? बस, चुप रहो ...

सातिन: तो हमने जीते तिरपन कोपेक ...

अभिनेता: तीन कोपेक मेरे ... वैसे, मैं क्या करूंगा इन तीन कोपेक का?

लुका (रसोईघर से बाहर आता है): तो मूंड लिया तातार को? अब तो चढ़ाने जाओगे?

नवाब: हमारे साथ चलो!

सातिन: देखें कि तुम नशे में कैसे लगते हो!

लुका: उससे कुछ अच्छा नहीं जैसा नशे के बिना ...

अभिनेता: चलो, बुड्ढे ... मैं तुम्हें छन्द सुनाऊंगा ...

लुका: यह क्या बला है?

अभिनेता: कविता – समझते हो?

लुका: कवि-ता! मुझे क्या लेना-देना है कविता से?..

अभिनेता: उससे ख़ुशी होती है ... कभी उदासी भी ...

सातिन: ए छन्दबाज़, चलते हो? **(नवाब के साथ जाता है)**

अभिनेता: आ रहा हूं ... मैं अभी तुमसे आ मिलूंगा! मिसाल के तौर पर, बुड्ढे, एक कविता

की ये पंक्तियां ... शुरू की पंक्तियां भूल गया ... भूल गया ! **(माथे पर हाथ फेरता है)**

बूब्नोव : लो, क़िस्सा ख़त्म ! मारी गयी तुम्हारी बेगम ... तुम्हारी चाल है !

मेद्वेदेव : मैंने ठीक चाल नहीं चली ... बेवक़ूफ़ी कर डाली !

अभिनेता : पहले, जब मेरे शरीर में शराब का जहर नहीं फैला था, तब मेरी याददाश्त बड़ी अच्छी थी, बाबा ... लेकिन अब ... सब ख़त्म हो गया, मेरे भाई ! मेरे लिए सब कुछ ख़त्म हो चुका है ! इस कविता को मैं हमेशा बहुत अच्छे ढंग से सुनाता था ... तालियों की गड़गड़ाहट का तूफ़ान-सा आ जाता था ! तुम नहीं जानते, क्या मतलब होता है तालियों का ... यह तो वोद्का ही समझो, मेरे भाई, वोद्का ही !.. कभी-कभी ऐसा होता कि मैं स्टेज पर आता, यों खड़ा हो जाता ... **(मुद्रा बनाता है)** खड़ा हो जाता ... और ... **(चुप रहता है)** कुछ भी याद नहीं आ रहा ... एक शब्द भी ... कुछ भी याद नहीं आ रहा ! और वह मेरी प्यारी कविता थी ... यह बुरी बात है न, बाबा ?

लुका : हां, अगर अपनी प्यारी कविता को भूल गये तो अच्छा क्या हो सकता है ? प्यारी चीज़ में तो आदमी की आत्मा बसती है ...

अभिनेता : मैं तो अपनी आत्मा को भी शराब में घोलकर पी गया हूं, बाबा ... मैं कहीं का नहीं रहा, मेरे भाई, तबाह हो गया ... क्यों तबाह हो गया ?

इसलिए कि मुझे अपने पर भरोसा नहीं था... मेरा क़िस्सा ख़त्म हो गया...

लुका : ऐसी भी क्या बात है ? तुम ... इलाज करवाओ ! शराबियों का तो अब इलाज होता है, सुनते हो ! मुफ़्त इलाज होता है, मेरे भाई... ऐसा अस्पताल बनाया गया है शराबियों के लिए... मुफ़्त इलाज करने के लिए... इसका मतलब है, उन्होंने यह मान लिया कि शराबी भी इनसान है... उन्हें तो इस बात से ख़ुशी भी होती है कि वह इलाज करवाना चाहता है ! तो तुम वहां जाओ ! ज़रूर जाओ !

अभिनेता (विचारों में डूबा-सा) : कहां जाऊं ? कहां है यह जगह ?

लुका : यह जगह... एक शहर में... क्या नाम है उसका ? कुछ अजीब-सा नाम है उसका... नाम मैं तुम्हें उसका बता दूंगा !.. और अभी, अभी तो तुम इसकी तैयारी करो ! पीना छोड़ दो – अपने को क़ाबू में कर लो और... बर्दाश्त करो... जब ठीक हो जाओगे... तो फिर से ज़िन्दगी शुरू करोगे... फिर से ज़िन्दगी शुरू करना तो अच्छी बात है, मेरे भाई ! तुम तय कर लो... कुछ ही दिनों में ठीक...

अभिनेता (मुस्कराते हुए) : फिर से... नये सिरे से... यह अच्छी बात है... अरे, हां... फिर से ? **(हंसता है)** अरे... हां ! मैं कर सकता हूं !? कर सकता हूं न मैं ?

लुका : कर क्यों नहीं सकते ? आदमी अगर चाहे, तो सब कुछ कर सकता है...

अभिनेता (मानो अचानक नींद से जागते हुए) तुम्हारे कुछ पेच ढीले हैं! तो अभी तो विदा! (**सीटी बजाता है**) विदा... बाबा... (**जाता है**)

आन्ना: बाबा!

लुका: क्या है, बिटिया?

आन्ना: मेरे साथ बातें करो...

लुका (उसके पास जाकर): आओ, बातें करें..

(क्लेश्च इनकी तरफ़ देखता है, चुपचाप बीवी के पास आता है, उस पर नज़र डालता है और हाथों को ऐसे हिलाता है मानो कुछ कहना चाहता हो)

क्या बात है, भैया?

क्लेश्च (धीमे से): कुछ नहीं... (**धीरे-धीरे ड्योढ़ी के दरवाज़े की तरफ़ जाता है, कुछ सेकण्ड उसके सामने खड़ा रहता है और फिर चला जाता है**)

लुका (उसे जाते हुए देखता है): तुम्हारा पति तो बहुत दु:खी लगता है...

आन्ना: मैं अब उसके बारे में सोचने से रही

लुका: तुम्हें पीटता था?

आन्ना: कुछ न पूछो... उसी की बदौलत तो यह बुरी हालत हुई है मेरी...

बूब्नोव: मेरी बीवी का... एक आशिक था, ड्राफ़्ट खेलने में बड़ा उस्ताद था, शैतान...

मेद्वेदेव: हुं...

आन्ना: बाबा! मेरे साथ कोई बात करो, प्यारे बाबा... मन बहुत बुरा-बुरा हो रहा है...

लुका : यह तो कोई बात नहीं ! मौत के पहले ऐसा ही होता है, बिटिया। कोई बात नहीं, प्यारी ! तुम आस लगाये रहो ... जब मौत आ जायेगी तो सब चैन हो जायेगा ... तुम्हें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहेगी और किसी बात का डर-भय नहीं रहेगा ! शान्ति होगी, चैन होगा ... आराम से लेटी रहना ! मौत तो सारे दुःख-दर्द दूर कर देती है ... वह हम सबके लिए प्यार का सन्देस लेकर आती है ... लोग ठीक ही कहते हैं, मेरी बिटिया – मौत के बाद आराम ही आराम है ! इस दुनिया में कहां आराम मिलता है आदमी को ?

(पेपेल आता है। वह कुछ पिये हुए है, बाल अस्त-व्यस्त हैं, उदास-सा है। दरवाज़े के पास तख़्ते पर बैठ जाता है और हिले-डुले बिना बैठा रहता है)

आन्ना : और वहां – उस दुनिया में भी दुख-मुसीबतें हैं ?

लुका : वहां ऐसा कुछ नहीं होगा ! कुछ नहीं ! तुम मेरी बात को सच मानो ! बस, चैन होगा और कुछ नहीं ! तुम्हें भगवान के दरबार में ले जाकर उसके दूत कहेंगे – प्रभु, देखो, यह आ गयी तुम्हारी दासी, आन्ना ...

मेद्वेदेव (कड़ाई से) : तुम यह कैसे जानते हो कि वहां क्या कहा जायेगा ? तुम भी ख़ूब हज़रत हो ...

(मेद्वेदेव की आवाज़ सुनकर पेपेल सिर ऊपर उठाता है और कान लगाकर सुनता है)

लुका : जानता हूं, तभी तो कह रहा हूं, थानेदार साहब ...

मेद्वेदेव (कुछ नर्म पड़ते हुए) : हो सकता है ... तुम ... जानो ... वैसे ... मैं अभी थानेदार ... नहीं हूं ...

बूब्नोव : तुम्हारे दो मोहरे पीट रहा हूं ...

मेद्वेदेव : ओह कमबख़्त ... तुम पर शैतान की मार ! ..

लुका : तो भगवान तुम्हें दयालु, प्यारभरी दृष्टि से देखेगा और कहेगा – जानता हूं मैं इस आन्ना को ! ले जाओ इसे, इस आन्ना को स्वर्ग में ! वहां चैन की सांस ले ... मालूम है मुझे कि बहुत दुखी रही है इसकी ज़िन्दगी ... बहुत थक गयी है बेचारी ... आन्ना को सुख-चैन दो ...

आन्ना (हांफते हुए) : बाबा ... प्यारे बाबा ... काश ऐसा ही हो ! काश ... शान्ति मिले ... मैं कुछ भी अनुभव न करूं ...

लुका : कुछ भी अनुभव नहीं करोगी ! कुछ भी नहीं होगा ! तुम भरोसा करो ! तुम हंसते-हंसते मरो, डर को भूलकर ... मैं तुमसे कहता हूं, मौत तो हमारे लिए ऐसे ही है जैसे नन्हे-मुन्नों के लिए उनकी मां ...

आन्ना : लेकिन ... यह भी ... यह भी तो हो सकता है कि मैं अच्छी हो जाऊं ?

लुका (व्यंग्यपूर्वक हंसता है) : किसलिए ? फिर से दुख सहने के लिए ?

आन्ना : बस ... थोड़ा और जी लूं ... थोड़ा और ! अगर वहां दुख-दर्द नहीं होंगे ... तो यहां तो उन्हें सहा जा सकता है ... सहा जा सकता है !

लुका: वहां कुछ भी नहीं होगा!.. बस...

पेपेल (उठते हुए): ठीक कहते हो... शायद... ग़लत कहते हो!

आन्ना (डरकर): हे भगवान...

लुका: ओह, बांके जवान...

मेद्वेदेव: चिल्ला कौन रहा है?

पेपेल (उसके पास जाकर): मैं! कहो, क्या है?

मेद्वेदेव: बेकार चिल्लाते हो, यही बात है! आदमी को शान्ति से रहना चाहिए...

पेपेल: तुम हो... काठ के उल्लू! फिर अपने को चाचा भी कहते हो... हो-हो!

लुका (पेपेल से धीमी आवाज में): सुनो, चिल्लाओ नहीं! यहां यह बेचारी अपनी आख़िरी सांसें गिन रही है... उसके होंठों को तो देखो – कैसे पीले पड़ चुके हैं... शान्ति से जाने दो उसे इस दुनिया से!

पेपेल: तुम्हारी मैं बात मान लेता हूं, बाबा! ख़ूब आदमी हो तुम! बहुत बढ़िया झूठ बोलते हो... बहुत ही प्यारे-प्यारे क़िस्से-कहानियां गढ़ते हो! कोई बात नहीं, बोलो झूठ... भैया, इस दुनिया में बहुत कम ही अच्छी बातें सुनने को मिलती हैं!

बूब्नोव: क्या सचमुच ही यह मर रही है?

लुका: लगता तो ऐसा ही है...

बूब्नोव: तो अब इसकी खांसी से निजात मिल जायेगी... इसकी खांसी बहुत परेशान करनेवाली थी... लो, मार रहा हूं तुम्हारे दो मोहरे!

मेद्वेदेव: ओह, तुम पर शैतान की मार!

पेपेल : अब्राम !

मेद्वेदेव : तुम मुझे अब्राम कहने की जुर्रत नहीं करो...

पेपेल : अब्राम के बच्चे ! नताशा बिस्तर में पड़ी है क्या ?

मेद्वेदेव : तुम्हें इससे मतलब ?

पेपेल : तुम यह बताओ कि क्या वसिलीसा ने बहुत कसकर पिटाई की है उसकी ?

मेद्वेदेव : तुम इस मामले में टांग अड़ानेवाले कौन होते हो ! यह उनका घरेलू मामला है... और तुम कौन हो उनके बीच पड़नेवाले ?

पेपेल : मैं कोई भी क्यों न होऊं, लेकिन... अगर चाहूं तो तुम लोग फिर कभी नताशा की सूरत न देख पाओ !

मेद्वेदेव (खेलना बन्द करते हुए) : तुम यह क्या बक रहे हो ? तुम यह किसके बारे में बकवास कर रहे हो? वह मेरी भतीजी है... ओह, चोरटा कहीं का !

पेपेल : चोरटा तो चोरटा, तुमने तो नहीं पकड़ा मुझे...

मेद्वेदेव : थोड़ा सब्र करो ! मैं पकड़ लूंगा तुम्हें रंगे हाथों... मैं... बहुत जल्द ही...

पेपेल : पकड़ लोगे—तो तुम लोगों का यह घोंसला बरबाद समझो ! तुम क्या समझते हो कि मैं अदालत में मुंह बन्द किये बैठा रहूंगा ? भेड़िया तो अपने दांत दिखायेगा ही ! मुझसे पूछा जायेगा कि किसने मुझे चोरी करने को उकसाया और यह बताया कि माल कहां है ? कोस्तिल्योव और उसकी बीवी ने। चोरी का माल

किसने ख़रीदा? कोस्तिल्योव और उसकी बीवी ने!

मेद्वेदेव : तुम झूठ बकते हो! कोई तुम्हारी बात पर यक़ीन नहीं करेगा!

पेपेल : यक़ीन करेंगे, क्योंकि यह सचाई है! और फिर तुम्हें भी इस मामले में घसीट लूंगा... हा-हा! शैतान के बच्चो, तुम सब की मिट्टी पलीद कर दूंगा – देख लेना!

मेद्वेदेव (चकराते हुए) : झूठ बकते हो! बकवासी हो! और... मैंने तुम्हारा क्या बुरा किया है? पगले कुत्ते...

पेपेल : और तुमने मेरे साथ अच्छा भी क्या किया है?

लुका : हुं!

मेद्वेदेव (लुका से) : तुम... क्या बीच में हुं-हुं कर रहे हो? तुम्हें क्या लेना-देना है इससे? यह हमारा घरेलू मामला है!

बूब्नोव (लुका से) : तुम अपनी नाक नहीं घुसेड़ो! यह हमारे-तुम्हारे गले का फंदा नहीं बनाया जा रहा है।

लुका (शान्ति से) : मैं तो कुछ नहीं कह रहा हूं! मैं तो सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं कि अगर किसी ने किसी का भला नहीं किया, तो यह भी बुरा किया है...

मेद्वेदेव (बात न समझते हुए) : यह और लो! यहां हम सब... एक-दूसरे को जानते-पहचानते हैं, मगर तुम – तुम कौन हो? **(ग़ुस्से से नाक फरफराता हुआ बाहर जाता है)**

लुका : हुज़ूर नाराज़ हो गये ... ओहो, भाइयो, देख रहा हूं कि मामला तुम्हारा ... बहुत उलझा-उलझाया है !

पेपेल : भागा गया है वसिलीसा के पास रोना रोने ...

बूब्नोव : गधापन कर रहे हो तुम, वास्या। कुछ ज़्यादा ही सूरमा बन गये हो ... अक़्ल से काम लो — जब जंगल में खुमियां बटोरने जाना तो अपनी बहादुरी दिखाना ... यहां दम ठोंकना बेकार है ... उन्हें तुम्हारी गर्दन मरोड़ते देर नहीं लगेगी ...

पेपेल : अरे, नहीं ! हम, यारोस्लाव्ल वाले ऐसी कच्ची मिट्टी के बने हुए नहीं हैं ... अगर वे लड़ना ही चाहेंगे, तो लड़ेंगे ...

लुका : सुनो छोकरे, तुम्हारे लिए तो सचमुच यहां से चले जाना ही अच्छा होगा ...

पेपेल : कहां चला जाऊं ? बताओ न ...

लुका : साइबेरिया चले जाओ !

पेपेल : अजी नहीं ! मुझे ऐसी उतावली करने की क्या पड़ी है ? जब सरकार अपने ख़र्च पर भेजेगी, तब चला जाऊंगा ...

लुका : तुम मेरी बात मानो — चले जाओ ! वहां तुम्हें ज़िन्दगी की राह मिल जायेगी ... वहां तुम्हारे जैसों की ज़रूरत है !

पेपेल : मेरी राह तो पहले से ही तय हो चुकी है ! मेरा बाप उम्र भर जेल में रहा और मेरे लिए भी वहां जगह पक्की कर गया है ... मुझे तो बचपन से ही चोर या चोर का बेटा कहा जाता है ...

लुका : बहुत अच्छी जगह है – साइबेरिया ! सुनहरी धरती है ! जिसके शरीर में जान और खोपड़ी में समझ है, उसकी वहां चांदी ही चांदी है !

पेपेल : बुड्ढे ! तुम झूठ क्यों बोलते रहते हो ?

लुका : क्या कहा ?

पेपेल : बहरे हो गये ! मैं पूछता हूं कि तुम झूठ क्यों बोलते रहते हो ?

लुका : क्या झूठ बोला है मैंने ?

पेपेल : सभी कुछ... वहां अच्छा है, यहां अच्छा है... झूठ बोलते हो न ! किसलिए ?

लुका : तुम मेरी बात का यक़ीन करो और ख़ुद वहां जाकर देख लो... मुझे दुआएं दोगे... यहां क्या है तुम्हारे लिए ? और... फिर क्या लेना है तुम्हें सचाई से... ज़रा सोचो तो ! शायद सचाई तो तुम्हारे गले का फंदा बन जाये...

पेपेल : मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता ! फंदा, तो फंदा सही...

लुका : बड़े पगले हो तुम ! ख़ुद अपनी जान लेने में क्या तुक है ?

बूब्नोव : तुम दोनों क्या बेसिर पैर की बातें कर रहे हो ? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा... कौनसी सचाई चाहिए तुम्हें, वास्या ? और किसलिए ? अपने बारे में तुम सचाई जानते हो... और बाक़ी सब भी जानते हैं...

पेपेल : ज़रा रुको, तुम अपनी कायं-कायं बन्द करो ! इसे जवाब देने दो... बाबा, यह बताओ – भगवान है ?

(**लुका चुप रहकर मुस्कराता है**)

बूब्नोव : सभी लोग ऐसे रहते हैं... जैसे नदी में छिपटियां बहती हैं... लकड़ी से मकान बन जाते हैं... मगर छिपटियां...

पेपेल : बोलो? है भगवान? बताओ...

लुका (धीरे से) : मानो–तो है, न मानो–तो नहीं... सारी बात विश्वास की है...

(**पेपेल चुपचाप, हैरानी से और एकटक बूढ़े को देखता रहता है**)

बूब्नोव : जाकर चाय पीता हूं... आओ चलें भटियारखाने में? चलते हो?..

लुका (पेपेल से) : ऐसे घूर क्या रहे हो?

पेपेल : योंही... ज़रा रुको!.. तुम्हारा मतलब है...

बूब्नोव : तो मैं अकेला जा रहा हूं... (**दरवाजे की तरफ़ जाता है और वहां वसिलीसा से भेंट होती है**)

पेपेल : तुम्हारा मतलब है... तुम...

वसिलीसा (बूब्नोव से) : नास्त्या घर पर है?

बूब्नोव : नहीं... (**जाता है**)

पेपेल : तो... आ गयी...

वसिलीसा (आन्ना के पास जाकर) : अभी तक ज़िन्दा है?

लुका : इसे परेशान नहीं करो...

वसिलीसा : और तुम... तुम यहां क्या झक मार रहे हो?

लुका : चाहो तो मैं अभी रफ़ू-चक्कर हो जाता हूं ...

वसिलीसा (पेपेल के कमरे के दरवाज़े की ओर जाते हुए) : वास्या ! मुझे तुमसे कुछ काम है ...

(लुका ड्योढ़ी के दरवाज़े तक जाता है, उसे खोलता और फटाक से बन्द करता है। इसके बाद बड़ी सावधानी से तख़्ते पर चढ़कर तन्दूर के ऊपर पहुंच जाता है)

(पेपेल के कमरे से) : वास्या ... यहां आओ !

पेपेल : नहीं आऊंगा ... मन नहीं चाहता ...

वसिलीसा : मगर ... बात क्या है ? ऐसे मुंह क्यों फुलाये हो ?

पेपेल : ऊब गया हूं ... तंग आ गया हूं इन सभी झंझटों से ...

वसिलीसा : और ... मुझसे भी ?

पेपेल : हां, तुमसे भी ...

(वसिलीसा दुपट्टे को कंधों पर कसती है, छाती पर हाथ रखती है। वह आन्ना के बिस्तर के क़रीब जाकर परदे के पीछे झांकती है और फिर पेपेल के पास लौटती है)

तो ... कहो जो कहना है ...

वसिलीसा : कहने को रह ही क्या गया ? ज़बर्दस्ती तो मुझसे प्यार करोगे नहीं ... भीख मांगना मेरे ख़ून में नहीं ... सच बोलने के लिए शुक्रिया ...

पेपेल : कौनसा सच बोलने के लिए ?

वसिलीसा : कि मुझसे तंग आ गये हो ... या शायद यह सच नहीं ?

(पेपेल चुपचाप उसे देखता रहता है)

(उसके पास जाकर) ऐसे देख क्या रहे हो ? क्या पहचानते नहीं ?

पेपेल (आह भरकर) : हो तुम ख़ूबसूरत ...

(वसिलीसा उसकी गर्दन पर अपना हाथ रखती है, लेकिन वह कंधा झटककर उसका हाथ हटा देता है)

लेकिन मेरा दिल कभी तुम्हारा न हो सका ... मैं तुम्हारा होकर तुम्हारे साथ रहा भी ... मगर मेरा दिल तुम कभी न जीत सकीं ...

वसिलीसा (धीरे से) : हुं ... तो ...

पेपेल : तो क्या ? बात करने को है ही क्या ! कुछ भी नहीं ... मुझे परेशान नहीं करो ...

वसिलीसा : कोई दूसरी मन में समा गयी ?

पेपेल : तुम्हें इससे कोई सरोकार नहीं ... अगर समा भी गयी है तो तुमसे नहीं कहूंगा मदद करने को ...

वसिलीसा (अर्थपूर्ण ढंग से) : बेकार ही ऐसा नहीं कर रहे हो ... शायद मैं मदद कर ही देती उसे तुम्हारी बनने में ...

पेपेल (सन्देहपूर्वक) : किसे मेरी बनने में ?

वसिलीसा : तुम जानते हो ... बनो नहीं ! वास्या ... मैं लाग-लपेट नहीं जानती ... **(धीमे)** तुमसे छिपाऊंगी

नहीं... तुमने मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े कर दिया... न कोई कारण, न कोई वजह – मानो कोड़ा बरसा दिया मुझ पर... कहते थे–प्यार करते हो... और अचानक...

पेपेल : नहीं, अचानक नहीं... बहुत दिनों से यही महसूस कर रहा हूं... तुममें दिल नाम की कोई चीज़ नहीं... औरत में दिल होना चाहिए... हम मर्द... हम दरिन्दे हैं... इस चीज़ की ज़रूरत होती है कि कोई हमें सधाये, कुछ सिखाये... लेकिन तुमने – क्या सिखाया है तुमने मुझे?..

वसिलीसा : जो बीत गयी – सो बीत गयी... मैं जानती हूं कि दिल पर आदमी का बस नहीं होता... तुम्हारे दिल में मेरी जगह नहीं रही... क्या हो सकता है! ऐसा, तो ऐसा सही...

पेपेल : तो – क़िस्सा ख़त्म! शान्ति से, लड़ाई-झगड़े के बिना अलग हो गये... अच्छी बात है!

वसिलीसा : नहीं, ज़रा रुको! फिर भी... जब मैं तुम्हारी बनकर रही तो उम्मीद लगाये रही कि तुम मेरा यह जुआ उतार फेंकने में मेरी मदद करोगे... मुझे मेरे मियां, मेरे चाचा से, इस बुरी ज़िन्दगी से मुक्ति दिला दोगे... शायद मैं तुम्हें नहीं, अपनी इस उम्मीद, इस ख़्याल को प्यार करती थी... समझते हो? मैं आस लगाये रही कि तुम मुझे इस गन्दगी से निकाल लोगे...

पेपेल : न तो तुम कील हो और न मैं चिमटी... मैं तो ख़ुद यह सोचता था कि तुम इतनी समझदार हो... तुम समझदार तो हो न... चतुर भी!

वसिलीसा (उसकी ओर झुककर): वास्या, आओ... एक-दूसरे की मदद करें...

पेपेल: वह कैसे?

वसिलीसा (धीमे, ज़ोर देकर): मैं जानती हूं कि मेरी बहन पर तुम लट्टू हो...

पेपेल: इसीलिए तुम उसकी इतनी बुरी तरह से पिटाई करती हो! तुम अक़्ल से काम लेना! ख़बरदार, जो उसे हाथ लगाया...

वसिलीसा: ज़रा रुको तो! ऐसे भड़को नहीं! सब कुछ शान्ति से, अच्छे ढंग से किया जा सकता है... चाहते हो – उससे शादी कर लो! मैं तो तुम्हें साथ में पैसे भी दूंगी... तीन सौ रूबल! ज़्यादा हाथ में आ गये, तो ज़्यादा दे दूंगी...

पेपेल (पीछे हटते हुए): ठहरो... यह क्या कह रही हो? किस बात के लिए?

वसिलीसा: मुझे मेरे मियां से छुटकारा दिला दो! मेरी गर्दन से यह फंदा निकाल दो...

पेपेल (धीरे से सीटी बजाता है): तो यह मामला है! भई वाह! ख़ूब दूर की सोची है तुमने... मतलब यह कि तुम्हारा मियां पहुंच जाये क़ब्र में, मैं तुम्हारा आशिक जेल में और तुम...

वसिलीसा: वास्या! तुम जेल में किसलिए? तुम ख़ुद ऐसा नहीं करो... अपने किसी यार-दोस्त से यह काम कराओ! और अगर ख़ुद भी करोगे तो किसको पता चलेगा? नताशा – ज़रा सोचो तो! तुम्हारी जेब गर्म होगी... कहीं चले जाना... मुझे ज़िन्दगी भर

के लिए निजात मिल जायेगी... और मेरी बहन मेरे नज़दीक नहीं होगी—उसकी भी इसी में भलाई है। उसे देखती हूं तो सीने पर सांप लोट जाता है... तुम्हारी वजह से उस पर आग-बबूला हो उठती हूं... अपने पर क़ाबू नहीं रख पाती... उसे बुरी तरह सताती हूं, मारती-पीटती हूं... ऐसे पीटती हूं... कि बाद में ख़ुद उसे देख-देखकर रोती हूं... फिर भी पीटती हूं! और आगे भी पीटूंगी!

पेपेल: वहशी! तिस पर अपने वहशीपन की डींग भी हांकती हो?

वसिलीसा: डींग नहीं हांक रही हूं—सचाई बता रही हूं। तुम सोच लो, वास्या... मेरे मियां की वजह से, उसके लालच के कारण तुम दो बार जेल में सड़ चुके हो... वह चार साल से जोंक की तरह मेरा ख़ून चूस रहा है! ख़ाक ख़सम है वह मेरा? नताशा की जान भी शिकंजे में जकड़े रहता है, उसे ताने मारता है, भिखारिन कहता है! हम सबके लिए ज़हर है वह...

पेपेल: ख़ूब मक्कारी से ताना-बाना बुन रही हो तुम...

वसिलीसा: मेरी बात बिल्कुल साफ़ है... सिर्फ़ बुद्धू ही यह नहीं समझेगा कि मैं क्या चाहती हूं...

(**कोस्तिल्योव दबे पांव अन्दर आता है और चुपके-चुपके आगे बढ़ता है**)

पेपेल (**वसिलीसा से**): जाओ... यहां से!

वसिलीसा : सोच लो! **(पति को देख लेती है)** क्या चाहिए तुम्हें? मुझे बुलाने आये हो?

(पेपेल उछलता है और आंखें फाड़-फाड़कर कोस्तिल्योव की तरफ़ देखता है)

कोस्तिल्योव : यह मैं हूं... मैं! और तुम दोनों यहां... अकेले? अच्छा... बातें कर रहे थे? **(अचानक पैर पटककर ज़ोर से चिल्लाता है)** अरी ओ नीच औरत... भिखारिन कहीं की! **(अपनी चीख के जवाब में ख़ामोशी और किसी तरह की हरकत न होने से ख़ुद डर जाता है)** क्षमा करो भगवान कमबख़्त, तूने फिर मुझे पाप के गढ़े में धकेल दिया। मैं तुझे सभी जगह ढूंढ़ता फिर रहा हूं... **(ऊंची आवाज़ में)** सोने का वक़्त हो गया! देव-प्रतिमा के दीपक में तेल डालना भूल गयी... अरी कमीनी! भिखमंगी... सूअर की बच्ची... **(कांपते हाथ झटककर उसे धमकाता है)**

(वसिलीसा धीरे-धीरे ड्योढ़ी में दरवाज़े की तरफ़ जाती है, पेपेल को देखती रहती है)

पेपेल (कोस्तिल्योव से) : तू! दफ़ा हो जा यहां से!..

कोस्तिल्योव (चिल्लाता है) : मैं — मालिक हूं यहां! ख़ुद दफ़ा हो जा! चोर...

पेपेल (घुटी आवाज़ में) : चला जा यहां से

18-461

कोस्तिल्योव: तेरी यह जुर्रत! मैं तुझे... मैं तुझे मज़ा चखाऊंगा...

(पेपेल उसे कालर से पकड़कर झंझोड़ता है। तन्दूर के ऊपर किसी के ज़ोर से हिलने-डुलने और जम्हाई लेने की आवाज़ सुनाई देती है। पेपेल कोस्तिल्योव को छोड़ देता है और वह चीख़ता हुआ ड्योढ़ी की तरफ़ भाग जाता है)

पेपेल (कूदकर तख़्ते पर जाता है): कौन है... कौन है तन्दूर के ऊपर?

लुका (सिर निकालता है): क्या बात है?

पेपेल: तुम?!

लुका (शान्ति से): मैं... हां, मैं हूं... ओह, भगवान मेरे!

पेपेल (ड्योढ़ी का दरवाज़ा बन्द करता है, उसकी कुंडी को ढूंढ़ता है जो उसे नहीं मिलती): ओह, लानत है... बाबा, नीचे उतरो!

लुका: अभी... उतर रहा हूं...

पेपेल (डांटते हुए): तुम तन्दूर पर क्यों चढ़े थे?

लुका: तो कहां चढ़ता?

पेपेल: लेकिन... तुम तो ड्योढ़ी में गये थे?

लुका: भैया मेरे, ड्योढ़ी में मुझ बूढ़े आदमी को ठण्ड महसूस होने लगी...

पेपेल: तुमने... बातचीत सुनी?

लुका: हां, सुनी। सुनता कैसे नहीं? मैं बहरा

थोड़े ही हूं। ओह छोकरे, तुम क़िस्मत वाले हो... क़िस्मत तुम्हारा साथ दे रही है!

पेपेल (सन्देहपूर्वक): कैसे क़िस्मत वाला हूं? किस तरह क़िस्मत मेरा साथ दे रही है?

लुका: इस तरह साथ दे रही है कि मैं तन्दूर पर जा चढ़ा।

पेपेल: मगर... तुम वहां इतने ज़ोर से हिलने-डुलने क्यों लगे थे?

लुका: इसलिए कि मुझे वहां गर्मी महसूस होने लगी थी... यह भी तुम्हारी ख़ुशक़िस्मति थी... मैंने सोचा कि छोकरा कहीं बेवक़ूफ़ी न कर डाले... बुड्ढे का गला न घोंट दे...

पेपेल: हां... मैं यह कर सकता था... फूटी आंखों नहीं सुहाता वह मुझे...

लुका: इसमें कौनसी नई बात है? ऐसा करना कुछ मुश्किल नहीं... अक्सर लोग ऐसे ही तो ठोकर खा जाते हैं..

पेपेल (मुस्कराते हुए): क्या तुम ख़ुद भी कभी ठोकर खा चुके हो?

लुका: छोकरे! मैं जो कहता हूं, उसे बहुत ध्यान से सुनो—इस औरत को तुम अपने पास नहीं फटकने दो! किसी हालत में भी अपने पास नहीं फटकने दो! हर्गिज़ अपने पास नहीं आने दो... अपने ख़सम को यह तुम्हारे बिना ही दूसरी दुनिया में पहुंचा देगी और सो भी तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह! तुम उस शैतान की नानी की बात नहीं सुनो... ज़रा देखो तो—कैसी

चांद निकल आई है मेरी? भला क्यों? इन्हीं औरतों की वजह से... मेरे सिर पर जितने बाल थे, उनसे ज़्यादा औरतों से मेरा वास्ता पड़ चुका है... लेकिन यह वसिलीसा... यह डायन तो उन सभी के कान काटती है!

पेपेल: समझ में नहीं आता... तुम्हें धन्यवाद दूं या फिर तुम भी...

लुका: तुम कुछ नहीं कहो! मुझसे बढ़कर तो तुम कहने से रहे! तुम मेरी बात सुनो – जो लड़की तुम्हारे दिल में समा गयी है, उसका हाथ थामो और यहां से चलते बनो! भाग जाओ! यहां से दूर चले जाओ...

पेपेल (उदासी से): लोगों को समझ पाना बड़ा मुश्किल है। कौन अच्छा है, कौन बुरा?.. कुछ भी समझ में नहीं आता...

लुका: इसमें समझने की बात ही क्या है? सभी तरह से जीता है आदमी... जैसा उसके दिल का रंग, वैसा जीने का ढंग... आज अच्छा है, कल – बुरा... और अगर इस लड़की ने सचमुच तुम्हारा मन जीत लिया है... तो उसे साथ लेकर यहां से रफ़ू-चक्कर हो जाओ और क़िस्सा ख़त्म... नहीं तो अकेले ही अपनी राह लो... तुम अभी जवान हो, औरत तुम्हें मिल ही जायेगी...

पेपेल (कंधा पकड़कर): नहीं, तुम मुझे बताओ – किसलिए तुम यह सब कह रहे हो...

लुका: ज़रा रुको, छोड़ दो कंधा... आन्ना को

देखने दो ... उसकी सांस मुश्किल से आ-जा रही थी ... **(आन्ना के बिस्तर की तरफ़ जाता है, परदा हटाता है, देखता है, हाथ से छूता है)**

(सोच में डूबा और चकराया-सा पेपेल उसे देखता है)

हे भगवान ईसा मसीह! अपनी दासी आन्ना की आत्मा को अपने चरणों में शरण दो ...

पेपेल (धीमी आवाज़ में) : मर गयी? **(पास न जाकर गर्दन ऊंची करके बिस्तर को देखता है)**

लुका (धीरे से) : दुःखों से मुक्ति मिली बेचारी को! .. इसका मियां कहां है?

पेपेल : शायद शराबख़ाने में ...

लुका : उसे बताना चाहिए ...

पेपेल (कांपते हुए): मुर्दे मुझे अच्छे नहीं लगते ...

लुका (दरवाज़े की तरफ़ जाता है): उनमें अच्छा लगने को है ही क्या? ज़िन्दा लोग अच्छे लगने चाहिए ... ज़िन्दा लोग ...

पेपेल : मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं ...

लुका : डरते हो?

पेपेल : मुझे अच्छा नहीं लगता ...

(दोनों जल्दी से बाहर जाते हैं। रंगमंच ख़ाली रहता है और उस पर ख़ामोशी रहती है। दरवाज़े के पीछे ड्योढ़ी में घुटा-घुटा, ऊंचा-नीचा और अस्पष्ट शोर सुनायी देता है। इसके बाद अभिनेता अन्दर आता है)

अभिनेता (**दरवाज़ा बन्द किये बिना दहलीज़ पर चौखट को कसकर पकड़े हुए खड़ा रहता है और ज़ोर से पुकारता है**) : ए बाबा ! कहां हो तुम ? याद आ गयी मुझे कविता ... सुनो। (**लड़खड़ाते हुए दो क़दम आगे बढ़ता है और मुद्रा बनाकर कविता सुनाता है**)

> महानुभावो ! अगर पावन सचाई का मार्ग
> दुनिया को नहीं मिलता
> तो भला हो उस पागल का
> जो सुनहरे सपने बुनता !

(अभिनेता के पीछे नताशा दरवाज़े के पास दिखाई देती है)

बाबा ! ..

> अगर सूरज कल भूल जाये
> हमारी धरती को रोशन करना,
> तो दुनिया को जगमगा देगा
> किसी दीवाने का सपना ...

नताशा (**हंसती है**) : वनमानस ! फिर चढ़ा आये ...

अभिनेता (**उसकी ओर मुड़ता है**) : अरे, यह तुम हो ? लेकिन वह कहां है बाबा ... प्यारा बाबा ? यहां तो शायद ... कोई नहीं है ... नताशा, विदा ! विदा ... नताशा !

नताशा (**अन्दर आते हुए**) : न सलाम, न दुआ ... और विदा ...

अभिनेता (**उसका रास्ता रोककर**) : मैं – जा रहा

है, यहां से जा रहा हूं... वसन्त आयेगा – और बंदा यहां नहीं होगा...

नताशा : मुझे जाने दो... कहां जा रहे हो तुम?

अभिनेता : एक शहर की खोज में... इलाज करवाने... तुम भी चली जाओ... ओफ़ीलिया... चली जाओ मठ में... बात यह है – एक अस्पताल है शराबियों का, ऐसे शरीरों के इलाज का, जिनमें शराब का ज़हर बस गया है... बहुत कमाल का अस्पताल... सभी जगह संगमरमर... फ़र्श भी संगमरमर का! रोशनी की चमचम... सफ़ाई की झलमल, बढ़िया ख़ुराक... सब – मुफ़्त! और संगमरमर का फ़र्श, सच! मैं उसे ढूंढ़ लूंगा, इलाज करवाकर ठीक हो जाऊंगा और... फिर से... मैं बढ़ूंगा पुनर्जन्म के पथ पर... जैसा कहा था किंग लियर ने! नताशा... स्टेज का मेरा नाम था – स्वेर्च्कोव-ज़वोल्ज़्स्की... कोई भी यह नाम नहीं जानता, कोई भी! यहां मेरा कोई नाम नहीं... समझती हो, कितने दुःख की बात होती है नाम खो बैठना? कुत्तों तक के नाम होते हैं...

(नताशा सावधानी से अभिनेता के पास से निकल जाती, आन्ना की चारपाई के पास रुककर उसे देखती है)

नाम नहीं, इनसान नहीं...

नताशा : देखो तो... यह बेचारी तो चल बसी...

अभिनेता (सिर हिलाते हुए) : यह नहीं हो सकता...

नताशा (पीछे हटते हुए) : क़सम भगवान की... देख लो...

बूब्नोव (दरवाज़े से) : क्या देख लो?

नताशा : आन्ना तो... मर गयी!

बूब्नोव : मतलब यह कि इसकी खांसी से निजात मिली **(आन्ना के बिस्तर की तरफ़ जाता है, देखता है, अपनी जगह पर जाता है)** क्लेश्च को बताना चाहिए... यह उसका मामला है...

अभिनेता : मैं जाकर... कहता हूं... उसका नाम मिट गया!.. **(बाहर जाता है)**

नताशा (कमरे के बीचोंबीच) : और मैं भी... कभी न कभी इसी तरह... किसी तहख़ाने में... कुचल दी जाऊंगी...

बूब्नोव (अपने तख़्ते पर कोई चिथड़ा बिछाते हुए) : क्या बात है? तुम क्या बड़बड़ा रही हो?

नताशा : योंही... अपने से कुछ कह रही हूं...

बूब्नोव : वास्या की राह देख रही हो? ज़रा सम्भलकर – वह तुम्हें तबाह कर डालेगा...

नताशा : इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि कौन तबाह करेगा? तो यही अच्छा है कि वह कर डाले...

बूब्नोव (लेटता है) : तुम जानो...

नताशा : अच्छा हुआ... वह चल बसी... मगर अफ़सोस होता है... हे भगवान! किसलिए रही वह इस दुनिया में?

बूब्नोव : सबका यही हाल होता है – पैदा होते हैं, जीते हैं, मर जाते हैं। मैं भी मर जाऊंगा... तुम

भी ... फिर अफ़सोस करने की क्या बात है?

(लुका, तातार, क्रिवोई ज़ोब तथा क्लेश्च अन्दर आते हैं। क्लेश्च धीमे-धीमे और सिकुड़ा हुआ आता है)

नताशा : शी! आन्ना ...

क्रिवोई ज़ोब : मालूम है ... इसकी आत्मा को स्वर्ग में चैन मिले ...

तातार (क्लेश्च से) : इसे यहां से ले जाना होगा! वहां, ड्योढ़ी में! यहां मुरदा नही पड़ा रह सकता, यहां ज़िन्दा लोग सोयेंगे ...

क्लेश्च (धीरे से) : ले जायेंगे ...

(सभी बिस्तर के पास जाते हैं। क्लेश्च दूसरों के कंधों के बीच से बीवी को देखता है)

क्रिवोई ज़ोब (तातार से) : तुम्हारा क्या ख़्याल है — बदबू फैलेगी? नहीं, इससे बदबू नहीं फैलेगी ... वह तो ज़िन्दा ही बिल्कुल सूख गयी थी ...

नताशा : हे भगवान! कुछ तो रहम करो इस पर ... उसके बारे में कोई दो-चार अच्छी बातें कहो! ओह, कैसे लोग हो तुम ...

लुका : बिटिया, तुम बुरा नहीं मानो इनकी बातों का ... नहीं मानो बुरा! ये भला ... हम भला कब मुरदों पर रहम करेंगे? अरी, गुड़िया! ज़िन्दा लोगों पर तो रहम करते नहीं ... अपने पर भी तरस नहीं खाते ... मुरदों की तो बात ही क्या है!

बूब्नोव (जम्हाई लेते हुए) : मौत तो बातों से

डरनेवाली नहीं!.. बीमारी बातों से घबराती है, लेकिन मौत – नहीं!

तातार (हटते हुए): पुलिस को बताना चाहिए...

क्रिवोई ज़ोब: पुलिस को तो ज़रूर ख़बर देनी चाहिए! क्लेश्च! पुलिस को ख़बर दी?

क्लेश्च: नहीं... इसे दफ़नाना होगा... लेकिन मेरे पास तो सिर्फ़ चालीस कोपेक हैं...

क्रिवोई ज़ोब: अगर ऐसी बात है, तो... उधार ले लो... या फिर हम चन्दा कर लेते हैं... कोई पांच कोपेक, कोई दूसरा जितना दे सके... मगर पुलिस को जल्दी से ख़बर दे आओ! वरना पुलिस-वाले सोचेंगे कि तुमने इसे मार डाला... या फिर कुछ और... **(तख़्तों की तरफ़ जाता है और तातार की बग़ल में लेटने को ही है)**

नताशा (बूब्नोव के तख़्ते के पास जाकर): अब... वह मुझे सपनों में दिखाई देगी... मुर्दे मुझे हमेशा सपनों में नज़र आते हैं... अकेली जाते हुए मुझे डर लगता है... ड्योढ़ी में अन्धेरा है...

लुका (नताशा के पीछे जाते हुए): तुम ज़िन्दा लोगों से डरो... मेरी बात गांठ बांध लो...

नताशा: बाबा, मुझे छोड़ आओ...

लुका: चलो... चलो, छोड़ आता हूं!

(दोनों जाते हैं। ख़ामोशी)

क्रिवोई ज़ोब: ओहो-हो! हसन! मेरे दोस्त, जल्द ही बहार आनेवाली है... कुछ गर्मी मिलेगी! किसान

लोग तो देहातों में हल, हेंगों की मरम्मत भी करने लगे हैं... जुताई की तैयारी हो रही है सच! और हम... हसन?.. यह कम्बख़्त तातार तो खर्राटे भी लेने लगा है...

बूब्नोव: तातार तो नींद के सूरमा होते हैं...

क्लेश्च (कमरे के बीच खड़ा हुआ बुझी-बुझी नज़र से अपने सामने देखता है): मैं अब क्या करूं?

क्रिवोई ज़ोब: लेटो और सो जाओ... बस, यही

क्लेश्च (धीरे से): लेकिन... इसका... इसका क्या किया जाये?

(कोई भी जवाब नहीं देता। सातिन और अभिनेता आते हैं)

अभिनेता (चिल्लाता है): बूढ़े बाबा! इधर आओ, मेरे वफ़ादार केन्ट...

सातिन: देखो, मिक्लूहा-मक्लाय आ रहा है... हो-हो!

अभिनेता: बस, सब कुछ तय हो चुका है! बाबा, कहां है वह शहर... कहां हो तुम?

सातिन: मृग-मरीचिका! बुड्ढे ने तुमसे झूठ बोल दिया है... कहीं कुछ नहीं है! न शहर हैं, न लोग हैं... कुछ भी नहीं!

अभिनेता: तुम बकते हो!

तातार (तख़्ते से उछलते हुए): कहां है मालिक? मैं जा रहा हूं मालिक के पास! यहां सोना हराम है! वह पैसे किस बात के लेता है... यहां मुरदे

हैं... यहां शराबी हैं... (**तेज़ी से बाहर जाता है**)

(**सातिन उसके पीछे सीटी बजाता है**)

बूब्नोव (अलसायी आवाज़ में) : सो जाओ, भाइयो, शोर नहीं करो... रात सोने के लिए है!

अभिनेता : हां... यहां – अहा! लाश है... "हमारे जाल में फंस गयी एक लाश"... यह कविता है बे-बेरानजेर की!

सातिन (चिल्लाता है) : लाशें कुछ नहीं सुनतीं! लाशें कुछ महसूस नहीं करतीं... चीख़ो... गला फाड़कर चिल्लाओ... लाशें कुछ नहीं सुनतीं!..

(**दरवाज़े पर लुका दिखाई देता है**)

(**परदा गिरता है**)

तीसरा अंक

(मकान के पिछवाड़े का अहाता जिसमें सभी तरह का कूड़ा-करकट पड़ा है और सभी जगह झड़-झंखाड़ उगा हुआ है। रंगमंच पर दूर ईंट की ऊंची दीवार है जिसके कारण आकाश भी दिखाई नहीं देता। उसके पास एल्डर की झाड़ियां उगी हैं। दायीं ओर किसी बाड़े या अस्तबल की लट्ठों की काली दीवार है। बायीं ओर कोस्तिल्योव के घर की भूरी, टूटे-फूटे प्लस्तर वाली दीवार है। यह दीवार कुछ तिरछी है और इसका पिछला सिरा अहाते के बीच तक पहुंचा हुआ है। इस तरह ईंटों की लाल दीवार और इस दीवार के बीच एक तंग गलियारा-सा बन गया है। भूरी दीवार में दो खिड़कियां हैं—एक ज़मीन से सटी हुई और दूसरी कोई डेढ़ मीटर ऊंची तथा ईंटों की दीवार के नज़दीक है। इस दीवार के पास एक स्लेज औंधी पड़ी है और कोई तीन मीटर लम्बा लट्ठा भी। दायीं ओर दीवार के नज़दीक पुराने तख़्तों और लट्ठों का ढेर है। शाम का वक़्त है, सूरज डूब रहा है और ईंटों की दीवार उसकी लाल रोशनी से चमक रही है। वसन्त अभी आया ही है, कुछ दिन पहले ही बर्फ़ पिघली है। एल्डर की काली झाड़ियां अभी नंगी हैं, उन पर कोपलें नहीं फूटीं। नताशा और नास्त्या

लट्ठे पर एक-दूसरी के पास बैठी हैं। लुका और नवाब स्लेज पर बैठे हैं तथा दीवार के दायीं ओर वाले लकड़ियों के ढेर पर क्लेश्च लेटा हुआ है। तहख़ाने की खिड़की से बूब्नोव का चेहरा झांक रहा है।)

नास्त्या (आंखें मूंदकर और शब्दों के साथ सिर हिलाती हुई लयबद्ध ढंग से अपनी कहानी सुना रही है): तो जैसा कि हमने तय किया था, वह रात के वक़्त कुंज में मुझसे मिलने आया... मैं तो बहुत पहले से ही उसकी बाट जोह रही थी और भय तथा परेशानी से कांप रही थी। वह भी सिर से पांव तक कांप रहा था–चेहरे का रंग बिल्कुल उड़ा हुआ था, एकदम पीला और उसके हाथ में थी पिस्तौल...

नताशा (सूरजमुखी के बीज चबाते हुए): देखा! लोग ठीक ही कहते हैं कि विद्यार्थियों के लिए कुछ भी कर गुज़रना सम्भव है...

नास्त्या: और उसने सहमी हुई आवाज़ में मुझसे कहा–"मेरी ज़िन्दगी, मेरे दिल की रानी..."

बूब्नोव: हो-हो! मेरी ज़िन्दगी, मेरे दिल की रानी?

नवाब: चुप रहो! नहीं सुनना चाहते तो न सुनो, मगर इसे टोको नहीं, ख़ूब बेपर की उड़ाने दो... तो आगे!

नास्त्या: बोला–"मेरी प्यारी, मेरे दिल की रानी! मेरे मां-बाप मुझे तुमसे शादी करने की इजाज़त

दन को तैयार नहीं ... वे धमकी देते हैं कि अगर मैं तुमसे शादी कर लूंगा तो वे ज़िन्दगी भर मेरी सूरत नहीं देखना चाहेंगे। इसलिए अपनी जान लेने के सिवा मेरे पास कोई चारा नहीं ..." और उसके हाथ में थी पिस्तौल, यह बड़ी सारी, और उसमें भरी हुई थीं कोई दस गोलियां ... "तो विदा, मेरी जान, मेरे दिल की रानी! अपना इरादा मैं बदल नहीं सकता ... तुम्हारे बिना किसी तरह भी ज़िन्दा नहीं रह सकता।" और मैंने उसे जवाब दिया – "मेरे दिल के राजा ... मेरे राऊल ..."

बूब्नोव (हैरान होकर) : क्या? क्या नाम बताया? नामाकूल?

नवाब (ज़ोर से हंसते हुए) : नास्त्या, तुम्हें याद नहीं रहा ... पिछली बार तो तुमने उसका नाम गास्तोन बताया था!

नास्त्या (गुस्से से उछलते हुए) : चुप रहो ... कमीनो! ओह तुम ... दर-दर की ठोकरें खानेवाले कुत्तो! तुम ... तुम क्या जानोगे कि मुहब्बत किसे कहते हैं? सच्ची मुहब्बत? मैंने उसे जाना है ... सच्ची मुहब्बत को! **(नवाब से)** तुम! तुम दो कौड़ी के आदमी!.. अपने को पढ़ा-लिखा बताते हो – बिस्तर में लेटे-लेटे कॉफ़ी पिया करते थे ...

लुका : तुम लोग चुप रहो! इसे टोको नहीं! शब्दों के फेर में नहीं पड़ो, उनके भावों को समझो, उनके पीछे जो छिपा है, वही असल चीज़ है! तो बिटिया, तुम बुरा नहीं मानो, सुनाती जाओ!

बून्नोव : चलता जाये कौवा हंस की चाल ... चलता जाये !

नवाब : तो आगे क्या हुआ ?

नताशा : तुम इनकी तरफ़ ध्यान न दो ... ये हैं ही क्या चीज़ ? जलन के मारे ऐसा करते हैं ... इनके पास तो कुछ है नहीं ...

नास्त्या (फिर से बैठते हुए) : मैं आगे सुनाना नहीं चाहती ! नहीं सुनाऊंगी ... ये मुझ पर यक़ीन नहीं करते ... मुझ पर हंसते हैं ... **(अचानक रुकती है, कुछ क्षण चुप रहती है और फिर से आंखें मूंदकर जोशीली तथा ऊंची आवाज़ में शब्दों के साथ अपने हाथ को हिलाती तथा मानो दूर से सुनाई देनेवाली किसी धुन को सुनती हुई अपनी कहानी जारी रखती है)** और मैंने उसे जवाब दिया—"मेरी ज़िन्दगी की ख़ुशी ! मेरी आंखों की रोशनी ! तुम्हारे बिना मैं भी इस दुनिया में ज़िन्दा नहीं रह सकती ... क्योंकि मैं तुम्हारी प्रेम-दीवानी हूं और जब तक मेरे सीने में दिल धड़कता रहेगा, तुम्हारा प्यार उसमें सांस लेता रहेगा ! लेकिन तुम अपना जीवन-दीप नहीं बुझाओ ... अपने मां-बाप के लिए तो तुम ही सब कुछ हो ... तुम ही उनका चैन और सहारा हो ... तुम मुझे भूल जाओ ! अपने दिल से निकाल दो ! मुझे बरबाद हो जाने दो, मेरे प्रियतम ... मैं तुम्हारी याद में घुलघुलकर मर जाऊंगी ... मेरा कोई नहीं है इस दुनिया में ... अकेली, एकदम अकेली हूं मैं ! इसलिए मुझे ही मिट जाने दो—इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा ! मेरे लिए अब कुछ

भी तो बाक़ी नहीं रहा... कुछ भी... कुछ भी तो..."
(मुंह को हाथों से छिपा लेती है और मूक रुदन करती है)

नताशा (मुंह फेरकर, धीरे से) : रोओ नहीं... नहीं रोओ!

(लुका मुस्कराते हुए नास्त्या का सिर सहलाता है)

बूब्नोव (खिलखिलाकर हंसता है) : ओह... शैतान की नानी! है न?

नवाब (वह भी हंसता है) : बाबा! क्या तुम यह सब सच समझ रहे हो? इसने यह सब 'तूफ़ानी मुहब्बत' किताब से रट लिया है... यह सब बकवास है! गोली मारो इसे!..

नताशा : तुम्हें क्या तकलीफ़ हो रही है? तुम! तुम चुप रहो... भगवान ने यह हाल तो कर दिया तुम्हारा...

नास्त्या (आग-बबूला होकर) : नाली के कीड़े! खोखले ढोल! कहां है तुझमें आत्मा?

लुका (नास्त्या का हाथ थामते हुए) : आओ, यहां से चलें, बिटिया! तुम ऐसे बिगड़ो नहीं... अगर नहीं मानो! मैं जानता हूं... मैं यक़ीन करता हूं! तुम्हारी बात सच है, इनकी नहीं... जब तुम यक़ीन करती हो कि तुमने सच्चा प्यार जाना है... तो इसका मतलब है कि जाना है! की है तुमने सच्ची मुहब्बत! मगर इस पर, अपने साथ रहनेवाले पर ऐसे नाराज़ नहीं होओ... वह ... शायद ... जलन की वजह से

ही हंसता है ... शायद ... उसने सच्ची मुहब्बत जानी ही नहीं ... उसे ऐसा कुछ नसीब ही न हुआ हो! आओ, चलें यहां से!..

नास्त्या (छाती पर ज़ोर से हाथ दबाकर विश्वास दिलाते हुए): बाबा! क़सम भगवान की ... यह हुआ था! यह सब ऐसे ही हुआ था!.. वह विद्यार्थी था ... फ़्रांसीसी ... गास्तोन नाम था उसका ... काली दाढ़ी थी ... पेटेंट के चमचम करते जूते पहनता था ... अगर मैं झूठ बोलूं, तो मुझे यहीं मौत आ जाये! और कैसे प्यार करता था वह मुझे ... ओह, कैसे!

लुका: मैं जानता हूं! तुम बुरा नहीं मानो! मैं यक़ीन करता हूं! पेटेंट के चमचम करते जूते पहनता था, यही कहा न तुमने? अरे, वाह! और तुम—तुम भी प्यार करती थीं न उसे?

(दोनों कोने में ग़ायब हो जाते हैं)

नवाब: बहुत ही बेवक़ूफ़ छोकरी है ... दिल की अच्छी है, मगर हद से ज़्यादा सिरफिरी!

बूब्नोव: आख़िर आदमी इस तरह झूठ क्यों बोलता रहता है मानो अदालत में खड़ा हो ... किसलिए?

नताशा: लगता है कि ... सच के बजाय झूठ बोलने में ज़्यादा मज़ा है ... मैं भी ...

नवाब: तुम भी — क्या? आगे कहो!

नताशा: मन से बातें बनाती रहती हूं ... अपने मन से ... और इन्तज़ार करती रहती हूं ...

नवाब: किसका?

नताशा (झेंपभरी मुस्कान के साथ) : बस योंही ... सोचती हूं कि कल ... कल कोई आयेगा, कोई अनूठा-निराला ... या ... कल कोई बात हो जायेगी ... सो भी – निराली ... बहुत देर तक इन्तज़ार करती रहती हूं ... हमेशा इन्तज़ार करती हूं ... लेकिन ... सच तो यह है कि इन्तज़ार किया भी जाये तो किस बात का ?

(ख़ामोशी)

नवाब (व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ) : इन्तज़ार करने को कुछ नहीं ... मैं किसी चीज़ का इन्तज़ार नहीं करता ! सब कुछ ... बीत चुका है ! सब कुछ गुज़र चुका है ... सब ख़त्म हो चुका ! .. आगे कहां !

नताशा : या फिर ... मैं यह कल्पना करती हूं कि कल कल मुझे अचानक मौत आ जायेगी ... इस ख़्याल से मेरा बुरा हाल हो जाता है ... मौत की कल्पना करने के लिए गर्मियों का मौसम बहुत अच्छा होता है ... गर्मियों में बिजलियां कड़कती रहती हैं ... बिजली गिरने से किसी वक़्त भी जान जा सकती है ...

नवाब : तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत बुरी है ... यह तुम्हारी बहन ... बिल्कुल डायन है, डायन !

नताशा : किसकी ज़िन्दगी अच्छी है ? मैं देखती हूं – सभी का बुरा हाल है ...

क्लेश्च (जो अभी तक हिले-डुले बिना चुपचाप लेटा रहा था, अचानक उछल पड़ता है) : सबका बुरा हाल है ? झूठ कहती हो ! सबकी ज़िन्दगी मुश्किल

नहीं! अगर ऐसा होता... तो कोई बात नहीं थी! तब इतना बुरा न लगता... हां!

बूब्नोव: तुम्हें क्या बिच्छू ने डंक मार दिया? देखो तो... कैसे भौंकने लगा है!

(क्लेश्च फिर से अपनी जगह पर लेटकर बड़बड़ाता रहता है)

नवाब: लेकिन... मुझे तो नास्त्या से सुलह करने के लिए जाना चाहिए... नहीं तो पीने को फूटी कौड़ी नहीं देगी...

बूब्नोव: हुं... लोगों को झूठ बोलना अच्छा लगता है... नास्त्या झूठ बोलती है... यह बात समझ में आती है! वह अपना तोबड़ा रंगती रहती है... आत्मा पर भी कुछ रंग पोत लेना चाहती है... आत्मा को रंगीन बनाना चाहती है... लेकिन... दूसरे किसलिए ऐसा करते हैं? मिसाल के तौर पर लुका को ले लो... बेहद झूठ बोलता है... और सो भी अपने किसी फ़ायदे के बिना... यह उम्र हो गयी... किसलिए वह ऐसा करता है?

नवाब (मुस्कराता हुआ पीछे हटता है): सभी लोगों की आत्मायें बेरंग हैं... सभी उनमें कुछ रंग भरना चाहते हैं...

लुका (कोने से सामने आता है): नवाब साहब, तुम बेचारी लड़की को क्यों परेशान करते हो? तुम्हें उसे टोकने-टाकने से क्या मिलता है... रोने से उसका मन ख़ुश होता है – रोने दो... वह तो अपनी ख़ुशी

के लिए आंसू बहाती है ... तुम्हारा क्या लेती है ?

नवाब : यह सब बेवकूफ़ी है, बाबा ! कान पक गये उसकी बकवास सुनते हुए ... आज राऊल, कल – गास्तोन ... क़िस्सा वही का वही ! पर ख़ैर – मैं उससे सुलह करने जा रहा हूं ... **(जाता है)**

लुका : हां, जाकर उसे ... तसल्ली दो ! किसी से दो मीठी बातें कहने में आदमी का कभी कुछ नहीं बिगड़ता ...

नताशा : बड़े दयालु हो तुम, बाबा ... किसलिए इतने दयालु हो ?

लुका : कहती हो दयालु हूं ? चलो ... तुम ऐसा कहती हो, तो ऐसा ही सही ...

(ईंटों की लाल दीवार के पीछे से गाना और बाजे की धीमी-धीमी आवाज़ सुनाई देती है)

बिटिया, किसी को तो दयालु होना चाहिए ... लोगों पर तरस खाना चाहिए। ईसा मसीह सभी पर रहम करते थे और उन्होंने हमें भी यही सीख दी ... मैं तुमसे यह कहूंगा कि ठीक वक़्त पर किसी के साथ हमदर्दी करना ... बहुत अच्छा रहता है ! लो सुनो, मैं एक बंगले में चौकीदार था ... तोम्स्क शहर के बाहर किसी इंजीनियर का बंगला था ... ख़ैर ! बंगला जंगल में था – सुनसान जगह ... जाड़े के दिन, और मैं वहां, बंगले में अकेला था, दम का दम ... बहुत सुख था, बड़ा चैन था ! एक दिन क्या

हुआ – कानों में भनक पड़ी कि कोई बंगले में घुस रहा है !

नताशा : चोर ?

लुका : हां, चोर थे। तो वे घुसने की कोशिश कर रहे थे ... मैंने बन्दूक़ ली और बाहर निकला ... देखता क्या हूं कि दो जने हैं ... खिड़की खोल रहे हैं और अपनी धुन में ऐसे खोये हुए हैं कि मेरी आहट तक नहीं सुनी। मैंने चिल्लाकर कहा – "ए ! .. दफ़ा हो जाओ यहां से ! .." वे कुल्हाड़ा लेकर मेरी तरफ़ लपके ... मैंने उन्हें ख़बरदार किया – "अगर एक क़दम भी बढ़ाया तो गोलियों से भून दूंगा ! .." मैं कभी एक, तो कभी दूसरे की तरफ़ निशाना साधता। वे घुटने टेककर गिड़गिड़ाने लगे – "जान बख़्श दो !" मैं जल-भुन गया था ... कुल्हाड़ा लेकर जो लपके थे मेरी तरफ़ ! बोला – "शैतान के बच्चो, मैंने तुम्हें दफ़ा हो जाने को कहा था, नहीं गये ... और अब तुम में से एक अच्छी छड़ी काटकर लाये !" तो वे लाये। तब मैंने हुक्म दिया – "एक लेटे और दूसरा छड़ी से उसकी मरम्मत करे !" तो ऐसे उन्होंने एक-दूसरे की खाल उधेड़ी। ख़ूब अच्छी पिटाई हो जाने पर बोले – "बाबा, ईसा के नाम पर हमें रोटी दे दो ! भूखे पेट ही भटक रहे हैं। तो ऐसे थे वे चोर, बिटिया (**हंसता है**) ... और यह था उनका कुल्हाड़ा ! हां ... दोनों दिल के भले थे ... मैंने उनसे कहा – "उल्लू के चरखो, सीधे-सीधे रोटी क्यों नहीं मांग ली मुझसे ?" बोले – "भीख मांगते-मांगते तंग आ

गये, कोई देता ही नहीं... जी जलता है!" तो जाड़े भर दोनों मेरे साथ रहे। उनमें से एक – स्तेपान नाम था उसका – बन्दूक़ लेकर जंगल में शिकार को चला जाता... और दूसरा – याकोव – बीमार ही रहता, खांसता रहता... तो तीनों ने मिलकर बंगले की रखवाली की। वसन्त आया तो बोले – "अब इजाज़त दो बाबा!" और चले गये... कहीं रूस के पच्छिम में...

नताशा: भागे हुए मुजरिम थे? क़ैदी?

लुका: हां, भागे हुए मुजरिम थे... जहां उन्हें निर्वासित किया गया था, वहां से भागे थे... दोनों भले लोग थे! अगर मैं उन पर रहम न करता, तो शायद वे मुझे मार डालते या ऐसा ही कोई और बुरी हरकत करते... इसके बाद अदालत, जेल और साइबेरिया का चक्कर चलता... इससे क्या मिलता? न तो जेल और न ही साइबेरिया आदमी को कोई अच्छी बात सिखा सकता है... मगर आदमी आदमी को यह सिखा सकता है... यह ठीक है! आदमी तो बहुत आसानी से ऐसा कर सकता है!

(ख़ामोशी)

बूब्नोव: हुं!.. लेकिन मैं... मैं झूठ बोलना नहीं जानता! किसलिए झूठ बोला जाये? जो सचाई है, साफ़-साफ़, खरी-खरी मुंह पर कह दो! झिझकने-हिचकने की क्या बात है?

क्लेश्च (अचानक फिर से पागल की तरह उछलकर खड़ा होता है और चिल्लाने लगता है): कैसी सचाई?

कहां है सचाई? (**अपने चिथड़ों पर हाथ मारता है**) यह है—सचाई! काम नहीं है... बदन में ताक़त नहीं है! यह है सचाई! कहीं सिर छिपाने की जगह नहीं है... सिर के ऊपर छत नहीं है! कुत्ते की तरह दम तोड़ दो... यह है सचाई! शैतान! किस काम की... किस काम की है मेरे लिए सचाई? मुझे दम लेने दो... दम लेने दो मुझे! क्या बिगाड़ा है मैंने किसी का? भाड़ में झोंकना है मुझे सचाई को? जीना, शैतान, जीना मुमकिन नहीं... यह है—सचाई!..

बूब्नोव: देखो तो—कैसे फट पड़ा है!..

लुका: हे भगवान... सुनो, मेरे प्यारे! तुम...

क्लेश्च (गुस्से से कांपते हुए): तुम लोग बात करते हो सचाई की! तुम सबको तसल्ली देते हो, बाबा... लो सुनो... मैं सबसे नफ़रत करता हूं! और तुम्हारी यह सचाई—बेड़ा ग़र्क़ हो इसका, लानत है इस पर! समझे? समझ लो! जहन्नुम में चली जाये यह सचाई! (**मुड़-मुड़कर देखता हुआ घर के कोने के पीछे भाग जाता है**)

लुका: च, च, च! कैसे परेशान हो गया है यह... कहां भाग गया?

नताशा: जैसे उसका दिमाग़ चल निकला हो...

बूब्नोव: ख़ूब मज़ा आया! थियेटर का सा लुत्फ़ मिला... अक्सर उसे ऐसा दौरा पड़ता रहता है... अभी तक ज़िन्दगी का आदी नहीं हो पाया...

पेपेल (धीरे-धीरे कोने से सामने आता है): भले लोगों को प्रणाम! तो लुका, चालाक बूढ़ा

बाबा, मनगढ़न्त क़िस्से सुना रहा है?

लुका: काश, तुमने देखा होता... कैसे वह यहां चिल्ला रहा था!

पेपेल: कौन, क्लेश्च? उसे क्या हुआ है? ऐसे भागा जा रहा था मानो उसे आग लग गयी हो...

लुका: जिसके भी दिल पर ऐसी चोट लगेगी... वही ऐसे भागने लगेगा...

पेपेल (बैठता है): मुझे वह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता... बहुत ही गुस्सैल और अकड़बाज है। (**क्लेश्च की नक़ल उतारते हुए**) "मैं – मेहनत-मजूरी करनेवाला आदमी हूं।" बाक़ी सब तो जैसे उससे हेठे हों... मेहनत करना पसन्द है तो मेहनत करो... अकड़ किसे दिखाते हो? अगर मेहनत ही कसौटी है तो घोड़ा सभी इनसानों से अच्छा है... जुता रहता है और मुंह नहीं खोलता! नताशा! तुम्हारे लोग घर पर हैं?

नताशा: क़ब्रिस्तान गये हैं... बाद में गिरजे जायेंगे...

पेपेल: इसीलिए तो तुम आज चैन की सांस ले रही हो... बहुत कम ही ऐसा मौक़ा होता है!

लुका (सोचते हुए बूब्नोव से): हां... तुम सचाई की बात करते हो... सचाई ही तो हमेशा आदमी के दर्द की दवा नहीं बनती... वही तो हमेशा उसकी तड़पती आत्मा पर मरहम का काम नहीं करती... मिसाल के तौर पर इस घटना को लो – एक ऐसे आदमी से मेरी जान-पहचान थी जो न्याय की धरती में विश्वास करता था...

बूब्नोव: कौनसी धरती में?

लुका: न्याय की धरती में। उसका कहना था कि इस दुनिया में ऐसी धरती, ऐसी नगरी होनी चाहिए जहां न्याय का बोलबाला हो, ऐसी नगरी में ख़ास क़िस्म के लोग रहते होंगे, एक-दूसरे का आदर-सम्मान करनेवाले, एक-दूसरे का हाथ बंटानेवाले। वहां हर चीज़ बढ़िया, हर बात ढंग की होनी चाहिए! और यह आदमी इस न्याय-नगरी की खोज में जाने का इरादा बनाता रहा। था वह ग़रीब, उसकी ज़िन्दगी थी कठिन... और जब उसकी ज़िन्दगी ऐसी दूभर हो जाती कि पड़कर दम तोड़ दे–तब भी वह हिम्मत न हारता, मुस्कराता और अपने को तसल्ली देते हुए कहता–"कोई बात नहीं! थोड़ा और सब्र कर लेता हूं! थोड़ा और इन्तज़ार करता हूं... और इसके बाद यहां की ज़िन्दगी को धता बताकर न्याय-नगरी में चला जाऊंगा..." यह न्याय-धरती ही उसका सहारा, उसकी ज़िन्दगी की ख़ुशी थी...

पेपेल: तो? चला गया वह?

बूब्नोव: कहां चला गया? हो-हो!

लुका: तो इस जगह–यह साइबेरिया की घटना है–एक निर्वासित विद्वान आ गया... बहुत-सी किताबें, बहुत-से नक़्शे और दूसरी ऐसी चीज़ें लिये हुए जैसी कि विद्वान के पास होनी चाहिए... यह आदमी विद्वान के पास गया और उससे बोला–"मेहरबानी करके यह बताओ कि न्याय-नगरी कहां है और वहां पहुंचने

का रास्ता कौनसा है?" तो विद्वान ने अपनी किताबें खोलीं, सभी नक़्शे खोलकर सामने रखे... ढूंढ़ता रहा, ढूंढ़ता रहा—न्याय-नगरी का कहीं आता-पता नहीं! सब कुछ, सारी जगहें वहां थीं, मगर न्याय-नगरी ग़ायब थी!..

पेपेल (धीरे से) : तो? नहीं है?

(बूब्नोव हंसता है)

नताशा : ठहरो... तो बाबा, आगे क्या हुआ?

लुका : उस आदमी को यक़ीन नहीं हुआ... विद्वान से बोला—"ऐसी नगरी होनी ही चाहिए, तुम ध्यान से देखो! अगर ऐसी नगरी नहीं है, तो तुम्हारी ये सारी किताबें और नक़्शे कौड़ी काम के नहीं..." विद्वान को बहुत बुरा लगा। उसने जवाब दिया—"मेरे ये नक़्शे सबसे अच्छे हैं, लेकिन इस दुनिया में न्याय-नगरी जैसी कोई जगह है ही नहीं।" अब यह आदमी गुस्से से बौखला उठा—भला यह भी कोई बात हुई? मैं यही विश्वास बनाये हुए जीता रहा, सब दुख-दर्द सहता रहा कि इस दुनिया में ज़रूर कोई न्याय-नगरी है और अब नक़्शों से पता चला कि उसका नाम-निशान ही नहीं! यह तो धोखेबाज़ी हुई!.. और वह विद्वान से बोला—"ओह तुम... कमीने कहीं के! तुम विद्वान नहीं, शैतान हो..." और उसकी कनपटी पर घूंसा जड़ दिया, फिर एक घूंसा और रसीद किया!.. **(कुछ देर चुप रहकर)** इसके बाद घर गया और गले में फंदा

डालकर इस दुनिया से चल बसा!..

(सब ख़ामोश रहते हैं। लुका मुस्कराता हुआ पेपेल और नताशा की तरफ़ देखता है)

पेपेल (धीरे से): बुरा हो शैतान का... तुम्हारी कहानी दर्दनाक है...

नताशा: उससे धोखा बर्दाश्त नहीं हुआ...

बूब्नोव (खिन्नता से): सब – मनगढ़न्त क़िस्से हैं...

पेपेल: हां... न्याय-नगरी... मतलब यह कि वह है ही नहीं...

नताशा: उस आदमी के लिए: अफ़सोस होता है...

बूब्नोव: सब – मन से बनायी हुई बातें हैं... बस! हो-हो! न्याय-नगरी! शेखचिल्ली की बातें! हो-हो-हो! **(खिड़की से ग़ायब हो जाता है)**

लुका (बूब्नोव की खिड़की की तरफ़ सिर से इशारा करके): हंसता है! च, च, च,

(ख़ामोशी)

अच्छा, प्यारो!.. ख़ुशी से दिन गुज़ारो! जल्द ही मैं अपनी राह लूंगा...

पेपेल: अब किधर जाओगे?

लुका: उक्रइन... सुना है कि वहां लोगों ने एक नया धर्म खोजा है... उसे भी देखना चाहिए... हां! लोग खोजते रहते हैं, हमेशा कोई बेहतर चीज़ चाहते हैं... भगवान उन्हें इसके लिए धीरज दे!

पेपेल: क्या सोचते हो... खोज लेंगे?

लुका: लोग तो? ज़रूर खोज लेंगे! जो ढूंढ़े — सो पाये... जिसके मन में बड़ी चाह — उसे मिले राह!

नताशा: काश, वे ऐसा कुछ ढूंढ़ लें... कोई बेहतर चीज़ सोच निकालें...

लुका: वे सोच निकालेंगे! लेकिन बिटिया, हमें उनकी मदद करनी चाहिए... उनकी इज़्ज़त करनी चाहिए...

नताशा: मैं क्या मदद कर सकती हूं? मैं तो खुद... बेसहारा हूं...

पेपेल (दृढ़ता से): एक बार फिर... फिर मैं तुमसे बात करना चाहता हूं... नताशा... मैं बाबा के सामने... उसे सब कुछ मालूम है... तुम चलो... मेरे साथ!

नताशा: कहां? जेलों में?

पेपेल: मैं कह तो चुका हूं — चोरी करना छोड़ दूंगा! क़सम खाता हूं — छोड़ दूंगा! अगर क़सम खाता हूं — तो उसे निभाकर दिखाऊंगा! मैं पढ़ा-लिखा हूं... काम करूंगा... बाबा का कहना है कि अपनी मर्ज़ी से साइबेरिया चले जाओ... तो आओ, वहीं चलें?.. तुम क्या सोचती हो — मुझे अपनी ज़िन्दगी बुरी नहीं लगती? ओह, नताशा! मैं सब जानता... सब कुछ समझता हूं!.. मैं यह कहकर अपने दिल को तसल्ली दे लेता हूं कि दूसरे मुझसे कहीं ज़्यादा चोरी करते हैं और इज़्ज़त-आबरू की ज़िन्दगी बिताते हैं... लेकिन इससे

मुझे चैन नहीं मिलता! मैं यह... नहीं चाहता! मुझे पश्चात्ताप किसी बात का नहीं... आत्मा नाम की चीज़ में मेरा विश्वास नहीं... लेकिन एक बात महसूस करता हूं–जीने का यह ढंग ठीक नहीं। बेहतर ढंग से ज़िन्दगी बितानी चाहिए! ऐसे जीना चाहिए कि ख़ुद अपनी नज़र में मेरी इज़्ज़त हो...

लुका: यह कही असली बात, मेरे प्यारे! भगवान तुम्हारा भला करे... ईसा मसीह तुम्हारी मदद करे! बिल्कुल सही–ख़ुद अपनी नज़र में आदमी की इज़्ज़त होनी चाहिए...

पेपेल: मैं बचपन से ही चोर बन गया था... सभी, हमेशा मुझसे यही कहते थे–वास्या चोर, चोर का बेटा वास्या! अच्छा? ऐसी बात है? तो लो! मैं तुम्हें बनकर दिखा देता हूं–चोर! तुम समझो–शायद मैं झुंझलाहट के कारण ही चोर बन गया... मैं इसीलिए चोर हूं कि कभी किसी ने मुझे दूसरे नाम से पुकारा ही नहीं... तुम ऐसा करो... नताशा, तुम मुझे पुकारो न दूसरे नाम से?

नताशा (उदासी से): न जाने क्यों... मुझे यक़ीन नहीं होता... किन्हीं भी शब्दों पर यक़ीन नहीं होता... और फिर आज मेरा दिल बहुत परेशान है... दिल बैठा जाता है... मानो कुछ होनेवाला है। बेकार तुमने आज यह चर्चा चला दी, वास्या...

पेपेल: तो कब चर्चा चलाऊं? पहली बार तो मैं यह कह नहीं रहा हूं...

नताशा: आख़िर किसलिए मैं तुम्हारे साथ चल

दूं? जहां तक प्यार करने का सवाल है... तो मैं तुम्हें बहुत प्यार नहीं करती हूं... कभी-कभी तुम मुझे अच्छे लगते हो... मगर फिर कभी—तुम्हारी सूरत देखने को मन नहीं होता... लगता है—मैं तुम्हें प्यार नहीं करती हूं... जब हम प्यार करते हैं तो अपने प्रेम-पात्र में हमें कुछ भी बुरा दिखाई नहीं देता... लेकिन मुझे दिखाई देता है...

पेपेल: तुम फ़िक्र नहीं करो—प्यार करने लगोगी! मैं आदी बना दूंगा तुम्हें प्यार करने का... तुम बस, राज़ी हो जाओ! एक साल से ज़्यादा होने को आया—मैं तुम पर नज़र गड़ाये हूं... देखता हूं कि तुम कठोर... मगर अच्छी... भरोसे की लड़की हो... जी-जान से चाहता हूं मैं तुम्हें!

(सजी-धजी वसिलीसा खिड़की में दिखाई देती है और खिड़की की चौखट की ओट में खड़ी होकर सुनती है)

नताशा: तो यह बात है। मुझे जी-जान से चाहते हो, और मेरी बहन को...

पेपेल (घबराहट अनुभव करते हुए): तुम्हारी बहन? उसके जैसी तो... बहुत हैं...

लुका: तुम... इस बारे में नहीं सोचो, बिटिया! रोटी नहीं मिलेगी—तो आदमी घास तो खायेगा ही... अगर रोटी नहीं मिलेगी...

पेपेल (दुखी होते हुए): तुम... मुझ पर तरस खाओ! कुछ अच्छी नहीं है मेरी ज़िन्दगी... कुत्ते

की ज़िन्दगी है... ख़ुशी नाम की कोई चीज़ नहीं है इसमें... जैसे कि दलदल में धंसता जा रहा हूं... सहारा लेने के लिए कुछ नहीं... सब कुछ गला-सड़ा हुआ है... सब कुछ मुझे धंसाता जाता है... सोचा था कि तुम्हारी बहन... लेकिन नहीं... वह उस मिट्टी की नहीं है... अगर वह... पैसे की पीर न होती – तो मैंने उसके लिए... क्या कुछ न किया होता!.. अगर वह मेरी – पूरी तरह मेरी ही होती... लेकिन उसे कुछ और चाहिए... उसे पैसा चाहिए... उसे आज़ादी चा-हिए... और आज़ादी भी इसलिए कि गुलछर्रे उड़ा सके। वह मेरी मदद नहीं कर सकती... लेकिन तुम... तुम हो फ़र के जवान वृक्ष जैसी – जिसकी सुइयां तो चुभती हैं, मगर जो सहारा बना रहता है...

लुका: और मैं भी यह कहूंगा – बिटिया, तुम मेरी बात मानो – इसकी हो जाओ! यह लड़का बुरा नहीं, अच्छा है! बस, तुम इतना करो कि उसे अक्सर यह याद दिलाती रहो कि वह अच्छा है, ताकि वह यह भूल न जाये! वह तुम्हारी बात का विश्वास कर लेगा... तुम उससे यह कहती रहना – "मेरे प्यारे, तुम तो भले आदमी हो... भूलना नहीं!" प्यारी बिटिया, सोचो कि तुम्हारे लिए और चारा ही क्या है? वह तुम्हारी बहन – वह तो पूरी डायन है... और उसका ख़सम – उसके बारे में तो कहा ही क्या जाये – बुरे से बुरा शब्द भी काफ़ी नहीं... यहां की सारी ज़िन्दगी ही सड़ी हुई है... तुम्हारे लिए दूसरा रास्ता ही क्या है?

और यह लड़का मज़बूत, तगड़ा है...

नताशा : मेरे लिए कोई रास्ता नहीं... यह मैं जानती हूं... मैंने सोचा है इसके बारे में... लेकिन... किसी पर भी मेरा दिल नहीं जमता... मेरे लिए कोई और रास्ता भी नहीं है...

पेपेल : एक रास्ता है... लेकिन उस रास्ते पर मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा... तुम्हारी जान ले लूंगा

नताशा (मुस्कराते हुए) : यह लो... अभी तो मैं तुम्हारी बीवी नहीं बनी और तुम जान लेने की बात करने लगे।

पेपेल (उसे बांहों में भरते हुए) : हटाओ, नताशा! ये बेकार की बातें हैं!..

नताशा (उसके साथ चिपकते हुए) : मगर... एक बात मैं तुमसे कहे देती हूं... भगवान को साक्षी मानकर! अगर तुमने मुझ पर हाथ उठाया... या इसी तरह की कोई बुरी हरकत की... तो अपनी ज़रा भी परवाह नहीं करूंगी... या तो ख़ुद अपनी जान ले लूंगी, या...

पेपेल : अगर मैं तुम पर हाथ उठाऊं तो मेरा हाथ टूट जाये!..

लुका : तुम किसी तरह की दुविधा में नहीं पड़ो, बिटिया! इसे तुम्हारी उससे ज्यादा ज़रूरत है जितनी तुम्हें इसकी...

वसिलीसा (खिड़की से) : तो रिश्ता पक्का हो गया! मेल-जोल और प्यार-मुहब्बत – सारी बात तय हो गयी!

नताशा : वे तो आ गये!.. हे भगवान! इन्होंने देख लिया... हाय, वास्या!

पेपेल : तो डरने की क्या बात है? अब कोई तुम पर उंगली तक उठाने की जुर्रत तो करके देखे!

वसिलीसा : डर नहीं, नताशा! वह तेरी पिटाई नहीं किया करेगा... वह तो न पीट सकता है और न प्यार ही कर सकता है... मैं यह जानती हूं!

लुका (धीरे से) : औरत नहीं... ज़हरीली नागिन है...

वसिलीसा : वह तो सिर्फ़ बातों का सूरमा है...

कोस्तिल्योव (आता है) : नताशा! तू यहां बैठी क्या कर रही है, हरामख़ोर? चुगली-निन्दा? अपने रिश्तेदारों का रोना रो रही है? समोवार भी अभी तक नहीं गर्माया? मेज़ नहीं लगायी?

नताशा (जाते हुए) : आप लोग तो गिरजाघर जानेवाले थे...

कोस्तिल्योव : हम क्या करनेवाले थे, तुझे इससे मतलब? जो करने को कहा गया है, तू वह कर!

पेपेल : ख़बरदार! वह अब तुम लोगों की बांदी नहीं रही... नताशा, तुम नहीं जाओ... कुछ नहीं करो!..

नताशा : तुम हुक्म नहीं चलाओ... अभी तुम्हारा वक़्त नहीं आया! **(जाती है)**

पेपेल (कोस्तिल्योव से) : बस, काफ़ी हो चुका! बहुत जानवरों जैसा सुलूक कर लिया इससे... अब तुम्हारे दिन गये! अब वह मेरी है!

कोस्तिल्योव : तुम्हारी है? कब ख़रीदा तुमने इसे? कितनी क़ीमत चुकायी है?

(वसिलीसा हंसती है)

लुका : वास्या! तुम यहां से चले जाओ...

पेपेल : देखना... बहुत बाछें खिली जा रही हैं! कहीं रोना न पड़ जाये!

वसिलीसा : ऊई मां, मैं तो डर गयी! मेरा दिल धक-धक कर रहा है!

लुका : वास्या, तुम चले जाओ! देखते हो—यह तुम्हें भड़का रही है... तुम्हारे दिल में आग लगा रही है—समझते हो?

पेपेल : हां... अरे हां! वह बकती है... तू बक रही है! वह नहीं होने का जो तू चाहती है!

वसिलीसा : और वह भी नहीं होगा, वास्या, जो मैं नहीं चाहती!

पेपेल (उसे घूंसा दिखाकर धमकाता है) : देखेंगे!.. **(जाता है)**

वसिलीसा (खिड़की से ओझल होते हुए) : देखना कैसी धूम-धाम से शादी होती है तेरी!

कोस्तिल्योव (लुका के पास आता है) : क्या बात है, बुड्ढे?

लुका : कोई बात नहीं, बुड्ढे!..

कोस्तिल्योव : तो... सुना है कि यहां से जा रहे हो?

लुका : जाना ही चाहिए...

कोस्तिल्योव : कहां ?

लुका : पांव ले जायें जहां ...

कोस्तिल्योव : यानी आवारागर्दी करने ... एक जगह पर टिककर बैठना शायद अच्छा नहीं लगता ?

लुका : कहावत है न कि पत्थर लुढ़कता रहे तो उस पर काई नहीं जमे ...

कोस्तिल्योव : वह तो पत्थर की बात है। लेकिन आदमी का तो कोई घर-घाट होना चाहिए ... लोग तिलचटे थोड़े ही हैं ... जिसका जिधर मन हुआ — उधर ही रेंग चला ... आदमी को किसी एक जगह अपना ठौर-ठिकाना बनाना चाहिए ... जहां-तहां मारे-मारे नहीं फिरना चाहिए ...

लुका : लेकिन जिसका हर जगह ही ठिकाना हो ?

कोस्तिल्योव : वह — आवारा है ... निकम्मा है ... आदमी को किसी काम-काज का होना चाहिए ... उसे कुछ करना-धरना चाहिए ...

लुका : अरे वाह !

कोस्तिल्योव : हां। काम-धाम के बिना भी कोई बात हुई ? यात्री ... वह कौन है ? वह है — एक अजीब आदमी ... दूसरों से बिल्कुल निराला ... अगर वह सच्चा यात्री है ... अगर वह कुछ जानता है ... अगर उसने कुछ ऐसा जान लिया है ... जिसकी किसी को ज़रूरत नहीं ... शायद उसने कोई सचाई ही जान ली हो ... लेकिन सभी तरह की सचाई की भी ज़रूरत नहीं होती ... हां ! तो उसे वह अपने दिल में रखनी ... और मुंह बन्द रखना चाहिए ! अगर वह सच्चा ...

यात्री है... तो चुप रहता है! या फिर... ऐसे बात करता है कि किसी के पल्ले कुछ न पड़े... और वह – न तो कुछ चाहता है, न दूसरों के मामलों में टांग अड़ाता है और न लोगों को बेकार परेशान करता है... लोग कैसे रहते-सहते हैं – उसको इससे मतलब नहीं... उसे तो अच्छी और सच्ची ज़िन्दगी बितानी चाहिए... जंगलों, गुफा-कन्दराओं में रहना चाहिए... लोगों की नज़रों से दूर! न किसी के लेने में, न देने में, न किसी को भला कहे, न बुरा... सबके लिए प्रार्थना करे... सबके पापों की मुक्ति के लिए... मेरे, तुम्हारे, सबके पापों के लिए! वह इसीलिए तो इस दुनिया के मोह-माया जाल को तोड़ता है कि... जप-तप कर सके। ऐसा मामला है...

(**ख़ामोशी**)

लेकिन तुम... तुम कैसे यात्री हो?.. पासपोर्ट भी नहीं... भले आदमी के पास पासपोर्ट होना चाहिए... सभी शरीफ़ लोगों के पास पासपोर्ट हैं... समझे!..

लुका: इस दुनिया में कुछ तो लोग हैं और कुछ – इनसान...

कोस्तिल्योव: तुम... बहुत चालाक नहीं बनो! पहेलियां नहीं बुझवाओ... तुमसे कुछ कम अक़्ल नहीं रखता हूं... यह क्या बेतुकी हांक रहे हो – लोग और इनसान?

लुका: इसमें पहेली की कोई बात ही नहीं! मैं

तो बस, इतना ही कह रहा हूं – एक ज़मीन होती है बंजर और दूसरी – उपजाऊ... उसमें कुछ भी बो दो – उग आयेगा... यह बात है...

कोस्तिल्योव: तो? तुम्हारी इस बात का मतलब?

लुका: मिसाल के तौर पर तुम हो... अगर ख़ुद भगवान भी तुमसे आकर यह कहे – "मिख़ाईल! इनसान बनो!.." तो भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा... तुम जैसे हो – वैसे ही रहोगे...

कोस्तिल्योव: तुम... तुम्हें यह मालूम है न कि मेरी बीवी का चाचा पुलिसवाला है? अगर मैं...

वसिलीसा (आती है): मिख़ाईल इवानोविच, चाय पीने चलो।

कोस्तिल्योव (लुका से): तुम... सुनते हो – दफ़ा हो जाओ! निकल जाओ हमारे घर से!..

वसिलीसा: हां, चलते बनो, बुड्ढे!.. बहुत लम्बी ज़बान है तुम्हारी... फिर कौन जाने?.. शायद तुम जेल से भागकर आये हो...

कोस्तिल्योव: आज ही निकल जाओ! नहीं तो... मैं...

लुका: चाचा को बुला लूंगा? बुला लो चाचा को... कहो कि भागे हुए क़ैदी को पकड़ लिया... शायद चाचा को इनाम मिल जाये... तीन कोपेक...

बूब्नोव (खिड़की से): क्या बेचा जा रहा है? क्या बिक रहा है तीन कोपेक में?

लुका: मुझे बेचने की धमकी दी जा रही है...

वसिलीसा (पति से): आओ, चलें...

बूब्नोव : तीन कोपेक में? होशियार रहना बाबा... ये लोग तो एक कोपेक में भी बेच देंगे...

कोस्तिल्योव (बूब्नोव से) : तुम तो... बौने भूत की तरह कहीं से निकल पड़े! **(बीवी के साथ जाता है)**

वसिलीसा : कितने मूढ़... कितने चोर-उचक्के हैं इस दुनिया में!..

लुका : जाओ, चटखारे ले-लेकर खाओ-पिओ!..

वसिलीसा (मुड़कर) : ज़बान को लगाम दो... ज़हरी नाग! **(पति के साथ मकान के कोने के पीछे ग़ायब हो जाती है)**

लुका : आज रात को चल दूंगा...

बूब्नोव : इसी में समझदारी है। वक़्त पर चलते बनना हमेशा अच्छा रहता है...

लुका : ठीक कह रहे हो...

बूब्नोव : मैं यह अच्छी तरह से जानता हूं! मैं तो शायद इसीलिए काले पानी जाने से बच गया कि वक़्त पर चलता बना था।

लुका : अच्छा?

बूब्नोव : सच कहता हूं। हुआ यह कि मेरी बीवी की दुकान के कारीगर से यारी हो गयी... कारीगर वह बहुत बढ़िया था... कुत्तों की खाल को ऐसे रंगता कि वह रैकून की बन जाती... बिल्ली की खाल को कंगारू की बना देता। अपने फ़न का उस्ताद था। तो मेरी बीवी उसके साथ फंस गयी... दोनों ऐसे घी-खिचड़ी हुए कि मुझे लगा – ये मुझे ज़हर दे देंगे

या किसी और तरीक़े से मुझे दूसरी दुनिया में चलता कर देंगे। मैं बीवी की पिटाई करता ... और कारीगर मेरी ... भूखे बाघ की तरह लड़ता था कमबख़्त! एक बार तो उसने मेरी आधी दाढ़ी नोच डाली और एक पसली तोड़ दी। मैं भी आग-बबूला हो उठा ... एक दिन बीवी के सिर पर लोहे का डंडा दे मारा ... मतलब यह कि ख़ासी जंग छिड़ गयी! लेकिन मैंने देखा कि मेरी दाल नहीं गलेगी ... उनका पलड़ा भारी है! सो मैंने बीवी का खेल ख़त्म करने की ठान ली ... बिल्कुल पक्का इरादा बना लिया! हां, ठीक वक़्त पर ही मुझे होश आ गया और मैं वहां से चलता बना ...

लुका: बहुत अच्छा किया! बनाते रहे कुत्तों को रैकून! ..

बूब्नोव: दुकान तो थी बीवी की ... और मेरा जो हाल हुआ वह तुम्हारे सामने है! वैसे सच बात तो यह है कि दुकान को मैं शराब में घोलकर पी गया होता ... बुरी हालत है मेरी शराब की बदौलत ...

लुका: शराब की बदौलत? अरे हां!

बूब्नोव: बड़ी भयानक हुड़क है मेरी शराब की! जब पीने लगता हूं, तो बस, अपनी चमड़ी को छोड़कर मैं सब कुछ पी जाता हूं ... इसके अलावा मैं काहिल भी हूं। काम से बड़ी नफ़रत है मुझे! ..

(सातिन और अभिनेता बहस करते हुए आते हैं)

सातिन: बकवास है! कहीं नहीं जाओगे तुम ...

यह सब बेसिर-पैर की हांक रहे हो! बाबा! क्या उल्टी-सीधी बातें भर दी हैं तुमने इसके दिमाग़ में?

अभिनेता : झूठ बकते हो! बाबा! कह दो इससे कि यह झूठ बक रहा है! मैं जा रहा हूं! मैंने आज का काम किया – सड़क साफ़ की ... और वोद्का नहीं पी! कहो, क्या कहते हो? यह देखो – ये रहे तीस कोपेक और मैं नशे में नहीं हूं!

सातिन : बेवकूफ़ी की हद हो गयी! लाओ पैसे, मैं इसकी शराब पी जाऊंगा ... या जुए में हार जाऊंगा ...

अभिनेता : भागो यहां से! ये पैसे रास्ते के लिए हैं!

लुका (सातिन से) : तुम इसको ग़लत रास्ते पर क्यों डाल रहे हो?

सातिन : "बताओ मुझे, ओ जादूगर, देवताओं के चहेते – क्या लिखा है मेरी तक़दीर में?" मैं तो पूरी तरह से लुट चुका हूं, मेरे भाई, फिर भी दुनिया उम्मीद पर क़ायम है, बाबा, – दुनिया में मुझसे भी बड़े पत्तेबाज़ हैं!

लुका : बड़े ख़ुशमिज़ाज हो तुम ... बड़े प्यारे!

बूब्नोव : अभिनेता! इधर आओ तो!

(अभिनेता खिड़की की तरफ़ जाता है और उसके सामने उकड़ूं बैठ जाता है। दोनों खुसर-फुसर करते हैं)

सातिन : मेरे भाई, मैं जवानी में ख़ासा दिलचस्प था! याद करके जी ख़ुश होता है!.. बड़ा रंगीन-बांका जवान ... बढ़िया नाचता था, स्टेज पर अभिनय

करता था, लोगों को हंसाना अच्छा लगता था मुझे... क्या ठाठ थे मेरे!

लुका : तो तुम अपने रास्ते से भटक कैसे गये?

सातिन : कितनी कुरेद रहती है तुम्हें, बुढ़ऊ! सब कुछ जानना चाहते हो... लेकिन किसलिए?

लुका : दुनिया के रंग-ढंग समझना चाहता हूं... मगर जब तुम्हें देखता हूं, तो कुछ समझ नहीं पाता! इतने बढ़िया आदमी हो तुम... समझदार हो... और अचानक...

सातिन : यह जेल की मेहरबानी है, बाबा! मैं चार साल सात महीने जेल में काट चुका हूं... और जेल के बाद – कौन अपने पास फटकने देता है!

लुका : ओ-हो! किसलिए पीसनी पड़ी जेल की चक्की?

सातिन : एक बदमाश की वजह से... गुस्से में आपे से बाहर होकर उसे जहन्नुम रसीद कर दिया... जेल में जुआ खेलना सीख गया...

लुका : और हत्या की औरत के लिए?

सातिन : अपनी सगी बहन के लिए... पर अब तुम मेरा पिंड छोड़ो! लोगों का पूछताछ करना मुझे अच्छा नहीं लगता... और... एक ज़माना बीत गया यह सब हुए... नौ साल हो गये... बहन को मरे... भैया, बहुत ही अच्छी थी वह बहन मेरी!..

लुका : तुम ज़िन्दगी को बोझ नहीं बनाते! लेकिन... थोड़ी देर पहले... वह रेतीरगड़ कैसे चीख़-चिल्ला रहा था... हाय, हाय!

सातिन : क्लेश्च न ?

लुका : चिल्ला रहा था – "काम नहीं ... कुछ भी नहीं !"

सातिन : धीरे-धीरे आदी हो जायेगा ... मैं किस काम में अपने को लगाऊं ?

लुका (धीरे से) : देखो ! आ रहा है ...

(क्लेश्च धीरे-धीरे, सिर झुकाये आता है)

सातिन : ओ रंडवे ! सिर क्यों लटकाये हो ? क्या सोच रहे हो ?

क्लेश्च : सोच रहा हूं ... अब क्या करूंगा ? औज़ार भी नहीं रहे – कफ़न-दफ़न की नज़र हो गये !

सातिन : मैं तुम्हें सलाह देता हूं – कुछ भी नहीं करो ! बस, धरती पर बोझ बनकर रहो ! ..

क्लेश्च : ठीक है ... देते रहो सलाह ... लोगों के सामने मेरी शर्म-हया अभी बाक़ी है ...

सातिन : गोली मारो शर्म-हया को ! लोगों को शर्म नहीं आती कि तुम्हारी ज़िन्दगी कुत्तों से भी बुरी है ... तुम ज़रा सोचो – तुम काम नहीं करोगे, मैं काम नहीं करूंगा ... इस तरह दूसरे सैकड़ों ... हज़ारों लोग, सभी लोग काम नहीं करेंगे – समझे न ? सभी काम करना बन्द कर देंगे ! कोई, कुछ भी नहीं करना चाहेगा – तब क्या होगा ?

क्लेश्च : सब भूखों मर जायेंगे ...

लुका (सातिन से) : तुम्हारे जैसी बातें करनेवाले को तो भगोड़ों में जा मिलना चाहिए ... एक ऐसा

सम्प्रदाय है – भगोड़ों का सम्प्रदाय कहते हैं उसे ...

सातिन : मैं जानता हूं ... वे बुद्धू नहीं हैं, बाबा !

(कोस्तिल्योव की खिड़की से नताशा की चीख़ सुनाई देती है – "मैंने क्या बिगाड़ा है ? रुको तो ... मेरा क्या कुसूर है ?")

लुका (परेशान होते हुए) : यह नताशा है न ? वही चीख़ रही है न ? ओह ...

(कोस्तिल्योव के घर से शोर, हलचल, बर्तन टूटने की आवाज़ और कोस्तिल्योव की चीख़-पुकार सुनाई देती है : " ओ ... कुतिया ... छिनाल ... ")

वसिलीसा : रुको ... ठहरो ... मैं इसे मज़ा चखाती हूं ... ले ... और ले मज़ा ...

नताशा : हाय, मार डाला ! मेरी जान ले रहे हैं ...

सातिन (खिड़की की तरफ़ चिल्लाता है) : ए, सुनते हो !

लुका (इधर-उधर दौड़-धूप करते हुए) : वास्या को ... वास्या को बुलाना चाहिए ... हे भगवान ! भाइयो ... दोस्तो ...

अभिनेता (भागते हुए) : मैं बुलाता हूं ... मैं अभी उसे बुला लाता हूं ...

बूब्नोव : अब तो अक्सर ही ये लोग इसकी पिटाई करने लगे हैं ...

सातिन : बाबा, आओ, वहां चलें ... हम गवाही देंगे !

लुका (सातिन के पीछे-पीछे जाता है) : मैं किस काम का गवाह हूं! क्या गवाह बनूंगा... वास्या जल्दी से आ जाये... ओह!..

नताशा : बहन... बहन... हाय, हाय...

बूब्नोव : मुंह में कपड़ा ठूंस दिया... चलकर देखता हूं...

(कोस्तिल्योव के घर में शोर बन्द हो जाता है, जिससे पता चलता है कि लोग वहां से ड्योढ़ी में चले गये हैं। बूढ़े का चिल्लाना सुनाई देता है – "रुको!" दरवाज़ा फटाक से बन्द होता है और यह आवाज़ मानो कुल्हाड़ी मारकर सारे शोर को ख़त्म कर देती है। रंगमंच पर ख़ामोशी। सन्ध्या का झुटपुटा)

क्लेश्च (किसी चीज़ में कोई दिलचस्पी न लेता हुआ स्लेज पर बैठा है, ज़ोर से हाथों को मलता है। इसके बाद कुछ बड़बड़ाने लगता है, पहले अस्पष्ट और फिर स्पष्ट रूप से) : लेकिन यह कैसे हो सकता है... जीना तो होगा... **(ऊंचे)** सिर छिपाने की जगह तो चाहिए न? सिर छिपाने की जगह नहीं... कुछ भी नहीं! अकेला आदमी... एकदम अकेला... कोई मददगार नहीं... **(वह झुका हुआ धीरे-धीरे बाहर जाता है)**

(रंगमंच पर कुछ क्षण भयानक ख़ामोशी रहती है। इसके बाद रंगमंच के पृष्ठभाग में अस्पष्ट शोर, तरह-तरह की आवाज़ों का कोलाहल सुनाई देता है

जो बढ़ता हुआ पास आता है। अलग-अलग आवाज़ें सुनाई देती हैं)

वसिलीसा : मैं इसकी बहन हूं! मुझे छोड़ दो...

कोस्तिल्योव : तुम्हें क्या हक़ है?

वसिलीसा : जेल का पंछी...

सातिन : वास्या को बुलाओ!.. जल्दी से... ज़ोब – करो इसकी मरम्मत!

(पुलिस की सीटी सुनाई देती है)

तातार (भागता हुआ आता है। उसका दायां हाथ पट्टी में लटका हुआ है) : कहीं ऐसा भी देखा है – दिन दहाड़े मार डाला जाये?

क्रिवोई ज़ोब (उसके पीछे मेद्वेदेव आता है) : अरे, मैंने ख़ूब कसकर एक हाथ जमा दिया उसपर!

मेद्वेदेव : तुम्हारी यह मजाल कि लड़ते-भिड़ते फिरो?

तातार : और तुम? तुम्हारा क्या फ़र्ज़ है?

मेद्वेदेव (तातार के पीछे भागता है) : रुको! मेरी सीटी दे दो...

कोस्तिल्योव (भागता हुआ आता है) : अब्राम! पकड़ लो इसे... जाने न पाये! इसने हत्या की है...

(कोने के पीछे से क्वाश्न्या और नास्त्या बहुत बुरे हाल में नताशा को दोनों तरफ़ से सहारा देकर लाती हैं। सातिन पीछे हटता हुआ वसिलीसा को आगे बढ़ने से रोकता है। हाथों को घुमाती हुई वसिलीसा बहन

पर वार करने की कोशिश कर रही है। अल्योश्का भुतने की तरह उसके आस-पास उछल-कूद कर रहा है, उसके कानों में सीटी बजाता है, चीख़ता-चिंघाड़ता है। इनके पीछे चिथड़े पहने हुए कुछ और मर्द-औरतें आते हैं)

सातिन (वसिलीसा से) : कहां झपट रही है? चुड़ैल, डायन ...

वसिलीसा : रास्ते से हट जा, जेल के पंछी! बेशक मेरी जान चली जाये, लेकिन इसकी बोटी-बोटी नोच कर रहूंगी ...

क्वाश्न्या (नताशा को एक तरफ़ हटाते हुए) : अरी वसिलीसा, काफ़ी हो चुका ... कुछ शर्म कर! दरिन्दा क्यों बन रही है?

मेद्वेदेव (सातिन को पकड़ लेता है) : तो ... आ गये न क़ाबू!

सातिन : ज़ोब! इनकी धुनाई करो!.. वास्या ... वास्या!

(सभी मकान और दीवार के बीच के गलियारे में जमा हो जाते हैं। नताशा को दायीं ओर ले जाकर तख़्तों के ढेर पर बिठा देते हैं)

पेपेल (अचानक कूचे में से आता है, सभी को जोर से धकियाता हुआ चुपचाप आगे बढ़ता है) : नताशा कहां है? तुम ...

कोस्तिल्योव (कोने के पीछे छिपकर) : अब्राम!

वास्या को पकड़ लो... भाइयो, मदद करो वास्या को पकड़ने में! चोर... उचक्का...

पेपेल: ओह, तुम... कमीने बुड्ढे! (**ज़ोर से हाथ घुमाकर बुड्ढे पर वार करता है**)

(**कोस्तिल्योव इस तरह गिरता है कि कोने के पीछे से सिर्फ़ उसका धड़ ही नज़र आता है। पेपेल लपककर नताशा के पास जाता है**)

वसिलीसा: वास्या की पिटाई करो! भले लोगो... पीटो इस चोर को!

मेद्वेदेव (**चीख़ते हुए सातिन से**): तुम दख़ल नहीं दे सकते... यह उनका घरेलू मामला है! वे रिश्तेदार हैं... और तुम कौन हो?

पेपेल: क्या किया है इसने? किस चीज़ से? छुरी से?

क्वाश्न्या: देखो तो, कैसे वहशी हैं! उबलते पानी से लड़की के पांव जला दिये...

नास्त्या: समोवार ही उंडेल दिया...

तातार: हो सकता है ग़लती से उलट गया हो... मामले को ठीक-ठीक जान लेना चाहिए... बेकार ज़बान चलाना अच्छा नहीं...

नताशा (**लगभग बेहोशी में**): वास्या... मुझे यहां से ले चलो... मुझे बचा लो...

वसिलीसा: हाय, राम! देखो तो... हाय, देखो तो... मर गया! मार डाला उसे...

(**सभी कोस्तिल्योव के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं।**

बूब्नोव भीड़ से निकलकर वास्या के पास आता है)

बूब्नोव (धीरे से): वास्या! बुड्ढा तो... हो गया पूरा!

पेपेल (बूब्नोव की तरफ़ ऐसे देखता है मानो उसकी बात न समझ रहा हो): तो जाओ... बुला लो... उसे अस्पताल ले जाना होगा... मैं इनसे हिसाब चुकता कर लेता हूं!

बूब्नोव: मैं कह रहा हूं—बुड्ढे को तो किसी ने मार डाला...

(रंगमंच पर शोर एकदम ऐसे शान्त हो जाता है मानो किसी ने अलाव पर पानी डाल दिया हो। दबी-दबी कुछ अलग-अलग आवाज़ें सुनाई देती हैं— "सच?", "यह क्या हुआ!", "अरे!", "आओ, चलें यहां से, भाई!", "ओह, शैतान का बुरा हो!", "सावधान!", "पुलिस के आने से पहले ही निकल चलें!" भीड़ कम हो जाती है। बूब्नोव और तातार चले जाते हैं। नास्त्या और क्वाश्न्या कोस्तिल्योव की लाश की तरफ़ लपकती हैं)

वसिलीसा (ज़मीन से उठकर एक विजेता की तरह चीखती है): मार डाला! मेरे पति को मार डाला... यह है उसे मारनेवाला! वास्या ने हत्या की है उसकी! मैंने अपनी आंखों से देखा है! भले लोगो, देखा है मैंने! तो, वास्या? पुलिस को बुलाओ!

पेपेल (नताशा के पास से हटता है): छोड़ दो

मुझे... हट जाओ! (**वह बुड्ढे की तरफ़ देखता है। वसिलीसा से**): तो? अब ख़ुश हो? (**लाश को पांव से छूता है**) निकल गया दम... बुड्ढे कुत्ते का! तुम्हारे मन के चीते हो गये... अब... तुम्हें भी क्यों न उसके साथ ही चलता कर दिया जाये? (**उसकी ओर झपटता है**)

(**सातिन और क्रिवोई ज़ोब उसे जल्दी से पकड़ लेते हैं। वसिलीसा गलियारे में भाग जाती है**)

सातिन: होश में आओ!

क्रिवोई ज़ोब: अरे! सम्भलकर! क्या कर रहे हो?

वसिलीसा (**फिर से सामने आती है**): तो, वास्या, मेरे प्यारे दोस्त? क़िस्मत में जो लिखा है, होकर रहेगा... पुलिस! अब्राम... सीटी बजाओ!

मेद्वेदेव: शैतान के बच्चे, सीटी ले उड़े...

अल्योश्का: यह रही सीटी! (**सीटी बजाता है**)

(**मेद्वेदेव उसके पीछे भागता है**)

सातिन (**पेपेल को नताशा के पास ले जाता है**): वास्या, घबराओ नहीं! मार-पीट में मौत हो गयी... यह कोई ख़ास बात नहीं। बहुत क़ीमत नहीं चुकानी पड़ेगी तुम्हें इसकी...

वसिलीसा: पकड़ लो वास्या को! उसने हत्या की है... मैंने अपनी आंखों से देखा है!

सातिन: कोई तीनेक बार तो मैंने भी बुड्ढे पर

हाथ जमाया है... उसके लिए कुछ ज़्यादा ज़ोर लगाने की ज़रूरत नहीं थी! तुम मेरी गवाही दिलाना, वास्या...

पेपेल : मैं... अपनी सफ़ाई देने की ज़रूरत नहीं समझता... मुझे वसिलीसा को इस मामले में घसीटना है... और मैं इसे घसीट लूंगा! वह यही चाहती थी... इसने मुझसे अपने पति की हत्या करने को उकसाया था... हां, उकसाया था!..

नताशा (अचानक, ऊंची आवाज़ में) : अच्छा... मैं अब समझी!.. तो यह बात है, वास्या?! भले लोगो! यह इन दोनों की मिलीभगत है! मेरी बहन और इसने... मिलकर यह किया है! यह सब इन्हीं का रचा हुआ षड्यंत्र है! तो वास्या?.. तुमने इसीलिए आज मुझसे बातें की थीं... ताकि मेरी बहन सब सुन ले? भले लोगो! यह उसकी रखेल है... तुम्हें मालूम है... यह सभी जानते हैं... यह इन दोनों की सांठ-गांठ है! इसने... इसी ने वास्या से कहा कि उसके पति का काम तमाम कर दे... इसका पति इनके रास्ते में रोड़ा था... और मैं – मैं भी आड़े आती थी... इसीलिए मेरी यह दुर्गति कर दी गयी है...

पेपेल : नताशा! यह तुम क्या कह रही हो... क्या कह रही हो?!

सातिन : क्या रुख़ ले लिया है मामले ने... बेड़ा ग़र्क़!

वसिलीसा : झूठ बकती है! यह झूठ बकती है... मैं... इसने, वास्या ने जान ली है उसकी!

नताशा : यह दोनों ने मिलकर किया है! तुम दोनों पर शैतान की लानत! तुम दोनों पर...

सातिन : यह भी ख़ूब तमाशा है!.. सम्भलकर, वास्या! ये तुम्हें जाल में फंसा लेंगे!..

क्रिवोई ज़ोब : कुछ सिर-पैर समझ में नहीं आ रहा!.. अजीब क़िस्सा है!

पेपेल : नताशा! तुम क्या... सचमुच? क्या यह यक़ीन करती हो कि मैंने... इसके साथ मिलकर...

सातिन : भगवान के लिए, तुम कुछ सोचो तो, नताशा!

वसिलीसा (गलियारे से) : हुज़ूर... मेरे पति को मार डाला... चोर वास्या पपेल ने... इसने मारा है उसे... जनाब थानेदार साहब! मैंने अपनी आंखों से देखा है... सबने देखा है...

नताशा (लगभग बेहोशी में छटपटाते हुए) : भले लोगो... मेरी बहन और वास्या ने मिलकर हत्या की है! पुलिसवालो, मेरी सुनो... मेरी इस बहन ने इसे... अपने आशिक़ को यह पट्टी पढ़ाई, उसे ऐसा करने को राज़ी किया... इन पर शैतान की मार! इन्होंने मिलकर ख़ून किया है! ले जाइये इन्हें... जेल भेजिये इन्हें... और मुझे भी... मुझे भी जेल में ले जाइये! ईसा मसीह के नाम पर... मुझे भी जेल में बन्द कर दीजिये!..

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

(पहले अंक की मंच-सज्जा। किन्तु पेपेल का कमरा नहीं है, वह आड़ ग़ायब है, जिससे उसे बनाया गया था। जहां क्लेश्च बैठता था, वहां अब निहाई नहीं है। जहां पेपेल का कमरा था, उस कोने में तातार लेटा हुआ है, करवटें लेता है और कभी-कभी कराहता है। क्लेश्च मेज़ के पास बैठा हुआ अकार्डियन बाजे की मरम्मत कर रहा है और कभी-कभी उसके सुरों को दबाकर आवाज़ सुनता है। मेज़ के दूसरे सिरे पर सातिन, नवाब और नास्त्या बैठे हैं। उनके सामने वोद्का की बोतल, बियर की तीन बोतलें और कूटू की बड़ी-सी रोटी रखी है। तन्दूर के ऊपर अभिनेता करवटें ले रहा है, खांसता है। रात का वक़्त। कमरे में मेज़ के बीचोंबीच रखे लैम्प की रोशनी फैली है। बाहर तेज़ हवा चल रही है।)

क्लेश्च : हां ... इस हो-हल्ले में वह ख़ूब मौक़े से ग़ायब हो गया ...

नवाब : पुलिस के पंजे से ऐसे निकल गया जैसे आग से धुआं ...

सातिन : जैसे पुण्य के सामने पाप छूमन्तर हो जाता है !

नास्त्या : बहुत अच्छा था बूढ़ा बाबा !.. मगर तुम ... इनसान नहीं ... कूड़ा-करकट हो !

नवाब (पीता है) : तुम्हारी सेहत का जाम, मेम साहब !

सातिन : दिलचस्प बुढ़ऊ था ... हां ! नास्त्या तो उस पर लट्टू हो गयी थी ...

नास्त्या : हां, हो गयी थी लट्टू ... प्यार भी करने लगती ! सच ! उसकी नज़र से कुछ भी तो नहीं चूकता था ... वह सब कुछ जानता-समझता था ...

सातिन (हंसते हुए) : यों कहा जा सकता है ... बहुतों के लिए ऐसा था ... जैसे पोपलों के लिए गूदा ...

नवाब (हंसते हुए) : घावों के लिए मरहम ...

क्लेश्च : वह तरस खाना जानता था ... तुम लोग ... तरस नाम की चीज़ नहीं जानते ...

सातिन : तुम पर मेरे तरस खाने से तुम्हारा क्या भला होगा ?

क्लेश्च : तुम ... तुम तरस तो नहीं खा सकते, लेकिन ... इतना कर सकते हो कि दुखती रग को न छेड़ो ...

तातार (अपने तख़्ते पर बैठकर दुखते हाथ को बच्चे की तरह हिलाता-डुलाता है) : अच्छा आदमी था बुड्ढा ... दिल का क़ानून था उसके पास ! जिसके पास दिल का क़ानून है – वह अच्छा आदमी है ! क़ानून गया – आदमी कहीं का नहीं रहा !..

नवाब : कौनसा क़ानून, हसन ?

तातार : ऐसा क़ानून है ... तरह-तरह के क़ानून हैं ... तुम जानते हो कौनसा क़ानून ...

नवाब : आगे कहो !

तातार : इनसान का दिल न दुखाओ – यह क़ानून है !

सातिन : इसे कहते हैं 'अपराधियों और सुधाराधीनों की दण्ड-संहिता' ...

नवाब : और 'न्यायालयों के दण्ड की नियमावली' भी कहा जाता है ...

तातार : क़ुरान क़ानून है ... तुम्हारा क़ुरान भी क़ानून होना चाहिए ... हर आदमी का दिल क़ुरान होना चाहिए ... हां !

क्लेश्च (बाजे का सुर दबाकर देखता है) : अभी भी गड़बड़ करता है, शैतान ! .. तातार ठीक कहता है ... क़ानून के मुताबिक़ जीना चाहिए ... इंजील के अनुसार ...

सातिन : तो जियो ...

नवाब : जीकर देखो ...

तातार : मुहम्मद ने क़ुरान दिया और कहा – "यह है क़ानून ! वही करो जो इसमें कहा गया है !" फिर वह वक़्त आयेगा जब क़ुरान काफ़ी नहीं रहेगा ... वक़्त अपना, नया क़ानून देगा ... हर नया वक़्त अपना क़ानून देता है ...

सातिन : हां ... अब 'दण्ड-संहिता' का वक़्त आ गया है ... बहुत कड़ा क़ानून ... यह जल्दी से पुराना पड़नेवाला नहीं !

नास्त्या (मेज़ पर गिलास मारते हुए): और किसलिए ... किसलिए मैं तुम लोगों के साथ ... यहां रहती हूं ?.. मैं चली जाऊंगी ... कहीं चली जाऊंगी ... दुनिया के ओर-छोर पर !

नवाब: नंगे पांव, मेम साहब ?

नास्त्या: एकदम नंगी ! हाथों-पैरों के बल रेंगती हुई !

नवाब: यह तो देखने लायक़ नज़ारा होगा, मेम साहब ... हाथों-पैरों के बल ...

नास्त्या: हां, मैं इसी तरह से रेंगती चली जाऊंगी ! बस, तुम्हारा यह तोबड़ा नज़र न आये ... ओह, मुझे सब कुछ से कैसी नफ़रत हो गयी है ! पूरी ज़िन्दगी से ... सब लोगों से !..

सातिन: जाते हुए अभिनेता को भी अपने साथ ले जाना ... वह भी वहीं जाने की तैयारी कर रहा है ... उसे पता चला है कि धरती के छोर से आध मील दूर ख़मीरों के लिए एक अस्पताल खुला है ...

अभिनेता (तन्दूर के ऊपर से सिर आगे को बढ़ाते हुए): ख़मीरों नहीं, शरीरों के लिए, उल्लू !

सातिन: शराब के ज़हर से सड़े ख़मीरों के लिए ...

अभिनेता: हां ! वह चला जायेगा ! वह चला जायेगा ... देख लेना !

नवाब: वह – कौन, हुज़ूर ?

अभिनेता: मैं !

नवाब: शुक्रिया, उस देवी के पुजारी ... क्या कहते हैं उसे ? ड्रामों, ट्रेजेडी की देवी ... क्या नाम है उसका ?

अभिनेता : म्यूज़ कहते हैं उसे, उल्लू! वह देवी नहीं – म्यूज़ है!

सातिन : लाखेज़ा ... हेरा ... अफ़ोदीता ... अत्रोपा ... शैतान जाने और कौन-कौन! यह उस बुड्ढे ने दिमाग़ खराब कर दिया है अभिनेता का ... समझते हो, नवाब?

नवाब : बुड्ढा – मूर्ख है ...

अभिनेता : उजड्ड! जंगली! मेल-पो-मे-ना! दिल नाम की चीज़ नहीं है तुममें! तुम देख लेना – वह चला जायेगा! कवि बेरांजेर ने कहा है – "चर्बी बढ़ाओ, अंधेरे में भटकनेवाली आत्माओ" ... हां! वह ढूंढ लेगा उस जगह को ... जहां नहीं है ... नहीं है ...

नवाब : कुछ भी नहीं है, हुज़ूर?

अभिनेता : हां! कुछ भी नहीं! "यह गड्ढा बनेगा ... मेरी क़ब्र ... मर रहा हूं टूटा हुआ और बेजान!" किसलिए तुम जीते हो? किसलिए?

नवाब : ए, तुम! महान कलाकार कीन, या मेधा और राह से भटके हुए! चिल्लाओ नहीं!

अभिनेता : चिल्लाऊंगा! ज़रूर चिल्लाऊंगा!

नास्त्या (मेज़ से सिर उठाती है, बांहों को लहराती है) : चिल्लाओ! ताकि ये सुनें!

नवाब : इसमें क्या तुक है, मेम साहब?

सातिन : हटाओ इन्हें, नवाब! भाड़ में जाने दो! .. बेशक चीखें-चिल्लायें ... सिर फोड़ने दो इन्हें अपने! हां, तुक तो है इसमें! .. जैसे कि बाबा कहता था – दूसरे के मामले में टांग नहीं अड़ाओ ... यह तो उस

बुड्ढे, उस बासी कढ़ी की बदौलत हमारे सब किराये-दारों में उबाल आ गया है...

क्लेश्च : सबको सब्ज़ बाग़ दिखा दिये... मगर रास्ता नहीं बताया...

नवाब : बुड्ढा – ढोंगी था...

नास्त्या : झूठ बकते हो! तुम ख़ुद ढोंगी हो!

नवाब : ज़बान को लगाम दो, मेम साहब!

क्लेश्च : सचाई उसे अच्छी नहीं लगती थी, उस बुड्ढे को... फूटी आंखों नहीं सुहाती थी... ऐसा ही होना चाहिए! ठीक भी है – सचाई की बात ही क्या हो सकती है? उसके बिना ही दम घुटा जाता है... तातार को ही ले लो... काम पर हाथ का भुरकस हो गया – हाथ काटना पड़ेगा... तो यह है सचाई!

सातिन (मेज़ पर घूंसा मारता है) : ख़ामोश! तुम सब ढोर-डंगर हो! काठ के उल्लू हो... बुड्ढे के बारे में कुछ नहीं कहो! **(कुछ शान्त होकर)** तुम, नवाब, तुम सबसे गये-बीते हो!.. तुम ख़ाक भी नहीं समझते और बकते हो! बुड्ढा ढोंगी नहीं था! सचाई – वह है क्या? इनसान – बस, यह सचाई है! बुड्ढा यह समझता था... तुम लोग नहीं समझते! तुममें अक़्ल नाम की कोई चीज़ नहीं – निरे ईंट-पत्थर हो... मैं समझता हूं बुड्ढे की बात... हां, समझता हूं! वह झूठ बोलता था... लेकिन तुम पर तरस खाकर ऐसा करता था, तुम पर शैतान की मार! बहुत-से लोग हैं, जो अपने भाई-बन्धुओं पर तरस खाकर झूठ बोलते हैं... मैं जानता हूं! मैंने पढ़ा है! बहुत

ख़ूबसूरत, दिल में उमंग पैदा करनेवाला, हलचल पैदा करनेवाला भूठ बोलते हैं!.. दिल को तसल्ली देनेवाला, अपने हाल में ख़ुश रहने की शिक्षा देनेवाला भूठ भी है... उस भयानक बोभ की सफ़ाई पेश करने-वाला भूठ भी है जिसने मज़दूर का हाथ कुचलकर रख दिया... जो भूख से मरनेवालों को ही अपराधी ठहराता है... मैं जानता हूं भूठ को! जो दिल के कमज़ोर हैं, जो दूसरों का ख़ून चूसकर जीते हैं – उन्हें भूठ की ज़रूरत है... कमज़ोर दिलवालों का वह सहारा बनता है और दूसरों का ख़ून चूसनेवालों के लिए परदा... लेकिन जो ख़ुद अपना मालिक है... जो दूसरों के टुकड़ों का मुंह नहीं ताकता और दूसरों का ख़ून नहीं चूसता – उसे क्या ज़रूरत है भूठ की? भूठ – धर्म है ग़ुलामों का, मालिकों का... सचाई – भगवान है आज़ाद इनसान का!

नवाब: वाह, वाह! ख़ूब कहा! मैं मानता हूं तुम्हारी हर बात! तुम तो... शरीफ़ आदमियों जैसी बातें करते हो!

सातिन: अगर शरीफ़ लोग पत्तेबाज़ों जैसी बातें करते हैं, तो... भला एक पत्तेबाज़ क्यों कभी-कभी शरीफ़ लोगों जैसी बातें न करे? हां... मैं बहुत कुछ भूल-भाल गया हूं, लेकिन कुछ तो अभी भी याद है। बुड्ढा? बहुत समभदार था वह!.. उसका मुभ पर वैसा ही असर हुआ, जैसा तेज़ाब का पुराने और घिसे हुए सिक्के पर होता है... आओ, उसकी सेहत का जाम पियें! भरो...

(नास्त्या बियर का गिलास भरकर सातिन को देती है)

(तनिक हंसते हुए) : बुड्ढा अपनी अक्ल के सहारे जीता है... हर चीज़ को अपनी नज़र से देखता है। एक दिन मैंने उससे पूछा – "बाबा! लोग किसलिए इस दुनिया में जीते हैं?.." **(बुड्ढे की आवाज़ और उसके अन्दाज़ की नक़ल करने की कोशिश करते हुए)** "दुनिया को बेहतर बनाने के लिए जीते हैं लोग, मेरे प्यारे! मिसाल लो, बढ़ई हैं दुनिया में, सभी दो कौड़ी के... और फिर एक दिन उनमें एक ऐसा बढ़ई पैदा होता है... जिसकी बराबरी का कोई बढ़ई दुनिया में पहले हुआ ही नहीं था – सबसे बढ़-चढ़कर, जिसका कोई जवाब नहीं... और वह बढ़इयों के सारे काम को एक निखार दे देता है और बढ़इयों का धन्धा एक ही छलांग में बीस साल आगे पहुंच जाता है... दूसरों के मामले में भी ऐसा ही होता है... लुहारों में, मोचियों में, दूसरे मज़दूरों... किसानों... यहां तक कि रईसों-कुलीनों में भी! हर कोई ऐसा समझता है कि अपने लिए जी रहा है, लेकिन पता यह चलता है कि ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए जीता है! सौ साल तक... शायद इससे भी ज़्यादा आदमी जीता है ज़िन्दगी को निखारने के लिए!"

(नास्त्या एकटक सातिन के चेहरे को देखती है। क्लेश्च अकार्डियन की मरम्मत करना छोड़कर ध्यान

से सुनता है। नवाब सिर झुकाये हुए उंगलियों से मेज़ पर ताल देता है। अभिनेता तम्बूर से सिर आगे को निकाले हुए सावधानी से तख़्ते पर उतरना चाहता है)

"सभी, मेरे प्यारे, सभी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने, उसे सुधारने के लिए जीते हैं! यही वजह है कि हमें हर आदमी का आदर करना चाहिए... हम क्या जानें – वह कौन है, किसलिए जन्मा है और क्या कर सकता है... हो सकता है कि वह हमारा सौभाग्य बनकर आया हो... हमारी बहुत भलाई कर सके?.. बच्चों का तो विशेष रूप से आदर करना चाहिए... बच्चों को विस्तार चाहिए! उन्हें आज़ादी से जीने दीजिये... बच्चों का आदर कीजिये!" **(धीरे से हंसता है)**

(ख़ामोशी)

नवाब (सोचते हुए) : हुं... ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए? इससे... मुझे अपने ख़ानदान की याद हो आती है... पुराना ख़ानदान... कैथरीन के ज़माने का... दरबारी लोग... बड़े सूरमा! फ़्रांस से रूस आनेवाले... उन्होंने रूस के ज़ार की ख़िदमत की... ऊपर ही ऊपर उठता गया यह ख़ानदान... ज़ार निकोलाई प्रथम के ज़माने में बहुत ऊंचा ओहदा था मेरे दादा गुस्ताव देबिल का... बेशुमार दौलत... सैकड़ों भूदास... घोड़े... बावर्ची...

नास्त्या : झूठ बक रहे हो ! यह सब नहीं था !

नवाब (उछलते हुए) : क्या-া ? ख़ैर ... आगे कहो ? !

नास्त्या : यह सब नहीं था !

नवाब (चीखते हुए) : मास्को में हवेली ! पीटर्सबर्ग में हवेली ! बग्घियां ... ख़ानदान के निशानवाली बग्घियां !

(क्लेश्च अकार्डियन लेकर उठता है, एक तरफ़ को हट जाता है और वहां से इस तमाशे को देखता है)

नास्त्या : यह सब नहीं था !

नवाब : चुप रह ! मैं कहता हूं ... दसियों नौकर-चाकर ! ..

नास्त्या (मज़ा लेते हुए) : कुछ न-हीं था !

नवाब : मार डालूंगा !

नास्त्या (भागने के लिए तैयार) : बग्घियां नहीं थीं !

सातिन : हटाओ, नास्त्या ! इसे नहीं भड़काओ ...

नवाब : ठहर ... कलमुंही ! मेरा दादा ...

नास्त्या : दादा नहीं था ! कुछ भी नहीं था !

(सातिन हंसता है)

नवाब (गुस्से से निढाल होकर बेंच पर बैठ जाता है) : सातिन, तुम कहो इससे ... इस कुतिया से ... तुम भी हंस रहे हो ? तुम ... तुम भी यक़ीन नहीं करते ?

(मेज़ पर घूंसे मारकर हताशा से चिल्लाता है) सब कुछ था। तुम सब को शैतान ले जाये !

नास्त्या (विजेता की तरह) : तो... चीख़ो !... अब समझे न, कि आदमी के दिल पर क्या गुज़रती है, जब उस पर यक़ीन नहीं किया जाता ?

क्लेश्च (मेज़ पर वापस आकर) : मैंने सोचा था – मार-पीट होगी...

तातार : ओह, बेवक़ूफ़ लोग ! बहुत बुरा है यह सब !

नवाब : मैं... मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी खिल्ली उड़ायी जाये ! मेरे पास सबूत हैं... दस्तावेजें हैं, शैतान की नानी !

सातिन : उन्हें गोली मारो ! और दादा की बग्घियों को भी भूल जाओ... जो लद गयीं, उन बग्घियों में तुम कहीं नहीं पहुंच सकोगे...

नवाब : लेकिन इसकी यह जुर्रत !

नास्त्या : सूरत तो देखो इसकी ! मेरी जुर्रत की बात करनेवाले की !

सातिन : जुर्रत तो वह कर रही है ! किस बात में कम है वह तुमसे ? बेशक उसकी कभी बग्घियां और दादा ही नहीं, मां-बाप भी नहीं थे...

नवाब (शान्त होते हुए) : भाड़ में जाओ। तुम... बड़े इतमीनान से हर चीज़ को समझ-बूझ लेते हो... लगता है... मुझमें चरित्र बल जैसी कोई चीज़ नहीं...

सातिन : किसी से ले लो ! काम की चीज़ है

(ख़ामोशी)

नास्त्या ! तुम अस्पताल तो जाती हो न ?

नास्त्या : किसलिए ?

सातिन : नताशा से मिलने ?

नास्त्या : बहुत जल्दी जागे ! वह तो कभी की वहां से जा चुकी है… अस्पताल से निकली और ग़ायब हो गयी ! कहीं अता-पता नहीं उसका…

सातिन : मतलब यह कि क़िस्सा ख़त्म…

क्लेश्च : अब यह देखना है कि कौन किससे बाज़ी मारता है ? वास्या वसिलीसा से या वह वास्या से ?

नास्त्या : वसिलीसा बेदाग़ निकल जायेगी ! वह मक्कार लोमड़ी है ! और वास्या काले पानी जायेगा…

सातिन : मार-पीट में हत्या के लिए सिर्फ़ क़ैद की सज़ा दी जाती है…

नास्त्या : अफ़सोस की बात है। काले पानी भेजा जाता – कहीं अच्छा होता… तुम सभी को काले पानी भेज दिया जाये… कूड़े-करकट की तरह इकट्ठा करके किसी गड्ढे में फेंक दिया जाये !

सातिन (हैरान होकर) : यह तुम क्या कह रही हो ? दिमाग़ चल निकला है क्या तुम्हारा ?

नवाब : गुस्ताख़ी के लिए… जड़ दूं एक क़रारा-सा इसकी कनपटी पर !

नास्त्या : ज़रा हिम्मत तो कर ! हाथ तो लगाकर देख !

नवाब : मैं करता हूं तेरी अक्ल ठिकाने !

सातिन : हटाओ ! इसे हाथ नहीं लगाओ इसका दिल नहीं दुखाओ ! वह बुड्ढा ... यह मेरे दिमाग़ मे निकलता ही नहीं (**हंसता है**) किसी का दिल नहीं दुखाओ ! लेकिन अगर मेरा दिल दुखाया गया है और वह भी ज़िन्दगी भर के लिए एक बार ही ! तो मैं क्या करूं ? माफ़ कर दूं ? नहीं, कभी नहीं। किसी को नहीं ...

नवाब (नास्त्या से) : तुझे यह समझना चाहिए कि मेरी-तेरी कोई बराबरी नहीं है ! तू है ... धूल मिट्टी !

नास्त्या : ओह, कमीने ! तू तो ... मुझे ऐसे नोचता है जैसे सेब को कीड़ा !

(पुरुषों का ज़ोरदार ठहाका)

क्लेश्च : अरी ... बुद्धू ! क्या ख़ूब सेब है !

नवाब : इस पर तो आदमी ... नाराज़ भी नहीं हो सकता ... निरी उल्लू है !

नास्त्या : हंस रहे हो ? दे लो अपने को धोखा ! हंसी तो तुमको आ नहीं रही !

अभिनेता (नाक-भौंह सिकोड़कर) : ख़बर लो इन की !

नास्त्या : काश, मैं यह कर सकती ! मैं तुम सबका (**मेज़ से प्याला उठाकर फ़र्श पर फेंकती है**) यह हाल करती !

तातार : बर्तन किसलिए तोड़ रही है ? बेवक़ूफ़ कहीं की ! ..

नवाब (उठते हुए) : नहीं, अब तो मुझे... इसे तमीज़ सिखानी होगी!

नास्त्या (भागते हुए) : तुब सब को शैतान ले जाये!

सातिन (नास्त्या को देखते हुए) : अरे! बस करो! तुम डरा किसे रहे हो? आख़िर मामला क्या है?

नास्त्या : भेड़िये! तुम सब कुत्तों की मौत मरो! भेड़िये!

अभिनेता (खिन्नता से) : तथास्तु!

तातार : ओह! कैसी बुरी औरत है – रूसी औरत! मुंहफट... मनमानी करनेवाली! तातार औरत ऐसी नहीं। वह अल्लाह का क़ानून-क़ायदा जानती है!

क्लेश्च : इसकी कसकर पिटाई होनी चाहिए...

नवाब : बेहया कहीं की!

क्लेश्च (अकार्डियन बजाकर देखता है) : तैयार हो गया! मगर इसका मालिक तो सूरत ही नहीं दिखाता... तबाह होता जा रहा है छोकरा...

सातिन : तो अब – पी लो!

क्लेश्च : शुक्रिया! और सोने का भी वक़्त हो गया...

सातिन : हमारे सांचे में ढलते जा रहे हो?

क्लेश्च (पीकर कोने में तख़्तों की तरफ़ जाता है) : ठीक है... सभी जगह इनसान हैं... शुरू में यह नज़र नहीं आता... बाद में – जब आदमी ग़ौर से देखता है तो पता चलता है कि सभी इनसान हैं... ठीक है!

(तातार तख़्ते पर कुछ बिछाता है और घुटनों के बल होकर नमाज़ पढ़ने लगता है)

नवाब (तातार की तरफ़ इशारा करते हुए सातिन से) : देखो तो !

सातिन : पढ़ने दो उसे नमाज़ ! अच्छा आदमी है खलल नहीं डालो ! **(हंसता है)** मैं आज बहुत मेहरबान हूं ... ख़ुदा जाने क्यों ! ..

नवाब : पीने के बाद तुम हमेशा मेहरबान हो जाते हो ... और समझदार भी ...

सातिन : पी लेने के बाद मुझे सब कुछ अच्छा लगने लगता है। सच ... वह इबादत कर रहा है ? बहुत अच्छा है ! आदमी भगवान में विश्वास करता है या नहीं ... यह उसका अपना मामला है ! इनसान आज़ाद है ... वह ख़ुद ही हर चीज़ की क़ीमत चुकाता है -- आस्तिक होने की, नास्तिक होने की, प्यार की, अक्ल की – अपने बोये को वह ख़ुद ही काटता है और इसीलिए वह आज़ाद है ! .. इनसान – बस, यही है सचाई ! और इनसान क्या है ? .. यह तुम नहीं, मैं नहीं, ये नहीं ... नहीं ! यह है – तुम, मैं, ये, बुड्ढा, नेपोलियन, मुहम्मद ... सबका मिला-जुला रूप ! **(उंगली से हवा में इनसान का ख़ाका बनाता है)** समझे ? बहुत बड़ी हस्ती है यह ! इसी में हर चीज़ का आरम्भ और अन्त है ... सब कुछ इनसान में है, सब कुछ इनसान के लिए है ! हस्ती तो है सिर्फ़ इनसान की, बाक़ी सब कुछ – उसके दिमाग़ और

हाथों का करिश्मा है! इन-सान! कितना शानदार है वह! कैसी गर्वीली गूंज है... यह! इनसा-न! इनसान की इज़्ज़त करनी चाहिए! उस पर तरस नहीं खाना चाहिए! तरस खाकर अपमान नहीं करना चाहिए उसका... उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए! नवाब, आओ, इनसान के नाम का जाम पियें! (**खड़ा हो जाता है**) कितना अच्छा लगता है... अपने को इनसान महसूस करना!.. मैं जेल काटनेवाला, ख़ूनी, पत्तेबाज़... हां, सब कुछ हूं! जब मैं सड़क पर जाता हूं, तो लोग मुझे उचक्के की तरह देखते हैं... मुझसे कन्नी काटते हैं और मुड़-मुड़कर देखते हैं... मुझसे अक्सर कहते हैं–"लफ़ंगा! ठग! काम करो!" काम करूं? किसलिए? ताकि पेट भरकर खा सकूं? (**हंसता है**) वे लोग मुझे कभी फूटी आंखों नहीं सुहाते जो पेट का रोना रोते रहते हैं... पेट की आग ही सब कुछ नहीं, नवाब! पेट ही सब कुछ नहीं है! इनसान इससे ऊंचा है! इनसान–पेट से ऊपर है!..

नवाब (सिर हिलाते हुए): तुम सोच-विचार कर सकते हो... यह अच्छा है... इससे दिल को ज़रूर चैन मिलता होगा... मुझमें यह ख़ूबी नहीं है... मैं यह नहीं कर सकता! (**सभी ओर देखता है और फिर धीमे, सावधानी से**) मेरे भाई, मैं तो कभी-कभी... डरने लगता हूं। समझते हो? दिल में दहशत होने लगती है... क्योंकि–आगे क्या होगा?

सातिन (इधर-उधर टहलते हुए): यह बकवास

है! किसका डर हो सकता है इनसान को?

नवाब: जानते हो... मैंने जब से होश सम्भाला है... मेरे दिमाग़ में हमेशा कोई धुंध-सी छाई रहती है। कभी और किसी भी चीज़ का सिर-पैर मेरी समझ में नहीं आया। मुझे... कुछ अटपटा-सा लगता रहता है... ऐसे महसूस होता है मुझे कि जिन्दगी भर पोशाकें ही बदलता रहा हूं... मगर क्यों? समझ नहीं पाता! पढ़ता था—तो कालेज में कुलीनों की वर्दी पहनता रहा... क्या पढ़ा? याद नहीं... शादी की—फ़ाक-कोट पहना, फिर ड्रेसिंग गाउन... और शादी की बेहूदा-सी औरत से—भला क्यों? समझ में नहीं आता... जो कुछ हाथ पल्ले था, सब कुछ उड़ा दिया—उसके बाद भूरा-सा कोट और कत्थई रंग का पतलून पहनता रहा... कैसे सब कुछ गंवा दिया? मालूम नहीं... सरकारी दफ़्तर में नौकरी कर ली फिर वर्दी, बिल्ले वाली टोपी... सरकारी पैसे की हेरा-फेरी कर ली—मुझे क़ैदियों की वर्दी पहना दी गयी... इसके बाद—मैंने ये चिथड़े पहन लिये... और सब कुछ... जैसे मैंने सपना देखा हो... है न हंसी की बात... है न?

सातिन: बहुत तो नहीं... बेवक़ूफ़ी की बात ज्यादा है

नवाब: हां... मैं भी यही समझता हूं कि बेवक़ूफ़ी की बात है... आख़िर... किसलिए, किसलिए जन्म हुआ है मेरा...

सातिन (हंसते हुए): शायद... इनसान का जन्म

होता है अच्छी ज़िन्दगी बिताने के लिए! (**सिर हिलाता है**) हां ... ठीक कहा!

नवाब : अरे ... वह कमबख़्त नास्त्या ... कहां भाग गयी? जाकर देखता हूं ... कहां है वह? आख़िर तो ... वह ... (**जाता है**)

(**ख़ामोशी**)

अभिनेता : तातार!

(**ख़ामोशी**)

तातार!

(**तातार उसकी तरफ़ सिर घुमाता है**)

मेरे लिए ... दुआ करो ...

तातार : क्या?

अभिनेता (धीमे) : दुआ करो ... मेरे लिए! ..

तातार (तनिक चुप रहकर) : ख़ुद कर लो ...

अभिनेता (झटपट तन्दूर से नीचे उतरता है, मेज़ के पास जाता है, कांपते हाथ से वोद्का डालता है, पीता है और लगभग भागते हुए ड्योढ़ी में जाता है) : मैं चल दिया!

सातिन : अरे ओ, भूत! कहां चल दिये? (**सीटी बजाता है**)

(**औरतों की रूई वाली फ़तूही पहने मेद्वेदेव और बूब्नोव आते हैं। दोनों हल्के नशे में हैं। बूब्नोव के**

एक हाथ में गोल बिस्कुटों की माला है और दूसरे में कुछ मछलियां, वोद्का की एक बोतल वह बग़ल में दबाये है और दूसरी कोट की जेब में है)

मेद्वेदेव : ऊंट तो ... एक तरह से ... गधा ही है ! सिर्फ़ उसके कान नहीं होते ...

बूब्नोव : छोड़ो भी ! तुम तो खुद गधे जैसे हो ।

मेद्वेदेव : ऊंट के कान तो होते ही नहीं ... वह नथुनों से सुनता है ...

बूब्नोव (सातिन से) : दोस्त ! मैं तो तुझे सभी शराबखानों-भटियारखानों में ढूंढ़ता रहा ! यह बोतल ले लो, मेरा एक भी हाथ खाली नहीं !

सातिन : तुम बिस्कुटों की माला मेज़ पर रख दो — एक हाथ खाली हो जायेगा ...

बूब्नोव : यह भी ठीक कहा ! अरे, ओ ... पहरेदार, देखा ! खूब तेज़ दिमाग़ पाया है न इसने !

मेद्वेदेव : सभी उचक्कों के दिमाग़ तेज़ होते हैं यह मैं जानता हूं ! अक़्ल के बिना इनका काम नहीं चलता । भला आदमी अगर बेवक़ूफ़ हो तो भी ठीक है, मगर बुरे के पास तो ज़रूर अक़्ल होनी चाहिए । रही ऊंट की बात, तो वह तुम ग़लत कह रहे हो वह सवारी का जानवर है ... सींगों और दांतों के बिना ...

बूब्नोव : लोग कहां हैं ? कहां चले गये सभी ? ए, नीचे उतरो ... मैं दावत कर दूं ! वह कोने में कौन है ?

सातिन : जल्द ही तुम सब कुछ पी जाओगे ! वनमानस !

बूब्नोव : जल्द ही ! इस बार मैंने जो पूंजी जमा की थी – वह थोड़ी-सी थी ... ज़ोब ! ज़ोब कहां है ?

क्लेश्च (मेज़ के पास आकर) : वह नहीं है ...

बूब्नोव : अरे-रे ! ओ कुत्ते ! फू-फू-फू ! भौंक नहीं, गुर्राओ नहीं ! पियो, मौज करो, न मुंह लटकाओ ... मैं – सबको पिलाता हूं ! भाई मेरे, मुझे दूसरों को पिलाना अच्छा लगता है ! अगर मैं रईस होता तो ... एक मुफ़्त शराबख़ाना खोल देता ! क़सम भगवान की ! गाना-बजाना भी होता उसमें ... आओ, खाओ, पियो, गाना सुनो !.. अपनी आत्मा को चैन दो ! ग़रीब इनसान ... आ जा मेरे मुफ़्त के शराबख़ाने में ! सातिन ! तुम्हें तो ... तुम्हें तो ... अपनी कुल जमा-पूंजी में से आधी पूंजी भी दे डालता ! ऐसी बात है !

सातिन : तुम मुझे इसी वक़्त सब कुछ दे डालो ...

बूब्नोव : सारी पूंजी ? अभी ? यह लो – यह रहा रूबल ... ये रहे दस-दस कोपेक के दो सिक्के ... पांच कोपेक ... दो कोपेक के सिक्के ... बस, ख़त्म !

सातिन : चलो, ठीक है ! मेरे पास ये ज्यों के त्यों रहेंगे ... जुआ खेल लूंगा मैं इनसे ...

मेद्वेदेव : मैं गवाह हूं ... यह रक़म दी गयी सम्भालकर रखने के लिए ... कितनी रक़म ?

बूब्नोव : तुम ? तुम – ऊंट हो ... हमें गवाह की ज़रूरत नहीं ...

अल्योश्का (नंगे पांव आता है) : भाइयो ! मेरे पांव भीग गये !

बूब्नोव : आओ – अब गला भिगो लो ... बस ! यही चाहिए न ! मेरे प्यारे ... तुम गाते और बजाते हो ... यह सब बहुत अच्छा है ! लेकिन पीना – यह ठीक नहीं ! भाई मेरे, इससे शरीर को रोग लगता है ... शराब नुक़सान पहुंचाती है ! ..

अल्योश्का : तुम ही इसकी अच्छी मिसाल हो ! तुम सिर्फ़ पी लेने पर ही इनसान जैसे लगते हो ... क्लेश्च ! मेरा बाजा ... ठीक कर दिया ? **(नाचते हुए गाता है)**

अगर मेरा तोबड़ा
होता नहीं सुन्दर,
तब तो मुझको प्यारी
देती मार ठोकर !

भाइयो, मैं ठिठुर गया ! ठण्ड लग रही मुझे !

मेद्वेदेव : हुं ... अगर यह पूछा जाये – कौन है तुम्हारी प्यारी ?

बूब्नोव : इसका पिंड छोड़ो ! भाई मेरे, अब तुम न तीन में, न तेरह में ! तुम इस वक़्त पुलिसवाले नहीं हो ! न पुलिसवाले और न चाचा ...

अल्योश्का : सिर्फ़ चाची के ख़सम !

बूब्नोव : तुम्हारी एक भतीजी जेल में सड़ रही है, दूसरी – मर रही है ...

मेद्वेदेव (गर्व से) : बकते हो ! वह मर नहीं रही, लापता हो गयी !

(**सातिन हंसता है**)

बूब्नोव : इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है, मेरे भाई! जब भतीजियां नहीं रहीं, तो चाचा भी नहीं रहा!

अल्योश्का : बड़े हुज़ूर! ढिंढोरची के बकरे!

मेरी प्यारी मालदार है
मेरे पास न पैसा,
मैं तो हंसमुख, मौजी लड़का
मेरा रंग है ऐसा!

ठण्ड लग रही है!

(ज़ोब आता है। बाद में — इस अंक के अन्त तक — कई अन्य मर्द और औरतें आते हैं। वे कपड़े उतारते हैं, अपने-अपने तख़्तों पर लेटते हैं, बड़बड़ाते हैं)

क्रिवोई ज़ोब : बूब्नोव! तुम भाग क्यों गये थे?

बूब्नोव : यहां आओ! बैठो ... तो भाई, हम मिलकर गायें! मेरा प्यारा गाना ... क्या ख़्याल है?

तातार : रात — सोने के लिए है! गाने दिन को गाये जाते हैं!

सातिन : अरे, कोई बात नहीं है, हसन! तुम यहां आ जाओ!

तातार : कैसे — कोई बात नहीं है? शोर होगा ... जब गाने गाये जाते हैं, तो शोर होता है ...

बूब्नोव (तातार के पास जाकर) : हसन! हाथ का क्या हाल है? क्या काट दिया?

तातार : भला क्यों ? ऐसी जल्दी करने की बात नहीं है ... शायद काटना ही न पड़े ... हाथ लोहे का तो है नहीं, काटने में देर नहीं लगेगी ...

क्रिवोई ज़ोब : तुम नहीं के नहीं रहे, हसन ! हाथ के बिना तुम्हें कौन पूछेगा ! भाई, हमारे तो हाथ और पीठ ही सब कुछ हैं ... हाथ गया – और आदमी नाकारा हुआ ! तुम्हारी लुटिया डूब गयी ... आओ, वोद्का के जाम चढ़ाओ ... और सारे ग़म भूल जाओ !

क्वाश्न्या (आती है) : ओह, मेरे प्यारे लोगो ! बाहर तो, बाहर तो क्या हालत है ! ठण्ड, कीचड़ मेरा जमादार यहां है ? अरे ओ, जमादार !

मेद्वेदेव : यह रहा !

क्वाश्न्या : फिर से मेरी फ़तूही पहने फिरते हो ? और लगता है कि तुमने ... थोड़ी-सी चढ़ा भी ली है ? क्यों ? यह सब क्या है ?

मेद्वेदेव : आज ... बूब्नोव की ... वर्षगांठ जो है ! फिर ठण्ड ... कीचड़-पानी !

क्वाश्न्या : ज़रा सम्भलकर ... कीचड़-पानी ! यह गड़बड़ नहीं चलेगी ... चलो सोने ...

मेद्वेदेव (रसोईघर में जाता है) : हां, मैं तो सो सकता हूं ... मैं सोना चाहता हूं ... सोने का वक्त हो गया !

सातिन : अरी ... बहुत कड़ाई बरतती हो तुम इसके साथ ?

क्वाश्न्या : दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है, दोस्त। ऐसे मर्द को लगाम डालकर रखना ही ठीक है। जब

मैंने इसे अपना बनाया, तो सोचा – यह मेरे कुछ काम आयेगा... आख़िर ठहरा – फ़ौजी आदमी, तुम लोग हो उचक्के – लफ़ंगे... और मैं हूं – औरत जात... लेकिन यह पिये! मैं क्यों बर्दाश्त करने लगी यह!

सातिन : ढंग का मददगार नहीं चुना...

क्वाश्न्या : कोई इससे अच्छा मिला ही नहीं... तुम तो मेरे साथ रहना चाहोगे नहीं... कैसे नख़रे-टखरे हैं तुम्हारे! और अगर रहने भी लगो – तो एक हफ़्ते से ज़्यादा गाड़ी नहीं चलेगी हमारी... मेरी हड्डी-पसलियां तक जुए में हार जाओगे!

सातिन (हंसता है) : यह तो तुमने ठीक कहा, मालकिन! जुए की नज़र कर दूंगा मैं तुम्हें...

क्वाश्न्या : यही तो बात है! अल्योश्का!

अल्योश्का : यह रहा मैं!

क्वाश्न्या : मेरे बारे में तुम क्या बकते फिरते हो?

अल्योश्का : मैं? वही, जो बिल्कुल सच है! मैं कहता हूं, क्या औरत है! ग़ज़ब की! मांस, चर्बी और हड्डियां – ये तो हैं दो मन, लेकिन दिमाग़ रत्ती भर नहीं!

क्वाश्न्या : नहीं, यह तो तुम झूठ कहते हो! मेरे पास दिमाग़ है, सो भी काफ़ी बड़ा... ख़ैर, तुम यह क्यों कहते हो कि मैं अपने जमादार की पिटाई करती हूं?

अल्योश्का : उस दिन जब तुम उसे झोंटों से पकड़कर घसीटे ले जा रही थीं, तो मैंने सोचा कि उसकी पिटाई भी की होगी...

क्वाश्न्या (हंसते हुए) : उल्लू कहीं का! तुम्हें ऐसे ज़ाहिर करना चाहिए था मानो देखा ही न हो। लोगों में जाकर कीचड़ उछालने से क्या फ़ायदा?.. इसके अलावा, इससे उसके दिल को भी ठेस लगी... तुम्हारी ऐसी बातों के ग़म से ही यह पीने लगा है...

अल्योश्का : तो लोग ठीक ही कहते हैं कि मुर्ग़ी भी पीती है!

(सातिन और क्लेश्च हंसते हैं)

क्वाश्न्या : ज़बान नहीं, कैंची है तुम्हारे मुंह में! कैसे आदमी हो तुम, अल्योश्का?

अल्योश्का : अव्वल दर्जे का आदमी हूं! हर फ़न मौला। जिधर नज़र पड़े, उधर ही पांव बढ़े!

बूब्नोव (तातार के तख़्ते के पास) : आओ, चलो! सोने तो तुम्हें किसी हालत में हम देंगे नहीं! गायेंगे... रात भर! ज़ोब!

क्रिवोई ज़ोब : मैं गाऊं? हां, गाया जा सकता है...

अल्योश्का : और मैं बाजा बजाऊंगा!

सातिन : हम सुनेंगे!

तातार (मुस्कराते हुए) : तो शैतान बूब्नोव... लाओ, शराब दो! शराब पियेंगे, खुशियां मनायेंगे, मौत आयेगी – मर जायेंगे!

बूब्नोव : भरो इसका गिलास, सातिन! बैठो, ज़ोब! अरे, भाइयो! आदमी को क्या बहुत कुछ चाहिए? लो, मैंने... थोड़ी पी ली और खुश हूं।

ज़ोब ! शुरू करो ... मेरा मनपसन्द गाना ! मैं गाऊंगा ... आंसू बहाऊंगा ! ..

क्रिवोई ज़ोब (गाना शुरू करता है) :

हर रोज़ निकलता है सूरज ...

बूब्नोव (गाने को आगे बढ़ाता है) :

पर मेरे बन्दीघर में
रहता सदा अंधेरा !

(फटाक से दरवाज़ा खुलता है)

नवाब (दहलीज़ पर खड़ा रहकर चिल्लाता है) : अरे ... लोगो ! चलो ... जल्दी से चलो ! वहां ... अहाते में ... अभिनेता ... फांसी के फंदे में झूल रहा है !

(सन्नाटा। सभी नवाब को घूरते हैं। उसकी पीठ के पीछे से नास्त्या सामने आती है, उसकी आंखें फटी-फटी-सी हैं और वह धीरे-धीरे मेज़ की तरफ़ बढ़ती है)

सातिन (धीरे से) : ओह ... पाजी ... गाने का सत्यानास कर दिया !

(परदा गिरता है)

दुश्मन

■

पात्र

ज़ख़ार बार्दिन, उम्र पैंतालिस साल।

पोलीना, उसकी पत्नी, उम्र क़रीब चालीस साल।

याकोव बार्दिन, उम्र चालीस साल।

तत्याना, उसकी पत्नी, उम्र अट्ठाईस साल, अभिनेत्री।

नाद्या, पोलीना की भानजी, उम्र अठारह साल।

पेचेनेगोव, अवकाशप्राप्त जनरल, ज़ख़ार बार्दिन और याकोव बार्दिन का मामा।

मिख़ाईल स्क्रोबोतोव, उम्र चालीस साल, एक व्यापारी, ज़ख़ार बार्दिन और याकोव बार्दिन का हिस्सेदार।

क्लेओपात्रा, उसकी पत्नी, उम्र तीस साल।

निकोलाई स्क्रोबोतोव, मिख़ाईल स्क्रोबोतोव का भाई, उम्र पैंतीस साल, सरकारी वकील।

सिन्त्सोव, क्लर्क।

पोलोगी, क्लर्क।

कोन, सेवानिवृत्त फ़ौजी।

ग्रेकोव,
लेव्शिन,
यागोदिन
र्याब्त्सोव
अकीमोव } कामगार।

अग्राफ़ेना, घर की देख-भाल करनेवाली नौकरानी।

बोबोयेदोव, फ़ौजी पुलिस का कप्तान।

क्वाच, सार्जेन्ट।

फ़ौजी लेफ़्टीनेन्ट।

थानेदार।

पुलिसमैन।

फ़ौजी पुलिसवाले, फ़ौजी, कामगार, क्लर्क और नौकर-चाकर।

पहला अंक

(पुराने और बड़े-बड़े लाइम-वृक्षों से आच्छादित बगीचा। बगीचे के बीचोंबीच सैनिकों का एक सफ़ेद तम्बू। दायीं ओर वृक्षों के नीचे एक चबूतरा बना हुआ है और उसके सामने एक मेज़ है। बायीं ओर के वृक्षों के नीचे नाश्ते की लम्बी मेज़ लगी है। एक छोटे से समोवार में पानी उबल रहा है। मेज़ के चारों ओर बेंत की कुर्सियां और आरामकुर्सियां रखी हैं। अग्राफ़ेना कॉफ़ी तैयार कर रही है। एक वृक्ष के नीचे खड़ा और पाइप पीता हुआ कोन पोलोगी से बातें कर रहा है।)

पोलोगी (भद्दे और अटपटे संकेत करते हुए) : बेशक, बेशक, तुम मुझसे बेहतर जानते हो। मेरी क्या पूछ है? बहुत ही तुच्छ प्राणी हूं मैं तो! मगर हर खीरा मैंने अपने हाथों से उगाया है। और अगर मेरी इजाज़त के बिना कोई उसे चुराता है, तो उसे इसका जवाब देना ही होगा।

कोन (क्षुब्ध भाव से) : तुमसे कोई इजाज़त नहीं लेगा।

पोलोगी (हाथ छाती पर रखते हुए) : मगर सुनो! अगर कोई तुम्हारा माल चुरा लेता है, तो तुम्हें क़ानून

की शरण में जाने का अधिकार तो प्राप्त है न?

कोन: हां, हां, जाओ क़ानून की शरण में – तुम्हें मना ही कौन करता है! आज वे तुम्हारे खीरे ले गये, कल सिर ले जायेंगे... तुम बैठे रोते रहना क़ानून को!

पोलोगी: यह तो तुमने अजीब बात कही... अजीब ही नहीं, ख़तरनाक भी! तुम एक पुराने फ़ौजी हो, सम्मान-पदक लगाये हो और फिर तुम ही क़ानून की इस तरह खिल्ली उड़ाते हो!

कोन: दुनिया में क़ानून नाम की कोई चीज़ नहीं है। है तो सिर्फ़ हुक्म ही हुक्म। "बायें मुड़ो! आगे बढ़ो!" और बस, तुम चल देते हो! फिर जब हुक्म मिलता है – "रुक जाओ!" तो तुम रुक जाते हो।

अग्राफ़ेना: कोन! अच्छा हो, अगर तुम यह पाइप पीना बन्द कर दो। इसके धुएं से पत्ते बुरी तरह मुरझा जाते हैं...

पोलोगी: अगर उन लोगों ने खीरे इसलिए चुराये कि वे भूखे थे, तब तो मैं उन्हें माफ़ भी कर सकता हूं... भूख इनसान को बड़े-बड़े पाप करने के लिए मजबूर कर सकती है। यह कहना भी ग़लत न होगा कि बहुत-सी नीचताओं की जड़ में, बहुत-से जुर्मों की तह में यही पेट की आग होती है। इनसान जब भूखा है, तब तो ख़ैर...

कोन: देवता लोग तो भूख की इस मुसीबत से आज़ाद हैं। फिर भी शैतान को चैन न पड़ा। उसने भगवान के ख़िलाफ़ अपना झण्डा खड़ा कर दिया था...

पोलोगी (ख़ुश होकर) : इसे तो मैं सिर्फ़ शरारत करना ही कहूंगा ! ..

(याकोव बार्दिन प्रवेश करता है। वह धीरे-धीरे बोल रहा है, मानो अपने ही शब्द सुन रहा हो। पोलोगी झुककर प्रणाम करता है। कोन लापरवाही से फ़ौजी सलामी देता है)

याकोव : हलो ! यहां खड़े क्या कर रहे हो ?

पोलोगी : ज़ख़ार इवानोविच के पास एक मामूली-सी प्रार्थना लेकर आया हूं ...

अग्राफ़ेना : प्रार्थना-व्रार्थना कुछ नहीं, यह शिकायत करने आया है। पिछली रात कारखाने के कुछ लोगों ने इसके खीरे चुरा लिये हैं।

याकोव : अरे ... यह तो तुम्हें मेरे भाई को ज़रूर बताना चाहिए ...

पोलोगी : आपने ठीक फ़रमाया ... मैं उन्हीं के पास जा रहा हूं।

कोन (चिढ़ते हुए) : मुझे तुम कहीं जाते-वाते नज़र नहीं आते। यहीं खड़े बड़बड़ाये जा रहे हो।

पोलोगी : बड़बड़ा रहा हूं, तो तुम्हारा क्या ले रहा हूं या कुछ ले रहा हूं ? अगर तुम कोई अख़बार वग़ैरह पढ़ते होते, तब भी कोई बात थी। तब भी तुम कह सकते थे कि मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूं।

याकोव : कोन, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं ...

कोन (याकोव की तरफ़ जाते हुए) : पोलोगी,

तुम लालची कुत्ते हो... झगड़ालू और क़ानून के साले हो!

पोलोगी: बस, बस, अपनी ज़बान गन्दी मत करो... शिकायतें करने के लिए ही तो यह जबान मिली है...

अग्राफ़ेना: चुप रहो, चुप रहो, पोलोगी... तुम मानो आदमी नहीं, मच्छर हो...

याकोव (कोन से): यह यहां खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है? जाता क्यों नहीं?

पोलोगी (अग्राफ़ेना से): अगर मेरी बातें तुम्हारे कानों को परेशान करती हैं, दिल को नहीं छूती, तो मैं अब चुप रहा करूंगा। (**वह वृक्षों को छूता हुआ धीरे-धीरे बाहर चला जाता है**)

याकोव (व्यग्रता से): हां तो, कोन!.. लगता है, कल फिर मैंने किसी के दिल को ठेस पहुंचायी है।

कोन (मुस्कराकर): लगता तो ऐसा ही है।

याकोव (इधर-उधर टहलते हुए): हुं... बड़ी अजीब बात है! जब मुझे चढ़ी होती है, तभी मैं लोगों से गुस्ताख़ी की बातें क्यों करता हूं?

कोन: ऐसा भी होता है। कभी-कभी लोग पीकर बेहतर इनसान बन जाते हैं। बिना पिये उनमें यह बात नहीं आती, शराब की तरंग में वे बड़े दिलेर हो जाते हैं – किसी से भी डरते-दबते नहीं हैं। दूसरों की बात तो एक तरफ़, अपने को भी माफ़ नहीं करते... हमारी कम्पनी में एक छोटा अफ़सर होता था। वह जब बिन पिये होता, तो बेकार बक-बक करता, अफ़सरों के पास हमारी चुगलियां खाता और लोगों

से लड़ाई-झगड़ा मोल लेता फिरता। लेकिन जब पी लेता, तो एक भोले-भाले बच्चे की तरह चिल्लाता – "भाइयो! मैं भी तुम्हारे जैसा इनसान हूं। मुझ पर थूको, मेरे मुंह पर थूको, भाइयो!" और कुछ लोग सचमुच उसके मुंह पर थूकते भी।

याकोव: उफ़... भला मुझे क्या लेना-देना था

कोन: सरकारी वकील की। आपने उसे ख़रदिमाग़ और गधा कहा था। फिर आपने उससे यह भी कहा था कि डायरेक्टर की बीवी के बहुत-से यार हैं।

याकोव: उफ़... भला मुझे क्या लेना-देना था इस बात से?

कोन: बिल्कुल ठीक। और फिर...

याकोव: बस, बस, कोन! इतना ही काफ़ी है... नहीं तो पता चलेगा कि मैंने सभी को कुछ खोटी-खरी कह दी है... बुरा हो कमबख़्त वोद्का का। यह उसी की मेहरबानी है... (**मेज़ के पास जाकर बोतलों को घूरता है। फिर एक बड़े गिलास में शराब डालकर धीरे-धीरे पीता है**)

(**अग्राफ़ेना उसे कनखियों से देखती हुई आह भरती है**)

तुम्हें मेरे लिए कुछ अफ़सोस होता है न?

अग्राफ़ेना: अफ़सोस ही नहीं होता, रहम भी आता है... आप सभी के साथ बड़ी सरलता से, बड़ा सीधा-सादा बर्ताव करते हैं। कुलीन लोगों जैसी अकड़ तो आपको छू ही नहीं गयी...

याकोव: मगर इस कोन को तो किसी पर रहम

नहीं आता, यह तो बस फ़लसफ़ा छांटा करता है। बुरे दिनों के काफ़ी झटके लगने के बाद ही इनसान की अक़्ल ठिकाने आती है। क्यों, ठीक है न, कोन?

(तम्बू में से जनरल चिल्लाता है–"ए कोन!")

मेरे ख़्याल में तुम ज़माने के हाथों काफ़ी सताये गये हो, इसीलिए इतने समझदार हो गये हो।

कोन (जाते हुए): मेरी अक़्ल गुम करने के लिए जनरल साहब के दर्शन ही काफ़ी हैं...

जनरल (तम्बू से बाहर आकर): कोन, भागो नदी की तरफ़! जल्दी से!

(वे बगीचे में ग़ायब हो जाते हैं)

याकोव (कुर्सी पर आगे-पीछे झूलते हुए): क्या मेरी बीवी अभी तक सो रही है?

अग्राफ़ेना: नहीं, वह तो जाग गयीं, नदी में तैर आयी हैं।

याकोव: तो तुम्हें मुझ पर रहम आता है, ठीक है न?

अग्राफ़ेना: आपको अपना इलाज करवाना चाहिए।

याकोव: अच्छा, ब्रांडी के दो घूंट तो डाल दो।

अग्राफ़ेना: याकोव इवानोविच, शायद आप नहीं पियेंगे?

याकोव: क्यों नहीं? एक बार न पीने से तो मेरा कुछ भला होने से रहा।

(अग्राफ़ेना निःश्वास छोड़ते हुए ब्रांडी का गिलास भर देती है। मिख़ाईल स्क्रोबोतोव ग़ुस्से में और चिढ़ा हुआ सा अन्दर आता है। वह घबराया-घबराया-सा अपनी नुकीली काली दाढ़ी खींचता है और हाथ में पकड़े हुए अपने टोप को मसोसता है)

मिख़ाईल: ज़ख़ार इवानोविच जाग गये? अभी नहीं? सो तो ज़ाहिर ही होना चाहिए है! अच्छा तो लाओ... कुछ ठण्डा दूध है क्या? धन्यवाद। नमस्ते, याकोव इवानोविच!.. नयी ख़बर सुनी?.. वे शैतान के चरख़े अब इस बात पर अड़े हुए हैं कि मैं फ़ोरमैन दिच्कोव को निकाल दूं!.. वे धमकी देते हैं कि मेरे ऐसा न करने पर काम बन्द कर देंगे... बेड़ा ग़र्क़ हो इन शैतानों का...

याकोव: तो फिर सोच क्या रहे हैं? निकाल दीजिये उसे।

मिख़ाईल: यह तो बड़ी आसान बात है। पर दर असल बात यह नहीं है! बात यह है कि इस तरह उनकी धमकियों के सामने सिर झुकाने से वे और भी सिर पर चढ़ जायेंगे। आज वे इस बात की मांग करते हैं कि मैं फ़ोरमैन को निकाल दूं, तो कल यह मांग करेंगे कि उनके मनबहलाव के लिए मैं ख़ुद फांसी के फंदे से झूल जाऊं...

याकोव (धीरे-धीरे): आप क्या समझते हैं कि वे उस कल का इन्तज़ार करेंगे?

मिख़ाईल: आप तो मज़ाक़ में बात उड़ा रहे हैं!

ज़रा वास्ता तो डालकर देखिये इन शरीफ़ज़ादों से – पूरी फ़ौज की फ़ौज है! हज़ार के क़रीब! और फिर इनके दिमाग़ भी तो ठिकाने नहीं रहे। सभी तरह के लोगों ने इनके दिमाग़ बिगाड़ने में मदद दी है। उनमें आपके उदारमना भाई साहब भी शामिल हैं और वे घनचक्कर भी, जो इन्हें भड़काने के लिए इश्तिहार लिखते हैं... (**अपनी घड़ी पर नज़र डालता है**) दस बजनेवाले हैं। वे लोग दोपहर के खाने के बाद अपना तमाशा शुरू कर देंगे... याकोव इवानोविच, हक़ीक़त तो यह है कि मेरा छुट्टी पर जाना बहुत बुरा साबित हुआ है। आपके भाई ने तो सब कुछ चौपट कर डाला है... उन्होंने अपनी ढीली-ढीली नीति से मज़दूरों को बिल्कुल ही बिगाड़ दिया है।

(दायीं ओर से सिन्त्सोव आता है। उसकी उम्र लगभग तीस साल है। उसका चेहरा और व्यक्तित्व बड़ा शान्त और प्रभावशाली है)

सिन्त्सोव : मिख़ाईल वसील्येविच, दफ़्तर में मज़दूरों के कुछ प्रतिनिधि आये हैं। वे कारख़ाने के मालिक से मिलने की मांग कर रहे हैं।

मिख़ाईल : मांग कर रहे हैं? मेहरबानी करके उन्हें जहन्नुम का रास्ता दिखा दीजिये!

(बायीं ओर से पोलीना आती है)

माफ़ कीजियेगा, पोलीना द्मीत्रियेव्ना!

पोलीना (कृपालुता से) : डांटने-डपटने की तो

आपको आदत ही है। इस वक़्त इसकी क्या ज़रूरत आ पड़ी?

मिख़ाईल : ये सर्वहारा ही कोई न कोई मुसीबत खड़ी किये रहते हैं!.. अब वे मांग करते हैं!.. पहले हाथ जोड़कर प्रार्थना करते थे...

पोलीना : मुझे यह तो कहना ही होगा कि आप लोगों के साथ काफ़ी सख़्ती से पेश आते हैं!

मिख़ाईल (निराशा से हाथ झटकते हुए) : यह हुई न बात!

सिन्त्सोव : प्रतिनिधियों से क्या कहूं?

मिख़ाईल : कहना क्या है, इन्तज़ार करने दीजिये... आप जाइये!

(सिन्त्सोव धीरे-धीरे बाहर जाता है)

पोलीना : इस आदमी की शक्ल-सूरत काफ़ी अच्छी है। क्या बहुत दिनों से हमारे यहां काम कर रहा है?

मिख़ाईल : लगभग एक बरस से...

पोलीना : देखने में तो ढंग का आदमी लगता है। कौन है यह?

मिख़ाईल (कंधे झटककर) : चालीस रूबल मासिक पाता है। **(घड़ी पर नज़र डालता है, आह भरता है और इधर-उधर देखता है। वृक्ष के नीचे खड़े हुए पोलोगी पर नज़र जा पड़ती है)** तुम यहां क्या कर रहे हो? मुझसे कुछ काम है क्या?

पोलोगी : नहीं, मिख़ाईल वसील्येविच। मैं तो ज़ख़ार इवानोविच से मिलने आया हूं...

मिख़ाईल : क्या काम है?

पोलोगी : सम्पत्ति-अधिकारों के उल्लंघन से सम्बन्धित कुछ काम है...

मिख़ाईल (पोलीना से) : यह अभी कुछ समय से ही हमारे यहां नौकर हुआ है। इसे बाग़बानी का शौक़ और इस बात का पक्का विश्वास है कि तमाम दुनिया ने इसके ख़िलाफ़ साज़िश कर रखी है। हर चीज़ से इसे चिढ़ महसूस होती है – सूरज से, इंजीनियर से, नयी मशीनों से, मेंढकों से...

पोलोगी (मुस्कराते हुए) : माफ़ कीजियेगा, मेंढकों की टर्र-टर्र से तो सभी के नाक में दम हो जाता है

मिख़ाईल : जाइये, जाइये, दफ़्तर में जाइये! यह क्या बुरी आदत है आपको – काम-काज बीच में ही छोड़कर चले आते हैं शिकायत करने? मैं यह बर्दाश्त नहीं करूंगा... जाइये!

(पोलोगी झुककर प्रणाम करता है और बाहर चला जाता है। पोलीना मुस्कराते हुए उसे लोर्नेट्ट* से देखती है)।

पोलीना : बहुत ही सख़्ती से पेश आते हैं आप तो! ख़ासा मज़ेदार आदमी है... विदेशों की तुलना में रूस के लोग अधिक रंगीन हैं।

मिख़ाईल : अगर आप बेहूदा कहतीं, तो मैं आपकी बात मान लेता। पन्द्रह बरस से मैं घास नहीं काट

---

* लोर्नेट्ट – एक कमानी का चश्मा। – अनु०

रहा हूं – रात-दिन इन्हीं लोगों से निपट रहा हूं ... अब मैं इनकी रग-रग पहचानता हूं। ढोंगी पादरी-लेखकों ने दयालु रूसी जनता को जैसे रंग में प्रस्तुत किया है, मैं अब उसका असली रूप अच्छी तरह से समझता हूं।

पोलीना : पादरी-लेखकों ने ?

मिख़ाईल : हां, हां, यही आपके चेर्निशेव्स्की, दोब्रोल्यूबोव, ज़्लातोव्रात्स्की, उस्पेन्स्की वग़ैरह ने ... (**घड़ी पर नज़र डालता है**) ज़ख़ार इवानोविच तो बहुत ही देर लगा रहे हैं!

पोलीना : जानते हैं, उन्हें क्यों देर हो रही है? आपके भाई के साथ पिछली रात की शतरंज की बाज़ी ख़त्म कर रहे हैं।

मिख़ाईल : और उधर वे लोग दोपहर के खाने के बाद काम बन्द करने की धमकी दे रहे हैं ... मेरी बात को पत्थर की लकीर मानिये – इस रूस का कभी कुछ नहीं बन सकेगा! सदा यही बेढंगी चाल रहेगी। यह तो गड़बड़-घुटाले का देश है! काम करते तो लोगों को जैसे मौत आती है, यह तो इनके ख़ून में ही नहीं है। और अनुशासन नाम की कोई चीज़ ये जानते ही नहीं ... क़ानून को अंगूठा दिखाते हैं ...

पोलीना : मगर ऐसा होना तो स्वाभाविक ही है! जिस देश में कोई क़ानून ही न हो, वहां क़ानून की इज़्ज़त ही क्या हो सकती है? यह हमारी आपस की बात है, हमारी सरकार ...

मिख़ाईल : ओह, मैं किसी की सफ़ाई नहीं दे

रहा हूं! सरकार की भी नहीं। मिसाल के लिए अंग्रेज़ों को ले लीजिये...

(ज़ख़ार बार्दिन और निकोलाई स्क्रोबोतोव अन्दर आते हैं)

किसी देश को बनाने के लिए इससे अच्छा मसाला किसी दूसरी जगह नहीं मिल सकता। अंग्रेज़ लोग सरकस के घोड़ों की तरह क़ानून के इशारों पर नाचते हैं। क़ानून तो उनकी नस-नस में, उनकी हड्डियों में रच-रम गया है... नमस्ते, ज़ख़ार इवानोविच! हलो, निकोलाई! आपकी उदार नीति ने जो नया गुल खिलाया है, मैं उसी के बारे में आपको बताने आया हूं। मज़दूर इस बात की मांग कर रहे हैं कि मैं फ़ोरमैन दिच्कोव को निकाल दूं। मेरे ऐसा न करने पर वे दोपहर के खाने के बाद हड़ताल करने की धमकी दे रहे हैं... क्यों, कैसी रही?

ज़ख़ार (माथे पर हाथ फेरते हुए) : हुं... दिच्कोव?.. यह वही है न, जो हर वक़्त घूंसे ताने रहता है और लड़कियों के पीछे चक्कर काटा करता है?.. उसे तो निकाल ही देना चाहिए! यह तो इन्साफ़ की बात है।

मिख़ाईल (बिगड़ते हुए) : हे भगवान! आदरणीय हिस्सेदार, आप कभी संजीदा भी हो पाते हैं? यह सवाल इन्साफ़ का नहीं, कारोबार का है। न्याय-अन्याय के फ़ैसले निकोलाई को करने दीजिये। मैं यह दोहराये बिना नहीं रह सकता कि न्याय का जो

मतलब आप समझते हैं, वह व्यापार के लिए घातक है।

ज़खार: मगर यह हो ही कैसे सकता है? ये तो आत्म-विरोधी बातें हैं!

पोलीना: मेरे होते हुए भी आप लोग व्यापार का रोना ले बैठे... और सो भी सवेरे-सवेरे...

मिख़ाईल: माफ़ कीजियेगा, मगर मैं मजबूर हूं... मामला एक किनारे होना चाहिए। छुट्टी पर जाने से पहले कारख़ाना इस तरह मेरी मुट्ठी में था। (**मुट्ठी भींचता है**) क्या मजाल किसी की, जो चूं तक भी कर जाता! इतवार के दिन मनोरंजन होना चाहिए, पढ़ना-पढ़ाना होना चाहिए – आप जानते ही हैं कि मैं कभी इन चीज़ों के हक़ में नहीं था। आज के हमारे हालात में मैं उन्हें बेकार समझता हूं... ज्ञान की ज्योति से रूसी लोगों के मन रोशन नहीं होते – हां, वे सुलगने लगते हैं, धुआं छोड़ने लगते हैं...

निकोलाई: हमेशा शान्ति से बातचीत करनी चाहिए।

मिख़ाईल (मुश्किल से अपने पर क़ाबू पाते हुए): नेक सलाह के लिए शुक्रिया। नसीहत तो तुम्हारी अच्छी है, मगर दुर्भाग्य से मैं इस पर अमल नहीं कर सकता! ज़ख़ार इवानोविच, जिस मज़बूत ढांचे के निर्माण में मैंने आठ बरस लगाये, आंपकी छः महीने की ढीली-ढाली नीति ने उसकी नींव हिलाकर रख दी। वे मुझे सिर-आंखों पर बिठाते थे, मुझे

अपना मालिक समझते थे... अब तो बात ही दूसरी है, एक नहीं, दो मालिक हैं – एक अच्छा, एक बुरा। आप तो ख़ैर अच्छे हैं ही...

ज़ख़ार (सहमते हुए) : मगर... सुनिये न... आप किसलिए ऐसा कह रहे हैं?

पोलीना : यह आपने बड़ी अजीब बात कही मिख़ाईल वसील्येविच !

मिख़ाईल : मैं ऐसा कहने के लिए मजबूर हो गया हूं... मेरी स्थिति बहुत ही अटपटी हो गयी है! पिछली बार जब यही सवाल उठा, तो मैंने मज़दूरों से साफ़-साफ़ कह दिया था कि मैं कारख़ाना बन्द करना बेहतर समझूंगा, मगर दिच्कोव को काम से नहीं हटाऊंगा... उन्होंने मेरे तेवर देखे, तो घुटने टेक दिये। अब शुक्र के दिन, ज़ख़ार इवानोविच, आपने मज़दूर ग्रेकोव से यह कह दिया कि दिच्कोव बड़ा अक्खड़ और बेहूदा आदमी है, और यह कि आप उसे कारख़ाने से निकाल देना चाहते हैं...

ज़ख़ार (समझाते हुए) : मगर, मेरे भाई, वह भी तो लोगों के नाक में दम किये रहता है, आपको मानना होगा कि यह सब बर्दाश्त नहीं किया जा सकता! हम यूरोपियन हैं, सभ्य लोग हैं!

मिख़ाईल : मगर सबसे पहले हम कारख़ानेदार हैं! हर छुट्टी के दिन मज़दूर एक दूसरे का मुंह तोड़ते हैं – हमारी बला से! इन मज़दूरों को अच्छे तौर-तरीक़े, अच्छे सलीक़े सिखाने का काम आप बाद में कीजियेगा। इस वक़्त उनके प्रतिनिधि दफ़्तर में बैठे

हुए हैं – वे दिच्कोव को निकाल बाहर करने की मांग करेंगे। आपका क्या करने का इरादा है?

ज़ख़ार : आप क्या समझते हैं कि दिच्कोव के बिना हमारा काम नहीं चल सकेगा?

निकोलाई (रूखे ढंग से) : मेरे ख़्याल में यह सवाल सिर्फ़ दिच्कोव का नहीं, उसूल का है।

मिख़ाईल : बिल्कुल! सवाल यह है कि कारख़ाने का मालिक कौन है – हम लोग या मज़दूर?

ज़ख़ार (भौचक्का-सा) : यह तो मैं समझता हूं! मगर ...

मिख़ाईल : अगर हम इस बार झुक गये, तो कल वे किस बात की मांग करेंगे, भगवान ही जानता है। ये बड़े बेहया लोग हैं। पिछले छः महीनों से इतवार के दिन जो स्कूल लगाये जा रहे हैं और दूसरे काम हो रहे हैं, अब वे अपने रंग दिखाने लगे हैं – मुझे तो वे भूखे भेड़ियों की तरह घूरते हैं, इधर-उधर कुछ इश्तिहार भी दिखाई दे रहे हैं... इनसे समाजवाद की बू आती है... हां!

पोलीना : हमारी इस दूर-दराज़ की जगह में... समाजवाद... यह बड़ी दिलचस्प बात है।

मिख़ाईल : सच? श्रीमती पोलीना द्मीत्रियेव्ना, बच्चे जब तक बच्चे होते हैं, बड़े दिलचस्प लगते हैं। मगर धीरे-धीरे वे बड़े होते रहते हैं और फिर एक दिन अच्छे-ख़ासे शैतान के चरख़े बनकर सामने आ खड़े होते हैं...

ज़ख़ार : आप क्या करना चाहते हैं?

मिख़ाईल : कारख़ाना बन्द करना चाहता हूं। कुछ दिन इन्हें भूखे रहने दीजिये, फिर ये अपने आप ठण्डे पड़ जायेंगे।

(याकोव उठता है, मेज़ के पास जाकर कुछ शराब पीता है और फिर धीरे-धीरे वहां से चला जाता है)

जैसे ही हम कारख़ाना बन्द करेंगे कि औरतें सामने आ जायेंगी ... वे रोना-धोना शुरू करेंगी। उनके आंसुओं की धारा में इन लोगों के सपने भी बह जायेंगे – देखते ही देखते इनके होश ठिकाने आ जायेंगे ! ..

पोलीना : यह तो बड़ी बेरहमी होगी !

मिख़ाईल : ज़िन्दगी में यह सब करना ही पड़ता है।

ज़ख़ार : मगर ... देखिये न ... ऐसा कड़ा क़दम ... क्या ऐसा कड़ा क़दम उठाना लाज़िमी है ?

मिख़ाईल : आप कोई दूसरा रास्ता सुझा सकते हैं ?

ज़ख़ार : अगर मैं जाकर उनसे बातचीत करूं, तो कैसा रहे ?

मिख़ाईल : आप तो ज़रूर उनके सामने झुक जायेंगे और तब मेरा बिल्कुल कोई मुंह न रह जायेगा ... आपकी ढुलमुल नीति को, क्षमा कीजिये, मैं सरासर अपनी बेइज़्ज़ती समझता हूं ! उससे जो घपला होता है, उसकी तो ख़ैर चर्चा ही बेकार है ...

ज़ख़ार (जल्दी से) : मगर, मेरे दोस्त, मैं आपकी बात का विरोध थोड़े ही कर रहा हूं, मैं तो सिर्फ़ सोच-विचार कर रहा हूं। आप जानते हैं कि मैं उद्योग-पति होने के बजाय ज़मींदार अधिक हूं ... मेरे लिए

24–461

ये सभी बातें नयी और उलझी-उलझायी हैं... मैं तो यह चाहता हूं कि जैसे भी हो सके, इन्साफ़ से काम लिया जाये... मज़दूरों की अपेक्षा किसान अधिक भले स्वभाव के और नम्र होते हैं... उनके साथ मेरी ख़ूब पटती है!.. मज़दूरों में भी कुछ दिलचस्प लोग हैं, मगर कुल मिलाकर आपकी बात सही है। ये लोग कुछ ज़्यादा ही मनमानी करते हैं...

मिख़ाईल: ख़ास तौर पर तब से जब से आपने इन्हें सब्ज़ बाग़ दिखाने शुरू किये हैं...

ज़ख़ार: बात यह है कि जैसे ही आप गये, मैं इनमें कुछ बेचैनी महसूस करने लगा... कुछ गड़बड़ी भी हुई... हो सकता है कि मैंने असावधानी से काम लिया हो... मगर जैसे-तैसे उन्हें शान्त तो करना ही था। अख़बारों में हमें खरी-खोटी सुनायी गयी... हमारी ख़ूब ही ख़बर ली गयी...

मिख़ाईल (बेचैनी से): इस वक़्त दस बजकर सत्रह मिनट हुए हैं। हमें ज़रूर कोई फ़ैसला कर लेना चाहिए – या तो कारख़ाना बन्द किया जाये या फिर मैं इससे अलग हो जाता हूं। कारख़ाना बन्द करने से हमारा कोई नुक़सान नहीं होगा – मैंने सभी आवश्यक प्रबन्ध कर लिये हैं। जल्दी के आर्डरों का सब माल तैयार है और गोदामों में और भी काफ़ी माल जमा है...

ज़ख़ार: हुंह। तो फ़ौरन ही इसका फ़ैसला होना चाहिए... ओह, हां, होना ही चाहिए! आपका क्या ख़्याल है, निकोलाई वसील्येविच?

निकोलाई : मेरे ख़्याल में तो मेरे भाई की बात ठीक है। अगर हम सभ्यता को महत्त्व देते हैं, तो हमें बड़ी कड़ाई से कुछ सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

ज़ख़ार : मतलब यह कि आप भी कारख़ाना बन्द करने के हक़ में हैं? बड़े दुख की बात है!.. प्यारे मिख़ाईल वसील्येविच, मुझसे नाराज़ मत होइये... मैं कोई... दस मिनट में आपको अपना जवाब दे दूंगा!.. ठीक है?

मिख़ाईल : ठीक है!

ज़ख़ार : पोलीना, ज़रा चलो तो मेरे साथ...

पोलीना (अपने पति के पीछे जाती हुई) : हे भगवान! यह सब क्या मुसीबत है!..

ज़ख़ार : सदियों के लम्बे अरसे में किसान लोग कुलीनों की इज़्ज़त करना सीख गये हैं–यह चीज़ उनकी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गयी है:.

(वे दोनों बाहर जाते हैं)

मिख़ाईल (दांत भींचकर) : बुज़दिल! दक्षिण के किसानों की मार-काट के बाद भी वह यह बात कहता है! उल्लू न हो तो कहीं का!..

निकोलाई : ज़रा ग़ुस्से पर क़ाबू पाओ, मिख़ाईल! तुम इस तरह आपे से बाहर क्यों हो रहे हो?

मिख़ाईल : मेरे तो तन-बदन में आग लगी हुई है! मैं कारख़ाने में जा रहा हूं और यह अपने साथ लेकर! **(जेब से पिस्तौल निकालता है)** वे लोग अब

मुझसे नफ़रत करते हैं – यह इसी पाजी की मेहरबानी है! मगर मैं कारख़ाने से नाता भी तो नहीं तोड़ सकता। अगर मैं ऐसा करूं, तो तुम्हीं सबसे पहले मुझे दोषी ठहराओगे। हमारी सारी पूंजी कारख़ाने में लगी हुई है। अगर मैं किनारा कर लेता हूं, तो यह गंजा सब कुछ मटियामेट कर डालेगा।

निकोलाई (शान्ति से) : अगर तुम बढ़ा-चढ़ा नहीं रहे, तब तो यह सचमुच ही बहुत बुरी बात है।

सिन्त्सोव (प्रवेश करते हुए) : मज़दूर आपसे आने का अनुरोध कर रहे हैं...

मिख़ाईल : मुझसे? क्या चाहते हैं?

सिन्त्सोव : अफ़वाह फैली हुई है कि दोपहर के खाने के बाद कारख़ाना बन्द कर दिया जायेगा।

मिख़ाईल (अपने भाई से) : सुना तुमने? उन्हें यह कैसे मालूम हुआ?

निकोलाई : शायद याकोव इवानोविच ने बताया होगा।

मिख़ाईल : क्या मुसीबत है! **(वह चिढ़कर सिन्त्सोव की ओर देखता है। अपना ग़ुस्सा दबा नहीं पाता)** आप इतने परेशान क्यों हैं, मिस्टर सिन्त्सोव? आपको क्या पड़ी है? यहां आते हैं, पूछ-ताछ करते हैं... क्यों?

सिन्त्सोव : मुझे तो मुनीम ने आपके पास भेजा है।

मिख़ाईल : अच्छा? आपको तिरछी नज़र से देखने और दांत निपोरने की यह बुरी आदत क्यों है? आपकी बाछें किसलिए खिल रही हैं?..

सिन्त्सोव : मेरे ख़्याल में यह मेरा ज़ाती मामला है।

मिख़ाईल : मैं यह नहीं मानता ... देखिये, अब फिर कभी ऐसा मत कीजिये, मेरे साथ अधिक सम्मान से व्यवहार कीजिये ... सुना आपने?

(सिन्त्सोव उसे घूरता है)

अब खड़े किसलिए हैं?

तत्याना (दायीं ओर से आती है) : ओह, डायरेक्टर साहब ... जल्दी में हैं? **(सिन्त्सोव को सम्बोधित करते हुए)** हलो, मात्वेई निकोलायेविच!

सिन्त्सोव (स्नेहपूर्वक) : नमस्ते! कहिये, कैसा हाल-चाल है? थक गयी हैं न?

तत्याना : नहीं, ज़रा भी नहीं। डांड़ चला चलाकर बांहें ज़रूर कुछ थक गयी हैं ... दफ़्तर की तरफ़ जा रहे हैं? चलिये, मैं फाटक तक आपके साथ चलती हूं। जानते हैं, मैं आपसे क्या कहना चाहती हूं?

सिन्त्सोव : ज़ाहिर है, नहीं जानता हूं।

तत्याना (सिन्त्सोव के साथ-साथ जाते हुए) : कल आपने बहुत-सी समझदारी की बातें की थीं। मगर आप बहुत भावुक हो गये थे और दूसरे आप अपने लक्ष्य को निशाना बना बनाकर तीर चलाते थे ... कुछ मामलों में जितना कम भावुक होकर बात की जाती है, प्रभाव उतना ही अधिक पड़ता है ... **(उनकी बात-चीत सुनाई नहीं देती)**

मिख़ाईल : क्यों, कैसी रही? गुस्ताख़ी करने के लिए अभी-अभी मैंने जिस कर्मचारी को झाड़ा-फट-

कारा, वही मेरे सामने याकोव की बीवी से घुल-मिलकर बातें कर रहा है... वह शराबी है और यह अभिनेत्री... शैतान ही जानता है कि ये लोग यहां आये क्यों!..

निकोलाई: यह भी अजीब औरत है। ख़ूबसूरत है, बनी-ठनी रहती है, मन को लुभाती भी है – और फिर भी ऐसा लगता है कि उस दो टके के आदमी से इश्क़ करती है। इश्क़ तो निराला है, मगर बेवक़ूफ़ी से भरा हुआ।

मिख़ाईल (व्यंग्य से): इसे ही तो कहते हैं उदारतावादी होना। वह गांव-गंवई की किसी अध्यापिका की बेटी है। कहती है कि साधारण लोगों की ओर वह बरबस खिंच जाती है... बेड़ा ग़र्क़ हो इनका! काश मैंने इन ज़मींदारों से वास्ता ही न डाला होता!..

निकोलाई: मेरे ख़्याल में तो तुम्हें शिकायत नहीं करनी चाहिए। इस कारोबार में चलती तो तुम्हारी ही है।

मिख़ाईल: अभी तक नहीं, मगर चलेगी ज़रूर!..

निकोलाई: मेरा ख़्याल है कि इस औरत पर बहुत जल्दी डोरे डाले जा सकते हैं... बड़ी गर्म तबीयत की लगती है।

मिख़ाईल: वह हमारा उदार महानुभाव – वह क्या जाकर सो रहा?.. नहीं, नहीं, मैं तुम्हें कहे देता हूं, यह रूस हमेशा ऐसे ही रहेगा, कभी किसी किनारे नहीं लग सकेगा!.. यहां सभी लोग दिवास्वप्न देखा करते हैं, बांवरे बांवरे से, बहके बहके से इधर-उधर घूमा करते हैं, ज़िन्दगी में

किसको क्या करना है, कोई भी तो यह नहीं जानता... जहां तक सरकार का सम्बन्ध है, वह तो सिरफिरों की भीड़ है... जले-भुने और मूर्ख लोग हैं वे। न तो कुछ समझते हैं, न ही कुछ करना-धरना जानते हैं...

तत्याना (**लौटकर**) : चिल्ला रहे हैं?.. न जाने क्यों यहां सभी लोग चिल्लाने लगते हैं...

अग्राफ़ेना : मिख़ाईल वसील्येविच, ज़ख़ार इवानोविच आपको याद कर रहे हैं।

मिख़ाईल : आख़िर तो! (**बाहर जाता है**)

तत्याना (**मेज़ के सामने बैठते हुए**) : वह इतना परेशान क्यों है?

निकोलाई : मेरे ख़्याल में यह जानना आपके लिए दिलचस्प नहीं होगा।

तत्याना (**शान्त भाव से**) : आपका भाई मुझे एक पुलिसमैन की याद दिला देता है। कोस्त्रोमा में वह हमारे थियेटर में अक्सर ड्यूटी पर रहता था... लम्बा और पतला-सा, फैली-फैली आंखोंवाला।

निकोलाई : अपने भाई के साथ मैं उसकी कुछ भी समानता नहीं पा रहा हूं।

तत्याना : मैं शक्ल-सूरत की समानता की बात नहीं कर रही हूं... यह पुलिसमैन भी हमेशा हड़बड़ाया रहता था। चलना तो जानता ही न था, हमेशा भागता था। सिगरेट पीने के बजाय, निगलता था। जीने की तो जैसे उसे फ़ुरसत ही नहीं थी। चौबीसों घण्टे कहीं न कहीं भागता-दौड़ता और लुढ़कता-पुढ़कता रहता

था ... मगर कहां, यह वह ख़ुद भी नहीं जानता था।

निकोलाई : आप सचमुच ऐसा सोचती हैं कि वह यह नहीं जानता था ?

तत्याना : मुझे पूरा विश्वास है कि वह यह नहीं जानता था। जब किसी आदमी के सामने कोई निश्चित लक्ष्य होता है, तो वह बड़े आराम से उसकी पूर्ति का यत्न करता है। मगर वह तो हर वक़्त भगदड़ मचाये रहता था। उसकी भगदड़ भी अजीब क़िस्म की थी। ऐसा लगता था कि जैसे कोई डण्डा लेकर उसका पीछा कर रहा है। अपनी इस हड़बड़ी में वह ख़ुद भी ठोकर खाता था और दूसरों का रास्ता भी रोकता था। वह लालची नहीं था – मेरा मतलब, संकीर्ण अर्थ में लालची नहीं था ... वह तो अपने सभी कामों, सभी ज़िम्मेदारियों से छुटकारा पाने के लिए परेशान रहता था। यहां तक कि रिश्वत लेने की ज़िम्मेदारी से भी। वह रिश्वत लेता नहीं था – बल्कि लोगों से रुपये छीनता था और जल्दबाज़ी में धन्यवाद तक देना भूल जाता था ... जानते हैं, उसका अन्त क्या हुआ ? एक घोड़ागाड़ी के नीचे आकर दूसरी दुनिया में पहुंच गया।

निकोलाई : आप यह कहना चाहती हैं कि मेरा भाई बेकार ही दौड़-धूप करता रहता है ?

तत्याना : तो यही मतलब निकाला आपने मेरी बात का ? ख़ैर, मैं तो यह नहीं कहना चाहती थी ... मेरा मतलब सिर्फ़ इतना था कि आपके भाई को देखकर मुझे उस पुलिसमैन की याद आ जाती है ...

निकोलाई : इसमें मेरे भाई की तारीफ़ की तो कोई बात नहीं।

तत्याना : आपके भाई की तारीफ़ करने का तो मेरा इरादा भी नहीं था...

निकोलाई : लोगों से चोंचलेबाज़ी करने का आपका तरीक़ा भी निराला है।

तत्याना : सच ?

निकोलाई : सो भी ख़ुशी देनेवाला नहीं।

तत्याना (**शान्त भाव से**) : आपके साथ किसी औरत को ख़ुशी भी हो सकती है ?

निकोलाई : अरे, वाह !

पोलीना (**अन्दर आती है**) : आज हमारे यहां कोई भी चीज़ ढंग से नहीं हो रही। न कोई नाश्ता कर रहा है, सभी खीझे-खीझे हैं... मानो अच्छी तरह से सोये न हों। नाद्या सुबह ही सुबह क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना के साथ खुमियां इकट्ठी करने के लिए जंगलों में चली गयी है... मैंने कल उसे मना भी किया था... हे भगवान!.. ज़िन्दगी मुश्किल होती जा रही है!

तत्याना : तुम बहुत ज़्यादा खाती हो...

पोलीना : बात करने का यह कौनसा ढंग है, तत्याना ? बड़ा ही अजीब रवैया है तुम्हारा लोगों के प्रति

तत्याना : सच ?

पोलीना : जब इनसान के कंधों पर कोई ज़िम्मेदारी न हो, जब उसे कुछ करना-धरना न हो, तब यह तुम्हारी तरह चटखारे ले लेकर बातें कर सकता है! लेकिन अगर हज़ारों लोग रोज़ी-रोटी के लिए तुम

पर निर्भर हों... तब मामला इतना आसान नहीं रहता!

तत्याना: तो तुम उनकी फ़िक्र करना छोड़ दो, वे जैसे चाहें उन्हें वैसे ही जीने दो... सौंप दो उन्हें ही सब कुछ – कारख़ाना, ज़मीन, – और फिर गुज़ारो आराम की ज़िन्दगी।

निकोलाई (सिगरेट जलाते हुए): किस नाटक का वार्तालाप है यह? ...

पोलीना: मैं नहीं जानती कि तुम ऐसी बातें क्यों करती हो, तत्याना? ज़रा जाकर देखो कि ज़ख़ार कितना परेशान है... मज़दूरों के शान्त हो जाने तक हमने कारख़ाना बन्द करने का फ़ैसला किया है। मगर ज़रा कल्पना तो करो कि लोगों को कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा! सैकड़ों लोग बेकार हो जायेंगे। उनके बाल-बच्चे हैं... उफ़, इसकी कल्पना ही बड़ी भयानक है!

तत्याना: अगर यह इतनी भयानक बात है, तो तुम लोग ऐसा कर ही क्यों रहे हो?.. किसलिए अपने को यातना का शिकार बना रहे हो?

पोलीना: ओह, तत्याना, तुम कैसी कलेजा-फूंक बातें करती हो! अगर हम कारख़ाना बन्द नहीं करते हैं, तो मज़दूर हड़ताल कर देंगे – और यह इससे भी बुरा होगा।

तत्याना: क्या बुरा होगा?

पोलीना: सब कुछ बुरा होगा... किसी हालत में भी उनकी सभी मांगें नहीं मानी जा सकतीं। और

वास्तव में वे उनकी मांगें भी नहीं हैं। ऐसे ही कुछ समाजवादियों ने उनके दिमाग़ में अटपटी बातें भर दी हैं। और वही चीख़-चिल्ला रहे हैं... (**जोश में आकर**) मेरी तो समझ में ही यह बात नहीं आती! विदेशों में समाजवाद की अपनी एक जगह है। समाजवादी खुलेआम सब काम करते हैं... मगर हमारे रूस में ये लोग मज़दूरों को कोनों में ले जाकर कानाफूसी करते रहते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि राजतन्त्र में समाजवाद की कोई जगह नहीं हो सकती! हमें समाजवाद की नहीं, विधान की ज़रूरत है... आपका क्या ख़्याल है, निकोलाई वसील्येविच?

निकोलाई (थोड़ा हंसकर): मेरा आपसे थोड़ा मतभेद है। समाजवाद एक ख़तरनाक चीज़ है। उस देश में इसकी अच्छी जड़ जम जायेगी, जहां लोगों का अपना स्वतन्त्र दृष्टिकोण... मेरा मतलब यह कि जहां लोगों का अपना कोई नसली फ़लसफ़ा नहीं है, जहां हर चीज़ इधर-उधर से उधार ली गयी है... हम अतिवादी हैं... यही हमारी कमज़ोरी है।

पोलीना: ओह, यह तो आपने बिल्कुल ठीक कहा है! हम लोग अतिवादी हैं।

तत्याना (उठते हुए): ख़ास तौर पर तुम और तुम्हारे पति। और यह सरकारी वकील साहब

पोलीना: तुम नहीं जानतीं, तत्याना, ज़खार को हमारे इलाक़े में "लाल" समझा जाता है!

तत्याना (इधर-उधर टहलते हुए): मेरे ख़्याल

में वह तो सिर्फ़ शर्म से ही लाल होता है, सो भी कभी-कभी ...

पोलीना : तत्याना ! हे भगवान, यह तुम क्या कह रही हो ! ..

पोलीना : क्यों, क्या मैंने कोई बुरी बात कह दी है ? मुझे मालूम नहीं था ... तुम लोगों की ज़िन्दगी तो मुझे शौक़िया अभिनेताओं जैसी लगती है। ग़लत लोगों को ग़लत पार्ट दे दिये गये हैं, प्रतिभा नाम की कोई चीज़ किसी को छू तक नहीं पायी, हर कोई बेतुका अभिनय करता है ... और नाटक का कोई सिर-पैर ही समझ में नहीं आता ...

निकोलाई : आपकी बात में कुछ सच्चाई ज़रूर है। और सभी शिकायत कर रहे हैं – ओह, नाटक कितना उबा देनेवाला है !

तत्याना : हां, हम नाटक को बिगाड़ रहे हैं। मंच के नौकर-चाकर और छोटे-मोटे अभिनय करनेवाले यह बात समझने लगे हैं ... किसी दिन ये लोग हमें रंगमंच से एक तरफ़ कर देंगे ...

(जनरल और कोन प्रवेश करते हैं)

निकोलाई : क्या आप राई का पहाड़ नहीं बना रही हैं ?

जनरल (पुकारते हुए) : पोलीना ! जनरल के लिए कुछ दूध भेज दो ! देखना, बर्फ़ जैसा ठण्डा हो ! .. **(निकोलाई से)** हलो, क़ानूनी कफ़न ! .. मुझे अपना हाथ तो चूमने दो, मेरी सुन्दर भानजी !

कोन, अपना पाठ सुनाओ — फ़ौजी किसे कहते हैं?

कोन (ऊब से): जो अपने अफ़सर के इशारों पर नाचना जाने, हुज़ूर!

जनरल: अगर अफ़सर यह चाहे कि वह मछली बन जाये, तो?

कोन: फ़ौजी के लिए हर चीज़ बनना सम्भव होना चाहिए...

तत्याना: प्यारे मामा जी, अभी कल ही तो आपने इस नाटक से हमारा मन बहलाया था... क्या हर रोज़ ही इसका दोहराया जाना लाज़िमी है?

पोलीना (आह भरकर): नदी में स्नान के बाद हर दिन।

जनरल: हां, सचमुच हर दिन! और हर रोज़ नया नाटक! इस मसख़रे को सवाल भी ख़ुद ही तैयार करने चाहिए और जवाब भी।

तत्याना: कोन, आपको इसमें मज़ा आता है?

कोन: जनरल साहब को मज़ा आता है।

तत्याना: और आपको?

जनरल: इसे भी मज़ा आता है...

कोन: सरकस के मसख़रे की भी अब मेरी उम्र नहीं रही... मगर पेट की आग बुझाने के लिए सभी तरह के नाच नाचने ही पड़ेंगे...

जनरल: अरे ओ, चालाक बुड्ढे! घूमो और आगे चल दो!..

तत्याना: इस बेचारे बूढ़े का मज़ाक़ उड़ा-उड़ाकर क्या कभी आपका मन नहीं भरता?

जनरल : बूढ़ा तो मैं भी हूं! और आप तो ख़ुद भी ऊबभरी हैं... अभिनेत्री को तो दूसरों को हंसाना चाहिए, मगर आप?

पोलीना : मामा जी, आप जानते हैं कि...

जनरल : मैं कुछ नहीं जानता-वानता...

पोलीना : हम कारख़ाना बन्द कर रहे हैं...

जनरल : अच्छा! बहुत ख़ूब! कम से कम भोंपू के शोर से तो जान बचेगी! सुबह-सुबह जब हमें मीठी और प्यारी नींद आती है, तभी ख़लल डालने-वाला भोंपू करता है—ऊ-ऊ-ऊ! कर दो बन्द!..

मिख़ाईल (जल्दी से अन्दर आते हुए) : निकोलाई, ज़रा सुनो तो! कारख़ाना तो बन्द कर दिया गया, मगर मेरे ख़्याल में हमें ज़रूरी क़दम उठा लेने चाहिए। उप-राज्यपाल को एक तार दे दो, संक्षिप्त रूप से उसे सारी स्थिति भी बता दो और लिख दो कि कुछ फ़ौजी भेज दे... नीचे मेरा नाम लिख देना।

निकोलाई : वह तो मेरा भी दोस्त है।

मिख़ाईल : मैं जाकर उन प्रतिनिधियों को जहन्नुम में भेजता हूं!.. तुम तार का किसी से ज़िक्र नहीं करना—वक़्त आने पर मैं ख़ुद बता दूंगा... ठीक है न?

निकोलाई : ठीक है।

मिख़ाईल : अपनी मनमर्ज़ी करने में बड़ा मज़ा आता है! उम्र में मैं तुमसे बड़ा हूं, मगर ज़िन्दादिली के नाते छोटा, ठीक है न?

निकोलाई : अगर मेरा ख़्याल पूछते हो, तो मैं

तो इसे तुम्हारी ज़िन्दादिली नहीं, बल्कि दिल की कमज़ोरी कहूंगा...

मिख़ाईल (व्यंग्य से): यह दिल की कमज़ोरी है या कुछ और, तुम्हें इसका पता लग जायेगा! तुम खुद अपनी आंखों से देख लोगे! (**हंसता हुआ बाहर जाता है**)

पोलीना: निकोलाई वसील्येविच, तो उन्होंने फ़ैसला कर लिया?

निकोलाई (बाहर जाते हुए): लगता तो ऐसा ही है।

पोलीना: हे भगवान!

जनरल: क्या करने का फ़ैसला कर लिया है उन्होंने?

पोलीना: कारख़ाना बन्द करने का...

जनरल: ओह, तो यह बात है!.. कोन!

कोन: हाज़िर हूं, सरकार!

जनरल: बंसियां और नाव!

कोन: सब कुछ तैयार है।

जनरल: मैं तो चल दिया मछलियों के साथ रहने को – इनसानों के साथ ऊबने से तो यही बेहतर है (**हंसता है**) खूब कहा, क्यों?

(**नाद्या भागती हुई अन्दर आती है**)

आह, मेरी प्यारी तितली!.. क्या बात है?

नाद्या (खुश होते हुए): हम लोग तो एक कारनामा कर आयी हैं! (**पीछे घूमकर पुकारती है**) ग्रेकोव! ज़रा इधर आ जाइये! क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना, इसे

जाने मत दीजिये! मौसी, जैसे ही हम जंगलों से बाहर आ रही थीं कि अचानक तीन मज़दूरों ने हमें आ घेरा। वे पिये हुए थे।

पोलीना: देखा न! मैं तो तुम्हें हमेशा चेतावनी देती रही हूं...

क्लेओपात्रा (पीछे-पीछे ग्रेकोव आता है): कैसी बुरी बात है!

नाद्या: इसमें बुरी बात क्या है? हंसी की बात है!.. तीन मज़दूर थे, मौसी... वे मुस्कराये और बोले– "हमारी प्यारी महिलाओ!"

क्लेओपात्रा: मैं तो ज़रूर ही अपने पति से कहूंगी कि वह उनकी छुट्टी कर दें...

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए): वह क्यों?

जनरल: यह कौन है... ए... यह कलमुंहा?

नाद्या: नाना जी, हमारा रक्षक, समझे न?

जनरल: कुछ भी समझ में नहीं आ रहा!

क्लेओपात्रा: आपका बताने का ढंग भी तो अजीब है।

नाद्या: मैं वैसे ही बता रही हूं, जैसे बताना चाहिए।

पोलीना: तुम्हारी बात का तो सिर-पैर ही समझ में नहीं आ रहा, नाद्या!

नाद्या: इसलिए कि आप लोग मुझे बार-बार टोकते जा रहे हैं!.. हां, तो वे लोग हमारे पास आये और कहने लगे– "आइये, हम मिलकर गायें..."

पोलीना: ओह, कैसी गुस्ताख़ी है!

नाद्या: नहीं, बिल्कुल नहीं! "हम जानते हैं कि आप बहुत अच्छा गाती हैं," उन्होंने कहा। "बेशक

यह ठीक है कि हम लोग थोड़ी पिये हुए हैं, मगर पीकर ही हम लोग ज़्यादा अच्छे हो जाते हैं," उन्होंने कहा। और, मौसी, उनकी यह बात है भी सच! पी लेने के बाद वे हमेशा की तरह बुझे-बुझे दिखाई नहीं देते...

क्लेओपात्रा : हमारी ख़ुशक़िस्मती से यह नौजवान...

नाद्या : मैं आपसे ज़्यादा अच्छी तरह सुनाऊंगी! क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना उन्हें डांटने-डपटने लगीं... आपने व्यर्थ ही ऐसा किया, यक़ीन मानिये!.. और तब उनमें से एक, लम्बे और पतले-से मज़दूर ने...

क्लेओपात्रा (बिगड़ते हुए) : मैं उसे जानती हूं!

नाद्या : उसने क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना का हाथ थाम लिया और दर्दभरी आवाज़ में कहा – "आप तो बड़ी ही प्यारी और पढ़ी-लिखी महिला हैं, देखकर मन खिल उठता है और आप हमें डांट-डपट रही हैं। क्या हमने किसी तरह आपका दिल दुखाया है?" उसने ये शब्द बड़े ही अच्छे ढंग से कहे... लगता था कि जैसे उसके दिल की गहराई से निकल रहे हों!.. मगर तभी दूसरा, जो बड़ा अक्खड़-सा था, बोला – "क्यों सिर खपा रहे हो इनके साथ? क्या ये भी कुछ समझ सकती हैं? ये – दरिन्दे हैं!.." हम दरिन्दे हैं – ये और मैं! **(हंसती है)**

तत्याना (व्यंगपूर्ण मुस्कान से) : लगता है कि तुम्हें यह उपाधि बहुत पसन्द आयी है?

पोलीना : मैंने तुम्हें क्या कहा था, नाद्या?.. तुम सभी जगह भागती रहती हो....

ग्रेकोव (नाद्या से) : मैं अब जा सकता हूं ?

नाद्या : ओह, नहीं, अभी नहीं ! चाय तो पियेंगे ? चाय नहीं, तो दूध ? पियेंगे न ?

(जनरल हंसता है, क्लेओपात्रा कंधे झटकती है, तत्याना ग्रेकोव की तरफ़ देखकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है, पोलीना सिर झुकाकर चमचों को तौलिये से रगड़-रगड़कर साफ़ करने लगती है)

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : नहीं, धन्यवाद ! मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

नाद्या (ज़ोर देते हुए) : शर्माइये नहीं !.. सच कहती हूं, ये सभी बहुत भले लोग हैं !

पोलीना (डांटते हुए) : नाद्या !

नाद्या (ग्रेकोव से) : अभी नहीं जाइये ! अभी तो मैंने अपनी बात भी पूरी नहीं की...

क्लेओपात्रा (बिगड़ते हुए) : बताने के लिए और रह ही क्या गया है, इतना ही, कि ठीक मौक़े पर यह नौजवान वहां आ पहुंचा और इसने अपने शराबी दोस्तों को समझाया कि हमें परेशान न करें... मैंने इससे कहा कि हमें घर तक पहुंचा दे, बस...

नाद्या : ओह, कमाल है आपका सुनाने का ढंग भी ! अगर बात इसी तरह हुई होती... जैसे आप सुना रही हैं, तो सबका ऊब से दम निकल जाता !

जनरल : क्यों कैसी रही ?

नाद्या (ग्रेकोव से) : आप बैठ जाइये ! मौसी, आप इनसे बैठने के लिए क्यों नहीं कहतीं ? और

आप सभी लोग रोनी सूरत क्यों बनाये बैठे हैं?

पोलीना (बैठी हुई ही ग्रेकोव को सम्बोधित करती है) : मैं आपकी बहुत आभारी हूं, नौजवान...

ग्रेकोव : आभार की कोई बात नहीं।

पोलीना (अधिक रूखेपन से) : इनकी रक्षा करके आपने बहुत नेक काम किया है।

ग्रेकोव (शान्त भाव से) : इनकी रक्षा का तो सवाल ही नहीं था... कोई भी इनके साथ बुरे ढंग से पेश नहीं आ रहा था।

नाद्या : मौसी! यह आप कैसी बात कह रही हैं!

पोलीना : कृपया मुझे सीख देने की कोशिश मत करो...

नाद्या : लेकिन समझिये तो – किसी ने हमारी रक्षा नहीं की! ग्रेकोव ने तो सिर्फ़ इतना कहा था – "इन्हें परेशान नहीं करो, साथियो! यह अच्छा नहीं!" इसे देखकर वे बहुत खुश हुए, कहने लगे – "हमारे साथ चलो, ग्रेकोव, तुम बहुत ही समझदार आदमी हो!" और, मौसी, यह बात है भी सही... माफ़ कीजिये, ग्रेकोव, मगर यह सच है न!..

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : आप मुझे बड़ी अटपटी स्थिति में डाल रही हैं...

नाद्या : इसके लिए मैं नहीं, ये लोग ज़िम्मेदार हैं, ग्रेकोव!

पोलीना : नाद्या!.. यह तुम कैसी बहकी-बहकी बातें कर रही हो... यह सब सुनकर हंसी आती है... बस, अब काफ़ी हो चुका!

नाद्या (गर्म होकर) : तो हंसिये ! तुम लोग भी हंसो ! उल्लुओं की तरह क्यों बैठे हैं ? हंसिये !

क्लेओपात्रा : नाद्या राई का पहाड़ बनाना जानती है और वह भी ख़ूब शोर मचाकर, बड़े उत्साह से। और इस समय, एक अजनबी के सामने तो यह ख़ास तौर पर अच्छा लग रहा है... वह भी इस पर हंस रहा है।

नाद्या (ग्रेकोव से) : आप मुझ पर हंस रहे हैं ? भला क्यों ?

नाद्या (ग्रेकोव से) : मैं तो आपको मुग्ध भाव से देख रहा हूं, आप पर हंस नहीं रहा हूं...

पोलीना (हैरान होकर) : क्या ? मामा जी...

क्लेओपात्रा (व्यंग्यपूर्वक) : देखा आपने !

जनरल : बस, बस, काफ़ी हो चुका ! लो, यह लो और नौ दो ग्यारह हो जाओ...

ग्रेकोव (मुड़ते हुए) : धन्यवाद... मगर इसकी ज़रूरत नहीं है।

नाद्या : ओह ! आपने यह क्यों किया ?

जनरल (ग्रेकोव को रोकते हुए) : ज़रा सुनो तो ! मैं तुम्हें दस रूबल दे रहा हूं...

ग्रेकोव (शान्त भाव से) : तो क्या हुआ ?

(घड़ी भर के लिए सब चुप हो जाते हैं)

जनरल (हतप्रभ-सा) : ए... ए... ज़रा यह तो बताओ कि तुम हो कौन ?

ग्रेकोव : एक मज़दूर।

जनरल : लुहार ?

ग्रेकोव : नहीं, फ़िटर।

जनरल (कड़ाई से) : वह तो एक ही बात है! तुम ये रूबल ले क्यों नहीं लेते?

ग्रेकोव : इसलिए कि नहीं चाहता।

जनरल (खीझकर) : यह भी क्या तमाशा है? तो तुम्हें क्या चाहिए?

ग्रेकोव : कुछ भी नहीं।

जनरल : शायद तुम इस लड़की से शादी करना चाहते हो? क्यों? **(हंसता है)**

(सभी झेंप जाते हैं)

नाद्या : ओह!.. आप यह क्या कह रहे हैं!

पोलीना : मामा जी ...

ग्रेकोव (बड़े शान्त भाव से जनरल को सम्बोधित करता है) : आपकी उम्र कितनी है?

जनरल (हैरान होकर) : क्या? मेरी?.. मेरी उम्र?

ग्रेकोव (उसी लहजे में) : हां! कितनी उम्र है आपकी?

जनरल (इधर-उधर देखते हुए) : मैं ... मेरी ... यही कोई इकसठ ... तुम्हें मतलब?

ग्रेकोव (जाते हुए) : इस उम्र में अक़्ल भी कुछ ज़्यादा होनी चाहिए थी।

जनरल : क्या?.. मेरी ... मेरी अक़्ल भी ज़्यादा होनी चाहिए थी?..

नाद्या (ग्रेकोव के पीछे भागते हुए) : सुनिये, आप इनकी बातों का बुरा नहीं मानिये! वह तो बूढ़े हैं। मैं सच कहती हूं, ये सभी बहुत भले लोग हैं!

जनरल : यह सब क्या बकवास है?

ग्रेकोव : आप परेशान न हों... इनसे और उम्मीद ही क्या हो सकती है!

नाद्या : इन्हें गर्मी लग रही है... इसलिए इन सभी के मूड ख़राब हैं... फिर मैंने अपना क़िस्सा भी तो बहुत बुरी तरह से सुनाया है।

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : आप चाहे कैसे भी क्यों न सुनातीं, विश्वास कीजिये, ये आपकी बात नहीं समझेंगे।

(वे ग़ायब हो जाते हैं)

जनरल (व्यग्र होते हुए) : उसकी यह मजाल!

तत्याना : आपने रूबल देने की बेकार कोशिश की!

पोलीना : ओह, नाद्या... कैसी अजीब लड़की है यह नाद्या!

क्लेओपात्रा : ज़रा देखो तो सही! बड़ा आया गर्वीला सूरमा! मैं अपने पति से कहूंगी कि वह इसे...

जनरल : कल का छोकरा!

पोलीना : नाद्या तो अच्छी-ख़ासी मुसीबत है!.. देखो तो, कैसे मुंह उठाकर चली गयी उसके साथ... वह तो मुझे परेशान किये रहती है!

क्लेओपात्रा : तुम्हारे ये समाजवादी दिन पर दिन ज़्यादा गुस्ताख़ होते जा रहे हैं...

पोलीना : आप ऐसा क्यों सोचती हैं कि वह समाज-वादी है?

क्लेओपात्रा : इतना तो मैं समझ ही सकती हूं! सभी ढंग के मज़दूर समाजवादी हैं।

जनरल : मैं ज़ख़ार से कहूंगा ... कि इस बदतमीज़ छोकरे का कान पकड़कर कारख़ाने से बाहर निकाल दे!

तत्याना : कारख़ाना तो बन्द है।

जनरल : फिर भी कान पकड़कर निकाल दे!

पोलीना : तत्याना! जाओ, जाकर नाद्या को बुला लाओ ... मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूं! उससे कहना कि मैं दंग रह गयी हूं ...

(तत्याना जाती है)

जनरल : ओह, जानवर कहीं का! पूछता है— "आपकी उम्र?" यह मजाल!

क्लेओपात्रा : उन पियक्कड़ों ने हमारे पीछे सीटियां बजायीं ... और आप उन्हें पढ़ा-पढ़ाकर उनके दिमाग़ ख़राब कर रहे हैं।

पोलीना : ज़रा ख़्याल करो! .. अभी बृहस्पति के दिन मैं बग्घी में गांव जा रही थी। अचानक—सीटियां सुनाई दीं। मुझ पर भी सीटियां बजाते हैं। बेहूदगी की बात तो एक तरफ़—अगर घोड़े बिदक जाते, तो क्या होता!

क्लेओपात्रा (शिक्षा देते हुए) : ज़ख़ार इवानो-विच ही इसके लिए बहुत हद तक ज़िम्मेदार हैं! ..

मेरे पति, जैसा कि कहते हैं, वह तो अपने और मज़दूरों के बीच कुछ फ़ासला रखना ही नहीं जानते।

पोलीना: वह बहुत नर्मदिल हैं... सभी के साथ नर्मी से पेश आना चाहते हैं! उनका ख़्याल है कि साधारण लोगों से बनाकर रखने में दोनों तरफ़ की भलाई है... किसानों के मामले में तो उनका ख़्याल ठीक है... वे ज़मीन किराये पर ले लेते हैं, किराया देते रहते हैं और सब ठीक-ठाक चलता रहता है। मगर ये...

(तत्याना और नाद्या आती हैं)

नाद्या! रानी बिटिया! क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकतीं कि यह कितनी बेहूदा बात...

नाद्या (गुस्से में आकर): आप लोग... आप लोग बेहूदा हैं! गर्मी ने आप सब का मिज़ाज बिगाड़ दिया है – आप बेकार गुस्से में आ जाते हैं, खीझ उठते हैं। आप कुछ भी तो नहीं समझते!.. और आप, नाना जी... ओह, कैसे बुद्धू हैं आप!..

जनरल (भड़ककर): मैं? मैं बुद्धू? अब तुम भी मुझे बुद्धू कह रही हो?

नाद्या: आपने वह बात क्यों कही थी... मुझसे शादी करने की बात? शर्म नहीं आती आपको?

जनरल: मुझे शर्म नहीं आती? बस, बस, अब तो हद हो गयी! आज के लिए यह काफ़ी है! **(पूरे ज़ोर से चिल्लाता हुआ बाहर जाता है)** कोन! तुम पर शैतान की मार! कहां जा मरे हो तुम

कमबख़्त ? ! अरे ओ गधे, ओ पाजी !

नाद्या : और मौसी, आप ! .. आप विदेशों में रही हैं, राजनीति की बातें करती हैं ! .. आपने उसे बैठने तक के लिए नहीं कहा, चाय तक के लिए नहीं पूछा ! .. ओह, आप ...

पोलीना (उछलकर खड़ी हो जाती है और चमचा नीचे फेंक देती है) : बस, अब और बर्दाश्त नहीं हो सकता ! .. क्या कह रही हो तुम ? ..

नाद्या : और आप ... आप, क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना ! .. रास्ते भर तो उसकी लल्लो-चप्पो और उससे मीठी-मीठी बातें करती रहीं, पर जैसे ही घर पहुंचीं कि आंखें बदल लीं ...

क्लेओपात्रा : तो क्या मैं उसका मुंह चूमती ? मुझे अफ़सोस है कि उसका मुंह गन्दा था। मैं आपकी यह डांट-डपट सुनने को तैयार नहीं हूं। देखती हैं पोलीना द्मीत्रियेव्ना ? यह है आपके उदारतावाद का – या क्या कहते हैं उसे ? – मानवतावाद का फल ! .. फ़िलहाल यह सारी मुसीबत सहनी पड़ती है मेरे पति को ... मगर आपको भी इसका फल चखना होगा।

पोलीना : मैं नाद्या के लिए आपसे माफ़ी चाहती हूं, क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना।

क्लेओपात्रा (जाते हुए) : इसकी ज़रूरत नहीं। सवाल सिर्फ़ नाद्या का ही नहीं है ... ऐसे वातावरण के लिए आप सभी ज़िम्मेदार हैं !

पोलीना : सुनो नाद्या ! जब तुम्हारी मां दम तोड़ रही थी और जब उसने तुम्हारी देख-रेख

का भार मुझे सौंपा था, तो...

नाद्या : आप मेरी मां की चर्चा नहीं करें! उसके बारे में आप हमेशा ही ग़लत बातें किया करती हैं!

पोलीना (हैरान होकर) : नाद्या! तुम बीमार हो क्या?.. ज़रा सोचो तो, कह क्या रही हो! तुम्हारी मां मेरी बहन थी, मैं उसे तुमसे बेहतर जानती थी...

नाद्या (आंसुओं को पीते हुए) : कुछ नहीं जानतीं आप! ग़रीब ग़रीब होते हैं, अमीर अमीर... उनके बीच कुछ भी तो एक जैसा नहीं होता... मेरी मां ग़रीब थी, भली थी... आप ग़रीबों को नहीं समझतीं!.. आप तो मौसी तत्याना को भी नहीं समझतीं...

पोलीना : नाद्या! मैं मिन्नत करती हूं कि तुम यहां से चली जाओ! जाओ यहां से!

नाद्या (जाते हुए) : चली जाती हूं!.. मगर मैं ही सही हूं! आप नहीं, मैं!

पोलीना : हे भगवान्!.. अच्छी-भली स्वस्थ लड़की है... न जाने इसे अचानक ही यह क्या दौरा-सा पड़ गया है! बिल्कुल हिस्टीरिया का सा दौरा! माफ़ करना, तत्याना, मगर मुझे यह कहना ही पड़ रहा है कि तुम इसे बुरी तरह बिगाड़ रही हो... तुम इससे सभी तरह की बातें कर लेती हो, मानो वह सयानी हो चुकी हो... तुम इसे हमारे कर्मचारियों के बीच ले जाती हो... हमारे दफ़्तर के लोगों, अजीब-अजीब मज़दूरों के बीच... यह बहुत भद्दी बात है! और फिर ये नावों के सैर-सपाटे...

तत्याना : तुम शान्त हो जाओ ... मन को शान्त करनेवाली दवाई की कुछ बूंदें पी लो! तुम्हें यह मानना ही होगा कि उस मज़दूर के साथ तुम ढंग से पेश नहीं आयीं! अगर तुम उसे बैठने के लिए कह देतीं, तो कुर्सी का कुछ बिगड़ थोड़े ही जाता।

पोलीना : तुम्हारी बात सही नहीं है, सही नहीं है ... कोई भी मेरे मत्थे यह दोष नहीं मढ़ सकता कि मैं मज़दूरों के साथ बुरा बर्ताव करती हूं। मगर मैं, मेरी प्यारी, यह ज़रूर चाहती हूं कि हर चीज़ सीमा में होनी चाहिए!..

तत्याना : और फिर मैं तो उसे कहीं नहीं ले जाती। जहां भी जाती है, वह अपनी मर्ज़ी से जाती है ... और मैं ऐसा नहीं समझती कि उसे मना करना चाहिए।

पोलीना : वह अपनी मर्ज़ी से जाती है! जैसे कि अपना भला-बुरा समझ सकती है!

(याकोव पिये हुए धीरे-धीरे अन्दर आता है)

याकोव (बैठते हुए) : कारख़ाने में बड़ी गड़बड़ होनेवाली है ...

पोलीना (जैसे तंग आयी हुई हो) : अच्छा, अच्छा, रहने दीजिये, याकोव इवानोविच!..

याकोव : मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं। बड़ी गड़बड़ होनेवाली है। वे लोग कारख़ाने को आग लगा देंगे ... और हम सब को ख़रगोशों की तरह भून डालेंगे।

तत्याना (दुखी होते हुए) : लगता है आज इतने सबेरे ही पी आये ...

याकोव : इस वक़्त तक मैं हर रोज़ ही पी लिया करता हूं... अभी-अभी मैंने क्लेओपात्रा को देखा... बड़ी कमीनी औरत है! इसलिए नहीं कि उसके बेशुमार आशिक़ हैं... बल्कि इसलिए कि उसके सीने में दिल की जगह एक ग़ुस्सैल और बूढ़ा कुत्ता है...

पोलीना (उठते हुए) : हे भगवान, हे भगवान! सब कुछ ढंग से चल रहा था और अचानक... (**निरुद्देश्य बगीचे में इधर-उधर घूमती है**)

याकोव : खुजली का मारा हुआ, छोटा-सा कुत्ता। लालची कुत्ता। वह उसके दिल में बैठा गुर्राया करता है... वह पेट भरकर खा चुका है, सब कुछ हड़प चुका है, मगर अभी भी जीभ लपलपा रहा है... क्या चाहता है, यह नहीं जानता... इसीलिए बेचैन रहता है...

तत्याना : चुप रहो, याकोव!.. लो वह तुम्हारा भाई आ रहा है।

याकोव : मुझे भाई की ज़रूरत नहीं! तत्याना, मैं यह अच्छी तरह समझता हूं कि मैं प्यार करने लायक़ नहीं रहा... फिर भी मेरे दिल को इससे ठेस लगती है। सचमुच ठेस लगती है... मगर मैं तो तुम्हें प्यार करता हूं...

तत्याना : ज़रा जाकर ताज़ा दम हो लो... नहा-धो लो...

ज़ख़ार (अन्दर आते हुए) : क्या कारख़ाना बन्द करने की घोषणा कर दी गयी है?

तत्याना : मालूम नहीं।

याकोव : नहीं, अभी घोषणा तो नहीं की गयी, मगर मज़दूर यह जानते हैं।

ज़खार : यह कैसे? किसने उन्हें बताया?

याकोव : मैंने। मैं उन्हें बाता आया हूं।

पोलीना (पास जाकर) : भला क्यों?

याकोव (कंधे झटककर) : ऐसे ही... उनके लिए यह दिलचस्पी की बात है। मैं उन्हें सब कुछ बता देता हूं... अगर वे मेरी बात सुनते हैं तो। मेरे ख़्याल में वे मुझे पसन्द करते हैं। उन्हें यह देखकर ख़ुशी होती है कि उनके मालिक का भाई शराबी है। इससे उन्हें बराबरी का एहसास होता है।

ज़खार : हुं... याकोव, तुम अक्सर कारख़ाने में जाते हो... मुझे इसमें कोई एतराज़ नहीं!.. मगर मिख़ाईल वसील्येविच का कहना है कि मज़दूरों से बातचीत करते वक़्त तुम कभी-कभी **प्रबन्ध-व्यवस्था** की आलोचना करते हो...

याकोव : वह झूठ कहता है। प्रबन्ध-व्यवस्था या अव्यवस्था – मैं इस बारे में बिल्कुल कोरा हूं।

ज़खार : वह तो यह भी कहता है कि कभी-कभी तुम अपने साथ वोद्का भी ले जाते हो...

याकोव : यह झूठ है। वोद्का मैं साथ नहीं ले जाता हूं, मंगवा लेता हूं, और सो भी कभी-कभी नहीं, हमेशा ही। तुम तो समझते ही हो कि वोद्का के बिना मैं उनके लिये दिलचस्प नहीं रहूंगा।

ज़खार : मगर, याकोव, ज़रा ख़ुद ही सोचकर देखो – आख़िर तुम कारख़ाने के मालिक के भाई हो...

याकोव : सिर्फ़ मेरा यही दुर्भाग्य नहीं है ...

ज़खार (चिढ़कर) : तो मैं अब और कुछ नहीं कहूंगा ! कुछ भी नहीं कहूंगा ! न जाने क्यों, सभी मेरे दुश्मन होते जा रहे हैं ...

पोलीना : यह बिल्कुल ठीक है। काश, तुमने वह सब सुना होता जो अभी थोड़ी देर पहले नाद्या ने कहा !

पोलोगी (दौड़ता हुआ अन्दर आता है) : मैं यह सूचना देने आया हूं कि अभी ... कि अभी डायरेक्टर ... डायरेक्टर की हत्या कर दी गयी है ...

ज़खार : क्या ?!

पोलीना : आपने ... क्या कहा आपने ?

पोलोगी : जान से ही मार डाला ... वह गिर पड़े ...

ज़खार : किसने ... गोली किसने चलायी ?

पोलोगी : मज़दूरों ने ...

पोलीना : किसी ने उन्हें पकड़ा ?

ज़खार : डाक्टर वहां है ?

पोलोगी : मुझे मालूम नहीं ...

पोलीना : याकोव इवानोविच ! .. आप जाइये !

याकोव (हाथों को घुमाते हुए) : कहां ?

पोलीना : यह सब हुआ कैसे ?

पोलोगी : डायरेक्टर साहब गुस्से में थे ... उन्होंने एक मज़दूर के पेट में लात मार दी ...

याकोव : वे लोग यहां आ रहे हैं ...

(शोर। निकोलाई और अधेड़ उम्र का गंजा मज़दूर

लेव्शिन मिख़ाईल स्कोबोतोव को दोनों ओर से थामे हुए अन्दर लाते हैं। कई मज़दूर और दफ़्तर के कर्मचारी उनके साथ हैं)

मिख़ाईल (थकी-सी आवाज़ में) : मुझे परेशान नहीं करो... मुझे लिटा दो...

निकोलाई : तुमने गोली चलानेवाले को देखा था?

मिख़ाईल : मैं थक गया हूं... थक गया हूं...

निकोलाई (ज़ोर देकर) : तुमने गोली चलानेवाले को देखा था?

मिख़ाईल : मुझे दर्द हो रहा है... कोई लाल बालोंवाला था... मुझे लिटा दो... कोई लाल बालोंवाला था...

(उसे चबूतरे पर लिटा दिया जाता है)

निकोलाई (पुलिसमैन से) : सुना आपने? कोई लाल बालोंवाला था...

पुलिसमैन : जी, हुज़ूर!..

मिख़ाईल : ओह! अब इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता है?..

लेव्शिन (निकोलाई से) : क्या यह ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि इस वक़्त इन्हें परेशान न किया जाये?..

निकोलाई : चुप रहिये! डाक्टर कहां है?.. मैं पूछ रहा हूं, डाक्टर कहां है?

(सभी लोग फुसफुसाने और बेकार ही इधर-उधर दौड़-धूप करने लगते हैं)

मिख़ाईल : चिल्लाओ नहीं ... हाय दर्द ... मुझे आराम करने दो ! ..

लेव्शिन : हां, आराम कीजिये, मिख़ाईल वसील्ये-विच ! आह ! हमारी यह ज़िन्दगी बस, पैसे का फेर है ! वही हमें ले डूबता है ... वही हमारी ज़िन्दगी है, वही मौत ...

निकोलाई : पुलिसमैन ! फ़ालतू लोगों को यहां से जाने को कह दीजिये।

पुलिसमैन (धीरे से) : जाओ, भाइयो, जाओ यहां से ! यहां कोई तमाशा नहीं है ...

ज़ख़ार (धीरे से) : डाक्टर कहां है ?

निकोलाई : मिख़ाईल ! .. मिख़ाईल ! .. (**अपने भाई पर झुक जाता है। बाक़ी लोग भी ऐसा ही करते हैं**) मुझे लगता है ... कि उसका खेल ख़त्म हो गया ...

ज़ख़ार : ऐसा नहीं हो सकता ! यह बेहोशी है।

निकोलाई (धीरे-धीरे) : आप समझते हैं ज़ख़ार इवानोविच ? .. वह चल बसा ...

ज़ख़ार : मगर ... आपसे ग़लती हो सकती है !

निकोलाई : नहीं। इसके लिए आप ज़िम्मेदार हैं – आप ही !

ज़ख़ार (व्यग्र होकर) : मैं ?

तत्याना : यह सरासर बेरहमी है ... बेहूदा बात है !

निकोलाई (ज़ख़ार की तरफ़ बढ़ते हुए) : हां, आप ज़िम्मेदार हैं ! ..

थानेदार (तेज़ी से अन्दर आते हुए) : डायरेक्टर साहब कहां हैं ? क्या बुरी तरह घायल हुए हैं ?

लेव्शिन : चल बसे। सभी के लिए उतावली मचाये रहते थे, लेकिन अब ख़ुद इन्हें देखिये ...

निकोलाई (थानेदार से) : उन्होंने हमें इतना ज़रूर बता दिया है कि किसी लाल बालोंवाले ने गोली चलायी है ...

थानेदार : लाल बालोंवाले ने ?

निकोलाई : हां ... आपको फ़ौरन कुछ करना चाहिए !

थानेदार (पुलिसमैन से) : सभी लाल बालोंवालों को पकड़ लो !

पुलिसमैन : जो हुक्म, हुज़ूर !

थानेदार : सभी को !

(पुलिसमैन बाहर जाता है)

क्लेओपात्रा (दौड़ती हुई आती है) : कहां है वह ?.. मिख़ाईल !.. क्या बात है ... क्या वह बेहोश हो गया है ? निकोलाई वसील्येविच ... क्या वह बेहोश हो गया है ?

(निकोलाई दूसरी तरफ़ मुंह कर लेता है)

क्या वह चल बसा ? चल बसा ?

लेव्शिन : अब शान्त हो गये ... पिस्तौल दिखा दिखाकर डराते थे, मगर ख़ुद ही उसका निशाना बन गये।

निकोलाई (धीरे, मगर ग़ुस्से से) : जाइये यहां से ! **(थानेदार से)** इसे यहां से निकाल दीजिये !

क्लेओपात्रा : लेकिन डाक्टर, डाक्टर कहां है ?

थानेदार (लेव्शिन से, धीरे से) : ए तुम, जाओ यहां से!

लेव्शिन (धीरे से) : जा रहा हूं। धक्के क्यों दे रहे हैं?

क्लेओपात्रा (धीरे से) : तो इसे मार डाला?

पोलीना (क्लेओपात्रा से) : मेरी प्यारी ...

क्लेओपात्रा (धीरे, मगर ग़ुस्से से) : मुझसे दूर रहिये! यह आप ही की करतूत है ... आप ही की!

ज़ख़ार (दुखभरी आवाज़ में) : मैं अच्छी तरह से समझता हूं ... कि आपको भारी धक्का लगा है ... मगर ... मगर ... आप ऐसी बातें क्यों कह रही हैं?

पोलीना (आंसू भरकर) : ओह, मेरी प्यारी, ज़रा सोचिये तो सही, आप कैसी भयानक बात कह रही हैं! ..

तत्याना (पोलीना से) : तुम यहां से चली जाओ ... डाक्टर कहां है?

क्लेओपात्रा : बुरा हो कमबख़्त आपकी नर्मी का! यह उसी की मेहरबानी है!

निकोलाई (रूखेपन से) : शान्त हो जाओ, क्लेओ-पात्रा! हमारे सामने ज़ख़ार इवानोविच से उसका अपराध छिपा थोड़े ही है ...

ज़ख़ार (दुखी होकर) : मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा, महानुभावो! आप लोग यह क्या कह रहे हैं? मेरे माथे पर ऐसा कलंक कैसे लगाया जा सकता है?

पोलीना : यह तो बड़ी भयानक बात है। हे भगवान... सरासर ज़ुल्म है!

क्लेओपात्रा : यह ज़ुल्म है? आप लोगों ने ही मज़दूरों को उसके ख़िलाफ़ भड़काया, आप ही ने उसके असर को ख़ाक में मिलाया... वे उससे ख़ौफ़ खाते थे, उसे देखते ही उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी... और अब... अब उन्होंने उसे मार डाला... इसके लिए आप ही ज़िम्मेदार हैं! आपके ही हाथ रंगे हुए हैं मेरे पति के ख़ून से!..

निकोलाई : बस, बस, काफ़ी है... चिल्लाना ठीक नहीं!

क्लेओपात्रा (पोलीना से) : रो रही हैं? आपकी आंखों से ही बह जाये उसका ख़ून!..

पुलिसमैन (आता है) : हुज़ूर!..

थानेदार : धीरे बोलो!

पुलिसमैन : सभी लाल बालोंवाले इकट्ठे कर लिये गये हैं!

(बाग़ के पिछले भाग में जनरल दिखाई देता है। वह कोन को अपने आगे धकेलता जाता है और ज़ोर-ज़ोर से हंसता है)

निकोलाई : धीरे!..

क्लेओपात्रा : ये हत्यारे हैं?

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

(चांदनी रात है। बगीचे में बड़ी-बड़ी परछाइयां दिखाई दे रही हैं। मेज़ पर डबल रोटी, खीरे, अण्डे और बियर की बोतलें अस्त-व्यस्त दशा में पड़ी हैं। शमादान जल रहे हैं। अग्राफ़ेना बर्तन धो रही है। यागोदिन हाथ में छड़ी लिये कुर्सी पर बैठा है और सिगरेट पी रहा है। बायीं ओर तत्याना, नाद्या और लेव्शिन खड़े हैं। सभी लोग मानो किसी चीज़ पर कान लगाये हुए फुसफुसाकर बातचीत कर रहे हैं। वातावरण में तनाव है, जैसे कि लोग किसी घटना की प्रत्याशा में हों।)

लेव्शिन (नाद्या से): इनसानी ज़िन्दगी की हर चीज़ में पैसे ने ज़हर घोल रखा है, कुमारी जी! आपका जवान मन इसीलिए दुखी है... सभी को पैसे ने अपने जाल में फंसा रखा है—सभी को, सिवा आपके। इसीलिए आपका यहां निबाह नहीं होता। पैसे की छनक सब से यही कहती है—"जैसे अपने से प्यार करते हो, वैसे ही मुझसे भी करो..." मगर आपका इससे कोई मतलब नहीं। पंछी तो न बोता है, न काटता है।

यागोदिन (अग्राफ़ेना से): लेव्शिन तो साहब

लोगों को अक़्ल सिखाने लगा है... बुद्धू कहीं का !

अग्राफ़ेना : तो क्या हुआ ? वह सच कहता है। साहब लोगों को भी थोड़ी सचाई जाननी चाहिए।

नाद्या : बड़ी मुश्किल ज़िन्दगी है आपकी, लेव्शिन ?

लेव्शिन : नहीं, बहुत तो नहीं। बच्चा तो मेरा कोई है नहीं। सिर्फ़ औरत है – यानी मेरी बीवी, और बस। बच्चे सभी मर चुके हैं।

नाद्या : मौसी तत्याना ! जब घर में मुर्दा होता है, तो सभी लोग धीरे-धीरे क्यों बोलते हैं ?..

तत्याना : मुझे मालूम नहीं ...

लेव्शिन (मुस्कराते हुए) : इसलिए कि मरनेवाले के सामने हम सभी अपराधी होते हैं, कुमारी जी ! हर तरह से अपराधी होते हैं ...

नाद्या : मगर हमेशा तो ऐसा नहीं होता कि लोगों की ... कि लोगों की हत्या ही की जाती है ... मगर लोग तो सदा धीरे-धीरे बोलते हैं ...

लेव्शिन : हम सभी की हत्या करते हैं ! किसी की गोलियों से, किसी की शब्दों से। हम अपनी करतूतों से सभी की जान लेते हैं। हम लोगों को इस दुनिया से क़ब्र की तरफ़ धकेलते हैं और न तो यह देखते हैं, न महसूस करते हैं ... मगर किसी को मौत की गोद में सुलाकर हमें अपने जुर्म का एहसास होने लगता है। तब हमें मरनेवाले के लिए अफ़सोस होता है, शर्म के मारे हमारा सिर झुक जाता है और हम अपनी आत्मा में डर अनुभव करते हैं ... हमें भी उसी रास्ते

पर धकेला जा रहा है, हम भी तेज़ी से क़ब्र की तरफ़ बढ़ रहे हैं!..

नाद्या : स ...च ... यह तो बड़ी भयानक बात है!

लेव्शिन : कोई बात नहीं! इस वक़्त यह भयानक है, कल भूली-बिसरी बात हो जायेगी। लोग फिर वही रेल-पेल शुरू कर देंगे... जब कोई दम तोड़ देता है, तो थोड़ी देर के लिए सभी चुप हो जाते हैं, चकरा जाते हैं... आह भरकर फिर अपने पुराने रंग-ढंग अपना लेते हैं!.. फिर से अपनी राह पर चल देते हैं... अज्ञानता! मगर आप तो अपने को अपराधी नहीं अनुभव करती हैं, कुमारी जी। मुर्दे भी आपको परेशान नहीं करते। आप तो उनके सामने भी ऊंचे-ऊंचे बोल सकती हैं...

तत्याना : दूसरे ढंग से जीने के लिए क्या करना चाहिए? आप जानते हैं?..

लेव्शिन (रहस्यपूर्ण ढंग से) : पैसे से छुट्टी पानी होगी... इसे दफ़ना देना होगा! इसके न होने पर हम सोचेंगे – किसलिए की जाये रेल-पेल? क्यों बनाया जाये लोगों को दुश्मन?

तत्याना : बस, इतना ही?

लेव्शिन : शुरू में तो इतना ही काफ़ी है!..

तत्याना : नाद्या! कुछ देर बगीचे में घूमना चाहोगी?

नाद्या (सोचते हुए) : हां, घूमा जा सकता है...

(वे बगीचे में दूर जाकर ग़ायब हो जाती हैं। लेव्शिन

मेज़ की तरफ़ चला जाता है। तम्बू के नज़दीक जनरल, कोन और पोलोगी दिखाई देते हैं)

यागोदिन: तुम तो बालू में से तेल निकालने की कोशिश कर रहे हो, लेव्शिन ... बड़े भोले हो!

लेव्शिन: सो क्यों?

यागोदिन: बेकार मत्थापच्ची किया करते हो ... भला ये कुछ समझनेवाली सूरतें हैं! मज़दूर तुम्हारी बातें समझ सकते हैं, मगर कुलीनों पर इनका कुछ असर-वसर नहीं होने का ...

लेव्शिन: यह लड़की तो बहुत भली है। ग्रेकोव ने मुझे इसके बारे में बताया था:

अग्राफ़ेना: चाय का एक और गिलास पियेंगे क्या?

लेव्शिन: कुछ हर्ज नहीं।

(शान्ति। जनरल की भारी आवाज़ सुनाई देती है। वृक्षों के बीच से नाद्या और तत्याना की सफ़ेद पोशाकों की झलक मिलती रहती है)

जनरल: या फिर सड़क के बीचोंबीच एक रस्सी फैला दी जाये ... इस तरह से कि किसी को दिखाई न दे ... कोई राहगीर गुज़रे और अचानक – धड़ाम!

पोलोगी: किसी को इस तरह गिरते देखकर बड़ा मज़ा आता है, हुज़ूर!

यागोदिन: सुना तुमने?

लेव्शिन: हां, सुना ...

कोन : मगर आज तो हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते। घर में मुर्दा पड़ा हुआ है। घर में मुर्दा होने पर मज़ाक़ नहीं किये जाते।

जनरल : मुझे पाठ नहीं पढ़ाओ! जब तुम मरोगे, तो मैं नाचूंगा....

(तत्याना और नाद्या मेज़ के पास आती हैं)

लेव्शिन : बूढ़ा आदमी है!

अग्राफ़ेना (घर की तरफ़ जाते हुए) : उन्हें शरारतें करना बहुत पसन्द है...

तत्याना (मेज़ के पास बैठते हुए) : लेव्शिन, क्या आप समाजवादी हैं?

लेव्शिन (सरल भाव से) : मैं? नहीं तो। मैं और यागोदिन – हम तो बुनकर हैं। जुलाहे हैं, जुलाहे...

तत्याना : आप समाजवादियों को जानते हैं? उनके बारे में सुना है?

लेव्शिन : हां, सुना तो है... जानते किसी को नहीं, मगर उनके बारे में सुना है!

तत्याना : दफ़्तर में वह जो सिन्त्सोव काम करता है, उसे जानते हैं?

लेव्शिन : जानते हैं। दफ़्तर के सभी लोगों को जानते हैं।

तत्याना : कभी उससे बातचीत हुई?

यागोदिन (बेचैन होते हुए) : उससे हमारी क्या बातचीत हो सकती थी? वह ऊपर काम करता है, हम नीचे। अगर हम दफ़्तर में जाते हैं, तो वह हमें

यह बता देता है कि डायरेक्टर क्या चाहता है... बस, इतना ही जान-पहचान है!

नाद्या: लेव्शिन, ऐसा लगता है, जैसे कि आप हमसे डरते हों? डरिये नहीं, हमें सचमुच बहुत ज़्यादा दिलचस्पी है...

लेव्शिन: हम भला क्यों डरने लगे? कोई बुरा काम तो नहीं किया हमने। हमें यहां गड़बड़ रोकने के लिए बुलाया गया है। हम चले आये। वहां लोग गुस्से से पागल हुए जा रहे हैं। वे कहते हैं कि कारख़ाने को आग लगा देंगे, सब कुछ जला डालेंगे – राख के सिवा यहां कुछ भी बाक़ी नहीं रह जायेगा। हम ऐसी बेहूदगी के ख़िलाफ़ हैं। आग भला किसलिए लगायी जाये?.. जलाया-फूंका क्यों जायें? ख़ुद हमने अपने हाथों इन्हें बनाया है, हमारे बाप-दादा ने... और अचानक जला डाला जाये!

तत्याना: आप ऐसा तो नहीं सोचते कि हम किसी बुरे इरादे से यह पूछ-ताछ कर रही हैं?

यागोदिन: आप भला ऐसा क्यों करेंगी? हम तो ख़ुद भी किसी का कुछ बुरा नहीं चाहते!

लेव्शिन: हम तो ऐसा सोचते हैं, लोगों ने जो कुछ अपने हाथों से बनाया है, वह सब पवित्र है। इनसान के ख़ून-पसीने के फलों का हमें सम्मान करना चाहिए, उन्हें जलाना-फूंकना नहीं चाहिए। लोग अज्ञानता के मारे हुए हैं। उन्हें लपटें देखना अच्छा लगता है। गुस्से से बौखलाये हुए हैं। मरनेवाला हम लोगों के साथ बहुत सख़्ती से पेश आता था। मुर्दे की बुराई

नहीं करनी चाहिए, लेकिन वह हर वक़्त पिस्तौल दिखाता रहता था... धमकाता था।

नाद्या: और मेरे मौसा? वह बेहतर हैं?

यागोदिन: ज़ख़ार इवानोविच?

नाद्या: हां! वह दयालु हैं? या वह भी... आपके दिलों को ठेस लगाते हैं?

लेव्शिन: हम ऐसा नहीं कह रहे हैं...

यागोदिन (उदासी से): हमारे लिए ये सभी एक जैसे हैं। सख़्त और नर्म भी...

लेव्शिन (स्नेहपूर्वक): सख़्त भी मालिक है — नर्म भी मालिक है। बीमारी लोगों के बीच भेद नहीं करती...

यागोदिन (ऊब से): ज़ख़ार इवानोविच बेशक नर्मदिल हैं...

नाद्या: मतलब यह कि स्क्रोबोतोव से बेहतर हैं?

यागोदिन (धीरे से): डायरेक्टर तो अब ज़िन्दा नहीं हैं...

लेव्शिन: कुमारी जी, आपके मौसा भले आदमी हैं... लेकिन हमारा... हमारा इसी से कुछ विशेष भला नहीं होता।

तत्याना (चिढ़कर): चलो चलें, नाद्या... देखती नहीं कि ये हमारी बात समझना ही नहीं चाहते?

नाद्या (धीरे से): हां...

(वे दोनों चुपचाप वहां से चली जाती हैं। लेव्शिन

उन्हें जाते हुए, और फिर यागोदिन की तरफ़ देखता है। दोनों मुस्कराते हैं)

यागोदिन : परेशान कर डाला !

लेव्शिन : इनके लिए यह जानना दिलचस्प है कि ...

यागोदिन : शायद ये सोचती होंगी कि हम कुछ बक देंगे।

लेव्शिन : लड़की तो भली है ... अफ़सोस कि अमीर है !

यागोदिन : मात्वेई निकोलायेविच से सब कुछ बता देना चाहिए ... कि श्रीमती तत्याना हमसे पूछ-ताछ कर रही थीं ...

लेव्शिन : और ग्रेकोव को भी बता देंगे।

यागोदिन : जाने नीचे क्या हाल-चाल है। मालिकों को झुकना पड़ेगा ...

लेव्शिन : झुक जायेंगे। मगर कुछ अरसे बाद फिर से चोट करेंगे।

यागोदिन : हां, हमारा गला दबायेंगे ...

लेव्शिन : और तुम क्या समझते हो ?

यागोदिन : हा ... ं नींद आ रही है !

लेव्शिन : अभी सोने की बात मत करो ... देखो, जनरल आ रहा है।

(जनरल आता है। पोलोगी आदरपूर्वक उसके साथ-साथ पीछे चल रहा है। उनके पीछे कोन है।

अचानक ही पोलोगी जनरल का हाथ थाम लेता है)

जनरल : क्या बात है ?

पोलोगी : गड्ढा है !..

जनरल : ओह !.. मेज़ पर यह सब क्या है ? कुछ बेहूदा-सी चीज़ें ! तुम्हीं ने यह सब खाया है ?

यागोदिन : जी, हुज़ूर !.. कुमारी जी ने भी हमारे साथ खाया है।

जनरल : हां तो ? तुम लोग रखवाली कर रहे हो न ?

यागोदिन : जी, सरकार !.. हम पहरे पर हैं।

जनरल : अच्छी बात है ! मैं राज्यपाल से तुम्हारी चर्चा करूंगा। कितने हो तुम लोग यहां ?

लेव्शिन : दो।

जनरल : उल्लू ! मुझे दो तक गिनती आती है... तुम कुल कितने लोग हो ?

यागोदिन : तीस के क़रीब।

जनरल : हथियार हैं ?

लेव्शिन (यागोदिन से) : तिमोफ़ेई, कहां है वह तुम्हारी पिस्तौल ?

यागोदिन : यह रही।

जनरल : इसे घोड़े से मत पकड़ो... शैतान ! कोन, इन पाजियों को पिस्तौल पकड़नी सिखाओ। (**लेव्शिन से**) तुम्हारे पास पिस्तौल है ?

लेव्शिन : मेरे पास तो नहीं है !

जनरल : अगर बाग़ी अन्दर घुस आयें, तो तुम

लोग गोली चलाओगे ?

लेव्शिन : वे आयेंगे ही नहीं, सरकार ... योंही ज़रा-सी देर के लिए भड़क उठे थे और बस।

जनरल : लेकिन अगर घुस आये, तो ?

लेव्शिन : बात यह है कि वे लोग जल-भुन गये थे ... कारख़ाना बन्द किये जाने के फ़ैसले से ... कुछ के तो बाल-बच्चे हैं ...

जनरल : यह तुम क्या बक-बक करते जा रहे हो ? मैं पूछ रहा हूं कि गोली चलाओगे या नहीं ?

लेव्शिन : हम तो तैयार हैं, जनाब ... चलायेंगे, क्यों नहीं ? लेकिन चलाना नहीं जानते। और गोली चलाने के लिए हमारे पास कुछ है भी तो नहीं। कोई बन्दूक़ होती ... या फिर कोई तोप होती, तो भी बात थी।

जनरल : कोन ! इधर आओ, इन्हें पिस्तौल चलाना सिखाओ ... उधर नदी की तरफ़ चले जाओ ...

कोन (उदासी से) : हुज़ूर, मैं यह कहना चाहूंगा कि अब रात है। अगर हमने निशानेबाज़ी शुरू कर दी, तो लोग परेशान हो उठेंगे। यह देखने चले आयेंगे कि मामला क्या है। वैसे, आप जैसा चाहें।

जनरल : कल तक स्थगित कर दो !

लेव्शिन : कल तो सब कुछ शान्त हो जायेगा। कल तो कारख़ाना ही खुल जायेगा ...

जनरल : कौन खोल देगा कारख़ाना ?

लेव्शिन : ज़ख़ार इवानोविच। इस समय वह मज़दूरों मे यही बातचीत कर रहे हैं ...

जनरल: बेड़ा ग़र्क़! मैं तो सदा के लिए बन्द कर देता इस कारख़ाने को! सुबह-सुबह इसका भोंपू तो न बजता!..

यागोदिन: कुछ देर से बजे तो हमारे लिए भी अच्छा रहे।

जनरल: और मैं तुम सबको भूखों मारता! तुम्हारे दंगे-फ़साद ख़त्म हो जाते!

लेव्शिन: क्या हम दंगा-फ़साद करते हैं?

जनरल: चुप रहो! यहां खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? तुमको बाड़ के गिर्द चक्कर लगाना चाहिए... अगर कोई रेंगकर यहां आने की कोशिश करे, तो गोली मार देना... ज़िम्मेदारी मेरी होगी!

लेव्शिन: चलो, तिमोफ़ेई। अपनी फ़िस्तौल ले लो।

जनरल (उनके पीछे बड़बड़ाते हुए): फ़िस्तौल नहीं, पिस्तौल... गधे न हों कहीं के! हथियार का सही नाम लेना भी नहीं जानते...

पोलोगी: हुज़ूर, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि लोग-बाग आम तौर पर गंवार और जंगली होते हैं... अपने मामले का ही उदाहरण लेता हूं – मेरा अपना बगीचा है, मैं वहां अपने हाथों से सब्ज़ियां उगाता हूं...

जनरल: यह तो बहुत तारीफ़ की बात है!

पोलोगी: सारा ख़ाली वक़्त इसी काम में लगा देता हूं...

जनरल: काम तो सभी को करना चाहिए!

(**तत्याना और नाद्या आती हैं**)

तत्याना (दूर से) : आप इस तरह चिल्ला क्यों रहे हैं?

जनरल : क्योंकि लोग मुझमें झल्लाहट पैदा करते हैं! (**पोलोगी से**) हां, तो?

पोलोगी : मगर लगभग हर रात ये मज़दूर लोग मेरी मेहनत पर हाथ साफ़ कर जाते हैं...

जनरल : चुरा ले जाते हैं?

पोलोगी : जी, हुज़ूर! मैं क़ानून की दुहाई दे चुका हूं, मगर बेकार। हमारे इलाक़े में क़ानून के रखवाले हैं जनाब थानेदार और वह लोगों की मुसीबतों की रत्ती भर भी परवाह नहीं करते...

तत्याना (पोलोगी से) : सुनिये, आप ऐसी भारी-भरकम भाषा क्यों बोलते हैं?

पोलोगी (घबराकर) : मैं? माफ़ी चाहता हूं! तो... लेकिन मैं तो तीन बरस तक स्कूल में पढ़ा हूं और हर रोज़ अख़बार पढ़ता हूं...

तत्याना (मुस्कराते हुए) : ओह, तो यह मामला है!..

नाद्या : आप बड़े हास्यास्पद आदमी हैं, पोलोगी!

पोलोगी : अगर आपको ख़ुशी मिलती है, तो मैं ख़ुश हूं! हर आदमी को दूसरों को ख़ुशी देनी चाहिए...

जनरल : आपको मछलियां पकड़ना पसन्द है?

पोलोगी : कभी कोशिश नहीं की, जनाब!

जनरल (कंधे झटककर) : अजीब जवाब है।

तत्याना : किस चीज़ की कोशिश नहीं की ... मछलियां पकड़ने या किसी को पसन्द करने की ?

पोलोगी (संकोच से) : मछलियां पकड़ने की।

तत्याना : और पसन्द करने की ?

पोलोगी : वह तो करके देख चुका हूं।

तत्याना : आप शादीशुदा हैं ?

पोलोगी : शादी के तो सपने ही देखा करता हूं ... मगर क्योंकि सिर्फ़ पच्चीस रूबल महीना पाता हूं,

(निकोलाई और क्लेओपात्रा जल्दी से अन्दर आते हैं)

इसलिए ऐसी हिम्मत नहीं कर पाता।

निकोलाई (ग़ुस्से में) : बड़ी अजीब बात है ! बिल्कुल अन्धेरगर्दी है !

क्लेओपात्रा : उसने यह किया कैसे ! उसकी यह हिम्मत कैसे हुई ! ..

जनरल : क्या मामला है ?

क्लेओपात्रा (चिल्लाते हुए) : आपका भानजा – बड़ा ही दब्बू आदमी है ! उसने बलवाइयों की – मेरे पति के हत्यारों की – सभी मांगें मान ली हैं !

नाद्या (धीरे से) : मगर क्या वे सभी हत्यारे हैं ?

क्लेओपात्रा : यह तो मेरे पति की लाश का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है ... मेरी खिल्ली उड़ाई जा रही है ! उस वक़्त कारख़ाना खोला जा रहा, जब उस व्यक्ति को दफ़नाया भी नहीं गया जिसकी इन कमीनों ने इसलिए हत्या की कि उसने कारख़ाना बन्द कर दिया था !

नाद्या: मगर मौसा को डर है कि वे आग लगाकर सब कुछ भस्म कर डालेंगे ...

क्लेओपात्रा: आप बच्ची हैं ... आपको चुप रहना चाहिए।

निकोलाई: और उस छोकरे का भाषण! .. खुले तौर पर समाजवादी प्रचार था ...

क्लेओपात्रा: एक क्लर्क उनका अगुआ है, वही उन्हें सलाह-मशविरा देता है ... उसने यह कहने की हिम्मत की कि मरनेवाले ने ही लोगों को भड़काया था, इसीलिए जुर्म की नौबत आयी! ..

निकोलाई (नोटबुक में कुछ लिखते हुए): उस पर मुझे शक होता है। मामूली क्लर्क इतना समझदार नहीं हो सकता ...

तत्याना: आप सिन्त्सोव की चर्चा कर रहे हैं?

निकोलाई: हां।

क्लेओपात्रा: मुझे तो ऐसे महसूस होता है जैसे कि मेरे मुंह पर थूक दिया गया हो ...

पोलोगी (निकोलाई से): मुझे यह निवेदन करने की इजाज़त दीजिये कि श्रीमान सिन्त्सोव अख़बार पढ़ते हुए राजनैतिक विषयों की ख़ूब लम्बी-चौड़ी चर्चा किया करते हैं और मालिकों को भला-बुरा कहते रहते हैं ...

तत्याना (निकोलाई से): आपको यह सुनना अच्छा लगता है न?

निकोलाई (चुनौती देते हुए): हां, अच्छा लगता है! .. आप क्या मुझे शर्मिन्दा करना चाहती हैं?

तत्याना : मेरे ख़्याल में श्रीमान पोलोगी की यहां कोई ज़रूरत नहीं है...

पोलोगी (घबराकर) : मैं माफ़ी चाहता हूं... अभी जा रहा हूं! **(जल्दी से बाहर चला जाता है)**

क्लेओपात्रा : लो, वह इधर आ रहा है... मैं तो इसे देखना नहीं चाहती, देख नहीं सकती! **(झटपट बाहर चली जाती है)**

नाद्या : यह सब क्या हो रहा है?

जनरल : मुझ बूढ़े की ऐसे तमाशे देखने की उम्र नहीं रही। हत्यायें और दंगे-फ़साद करते हैं!.. आराम के लिए मुझे यहां बुलाने से पहले ज़ख़ार को इन सभी बातों का ख़्याल कर लेना चाहिए था...

(ज़ख़ार पास आ जाता है। वह उत्तेजित, मगर ख़ुश है। निकोलाई को देखकर वह ठिठक जाता है और घबराकर ऐनक ठीक करने लगता है)

सुनो तो, मेरे प्यारे भानजे... समझते भी हो कि तुमने क्या गड़बड़ कर डाली है?

ज़ख़ार : ज़रा रुक जाइये, मामा जी... निकोलाई वसील्येविच!

निकोलाई : कहिये जनाब...

ज़ख़ार : मज़दूर लोग बहुत ग़ुस्से में थे... मुझे लगा कि वे सब कुछ तहस-नहस कर डालेंगे... इसलिए मैंने उनकी बात मान ली कि कारख़ाना बन्द नहीं किया जायेगा। दिच्कोव के बारे में उनकी मांग भी मैंने स्वीकार कर ली है... मैंने इस शर्त पर ऐसा

किया है कि वे अपराधी को हमें सौंप देंगे। वे मुजरिम की तलाश कर रहे हैं...

निकोलाई (रूखेपन से) : उन्हें इसकी तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं। हत्यारे का तो हम उनकी मदद के बिना भी पता चला लेंगे।

ज़खार : मैं तो यही बेहतर समझता हूं कि वे ख़ुद ही तलाश करके उसे हमारे हवाले कर दें... हमने कल दोपहर के खाने के बाद कारख़ाना खोलने का फ़ैसला किया है...

निकोलाई : यह "हम" कौन हैं?

ज़खार : मैं...

निकोलाई : आह... सूचना देने के लिए धन्यवाद... मगर मैं यह समझता हूं कि मेरे भाई की मौत के बाद मुझे और उसकी बीवी को उसकी जगह मिलनी चाहिए। यक़ीनन आपको हम दोनों की सलाह लेनी चाहिए थी – अकेले ही फ़ैसला नहीं करना चाहिए था...

ज़खार : मगर मैंने आपको बुलाया तो था! सिन्त्सोव आपको बुलाने गया था... लेकिन आपने आने से इन्कार कर दिया था...

निकोलाई : भाई की मौत के दिन मुझसे कारोबार की बात करने की आशा करना तो सरासर ज़्यादती थी!

ज़खार : मगर कारख़ाने में तो आप गये ही थे!

निकोलाई : हां, गया था। उनके भाषण सुने थे... तो क्या हुआ?

ज़खार : लेकिन समझिये तो – पता चला है कि आपके भाई ने नगर के अफ़सरों को तार दिया था ... फ़ौजी भेजने के लिए। उनका जवाब भी आ गया है – कल दोपहर तक फ़ौजी यहां आ जायेंगे ...

जनरल : अहा ! फ़ौजी ? यह हुई न काम की बात ! फ़ौजी – यह कोई मज़ाक़ नहीं !

निकोलाई : यह अक़्लमन्दी का काम है ...

ज़खार : कह नहीं सकता ! फ़ौजी आयेंगे ... मज़दूर और अधिक भड़केंगे ... अगर हम कल कारख़ाना नहीं खोलेंगे, तो भगवान ही जानता है कि क्या नतीजा होगा ! मैं समझता हूं कि मैंने ठीक क़दम उठाया है ... कम से कम ख़ून-ख़राबा तो न होगा ...

निकोलाई : मेरा ख़्याल इसके उलट है ... मैं समझता हूं कि आपको ... उन लोगों की बात नहीं माननी चाहिए थी – और कुछ नहीं, तो मरनेवाले की स्मृति का आदर करते हुए ही ...

ज़खार : ओह, मेरे भगवान ... मगर आप इसके बारे में क्यों कुछ नहीं कहते कि ऐसी परिस्थिति के और भी बुरे नतीजे हो सकते थे !

निकोलाई : मेरी बला से।

ज़खार : यह ठीक है ... मगर मुझे तो ? मुझे तो मज़दूरों के साथ ही निबाह करना होगा ! और अगर उनका ख़ून बहाया जायेगा ... तो ... वे कारख़ाने की ईंट से ईंट बजा देंगे !

निकोलाई : मुझे इसका विश्वास नहीं होता।

जनरल : मैं भी यही सोचता हूं !

ज़ख़ार (दुखी होकर) : तो आप लोग मुझे ही दोषी समझते हैं ?

निकोलाई : हां, मैं तो यही समझता हूं !

ज़ख़ार (निष्कपटता से) : क्या ज़रूरत है ... क्या ज़रूरत है दुश्मनी की ? मैं तो सिर्फ़ यह चाहता हूं कि दंगे-फ़साद से, ख़ून-ख़राबे से बचा जाये। क्या शान्ति और समझदारी के जीवन को व्यावहारिक रूप देना असम्भव है ? आप मुझे घृणा की दृष्टि से देखते हैं और मज़दूर अविश्वास की ... लेकिन मैं तो सिर्फ़ भलाई चाहता हूं, सिर्फ़ भलाई !

जनरल : यह भलाई क्या है, कौन जानता है ? यह तो है एक बेतुका-सा शब्द। असली चीज़ है – काम करो ... क्यों, है न यही बात ?

नाद्या (आंसू भरकर) : आप चुप रहिये, नाना जी ! इनकी बातों पर कुछ ध्यान न दें, मौसा जी ... यह कुछ भी नहीं समझते !.. निकोलाई वसील्येविच, आप समझते क्यों नहीं यह बात ? आप इतने समझदार हैं ... आप क्यों नहीं विश्वास करते मौसा पर ?

निकोलाई : माफ़ी चाहता हूं, मगर मैं जा रहा हूं, ज़ख़ार इवानोविच। कारोबारी मामलों में बच्चों का दख़ल देना मुझे क़तई पसन्द नहीं है ... (**चला जाता है**)

ज़ख़ार : देखा तुमने, नाद्या ?..

नाद्या (ज़ख़ार का हाथ थामते हुए) : कोई बात नहीं, कोई बात नहीं ... असली चीज़ तो यह है कि मज़दूर सन्तुष्ट हो जायें ... वे इतने

ज़्यादा हैं, हमसे कहीं ज़्यादा!..

ज़ख़ार: ज़रा रुको... मुझे तुमसे कहना ही होगा... मैं बहुत नाराज़ हूं तुमसे!

जनरल: और मैं भी!

ज़ख़ार: तुम्हें मज़दूरों के साथ हमदर्दी है... तुम्हारी उम्र में यह स्वाभाविक है। मगर, प्यारी बेटी, तुम्हें एक हद से आगे नहीं बढ़ना चाहिए! आज सुबह तुम उसे – उस ग्रेकोव को – अपने साथ ले आयीं... मैं उसे जानता हूं। अच्छा समझदार नौजवान है। मगर उसके लिए तुम्हें अपनी मौसी से तो अच्छा ख़ासा तमाशा नहीं करना चाहिए था।

जनरल: अच्छी तरह से ख़बर लो इसकी!

नाद्या: मगर पूरी तफ़सील तो आप जानते नहीं...

ज़ख़ार: तुम यक़ीन करो कि तुमसे कहीं ज़्यादा जानता हूं! हमारे लोग बड़े गंवार और उजड्ड हैं... तुम्हारे उंगली पकड़ाते ही वे पंजा पकड़ लेंगे...

तत्याना (धीरे से): वैसे ही जैसे कि डूबता हुआ आदमी तिनके को पकड़ता है।

ज़ख़ार: वे जानवरों की तरह लालची हैं। हमें उन्हें बिगाड़ना नहीं, सभ्य बनाना चाहिए... समझीं! मेहरबानी करके इस बात पर विचार करना।

जनरल: तुम कह चुके, अब मेरी बारी है। अरी ओ लोमड़ी! मेरे साथ तो तुम बहुत बुरे ढंग से पेश आती हो, कल की छोकरी! मैं तुम्हें यह याद दिलाना चाहता हूं कि कोई चालीस साल बाद तुम्हारी मेरे बराबर उम्र होगी... तब शायद मैं तुम्हें

बराबरी के नाते बात करने दूं। समझ गयीं? कोन!

कोन (पेड़ों के बीच से): यह रहा, सरकार!

जनरल: वह कहां गया... क्या नाम है उसका?.. वह पेचकस।

कोन: कौनसा पेचकस?

जनरल: वह... मैं उसका नाम भूल गया... वह पो... पो...

कोन: ओह, पोलोगी! मालूम नहीं।

जनरल (तम्बू की तरफ़ जाते हुए): उसे तलाश करो!

(ज़खार सिर झुकाये हुए इधर-उधर टहलता है और अपने रूमाल से ऐनक का शीशा साफ़ करता है। नाद्या विचारों में डूबी हुई कुर्सी पर बैठी है। तत्याना खड़ी-खड़ी उन्हें देखती है)

तत्याना: हत्यारे का पता चल गया?

ज़खार: वे कहते हैं कि उन्हें मालूम नहीं, मगर पता लगा लेंगे... वे जानते तो ख़ैर सब कुछ हैं। मेरे ख़्याल में... (**वह इधर-उधर देखता और धीमी आवाज़ में कहता है**) मेरे ख़्याल में तो उन सबने मिलकर ऐसा फ़ैसला किया था... साज़िश है! यह सच है कि स्क्रोबोतोव ने उन्हें चिढ़ाया-भड़काया – वह तो उनकी खिल्ली भी उड़ाता था... ताक़त का नशा उसके लिए एक बीमारी बन चुका था... और इसलिए उन्होंने... बड़ी भयानक बात है, बड़ी सरल-सी लगने-वाली, मगर भयानक बात है! आदमी की हत्या

कर डाली, फिर भी बड़े विश्वास के साथ इस तरह आंखों में आंखें डालकर देखते हैं मानो उन्होंने कुछ किया ही नहीं... दिल दहलानेवाली सरलता है!

तत्याना : सुना है कि स्क्रोबोतोव गोली चलाने ही वाला था, जब किसी ने उसके हाथ से पिस्तौल छीन ली और...

ज़ख़ार : इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? गोली तो उन लोगों ने चलायी... स्क्रोबोतोव ने नहीं...

नाद्या : आप बैठ क्यों नहीं जाते?

ज़ख़ार : उसने फ़ौजी क्यों बुलाये? उन्होंने यह मालूम कर लिया... वे सब कुछ जानते हैं! इससे उसकी मौत और भी जल्दी आ गयी। मुझे तो ख़ैर कारख़ाना खोलना ही पड़ा... ऐसा न करता, तो बहुत देर के लिए उनके साथ मेरे सम्बन्ध भी बिगड़ जाते। आज के ज़माने में मज़दूरों से ज़्यादा नर्मी से पेश आना चाहिए, उनसे अच्छा बर्ताव करना चाहिए... कौन जाने, क्या अन्त हो? आज के ज़माने में समझदार आदमी को आम लोगों में अपने दोस्त बनाने चाहिए...

(मंच के पिछवाड़े में लेव्शिन दिखाई देता है)

कौन है वहां?

लेव्शिन : हम हैं... पहरा दे रहे हैं।

ज़ख़ार : कहो लेव्शिन, एक आदमी की जान लेकर अब तो कलेजा ठण्डा हो गया तुम लोगों का? हो गये न शान्त?

लेव्शिन : हम लोग तो हमेशा ही ऐसे शान्त रहते हैं, ज़खार इवानोविच।

ज़ख़ार (भर्त्सना करते हुए) : हां। और हत्या भी शान्ति से ही करते हैं?.. अरे हां, मैंने सुना है कि तुम कुछ नये-नये विचारों का प्रचार करते रहते हो कि रुपया-पैसा सब बेकार है, मालिकों और अफ़सरों की कोई ज़रूरत नहीं है, इत्यादि... लेव तोलस्तोय अगर ऐसी बातें करें, तो माफ़ किया जा सकता है... मेरा मतलब, बात कुछ समझ में आती है... मगर, मेरे दोस्त, तुम यह सब बन्द कर दो! कुछ भला नहीं होगा तुम्हारा इन बातों से।

(तत्याना और नाद्या दायीं तरफ़ से बाहर चली जाती हैं। वहां से सिन्त्सोव और याकोव की आवाज़ें सुनाई देती हैं। वृक्षों के पीछे से यागोदिन सामने आता है)

लेव्शिन (शान्त भाव से) : कौनसी ख़ास बातें करता हूं मैं? मैंने भी जीवन बिताया है, कुछ सोचा-विचारा है और वही कहता हूं...

ज़ख़ार : मालिक दरिन्दे नहीं होते, तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए... तुम जानते हो, मैं बुरा आदमी नहीं हूं, हमेशा तुम लोगों की मदद करने को तैयार रहता हूं, मैं भलाई चाहता हूं...

लेव्शिन (आह भरकर) : कौन अपनी बुराई चाहता है?

ज़ख़ार : तुम समझो – मैं तुम्हारी, तुम लोगों की भलाई चाहता हूं!

लेव्शिन : हम समझते हैं ...

ज़खार (ग़ौर से उसे देखते हुए) : नहीं, तुम ग़लती कर रहे हो। तुम लोग ऐसा नहीं समझते। बड़े अजीब लोग हो तुम ! कभी दरिन्दे, तो कभी बच्चे ... (**बाहर जाता है**)

(लेव्शिन लाठी का सहारा लेकर ज़खार को जाते देखता है)

यागोदिन : एक और उपदेश पिला गया ?

लेव्शिन : कुछ भी समझ में नहीं आता ... कुछ भी नहीं ... न जाने, कहना क्या चाहता है ? वह अपने सिवा कुछ भी नहीं समझ सकता ...

यागोदिन : कहता है कि भलाई चाहता है ...

लेव्शिन : हां, हां !

यागोदिन : आओ चलें ... वे लोग इधर आ रहे हैं ! ..

(लेव्शिन और यागोदिन बगीचे में दूर चले जाते हैं। तत्याना, नाद्या, याकोव और सिन्त्सोव मंच पर दायीं ओर दिखाई देते हैं)

नाद्या : हम लोग योंही चक्कर काटे जा रहे हैं, ऐसे चलते जा रहे हैं ... मानो सपने में घूम रहे हों।

तत्याना : कुछ खाना पसन्द करेंगे, मात्वेई निको-लायेविच ?

सिन्त्सोव : अगर चाय का एक गिलास मिल जाये, तो अच्छा रहे ... आज मैं इतना अधिक बोला हूं

कि गले में दर्द होने लगा है।

नाद्या: आपको किसी चीज़ से डर नहीं लगता?

सिन्त्सोव (मेज़ के पास बैठते हुए): मुझे? किसी चीज़ से डर नहीं लगता!

नाद्या: लेकिन मुझे डर लगता है!.. सभी कुछ गड़बड़-घुटाला हो गया है... अब मेरी समझ में नहीं आता कि कहां अच्छे लोग हैं और कहां बुरे।

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए): सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा। केवल आप सोचने से नहीं घबरायें... निडर होकर और हर चीज़ की तह तक सोचिये!.. कुल मिलाकर डरने की कोई बात नहीं है।

तत्याना: आपके ख़्याल में मामला ठण्डा पड़ चुका है?

सिन्त्सोव: हां। मज़दूरों की तो जीत ही कभी-कभार होती है। और फिर मामूली-सी जीत से वे बहुत ज़्यादा सन्तुष्ट हो जाते हैं...

नाद्या: आपको अच्छे लगते हैं ये मज़दूर लोग?

सिन्त्सोव: आप अच्छे लगने की बात कह रही हैं। मैं लम्बे अरसे तक इनके साथ रहा हूं, मैं इन्हें ख़ूब पहचानता हूं, इनकी ताक़त को अच्छी तरह जानता हूं... मुझे इनकी समझ-बूझ का भी विश्वास है...

तत्याना: इस बात का भी विश्वास है कि भविष्य इन्हीं के हाथों में है?

सिन्त्सोव : हां, इस बात का भी।

नाद्या: भविष्य... मैं इसकी कल्पना करने में असमर्थ हूं।

तत्याना (व्यंगपूर्वक मुस्कराते हुए) : बड़े चालाक हैं आपके ये सर्वहारा ! मैंने और नाद्या ने उनसे बात-चीत करने की कोशिश की ... मगर बड़ा अटपटा नतीजा निकला ...

नाद्या : हमें वह अच्छा नहीं लगा। बूढ़े ने हमसे यों बातचीत की मानो हम कोई बुरे लोग ... कोई जासूस हों ! मगर एक और साथी है इनका ... ग्रेकोव ... वह इस ढंग से पेश नहीं आता। बूढ़ा तो इस तरह मुस्कराता रहता है, मानो हम पर तरस खा रहा हो, जैसे कि हम रोगी हों, बीमार हों !..

तत्याना : तुम इतनी अधिक नहीं पियो, याकोव ! देखना भी अच्छा नहीं लगता।

याकोव : तो मैं क्या करूं ?

सिन्त्सोव : तो क्या और कुछ नहीं करने को ?

याकोव : कारोबार और काम-काज से मुझे नफ़रत है ... सख़्त नफ़रत है। बात यह है कि मैं तीसरी श्रेणी के लोगों में से हूं ...

सिन्त्सोव : वह कैसे ?

याकोव : बस, ऐसे ही ! लोगों को तीन श्रेणियों में बांटा जाता है – कुछ उम्र भर काम करते हैं, दूसरे रुपया जोड़ते हैं, तीसरे रोटी कमाने के लिए काम नहीं करते – वे इसे बेकार समझते हैं ! – ये लोग रुपया भी नहीं जोड़ सकते, क्योंकि यह बेवक़ूफ़ी की और बेहूदा बात है। तो मैं तीसरी श्रेणी के इन्हीं लोगों में से हूं। काहिल , उठाईगीरे, साधु-संन्यासी, भिखमंगे और दुनिया के दूसरे निखट्टू इसी श्रेणी में हैं।

नाद्या: आप ऐसी उबा देनेवाली बातें क्यों करते हैं, मौसा? आप बिल्कुल ऐसे नहीं हैं। बड़े नर्मदिल, बड़े दयालु हैं आप।

याकोव: दूसरे शब्दों में किसी काम का आदमी नहीं हूं। यह तो मैंने स्कूल के दिनों में ही समझ लिया था। बड़े होने से पहले ही लोग इन तीन श्रेणियों में बंट जाते हैं...

तत्याना: नाद्या ने ठीक ही कहा है कि तुम उबा देनेवाली बातें करते हो, याकोव...

याकोव: मैं सहमत हूं। मात्वेई निकोलायेविच, आपका क्या ख़्याल है, ज़िन्दगी की कोई शक्ल, कोई सूरत होती है?

सिन्त्सोव: हो सकती है...

याकोव: होती है। सदा जवान चेहरा होता है इसका। अभी कुछ ही वक़्त पहले तक ज़िन्दगी मेरे प्रति उदासीन थी। मगर अब कड़ाई से देखती और पूछती है... पूछती है–"तुम हो कौन? किधर मुंह उठाये जा रहे हो?" (**किसी कारणवश वह भयभीत-सा हो उठता है। मुस्कराना चाहता है, तो उसके होंठ कांपते हैं, वह अपनी बात नहीं कह पाता, उसकी सूरत बिगड़ जाती है और मुद्रा कारुणिक हो उठती है**)

तत्याना: ओह, हटाओ भी, याकोव!.. लो, सरकारी वकील आ रहा है... उसके सामने तुम ऐसी बातें मत करना।

याकोव: ठीक है।

नाद्या (धीरे से): सभी किसी चीज़ के इन्तज़ार

में हैं... और डरते हैं। मुझे मज़दूरों से मिलने-जुलने क्यों नहीं दिया जाता? यह मूर्खता है!

निकोलाई (पास आकर): चाय का एक गिलास मिल सकता है?

तत्याना: ज़रूर मिल सकता है।

(कुछ क्षण तक सभी चुप बैठे रहते हैं। निकोलाई खड़ा-खड़ा चाय में चम्मच हिलाता रहता है)

नाद्या: मैं यह जानना चाहती हूं कि मज़दूर मौसा पर विश्वास क्यों नहीं करते, और कुल मिलाकर...

निकोलाई (खिन्न होकर): ये लोग उन्हीं पर विश्वास करते हैं, जो इस विषय पर भाषण देते हैं – "दुनिया के मज़दूरो, एक हो!.." इन पर ये ख़ूब विश्वास करते हैं!

नाद्या (धीरे से और कंधे झटककर): जब मैं ये शब्द, मज़दूरों के एक हो जाने का यह नारा सुनती हूं... तो मुझे लगता है मानो इस दुनिया में हम – फ़ालतू हैं...

निकोलाई (जोश में आकर): बिल्कुल ठीक! हर सभ्य आदमी को ऐसा ही अनुभव करना चाहिए... और मेरा ख़्याल है कि जल्द ही एक दूसरा नारा सुनाई देगा – "दुनिया के तमाम सभ्य लोगो, एक हो!" अब यह नारा लगाने का वक़्त आ गया है! बिल्कुल वक़्त आ गया है! ये जंगली और वहशी लोग हज़ारों बरसों की सभ्यता को तहस-नहस करते,

पैरों तले रौंदते हुए आगे बढ़ रहे हैं सब कुछ हड़प जाने की चाह लेकर ...

याकोव : इनकी आत्मायें इनके पेटों में बसती हैं, इनके पिचके हुए भूखे पेटों में ... इनके ये पेट देखकर ही जाम की तरफ़ हाथ बढ़ जाता है। (**बियर का एक गिलास ढालता है**)

निकोलाई : लोगों की भीड़ बढ़ी आ रही है, लालच की शिकार होकर, एक ही इच्छा से एकता के सूत्र में बंधती हुई — खाने-हड़पने की इच्छा से प्रेरित होकर !

तत्याना (सोचते हुए) : भीड़ ... जहां देखो, वहीं भीड़ है — थियेटरों में, गिरजाघरों में ...

निकोलाई : ये लोग अपने साथ क्या ला सकते हैं ? बरबादी, सिर्फ़ बरबादी ... और देख लेना कि दूसरों की अपेक्षा हमारे यहां यह बरबादी कहीं अधिक बुरी तरह होगी ...

तत्याना : इन मज़दूरों के बारे में जब यह सुनती हूं कि वे अग्रणी लोग हैं, तो मुझे हमेशा ही बड़ा अजीब-सा लगता है ! यह मेरी समझ के बाहर की बात है ...

निकोलाई : और आप श्रीमान सिन्त्सोव ... ज़ाहिर है कि आप तो हमसे सहमत नहीं होंगे ?..

सिन्त्सोव (शान्त भाव से) : मैं सहमत नहीं हूं।

नाद्या : मौसी तत्याना, आपको याद है न, पैसे के बारे में उस बूढ़े ने क्या कहा था ? कितनी सादगी थी उसकी बात में !

निकोलाई : आप हमसे क्यों सहमत नहीं, श्रीमान सिन्त्सोव ?

सिन्त्सोव : क्योंकि मेरा सोचने का ढंग दूसरा है।

निकोलाई : बहुत वाजिब जवाब है! मगर शायद आप हमें अपने विचार बताना चाहेंगे ?

सिन्त्सोव : नहीं, मेरा मन नहीं चाहता।

निकोलाई : बहुत अफ़सोस की बात है! मुझे आशा है कि जब हम फिर मिलेंगे, तो आपका मूड बदला हुआ होगा। याकोव इवानोविच, यदि सम्भव हो, तो आपसे अनुरोध करता हूं कि मुझे घर तक छोड़ आइये! मेरा तो बहुत ही बुरा हाल है – नसें जैसी फटी जा रही हैं...

याकोव (मुश्किल से उठते हुए) : बड़ी ख़ुशी से। बड़ी ख़ुशी से...

(वे बाहर जाते हैं)

तत्याना : यह सरकारी वकील बड़ा ही नीच है। इसके साथ सहमत होना मुझे बुरा लगता है।

नाद्या (उठते हुए) : तो फिर क्यों सहमत होती हैं ?

सिन्त्सोव (हंसते हुए) : हां, क्यों सहमत होती हैं, तत्याना पाव्लोव्ना ?

तत्याना : इसलिए कि मैं उसी की तरह महसूस करती हूं...

सिन्त्सोव (तत्याना से) : आप सोचती तो उसी की तरह हैं, मगर महसूस दूसरी तरह करती हैं।

आप समझना चाहती है, मगर वह ऐसा नहीं चाहता ... उसे समझने की ज़रूरत नहीं है!

तत्याना : शायद बड़ा ही ज़ालिम आदमी है वह।

सिन्त्सोव : हां। शहर में वह राजनैतिक मुक़दमों की पैरवी करता है। बहुत ही बुरा रवैया होता है उसका बन्दियों के प्रति।

तत्याना : हां, आपके बारे में भी उसने अपनी नोटबुक में कुछ लिखा था।

सिन्त्सोव (मुस्कराकर) : ज़रूर लिखा होगा। पोलोगी से बातचीत करता रहता है ... कुल मिलाकर कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता! .. तत्याना पाव्लोव्ना, मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहता हूं ...

तत्याना : कृपया कीजिये, यक़ीन मानिये, अगर मैं उसे पूरा कर सकती हूं, तो ख़ुशी से करूंगी!

सिन्त्सोव : धन्यवाद। मेरे ख़्याल में फ़ौजी बुला लिये गये हैं ...

तत्याना : हां।

सिन्त्सोव : इसका मतलब है कि घरों की तलाशी ली जायेगी ... मेरी कुछ चीज़ें आप अपने पास छिपा सकेंगी?

तत्याना : आपके ख़्याल में वे आपके घर की तलाशी लेंगे?

सिन्त्सोव : बेशक लेंगे।

तत्याना : गिरफ़्तार भी कर सकते हैं?

सिन्त्सोव : ऐसा तो मैं नहीं सोचता। किसलिए? .. क्या इसलिए कि मैंने भाषण दिये? ज़ख़ार इवानोविच

जानते हैं कि मैंने अपने सभी भाषणों में मज़दूरों से अनुशासन में रहने को कहा है...

तत्याना : और आपका अतीत ?.. उसमें सब ठीक-ठाक है ?

सिन्त्सोव : अतीत तो मेरा है ही नहीं... तो आप मेरी मदद कर सकती हैं ? मैं आपको कष्ट तो न देता... लेकिन मेरा ख़्याल है कि जो इन चीज़ों को छिपा सकते हैं, कल उनकी भी तलाशी ली जायेगी। **(धीरे से हंसता है)**

तत्याना (घबराकर) : मैं साफ़-साफ़ बात करना चाहती हूं... इस घर में मेरी जो स्थिति है, उसके अनुसार मैं अपने कमरे को अपना नहीं मान सकती...

सिन्त्सोव : मतलब यह कि छिपा नहीं सकतीं ? ख़ैर, कोई बात नहीं...

तत्याना : कृपया बुरा नहीं मानिये !

सिन्त्सोव : ओह, नहीं ! आपके इन्कार को समझा जा सकता है...

तत्याना : लेकिन ज़रा रुकिये, मैं नाद्या से पूछती हूं... **(बाहर जाती है)**

(सिन्त्सोव उसे बाहर जाते देखता है और मेज़ पर हाथ से ताल देता है। किसी के फूंक-फूंककर क़दम रखते हुए पास आने की आवाज़ सुनाई देती है)

सिन्त्सोव (धीरे से) : कौन है ?

ग्रेकोव : मैं हूं। आप अकेले हैं ?

सिन्त्सोव : हां, मगर आस-पास बहुत से लोग हैं... कारख़ाने की क्या ख़बर है?

ग्रेकोव (ज़रा हंसकर) : यह तो आपको मालूम ही है कि उन्होंने गोली चलानेवाले को ढूंढ़ने का फ़ैसला किया है। अब वहां उसकी तलाश हो रही है। कुछ लोग शोर मचा रहे हैं कि "समाजवादियों ने उसकी हत्या की है!" – कुल मिलाकर कमीने लोग अपना घिनौना राग अलापने लगे हैं।

सिन्त्सोव : आपको मालूम है – किसने गोली चलायी है?

ग्रेकोव : अकीमोव ने।

सिन्त्सोव : सच?.. ओह... उससे तो मुझे ऐसी आशा न थी! ऐसा भला और समझदार नौजवान है...

ग्रेकोव : गर्ममिज़ाज है वह। अपने को पेश करना चाहता है... उसकी बीवी है, एक बच्चा है... दूसरा बच्चा होनेवाला है... अभी-अभी मेरी लेव्शिन से बात हुई है। वह तो हवाई बातें करता है – कहता है कि अकीमोव की जगह किसी दूसरे, किसी कम ज़रूरी आदमी को पेश कर देना चाहिए...

सिन्त्सोव : अजीब आदमी है... मगर यह है बहुत अफ़सोस की बात!

(**ख़ामोशी**)

सुनिये ग्रेकोव, सब कुछ ज़मीन में गाड़ दीजिये... कोई दूसरी जगह नहीं है छिपाने के लिए।

ग्रेकोव : मुझे जगह मिल गयी है। तार-बाबू सब

कुछ रखने को तैयार हो गया है। मगर आपको यहां से खिसक जाना चाहिए, मात्वेई निकोलायेविच!

सिन्त्सोव: नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊंगा।

ग्रेकोव: आपको गिरफ़्तार कर लेंगे।

सिन्त्सोव: कर लें! मेरे खिसक जाने से मज़दूरों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

ग्रेकोव: यह तो सही है... लेकिन आपके लिए अफ़सोस होता है...

सिन्त्सोव: यह बेकार की बात है। मगर अकीमोव के लिए ज़रूर अफ़सोस होता है।

ग्रेकोव: हां। और हम उसकी कुछ भी मदद नहीं कर सकते। वह अपने को पेश करना चाहता है... हंसी आती है आपको मालिकों की मिल्कियत के रक्षा-संचालक के रूप में देखकर!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए): मजबूरी जो ठहरी! लगता है कि मेरे साथी सो रहे हैं?

ग्रेकोव: नहीं, इकट्ठे होकर सोच-विचार कर रहे हैं। रात बड़ी सुहावनी है!

सिन्त्सोव: मैं भी यहां से चला गया होता... मगर इन्तज़ार कर रहा हूं... शायद आपको भी गिरफ़्तार कर लिया जायेगा।

ग्रेकोव: इकट्ठे ही जेल काटेंगे! मैं चल दिया। **(बाहर जाता है)**

सिन्त्सोव: अलविदा।

(तत्याना आती है)

तत्याना पाव्लोव्ना, आपको कष्ट करने की ज़रूरत नहीं। सब इन्तज़ाम हो गया है। अलविदा!

तत्याना : मुझे सचमुच बहुत अफ़सोस है...

सिन्त्सोव : शुभरात्रि! (**बाहर जाता है**)

(तत्याना सैंडलों की नोक को देखते हुए चुपचाप इधर-उधर टहलती है। याकोव आता है)

याकोव : तुम सोती क्यों नहीं?

तत्याना : मन नहीं करता। मैं तो यहां से जाने की सोच रही हूं...

याकोव : हुं। लेकिन मेरे जाने की कोई जगह नहीं... मैं तो सभी महाद्वीप, सभी द्वीप पार कर आया हूं।

तत्याना : यहां जीना मुश्किल है। हर चीज़ डोलती है और अजीब ढंग से सिर चकराता है। झूठ बोलना पड़ता है और मुझे यह पसन्द नहीं।

याकोव : हुं... तुम्हें यह पसन्द नहीं... यह मेरा दुर्भाग्य है... मेरी बदक़िस्मती है...

तत्याना (अपने आपसे) : मगर अभी-अभी मैंने झूठ बोला है। नाद्या उन चीज़ों को छिपाने के लिए निश्चय ही तैयार हो जाती... लेकिन मुझे कोई अधिकार नहीं है उसे उस राह पर धकेलने का।

याकोव : यह तुम किसकी चर्चा कर रही हो?

तत्याना : मैं? योंही... सब कुछ बहुत अजीब है... कुछ समय पहले तक हर चीज़ साफ़ और सीधी-सादी लग रही थी, इच्छाएं स्पष्ट थीं...

याकोव (धीरे से) : प्रतिभाशाली पियक्कड़ों,

प्यारे निठल्लों और ख़ुशी देनेवाले ऐसे ही दूसरे लोगों में अब दुनिया की दिलचस्पी नहीं रही!.. जब तक हम हर दिन की ज़िन्दगी की ऊब मिटाते रहे, लोग हमारी तरफ़ खिंचे रहे... मगर ज़िन्दगी में दिन पर दिन अधिक उथल-पुथल होती जा रही है... लोग हम पर आवाज़ें कसने लगे हैं – "ओ मसख़रो, ओ मौजियो, मंच से हट जाओ!.." मगर मंच – वह तो तुम्हारा क्षेत्र है, तत्याना!

तत्याना (बेचैनी से) : मेरा क्षेत्र?.. मैं सोचती थी कि मंच पर मेरे पांव अच्छी तरह से जमे हुए हैं... मैं काफ़ी ऊपर उठ सकती हूं... **(दुखी होते हुए, ज़ोर से)** उन लोगों के सामने मेरे दिल को बड़ी ठेस लगती है, झेंप महसूस होती है जो बुझी-बुझी नज़रों से मेरी ओर देखते हैं और चुपचाप यह कहते हैं – "हम यह जानते हैं। यह सब पुराना और ऊब-भरा है!" उनके सामने मेरा दिल बैठ जाता है, अपने को निहत्था अनुभव करती हूं... मैं उन्हें अपने साथ नहीं बहा सकती, उनके दिलों में तूफ़ान पैदा नहीं कर सकती!.. मैं डर और ख़ुशी से कांपना चाहती हूं, मैं आग, जोश और नफ़रत से भरे शब्द बोलना चाहती हूं... मैं छुरी की तरह तेज़ और लपटों की तरह दहकते शब्द बोलना चाहती हूं, मैं दिल खोलकर और दहशत पैदा करते हुए लोगों के सामने इनकी बौछार करना चाहती हूं!.. लोग भड़क उठें, चीख़े-चिल्लायें, भागें-दौड़ें!.. मगर ऐसे शब्द ही नहीं हैं। मैं उन्हें रोक लूंगी और फिर से आशा, प्यार और

ख़ुशी से भरे फूलों की तरह ख़ूबसूरत शब्द उनके सामने बिखरा दूंगी !.. वे आंसू बहायेंगे ... और मैं भी ... प्यारे-प्यारे आंसू बहाऊंगी !.. वे वाह-वाह कर उठेंगे, मुझे फूलों से लाद देंगे ... हवा में उछालेंगे ... घड़ी भर के लिए लोग पूरी तरह से मेरी मुट्ठी में होंगे ... घड़ी भर के लिए मुझे ज़िन्दा होने का एहसास हो सकेगा ... इसी एक क्षण में मेरी सारी ज़िन्दगी होगी ! मगर ऐसे जानदार शब्द ही नहीं हैं।

याकोव : हम सभी केवल क्षणों में जीना जानते हैं ...

तत्याना : जो कुछ बढ़िया है, वह सदा क्षणिक ही होता है। कितना चाहती हूं मैं दूसरे ही ढंग के लोग देखना – दूसरों की मदद को दौड़नेवाले लोग – दूसरे ढंग की ज़िन्दगी, ऐसी दौड़-धूप वाली नहीं ... ऐसी ज़िन्दगी जिसमें कला सभी के लिए और हमेशा ज़रूरी हो ! ताकि मैं फ़ालतू न मानी जाऊं ...

(याकोव आंखें फाड़-फाड़कर अन्धेरे में घूरता है)

तुम इतनी ज़्यादा क्यों पीते हो ? शराब ने तुम्हें तबाह कर डाला ... कभी तुम ख़ूबसूरत आदमी थे ...

याकोव : हटाओ ...

तत्याना : तुम महसूस करते हो कि मेरे दिल पर क्या गुज़रती है ?

याकोव (भयपूर्ण मुद्रा बनाकर) : चाहे मैं कितनी भी क्यों न पिये रहूं, समझता सब कुछ हूं ... यही मेरा दुर्भाग्य है ! कमबख़्त दिमाग़ तो हठपूर्वक काम करता रहता है ... हमेशा काम करता रहता है ! · और हर

समय मेरी आंखों के सामने एक तोबड़ा – चौड़ा, बहुत बड़ी-बड़ी आंखोंवाला और गन्दा तोबड़ा – उभरता रहता है। वह पूछता रहता है – "तो?" समझती हो, सिर्फ़ इतना ही पूछा करता है – "तो?"

पोलीना (भागती हुई आती है) : तत्याना!.. मैं मिन्नत करती हूं, जल्दी से उधर चलो, तत्याना... वह क्लेओपात्रा तो बिल्कुल पागल हो गयी है! सभी की बेइज़्ज़ती कर रही है... शायद तुम उसे शान्त कर सको।

तत्याना (दुखी होकर) : मुझे तो अपने पचड़ों से अलग ही रहने दो! तुम लोग जल्दी से एक दूसरे को नोच खाओ, मगर इधर-उधर भागते नहीं फिरो, दूसरों के आड़े मत आओ!

पोलीना (चौंककर) : तत्याना!.. यह तुम क्या कह रही हो? तुम्हें हो क्या गया है?

तत्यांना : आप लोग क्या चाहते हैं? क्या चाहिए आपको?

पोलीना : ज़रा उसे देखो तो... वह इधर आ रही है!

ज़खार (मंच पर अभी नज़र न आते हुए) : मैं आपकी मिन्नत करता हूं, अब तो चुप हो जाइये।

क्लेओपात्रा (मंच से बाहर ही) : आपको... आपको चुप रहना चाहिए मेरे सामने!..

पोलीना : वह यहां भी चिल्लायेगी... यहां ये गंवार घूम रहे हैं... यह बड़ी भयानक बात है! तत्याना, मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूं...

ज़खार (मंच पर आते हुए) : मुझे लगता है कि मैं पागल हो जाऊंगा !

क्लेओपात्रा (उसके पीछे-पीछे) : आप मुझसे भागकर नहीं जा सकते, आपको सुननी ही होगी मेरी बात !.. आपने मज़दूरों को सिर पर चढ़ाया, आप उनसे इज़्ज़त पाना चाहते हैं और आपने एक इनसानी ज़िन्दगी को उनके सामने ऐसे फेंक दिया, जैसे कोई ग़ुर्राते हुए कुत्तों के सामने मांस का टुकड़ा फेंकता है ! आप दूसरों की बलि देकर, दूसरों का ख़ून भेंट करके मानवतावादी बने बैठे हैं !

ज़खार : यह क्या कह रही है ?

याकोव (तत्याना से) : यही अच्छा होगा कि तुम यहां से चली जाओ। **(ख़ुद जाता है)**

पोलीना : सुनिये, श्रीमती जी ! हम बाइज़्ज़त लोग हैं। हम यह हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेंगे कि आप जैसी नेकनाम औरत हम पर चीख़े-चिल्लाये ...

ज़खार (डरकर) : पोलीना ... भगवान के लिए चुप रहो !

क्लेओपात्रा : किसलिए आप बाइज़्ज़त लोग हैं ? इसलिए कि राजनीति की बातें करते हैं ? जनता के दुख-दर्द का रोना रोते हैं ? प्रगति और मानवता का गाना गाते हैं ?

तत्याना : क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना !.. बस, अब काफ़ी हो चुका !

क्लेओपात्रा : मैं आपसे बात नहीं कर रही हूं ! आपका कोई मतलब नहीं है इस मामले में टांग अड़ाने

का! आपका कोई सरोकार नहीं है इस चीज़ से!.. मेरा पति एक ईमानदार आदमी था... साफ़गो और ईमानदार... आपकी तुलना में वह आम लोगों को ज़्यादा अच्छी तरह से जानता-समझता था... आप लोगों की तरह बढ़-चढ़कर बातें नहीं करता था... आप लोगों ने अपनी कमीनी हिमाकतों से उसके साथ धोखा किया है, उसे मार डाला है!

तत्याना (पोलीना और ज़खार से) : आप दोनों यहां से चले जायें!

क्लेओपात्रा : मैं ही चली जाती हूं!.. फूटी आंखों नहीं देख सकती मैं आपको... आप सभी को! (**बाहर जाती है**)

ज़खार : कैसी सिरफिरी औरत है!..

पोलीना (आंसू भरकर) : हमें सब कुछ छोड़-छोड़कर यहां से चले जाना चाहिए... कौन सहन करेगा ऐसी बेइज़्ज़ती...

ज़खार : किसलिए यह ऐसे चीख़-चिल्ला रही है?.. अगर उसे अपने पति से प्यार होता या उसके साथ सुख-चैन की ज़िन्दगी बिताती होती, तब भी कोई बात थी... मगर यह तो हर साल दो नये प्रेमी बनाती है... और फिर चीख़-चिल्ला भी रही है!

पोलीना : कारख़ाना बेच देना चाहिए!

ज़खार (खीझ से) : सब कुछ छोड़ देना चाहिए, सब कुछ बेच देना चाहिए... बात इतनी आसान नहीं, मामला ऐसे नहीं है! हमें अच्छी तरह से सोचना-

समझना चाहिए!.. मैं अभी-अभी निकोलाई वसील्ये-विच से बात कर रहा था ... तभी यह औरत आ धमकी और हमारी बातचीत बीच में रह गयी ...

पोलीना : वह हमसे नफ़रत करता है, वह निकोलाई वसील्येविच बड़ा ज़हरीला आदमी है!

ज़ख़ार (सन्तुलित होकर) : वह बेहद गुस्से में है, उसे भारी धक्का लगा है, मगर समझदार आदमी है। वह हमसे नफ़रत करे, इसका कोई कारण भी नहीं है। अब, मिख़ाईल की मौत के बाद उसके कुछ हित उसे मेरे साथ एक सूत्र में भी जोड़ते हैं ... हां!

पोलीना : उस पर मेरा दिल नहीं जमता, मुझे उससे डर लगता है ... वह तुम्हें धोखा देगा!

ज़ख़ार : ओह पोलीना, यह बेकार की बात है!.. वह चीज़ों को ख़ूब अच्छी तरह से समझता है ... हां! हक़ीक़त यह है कि मज़दूरों के मामले में मैंने ढुलमुल नीति से काम लिया ... यह तो मुझे मानना ही होगा। शाम को जब मैंने उनसे बातचीत की ... ओह, पोलीना, बहुत ही ज़्यादा दुश्मनी भरी हुई है उन लोगों के दिलों में ...

पोलीना : मैंने तुमसे कहा था ... कहा था न! ये लोग हमेशा दुश्मन रहेंगे!

(तत्याना बाहर जाती है और धीरे से हंसती है। पोलीना उसकी तरफ़ देखती है और अपनी बात जारी रखते हुए जान-बूझकर ऊंची आवाज़ में कहती है)

सभी हमारे दुश्मन हैं! सभी ईर्ष्या करते हैं... इसी-लिए हम पर झपटते हैं!..

जख़ार (तेज़ी से इधर-उधर टहलते हुए) : बेशक... कुछ हद तक तो ऐसा ही है! निकोलाई वसील्येविच का कहना है कि यह वर्गों का नहीं, नसलों का संघर्ष है – गंवारों और सभ्य लोगों का!.. ज़ाहिर है कि यह तो बात को बहुत भद्दे ढंग से, बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना होगा... लेकिन अगर सोचा जाये कि हम सभ्य लोगों ने, हमीं ने विज्ञान, कला और दूसरी तरह-तरह की चीज़ों की सृष्टि की है... समानता... शारी-रिक समानता... हुं... ख़ैर, ठीक है। मगर पहले इनसान तो बनो, सभ्य तो हो जाओ... और फिर हम बात करेंगे समानता की!..

पोलीना (ध्यान से सुनते हुए) : यह तो तुम नयी बातें कर रहे हो...

जख़ार : ये बातें अभी कच्ची हैं, अभी मैंने इन पर अच्छी तरह सोच-विचार नहीं किया... ख़ुद को समझना चाहिए, यही असल चीज़ है!

पोलीना (उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए) : तुम बहुत ही नर्मदिल हो, मेरे दोस्त। इसीलिए तुम्हें इतनी परेशानी होती है!

जख़ार : हमारी जानकारी बहुत थोड़ी है और हम अक्सर चकित होते रहते हैं... उस सिन्त्सोव को ही ले लो – उसने मुझे हैरान कर दिया, मैं उसे चाहने भी लगा... कितनी सादगी है उसमें, कितनी सुलझी हुई तर्क-शक्ति है!.. अब पता चला है कि वह समाज-

वादी है, यही है उसकी सादगी और तर्क-शक्ति का रहस्य!..

पोलीना: हां, हां... लोग उसकी तरफ़ ध्यान देते हैं... कैसी मनहूस सूरत है उसकी!.. मगर तुम्हें आराम करना चाहिए... चलें न?

ज़ब्बार (उसके पीछे जाते हुए): एक और मज़दूर है – ग्रेकोव... बड़ा गुस्ताख़ है! मैं और निकोलाई वसील्येविच अभी उसी के भाषण की चर्चा कर रहे थे... अभी छोकरा ही है... मगर ऐसे बात करता है... ऐसी बेहयाई से...

(वे दोनों जाते हैं। निस्तब्धता। कहीं से गाना सुनाई देता है, फिर धीमी-धीमी आवाज़ें। यागोदिन, लेव्शिन तथा र्याब्त्सोव आते हैं। र्याब्त्सोव युवक है, वह बार-बार अपने सिर को पीछे की तरफ़ झटकता है। उसका चेहरा गोल है और उस पर ख़ुशमिज़ाजी नज़र आती है। तीनों वृक्षों के निकट रुकते हैं)

लेव्शिन (धीरे और रहस्यपूर्ण ढंग से): यह सभी की भलाई का सवाल है, पावेल।

र्याब्त्सोव: मैं समझता हूं...

लेव्शिन: यह सब की भलाई का, इन्सानियत का सवाल है... भैया, आजकल अच्छे लोगों की बड़ी सख़्त ज़रूरत है। लोगों में आजकल जागृति आ रही है, वह ध्यान से दूसरों की बातें सुनते हैं, पढ़ते हैं, सोचते-समझते हैं... और जो लोग कुछ समझ गये हैं, वे हमारे लिए बड़ी क़ीमत रखते हैं...

यागोदिन : यह बिल्कुल सही है, पावेल ...

र्याब्त्सोव : मैं यह जानता हूं ... तय हो गया। मैं इसके लिए तैयार हूं।

लेव्शिन : योंही तैयार होने की बात नहीं, तुम्हें मामले की तह तक पहुंचना चाहिए ... तुम अभी जवान हो और जुर्म को अपने सिर लेने का मतलब है साइबेरिया ...

र्याब्त्सोव : कोई बात नहीं, मैं वहां से भाग जाऊंगा ...

यागोदिन : हो सकता है कि साइबेरिया जाने की सज़ा न भी दी जाये!.. कालेपानी की सज़ा के लिए अभी तुम्हारी उम्र नहीं हुई ...

लेव्शिन : हमें तो यही मानना चाहिए कि ऐसी कड़ी सज़ा दी जायेगी! इस मामले में ज़्यादा से ज़्यादा ख़तरनाक बात सोचना ही बेहतर है। अगर आदमी साइबेरिया से भी नहीं डरता, तो इसका मतलब है कि उसने पक्का इरादा बना लिया है!

र्याब्त्सोव : मैं पक्का इरादा बना चुका हूं।

यागोदिन : जल्दी मत करो। अच्छी तरह सोच-समझ लो ...

र्याब्त्सोव : सोचने-समझने को रखा ही क्या है? हत्या की गयी है और अब किसी को तो उसके ख़ून की क़ीमत चुकानी ही होगी ...

लेव्शिन : हां! ऐसा करना ही होगा! अगर कोई एक अपने को पेश नहीं करेगा, तो बहुतों को परेशान किया जायेगा। वे हमारे उन सबसे अच्छे लोगों को

तंग करेंगे, पावेल, जो हमारे साझे ध्येय के लिए तुमसे कहीं अधिक महत्त्व रखते हैं।

र्याब्त्सोव : मैं तो इसका विरोध नहीं कर रहा हूं। नौजवान होते हुए भी सब कुछ समझता हूं। हमें एक दूसरे को मज़बूती से थामना है... ज़ंजीर की कड़ियों की तरह...

लेव्शिन (निःश्वास छोड़कर) : बिल्कुल ठीक।

यागोदिन (मुस्कराते हुए) : हम एकजुट हो जायेंगे, उनके गिर्द घेरा डाल देंगे, घेरा धीरे-धीरे तंग होकर उन्हें दबाता जायेगा – और बस, क़िस्सा ख़त्म।

र्याब्त्सोव : तो तय हो गया। इसमें सोचने की बात ही क्या है? मेरा न कोई आगे है, न पीछे। इसलिए मुझे ही यह काम करना चाहिए। अफ़सोस सिर्फ़ इतना है कि ऐसे ख़ून के लिए...

लेव्शिन : उसके ख़ून के लिए नहीं, अपने साथियों के लिए।

र्याब्त्सोव : नहीं, मेरा मतलब यह था कि वह तो बेहद नफ़रत के लायक़ था... बड़ा ज़हरीला था...

लेव्शिन : इसलिए ज़हरीले को ही तो मारना चाहिए। भले लोग अपनी मौत मरते हैं। लोगों को उनसे कोई परेशानी नहीं होती।

र्याब्त्सोव : तो बात ख़त्म?

यागोदिन : हां, पावेल! तो कल सुबह तुम उनसे कह दोगे?

र्याब्त्सोव : कल तक इन्तज़ार करने की क्या ज़रूरत है? मैं अभी जाकर कह देता हूं।

लेव्शिन : नहीं, कल सुबह ही कहना बेहतर होगा। रात मां की गोद की तरह होती है। अच्छी तरह सोच-समझ लेना ...

र्याब्त्सोव : अच्छी बात है ... मैं अब जाता हूं।

लेव्शिन : भगवान तुम्हारा भला करे!

यागोदिन : जाओ भाई, दृढ़ मन से जाओ ...

(र्याब्त्सोव धीरे-धीरे जाता है। यागोदिन लाठी को घुमाता हुआ उसे देखता रहता है। लेव्शिन आकाश को ताकता है)

लेव्शिन (धीरे से) : आजकल तो बहुत से भले लोग सामने आ रहे हैं, तिमोफ़ेई!

यागोदिन : अच्छा मौसम ... अच्छी फ़सल!

लेव्शिन : अगर ऐसा ही रंग रहा तो हम बाज़ी मार लेंगे।

यागोदिन (दुखी होते हुए) : लड़के के लिए दुख होता है ...

लेव्शिन (धीरे से) : दुख कैसे नहीं होगा! मुझे भी दुख हो रहा है। बेचारा जेल जायेगा – और सो भी ख़ून का जुर्म क़बूल करके। उसके दिल को सिर्फ़ इतनी ही तसल्ली है कि वह अपने साथियों के लिए सब कुछ कर रहा है।

यागोदिन : हां ...

लेव्शिन : तुम अपने होंठ सिये रहना ! ओह !.. जाने क्यों पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया अकीमोव ने ! ख़ून करने से क्या मिलता है ? कुछ भी तो नहीं ! एक कुत्ते को मारो कि मालिक झट से दूसरा ख़रीदकर सामने ला खड़ा करते हैं... बात वहीं की वहीं रह जाती है !

यागोदिन (दुखी होकर) : हमारे जैसे कितने लोग मर रहे हैं...

लेव्शिन : चलो, चौकीदार ! हमें तो मालिकों की मिल्कियत की रखवाली करनी है !

(वे दोनों जाते हैं)

हे भगवान !..

यागोदिन : क्या बात है ?

लेव्शिन : बहुत मुश्किल है ज़िन्दगी ! काश, हम इसे जल्दी से संवार सकते !

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

(बार्दिन के मकान का एक बड़ा कमरा। पीछे की दीवार में चार खिड़कियां हैं और एक दरवाज़ा, जो सभी बरामदे में खुलते हैं। शीशे की खिड़कियों के पीछे बहुत-से सिपाही, फ़ौजी पुलिसवाले और मज़दूर दिखाई देते हैं। लेव्शिन और ग्रेकोव भी इन्हीं मज़दूरों में हैं। कमरा ऐसे लगता है, मानो वहां कोई भी न रहता हो। इसमें थोड़ा-सा फ़र्नीचर है और वह भी पुराना और बेढंगा। दीवारों की अबरी जहां-तहां फटी हुई है। दायीं ओर एक बड़ी मेज़ टिका दी गयी है। कोन बड़े ग़ुस्से में कुर्सियां खींच-खींचकर मेज़ के गिर्द रखता दिखाई देता है और अग्राफ़ेना फ़र्श पर झाड़ू लगा रही है। बायीं और दायीं तरफ़ की दीवारों में दो पल्लोंवाले बड़े-बड़े दरवाज़े।)

अग्राफ़ेना : हां, तो मुझ पर बिगड़ने की कोई वजह नहीं है...

कोन : बिगड़ नहीं रहा हूं। मेरी बला से, सब के सब जहन्नुम में चले जायें... शुक्र है भगवान का कि मैं तो जल्द ही क़ब्र में पहुंचनेवाला हूं... मेरे दिल की धड़कन रुकती-सी जा रही है।

अग्राफ़ेना : सभी मर जायेंगे... इसमें डींग हांकने की कोई बात नहीं...

कोन : बहुत ज़हर पी चुका ... अब बिल्कुल तंग आ गया हूं ! पैंसठ साल की उम्र होने लगी ... मैं अब और अधिक नहीं पचा सकता झूठी और बेहूदा बातें ... कितने लोगों को इकट्ठा करके बरसात में भीगने के लिए खड़ा कर दिया गया है ...

(बायीं ओर के दरवाज़े से कप्तान बोबोयेदोव और निकोलाई प्रवेश करते हैं)

बोबोयेदोव (ख़ुश होकर) : तो यह कमरा अदालत का काम देगा ? बहुत ख़ूब ! और आप सरकारी वकील के तौर पर काम कर रहे हैं ?

निकोलाई : हां , हां ! कोन , सार्जेन्ट को बुलाओ !

बोबोयेदोव : हां , तो अब इस तरह से सजायेंगे हम यह गुलदस्ता – बीच में होगा ... अ ... अ ... क्या नाम है उसका ?

निकोलाई : सिन्त्सोव ।

बोबोयेदोव : सिन्त्सोव ... बहुत ख़ूब ! और उसके चारों तरफ़ होंगे "दुनिया के मज़दूर"? तो ऐसी बात है ! तबीयत ख़ुश हो रही है इस सब से ... इस जगह का मालिक प्यारा-सा आदमी है ... बहुत ही प्यारा-सा ! हमारी तो उसके बारे में दूसरी ही राय थी । मैं इसकी भाभी को जानता हूं , वह वोरोनेज के थियेटर में अभिनय करती थी ... कमाल की अभिनेत्री है वह ।

(बरामदे की तरफ़ से क्वाच अन्दर आता है)

क्या ख़बर है , क्वाच ?

क्वाच : सभी की तलाशी ली जा चुकी है, हुज़ूर !

बोबोयेदोव : अच्छा। तलाशी में कुछ मिला ?

क्वाच : कुछ भी नहीं... सब कुछ छिपाया जा चुका था ! मैं आपको यह बताना चाहता हूं, हुज़ूर, कि थानेदार बहुत उतावली मचाता है – अच्छी तरह से काम नहीं करने देता।

बोबोयेदोव : पुलिसवाले तो हमेशा ही ऐसा करते हैं ! गिरफ़्तार किये गये लोगों के यहां से कुछ मिला ?

क्वाच : लेव्शिन के घर से कुछ चीज़ें मिली हैं। देव-प्रतिमा के पीछे से, हुज़ूर।

बोबोयेदोव : सब कुछ मेरे कमरे में पहुंचा दो।

क्वाच : जो हुक्म, हुज़ूर ! पलटन से अभी-अभी जो युवा फ़ौजी आया है...

बोबोयेदोव : तो ?

क्वाच : वह भी लापरवाही से काम कर रहा है।

बोबोयेदोव : उससे तुम ख़ुद निपट लो। जाओ !

(**क्वाच चला जाता है**)

बड़ा तेज़ आदमी है यह क्वाच ! देखने में कुछ जंचता नहीं, थोड़ा बेवक़ूफ़ भी लगता है, मगर सुराग़ लगाने में एक नम्बर है ! शिकारी कुत्ते जैसी नाक है इसकी !

निकोलाई : बोग्दान देनीसोविच, उस क्लर्क की तरफ़ आप ख़ास तौर पर ध्यान दें...

बोबोयेदोव : सो तो देंगे ही, देंगे ही! अच्छी तरह से ऐंठेंगे उसके कान!

निकोलाई : मैं सिन्त्सोव का नहीं, पोलोगी का ज़िक्र कर रहा हूं। मेरे ख़्याल में उससे हमारा ख़ासा काम निकल सकता है।

बोबोयेदोव : जिससे हम बातचीत कर रहे थे? हां, हां, हम उसे कोई काम सौंप देंगे...

(निकोलाई मेज़ के पास जाकर काग़ज़ात को ढंग से उस पर रखता है)

क्लेओपात्रा (दायीं तरफ़ के दरवाज़े से थोड़ा बाहर निकलकर) : चाय का एक और गिलास लेंगे, कप्तान?

बोबोयेदोव : कृपया दे दीजिये, धन्यवाद! बड़ी प्यारी जगह है... बहुत ही सुन्दर!.. मदाम लुगोवाया को तो मैं जानता हूं! वह वोरोनेज के थियेटर में अभिनय करती थीं न?

क्लेओपात्रा : हां, शायद करती थीं... तलाशी में आपको कुछ मिला?

बोबोयेदोव (अनुग्रह से) : सब कुछ, सब कुछ मिल गया! हमें सब कुछ मिल जायेगा, आप ज़रा भी चिन्ता नहीं करें! जहां कुछ भी नहीं होता, हमें तो वहां भी हमेशा कुछ न कुछ... मिल जाता है।

क्लेओपात्रा : मेरे स्वर्गीय पति इन इश्तिहारों को विशेष महत्त्व नहीं देते थे... वह कहा करते थे कि काग़ज़ों से कभी इन्क़लाब नहीं होता...

बोबोयेदोव : हुं ... बात बिल्कुल तो ऐसी नहीं है !

क्लेओपात्रा : वह कहा करते थे कि महामूर्खों के गुप्त कार्यालयों से निकलनेवाले ये इश्तिहार मूर्खों के लिए उपदेश के रूप में लिखे जाते हैं।

बोबोयेदोव : मज़ेदार बात है ... बेशक सही नहीं है !

क्लेओपात्रा : और अब वे इश्तिहारों से गोलियां चलाने पर आ गये हैं ...

बोबोयेदोव : आप यक़ीन रखें, हम उन्हें कड़ी सज़ा देंगे – बहुत कड़ी सज़ा देंगे !

क्लेओपात्रा : आपकी बात सुनकर दिल को बहुत तसल्ली होती है। आपके आने से मेरे दिल का बोझ हल्का हो गया ... मैं निश्चिन्त-सी हो गयी !

बोबोयेदोव : लोगों की हिम्मत बढ़ाना यह तो हमारा कर्त्तव्य है ...

क्लेओपात्रा : आप जैसे ज़िन्दगी से सन्तुष्ट और स्वस्थ व्यक्ति को देखकर जी ख़ुश हो गया ... आजकल तो बहुत कम ही ऐसा होता है !

बोबोयेदोव : ओह, हमारी पलटन के तमाम फ़ौजी बांके मर्द हैं !

क्लेओपात्रा : तो आइये, खाने की मेज़ पर चलें !

बोबोयेदोव (जाते हुए) : ख़ुशी से ! इस साल मदाम लुगोवाया किस थियेटर में अभिनय करनेवाली हैं ?

क्लेओपात्रा : मालूम नहीं।

(बरामदे की तरफ़ से तत्याना और नाद्या आती हैं)

नाद्या (उत्तेजित-सी) : तुमने ध्यान दिया, वह बूढ़ा लेव्शिन हमें किस तरह घूर रहा था?

तत्याना : हां ...

नाद्या : यह सब कितना ... बुरा, कितना लज्जाजनक है! निकोलाई वसील्येविच, यह सब किसलिए कर रहे हैं? किसलिए गिरफ़्तार किया गया है इन लोगों को?

निकोलाई (रूखेपन से) : इन्हें गिरफ़्तार करने के लिए काफ़ी से ज़्यादा कारण हैं ... और जब तक वे लोग वहां हैं ... आपसे अनुरोध है कि तब तक बरामदे में नहीं आयें-जायें ...

नाद्या : नहीं आयें-जायेंगी ... नहीं आयें-जायेंगी ...

तत्याना (निकोलाई की तरफ़ देखते हुए) : सिन्त्सोव को भी गिरफ़्तार कर लिया गया है?

निकोलाई : हां, श्रीमान सिन्त्सोव को भी गिरफ़्तार कर लिया गया है।

नाद्या (कमरे में इधर-उधर टहलते हुए) : सत्रह लोगों को गिरफ़्तार किया गया है! उनकी बीवियां फाटकों के बाहर खड़ी रो-धो रही हैं ... और फ़ौजी उन्हें इधर-उधर धकेलते हुए उनकी खिल्ली उड़ा रहे हैं! फ़ौजियों से इतना तो कह दीजिये कि उनके साथ सलीक़े से पेश आयें!

निकोलाई : मेरा इस मामले से कोई सरोकार नहीं है। फ़ौजियों का इन्चार्ज है लेफ़्टीनेन्ट स्त्रेपेतोव।

नाद्या : मैं ख़ुद जाकर उससे प्रार्थना करती हूं ... **(दायीं तरफ़ से बाहर चली जाती है)**

(**तत्याना मुस्कराती हुई मेज़ के पास आती है**)

तत्याना : सुनिये, क़ानूनी क़ब्र, – ऐसे ही बुलाता है न जनरल आपको ?..

निकोलाई : जनरल को चुटकियां लेने में कमाल हासिल हो, मैं ऐसा नहीं मानता। आपकी जगह मैं उसके मज़ाक़ दोहराना पसन्द न करता।

तत्याना : ओह, मुझसे ग़लती हो गयी। क़ानूनी क़ब्र नहीं, क़ानूनी क़फ़न – जनरल तो ऐसे ही बुलाता है आपको। आपको बुरा लगता है क्या ?

निकोलाई : इस वक़्त मैं मज़ाक़ के मूड में नहीं हूं।

तत्याना : क्या आप बहुत गम्भीर हैं ?..

निकोलाई : मैं आपको यह याद दिलाना चाहता हूं कि अभी कल ही मेरे भाई की हत्या की गयी है।

तत्याना : तो आपको इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ?

निकोलाई : मैं माफ़ी चाहता हूं, मगर यह आप क्या कह रही हैं ?..

तत्याना (व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए) : ढोंग करने की ज़रूरत नहीं ! भाई की मौत का आपको ज़रा भी अफ़सोस नहीं है ... आपको किसी के लिए अफ़सोस नहीं होता ... मसलन जैसे मुझे भी। रही मौत – सो भी अचानक होनेवाली मौत से सभी को धक्का-सा ज़रूर लगता है ... मगर मैं आपको यह विश्वास दिला सकती हूं कि सही अर्थ में, सच्चे दिल से आपको अपने भाई के लिए घड़ी भर को भी अफ़सोस नहीं हुआ ... आपमें वह है ही नहीं !

निकोलाई (अपने पर संयम रखते हुए) : यह भी ख़ूब रही। लेकिन आप मुझसे चाहती क्या हैं?

तत्याना : आप यह महसूस नहीं करते कि हम दोनों की आत्मायें एक जैसी हैं? नहीं महसूस करते? बड़े दुख की बात है! मैं अभिनेत्री हूं, भावनाहीन प्राणी हूं, हमेशा सिर्फ़ यही चाहती हूं कि कोई बढ़िया भूमिका अदा करूं। आप भी कोई अच्छी-सी भूमिका खेलना चाहते हैं, आप भी संगदिल हैं। यह बताइये, आपको सरकारी वकील होना पसन्द है?

निकोलाई (धीरे से) : मैं यह चाहता हूं कि आप यह चर्चा बन्द कर दें...

तत्याना (तनिक चुप रहकर हंसती है) : मुझमें व्यवहारकुशलता बिल्कुल नहीं। मैं एक उद्देश्य से आपके पास आयी थी... मैं चाहती थी आपसे मीठी-मीठी बातें करना, आप पर अपना जादू चलाना... मगर सामने आते ही शुरू हो गयी खरी-खोटी सुनाने... आप हमेशा ही मुझे जले-भुने शब्द कहने को प्रेरित करते हैं... चाहे आप बैठे हों या चल रहे हों, बातचीत कर रहे हों या चुपचाप लोगों की भर्त्सना करते हों... ख़ैर, मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहती थी...

निकोलाई (ज़रा हंसकर) : मैं अनुमान लगा सकता हूं कि यह अनुरोध क्या होगा!

तत्याना : शायद। लेकिन क्या अब ऐसा करना बेकार है?

निकोलाई : अब या पहले – फ़र्क़ कुछ न पड़ता।

बात यह है कि श्रीमान सिन्त्सोव इस मामले में बुरी तरह फंसा हुआ है।

तत्याना : मुझसे यह कहते हुए आप कुछ ख़ुशी महसूस कर रहे हैं न?

निकोलाई : हां, मैं छिपाना नहीं चाहता।

तत्याना (निःश्वास छोड़कर) : देखते हैं कि कैसे हम एक-दूसरे के समान हैं। मैं भी बहुत घटिया और बुरी हूं... यह बताइये कि सिन्त्सोव पूरी तरह आपके हाथों में है?.. मेरा मतलब आपके ही हाथों में?..

निकोलाई : हां, मेरे हाथों में है!

तत्याना : और अगर मैं आपसे उसे छोड़ देने का अनुरोध करूं तो?

निकोलाई : इसका कुछ भी फ़ायदा नहीं होगा।

तत्याना : अगर मैं बहुत-बहुत अनुरोध करूं, तो भी?

निकोलाई : कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा इससे... आपकी बातों से हैरानी हो रही है!

तत्याना : सच? किसलिए?

निकोलाई : आप एक बहुत ख़ूबसूरत औरत हैं... यक़ीनन काफ़ी सूझ-बूझ भी रखती हैं। आपका अपना ख़ास मिज़ाज भी है... आपके पास बड़ी सम्भावनायें हैं बहुत ऐश-आराम से और मज़े की ज़िन्दगी बिताने की... फिर भी आप इस जैसे दो कौड़ी के आदमी के चक्कर में पड़ी हुई हैं! सनक एक बीमारी है। और हर सभ्य आदमी को आपकी यह हरकत बुरी लगेगी... रूप का परवाना और औरतों का दीवाना

कोई भी आदमी आपको ऐसी अटपटी बातों के लिए माफ़ नहीं करेगा !

तत्याना (जिज्ञासा से उसे देखते हुए) : तो मुझे आपने फ़तवा दे दिया न ... बड़े अफ़सोस की बात है ! और सिन्त्सोव की क़िस्मत का भी फ़ैसला कर दिया गया ?

निकोलाई : वह महानुभाव आज रात तक जेल में पहुंच जायेगा।

तत्याना : तो यह तय है ?

निकोलाई : हां।

तत्याना : औरत के लिए मेहरबानी दिखाते हुए भी कोई रियायत नहीं ? विश्वास नहीं होता ! अगर मैं बहुत चाहती, तो आप सिन्त्सोव को ज़रूर छोड़ देते।

निकोलाई (धीरे से) : चाहने की कोशिश कर देखिये ... कर देखिये।

तत्याना : मैं ऐसी कोशिश कर नहीं सकती। ऐसी कोशिश करना नहीं जानती ... मगर सच कहिये – ज़िन्दगी में एक बार सच बोलना तो मुश्किल नहीं – आप उसे छोड़ देते ?

निकोलाई (ज़रा रुककर) : नहीं जानता ...

तत्याना : लेकिन मैं जानती हूं ! **(वह ज़रा चुप रहकर निःश्वास छोड़ती है)** कितने घटिया हैं हम दोनों ...

निकोलाई : फिर भी कुछ बातों के लिए तो औरत को भी माफ़ नहीं किया जा सकता !

तत्याना (लापरवाही से) : ओह, इसमें क्या ख़ास बात है ? यहां सिर्फ़ हम दोनों हैं... कोई हमारी बात नहीं सुन रहा। मुझे आपको और अपने को तो यह कहने का अधिकार है कि हम दोनों...

निकोलाई : कृपया चुप रहिये... मैं और सुनना नहीं चाहता...

तत्याना (दृढ़ता और शान्ति से) : फिर भी आपके इन उसूलों की क़ीमत किसी औरत के एक चुम्बन से कम है !

निकोलाई : मैं पहले ही कह चुका हूं कि आपकी और बातें नहीं सुनना चाहता।

तत्याना (शान्त भाव से) : तो फिर चले जाइये। क्या मैं आपको रोक रही हूं ?

(वह तेज़ी से बाहर चला जाता है। तत्याना अपने चारों ओर शाल लपेटती है, कमरे के बीचोंबीच खड़ी हुई बाहर बरामदे को देखने लगती है। दायीं ओर से नाद्या और लेफ़्टीनेन्ट अन्दर आते हैं)

लेफ़्टीनेन्ट : मैं क़सम खाकर कह सकता हूं कि कोई फ़ौजी कभी किसी औरत के साथ बुरा बर्ताव नहीं करता ! फ़ौजी के लिए औरत देवी है...

नाद्या : आप अपनी आंखों से देख लेंगे...

लेफ़्टीनेन्ट : यह असम्भव है ! सिर्फ़ फ़ौज में ही औरतों के प्रति पुराने ज़माने के सूरमाओं जैसा रवैया बाक़ी रह गया है...

(दोनों बायीं ओर के दरवाज़े से चले जाते हैं। पोलीना, ज़ख़ार और याकोव अन्दर आते हैं)

ज़ख़ार : बात यह है, याकोव ...

पोलीना : आप ही सोचिये, इसके सिवा और हो ही क्या सकता था ?

ज़ख़ार : हक़ीक़त और ज़रूरत इसी की मांग करती हैं ...

तत्याना : क्या बात है ?

याकोव : मेरा मरसिया पढ़ा जा रहा है ...

पोलीना : ओह, कैसी बेरहमी है ! सभी हम पर बरस रहे हैं ! याकोव इवानोविच भी, जो हमेशा इतनी नर्मी से पेश आता है ... क्या हमने फ़ौजियों को बुलाया है ? और फ़ौजी पुलिसवालों को तो किसी ने भी नहीं बुलाया – ये तो हमेशा अपने ही आप आ धमकते हैं।

ज़ख़ार : इन गिरफ़्तारियों के लिए भी तुम मुझे ही दोषी ठहरा रहे हो ...

याकोव : मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा रहा हूं ...

ज़ख़ार : तुम साफ़-साफ़ नहीं कहते, मगर मैं महसूस कर रहा हूं ...

याकोव (तत्याना से) : मैं बैठा हुआ था, इसने मेरे पास आकर पूछा – "क्या हाल है, भाई ?" और मैंने जवाब दिया – "बुरा हाल है, भाई !" बस, इतनी ही बात है !

ज़ख़ार : मगर इतना तो समझना चाहिए कि जिस

रूप में हमारे यहां समाजवाद का प्रचार किया जा रहा है, किसी दूसरी जगह सम्भव नहीं, कहीं भी ऐसा नहीं करने दिया जाता...

पोलीना: राजनीति में दिलचस्पी लीजिये, ऐसा सभी को करना चाहिए, मगर समाजवाद का यहां क्या सरोकार है? ज़खार के कहने का यह मतलब है और उसकी बात सही है!

याकोव (उदासी से): वह बूढ़ा लेक्शिन कहां का समाजवादी है? ज़्यादा काम करके... थकान के कारण झक्की हो गया है...

ज़खार: ये सभी झक्की हैं!

पोलीना: महानुभावो, कुछ तो रहम कीजिये हम पर! किस बुरी तरह से सताये गये हैं हम!

ज़खार: तुम क्या समझते हो कि अपने घर को अदालत में बदला देखकर मुझे दुख नहीं हुआ? यह सारी कारगुज़ारी निकोलाई वसील्येविच की है, मगर ऐसी दुखद घटना के बाद... उससे भला बहस कौन करता!

क्लेओपात्रा (तेज़ी से आती है): सुना आपने? हत्यारा मिल गया है... वे अभी उसे यहां लानेवाले हैं।

याकोव (बड़बड़ाते हुए): यह लो...

तत्याना: कौन है वह?

क्लेओपात्रा: कोई छोकरा है... मैं बहुत ख़ुश हूं... शायद इनसानियत के नज़रिये से तो यह अच्छा न हो, मगर मैं ख़ुश हूं! और अगर वह छोकरा ही है, तो मैं तो यह भी चाहूंगी कि मुक़दमा शुरू होने से

पहले उसकी हर सुबह ख़ूब अच्छी तरह से खाल उधेड़ी जाये... निकोलाई वसील्येविच कहां है?.. नहीं देखा? **(बायीं ओर के दरवाज़े की तरफ़ जाती है। सामने से जनरल आता है)**

जनरल (उदासी से): देखो तो!.. सब के सब कैसे मुंह लटकाये खड़े हैं।

ज़खार: बहुत बुरा लग रहा है, मामा जी...

जनरल: फ़ौजी पुलिसवालों का आना? हां... वह कप्तान ख़ासा बेहया है! मैं तो उससे कोई मज़ाक़ करना चाहता हूं... क्या वे रात को यहीं ठहर रहे हैं?

पोलीना: मेरे ख़्याल में तो नहीं... किसलिए?

जनरल: बहुत अफ़सोस की बात है! वरना... जब वह रात को बिस्तर में होता, तो मैं उस पर ठण्डे पानी की बालटी गिरवा देता! मेरी पलटन के बुज़दिल फ़ौजियों के साथ ऐसा ही किया जाता था... जब नंगा और पानी से तर-ब-तर आदमी उछलता-कूदता और चीख़ता-चिल्लाता है, तो बड़ा मज़ा आता है!..

क्लेओपात्रा (दरवाज़े के बीच खड़ी रहकर): आप कैसी ऊल-जलूल बातें किया करते हैं, जनरल! और किसलिए? कप्तान ढंग का और बड़ी लगन से काम करनेवाला आदमी है... यहां पहुंचते ही उसने सब अपराधियों को गिरफ़्तार कर लिया! हमें इस बात की तो तारीफ़ करनी चाहिए! **(बाहर जाती है)**

जनरल: हुं... इसके लिए तो बड़ी-बड़ी मूंछों-वाले सभी मर्द ढंग के आदमी हैं। मगर हर किसी

को अपनी असलियत जाननी चाहिए... यही है ढंग की बात! (**बायीं ओर के दरवाज़े के पास जाता है**) कोन!

पोलीना (धीरे से) : वह अपने को यहां की मालकिन महसूस करती है। ज़रा इसके रंग-ढंग तो देखिये!.. कैसी अक्खड़, कैसी बेहूदा है...

ज़ख़ार : काश यह सब जल्दी से ख़त्म हो जाये! शान्ति और चैन के लिए... ढंग की ज़िन्दगी के लिए मन छटपटा रहा है!

नाद्या (भागती हुई अन्दर आती है) : मौसी तत्याना, वह लेफ़्टीनेन्ट तो एकदम उल्लू है!.. मेरे ख़्याल में वह अपने फ़ौजियों की पिटाई भी करता है... चीख़ता-चिल्लाता और भयानक सूरतें बनाता है... मौसा जी, गिरफ़्तार किये गये लोगों की बीवियों को उनसे मिलने देना चाहिए... उनमें से पांच शादी-शुदा हैं!.. आप जाकर उस फ़ौजी पुलिसवाले से कहिये... वही इन्चार्ज है।

ज़ख़ार : देखो न, नाद्या...

नाद्या : देख रही हूं कि आप नहीं जा रहे हैं!.. जाइये, जाइये, जाकर उससे कहिये!.. उनकी बीवियां रो रही हैं... जाइये न!

ज़ख़ार (जाते हुए) : मेरे ख़्याल में – इससे कुछ लाभ नहीं होगा...

पोलीना : नाद्या, तुम तो हर वक़्त सभी को परेशान करती रहती हो!

नाद्या : मैं नहीं, आप लोग सभी को परेशान

करते रहते हैं...

पोलीना : हम ? यह और सुनो...

नाद्या (भावावेश में) : हां, हम, हम सब – मैं, तुम और मौसा जी... हमीं सबको परेशान करते हैं ! हम कुछ भी नहीं करते, फिर भी सब कुछ हमारे कारण ही हो रहा है... ये फ़ौजी, ये फ़ौजी पुलिसवाले और यह सब कुछ ! ये गिरफ़्तारियां भी... औरतें रो-धो रही हैं... सब कुछ हमारे कारण ही हो रहा है !

तत्याना : इधर आओ, नाद्या !

नाद्या (उसके पास जाकर) : लो, आ गयी... क्या बात है ?

तत्याना : बैठ जाओ, अपने को शान्त करो... तुम न तो कुछ समझती हो और न कुछ कर ही सकती हो...

नाद्या : आप तो कुछ कह भी नहीं सकतीं ! नहीं होना चाहती मैं शान्त, नहीं चाहती !

पोलीना : भगवान को प्यारी हो गयी तुम्हारी मां ने तुम्हारे बारे में ठीक ही कहा था कि तुम बहुत बदमिज़ाज हो।

नाद्या : हां, उसकी बात ठीक थी... वह ख़ुद कमाकर अपनी रोटी खाती थी। मगर आप... आप क्या करती हैं ? किसकी रोटी खाती हैं ?

पोलीना : लो, हो गयी चालू ! नाद्या, मैं तुमसे अनुरोध करती हूं कि तुम बात करने का यह अन्दाज़ बदल लो... अपने से बड़ों पर भी कहीं चीख़ा-चिल्लाया जाता है !

नाद्या : आप लोग बड़े नहीं हैं!.. कैसे बड़े हैं आप? आप तो सिर्फ़ बूढ़े हैं!

पोलीना : तत्याना, ये सब तुम्हारे विचार हैं! और तुम्हें इससे कहना चाहिए कि यह बेवक़ूफ़ छोकरी है...

तत्याना : सुना तुमने? तुम बेवक़ूफ़ छोकरी हो... **(उसका कन्धा सहलाती है)**

नाद्या : बस, आप और कुछ कह ही नहीं सकतीं!.. और कुछ भी नहीं! आप लोग तो अपनी वकालत भी नहीं कर सकते... क्या ख़ूब लोग हैं आप! सच, आप तो सब फ़ालतू हैं, यहां अपने घर में भी फ़ालतू हैं!

पोलीना (कड़ाई से) : तुम जो कुछ कह रही हो, उसका मतलब भी समझती हो?..

नाद्या : ये फ़ौजी पुलिसवाले यहां आ धमके हैं, बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले घनचक्कर फ़ौजी। ये यहां मनमानी करते हैं, चाय पीते हैं, तलवारें खनखनाते हैं, एड़ियां बजाते हैं, ठहाके लगाते हैं... लोगों की पकड़-धकड़ करते हैं, उन पर चीख़ते-चिल्लाते हैं, उन्हें डराते-धमकाते हैं, औरतें रोती-धोती हैं... और आप? कौन पूछता है यहां आपको? आप सबको धकेलकर एक तरफ़ कर दिया गया है...

पोलीना : समझती क्यों नहीं कि तुम बिल्कुल बकवास किये जा रही हो! ये लोग हमारी रक्षा करने आये हैं।

नाद्या (दुखी होकर) : ओह, मौसी! फ़ौजी बेव-

क़ूफ़ी से किसी की रक्षा नहीं कर सकते, नहीं कर सकते !

पोलीना (ग़ुस्से से) : क्य-आ ?

नाद्या (उसकी ओर हाथ बढ़ाकर) : आप नाराज़ नहीं होइये ! मैं यह सभी के बारे में कह रही हूं !

(पोलीना तेज़ी से बाहर चली जाती है)

लो, वह भाग गयीं ! अब वह मौसा से जाकर शिकायत करेंगी कि मैं बड़ी गुस्ताख़ हूं, बेलगाम हूं... मौसा मुझे ऐसा लम्बा-चौड़ा लेक्चर पिलायेंगे कि सारी मक्खियों का भी ऊब के मारे दम निकल जायेगा !

तत्याना (सोच में डूबते हुए) : दुनिया में तुम्हारा गुज़ारा कैसे होगा ? मेरी समझ में नहीं आता !

नाद्या (हाथों को अपने सभी ओर घुमाते हुए) : ऐसे नहीं ! ऐसे तो किसी हालत में नहीं ! मैं क्या करूंगी, यह नहीं जानती... लेकिन आप लोगों के समान कुछ नहीं करूंगी ! अभी-अभी मैं उस फ़ौजी अफ़सर के साथ बरामदे के पास से आ रही थी... ग्रेकोव वहां खड़ा सिगरेट पी रहा था। वह हमें देखता रहा... उसकी आंखें जैसे मुस्करा रही थीं। और वह यह जानता है कि जल्द ही उसे... जेल भेज दिया जायेगा ? देखा ! जो लोग अपने ढंग से जीते हैं, उन्हें किसी चीज़ से डर नहीं लगता... वे ख़ुश रहते हैं ! लेव्शिन और ग्रेकोव की तरफ़ देखकर मेरी आंखें शर्म से झुक जाती हैं... दूसरों को मैं नहीं जानती, मगर इनको !.. इनको मैं कभी नहीं भूल सकूंगी ? लो,

वह मूंछोंवाला उल्लू इधर चला आ रहा है... हू-हू!

बोबोयेदोव (अन्दर आते हुए) : ओह, कैसी भयानक आवाज़ है! किसे डरा रही हैं?

नाद्या : मैं आपसे डरती हूं... आप औरतों को उनके पतियों से मिलने देंगे न?

बोबोयेदोव : नहीं, नहीं मिलने दूंगा। मैं बुरा आदमी हूं!

नाद्या : फ़ौजी पुलिसवाले जो ठहरे। क्यों औरतों को आप उनके पतियों से नहीं मिलने देते?

बोबोयेदोव (नम्रता से) : इस वक़्त यह असम्भव है! लेकिन बाद में, जब उन्हें जेल भेजा जायेगा, तो मैं उन्हें उनसे मिल लेने दूंगा।

नाद्या : मगर यह असम्भव क्यों है? यह तो आप पर निर्भर है न?

बोबोयेदोव : मुझ पर... यानी क़ानून पर।

नाद्या : क़ानून का क्या सरोकार है इससे! आपकी मिन्नत करती हूं... मिल लेने दीजिये उन्हें!

बोबोयेदोव : क्या कहा, क़ानून का क्या सरोकार है इससे? आप भी क़ानून से इन्कार करती हैं? छि, छि, छि!

नाद्या : मुझसे ऐसे बातें नहीं कीजिये! मैं बच्ची नहीं हूं...

बोबोयेदोव : मैं यह नहीं मानता! सिर्फ़ बच्चे और इन्क़लाबी ही क़ानून से इन्कार करते हैं।

नाद्या : तो मैं इन्क़लाबी हूं।

बोबोयेदोव (हंसते हुए) : ओहो! तब तो आपको

जेल भेजना चाहिए ... गिरफ़्तार करके जेल भेजना चाहिए ...

नाद्या (दुखी होते हुए) : मज़ाक़ छोड़िये ! उन्हें मिल लेने दीजिये !

बोबोयेदोव : मैं ऐसा नहीं कर सकता ... क़ानून का मामला है !

नाद्या : बेहूदा क़ानून है !

बोबोयेदोव (गम्भीर होकर) : हुं ... ऐसे नहीं कहना चाहिए आपको ! जैसा कि आप कहती हैं, अगर आप बच्ची नहीं हैं, तो आपको यह मालूम होना चाहिए कि हुकूमत ही क़ानून बनाती है। और क़ानून के बिना राज्य नहीं हो सकता।

नाद्या (गुस्से में आकर) : क़ानून , हुकूमत, राज्य ! .. छि, भगवान मेरे ! लेकिन यह सब लोगों के लिए ही तो है ?

बोबोयेदोव : हुं ... मेरे ख़्याल में तो ऐसा ही है ! यानी सबसे पहले तो व्यवस्था के लिए !

नाद्या : अगर लोग रोते हैं, तो किस काम की है वह व्यवस्था। अगर लोग रोते हैं, तो क्या ज़रूरत है हुकूमत की, राज्य की ! राज्य ... क्या बेतुकी बात है यह ! क्या ज़रूरत है मुझे उसकी ? **(दरवाज़े की तरफ़ जाती है)** राज्य ! कुछ समझते नहीं और बातें करते हैं ! **(बाहर जाती है)**

(बोबोयेदोव हतप्रभ-सा रह जाता है)

बोबोयेदोव (तत्याना से) : अपने ही ढंग की लड़की

है! मगर ख़तरनाक रास्ते पर बढ़ रही है... लगता है कि इसके मौसा आज़ाद ख़्यालों के आदमी हैं, ठीक है न?

तत्याना : आप मुझसे बेहतर जानते होंगे। आज़ाद ख़्याल आदमी किसे कहते हैं, मैं यह नहीं जानती।

बोबोयेदोव : कैसे नहीं जानतीं? यह तो सभी जानते हैं!.. हुकूमत की उपेक्षा – यही है आज़ाद ख़्याली! मदाम लुगोवाया, मैंने आपको वोरोनेज में देखा है... आपके बहुत बढ़िया, कमाल के अभिनय पर मुग्ध था मैं तो! शायद आपने भी मुझे देखा हो – मैं हमेशा उप-राज्यपाल के पास वाली कुर्सी पर बैठता था। तब मैं प्रशासन का सहायक अधिकारी था।

तत्याना : मुझे याद नहीं... शायद देखा हो... फ़ौजी पुलिसवाले तो सभी शहरों में हैं न?

बोबोयेदोव : यह भी कोई कहने की बात है! लाज़िमी तौर पर हर शहर में! और मैं आपसे यह कहे बिना भी नहीं रह सकता कि हम अधिकारी लोग ही कला के सच्चे पारखी हैं! शायद सौदागर लोग भी। मसलन अपने मनपसन्द कलाकार को उपहार देने के लिए चन्दे की सूची में फ़ौजी पुलिस के अफ़सरों के नाम आपको ज़रूर दिखाई देंगे। कहा जा सकता है कि हम लोगों के साथ तो यह परम्परा-सी बन गयी है! इस साल आप किस जगह अभिनय करने की सोच रही हैं?

तत्याना : अभी तय नहीं किया... किन्तु निश्चय ही किसी शहर में, जहां कला के सच्चे पारखी होते

हैं!.. इससे तो बचा ही नहीं सकता?

बोबोयेदोव (बात न समझते हुए) : ओह, बेशक! वे तो हर शहर में अवश्य ही हैं! लोग अधिक कला-प्रेमी भी तो होते जा रहे हैं...

क्वाच (बरामदे में से) : हुजूर! वे उसे ला रहे हैं... जिसने गोली चलायी थी! कहां लाया जाये उसे?

बोबोयेदोव : यहां... सभी को यहां ले आओ! सरकारी वकील को भी बुला लो। **(तत्याना से)** मैं माफ़ी चाहता हूं! कुछ देर को काम-काज देखना होगा।

तत्याना : आप उनसे पूछ-ताछ करेंगे?

बोबोयेदोव (कृपालुता से) : थोड़ी-सी, सो भी सतही तौर पर – ज़रा जान-पहचान करने के लिए... एक तरह से उनकी हाज़िरी लूंगा!

तत्याना : मैं यह सुन सकती हूं?

बोबोयेदोव : हुं... हमारे यहां ऐसा किया तो नहीं जाता... राजनैतिक मुक़दमों में। मगर चूंकि यह फ़ौजदारी का मुक़दमा है, फिर हम अपने स्थान पर नहीं हैं और मैं आपको ख़ुश भी करना चाहता हूं, इसलिए...

तत्याना : मैं नज़र नहीं आऊंगी... मैं यहां से देखती रहूंगी।

बोबोयेदोव : बहुत ख़ूब! आपके अभिनय से जो आनन्द मिलता रहा है, मुझे ख़ुशी है कि उसके बदले में मैं कुछ तो कर पा रहा हूं आपके लिए। मैं अभी जाकर

कुछ काग़ज़ात ले आता हूं। (**वह बाहर जाता है**)

(**दो अधेड़ उम्र के मज़दूर र्याब्त्सोव को अन्दर लाते हैं। उनके साथ-साथ कोन है, वह बहुत ग़ौर से क़ैदी को देख रहा है। उनके पीछे-पीछे लेव्शिन, यागोदिन, ग्रेकोव और दूसरे मज़दूर हैं। फिर फ़ौजी पुलिसवाले आते हैं**)

र्याब्त्सोव (**गुस्से से**): मेरे हाथ क्यों बांध दिये हैं? खोलिये ... सुनते हैं?

लेव्शिन: भाइयो, खोल दीजिये इसके हाथ! .. किस-लिए बुरा बर्ताव कर रहे हैं?

यागोदिन: कहीं भागेगा नहीं!

मज़दूर: व्यवस्था की दृष्टि से आवश्यक है! क़ानून मांग करता है कि हाथ बांधे जायें ...

र्याब्त्सोव: मैं ऐसा नहीं चाहता! खोल दीजिये मेरे हाथ!

दूसरा मज़दूर (**क्वाच से**): खोल दूं, सरकार? बड़ा शान्त-सा नौजवान है ... हमें तो हैरानी हो रही है ... कि उसने यह काम कैसे किया?

क्वाच: हां, खोल दो इसके हाथ ... कोई बात नहीं!

कोन: इसे तो आप व्यर्थ ही पकड़ लाये! .. गोली चलने के वक़्त तो यह नदी पर था ... मैंने इसे अपनी आंखों से देखा था और जनरल ने भी! (**र्याब्त्सोव से**) तुम चुप क्यों हो, उल्लू? कहते क्यों नहीं कि तुमने गोली नहीं चलायी ... बोलते क्यों नहीं?

र्याब्त्सोव (दृढ़ता से) : मैंने ही चलायी थी गोली।

लेव्शिन : फ़ौजी, तुमसे वह यह बेहतर जानता है कि किसने चलायी थी गोली ...

र्याब्त्सोव : मैंने।

कोन (चिल्लाते हुए) : यह झूठ है! कुत्ते का पिल्ला ...

(बोबोयेदोव और निकोलाई स्क्रोबोतोव प्रवेश करते हैं)

गोली चलने के वक़्त तुम नदी में नाव चला रहे थे, गाने गा रहे थे ... ठीक है न?

र्याब्त्सोव (शान्ति से) : यह ... बाद की बात है।

बोबोयेदोव : यही है?

क्वाच : जी, सरकार!

कोन : नहीं, यह नहीं है!

बोबोयेदोव : क्या? क्वाच, इस बूढ़े को बाहर ले जाओ! कौन है यह बूढ़ा?

क्वाच : जनाब, यह जनरल का अर्दली है!

निकोलाई (र्याब्त्सोव को ग़ौर से देखकर) : ज़रा ठहरिये, बोग्दान देनीसोविच ... इसे यहीं रहने दीजिये, क्वाच!

कोन : मुझे हाथ नहीं लगाओ! मैं भी फ़ौजी हूं!

बोबोयेदोव : रुक जाओ, क्वाच!

निकोलाई (र्याब्त्सोव से) : कारख़ाने के मालिक की हत्या तुमने की है?

र्याब्त्सोव : मैंने।

निकोलाई : किसलिए?

र्याब्त्सोव : इसलिए कि वह हमारे साथ बहुत बुरी तरह से पेश आता था।

निकोलाई : तुम्हारा नाम क्या है?

र्याब्त्सोव : पावेल र्याब्त्सोव।

निकोलाई : हुं! कोन, आप कह रहे थे कि...

कोन (विह्वलता से) : इसने हत्या नहीं की है! उस वक़्त यह नदी पर था!.. मैं क़सम खाने को तैयार हूं!.. मैंने और जनरल साहब ने भी इसे देखा था... जनरल साहब ने तो यह भी कहा था – "अगर हम इसकी नाव उलट दें, तो ख़ूब मज़ा रहे... यह पानी से तर-ब-तर हो जाये..." अरे, ओ छोकरे! यह तुम क्या कर रहे हो?

निकोलाई : कोन, आप इतने विश्वास से कैसे कह रहे हैं कि हत्या के समय यह नदी पर ही था?

कोन : इसलिए कि जहां यह उस समय था, कार-ख़ाने से वहां एक घण्टे में भी नहीं पहुंचा जा सकता।

र्याब्त्सोव : मैं भागकर आया था।

कोन : यह नाव चला रहा था और गाने गा रहा था। किसी का ख़ून करने के फ़ौरन बाद कोई गाने नहीं गाता!

निकोलाई (र्याब्त्सोव से) : तुम्हें यह मालूम है न कि मुजरिम को बचाने की कोशिश करनेवाले या झूठी गवाही देनेवाले को क़ानून बड़ी सख़्त सज़ा देता है?.. तुम्हें यह मालूम है न?

र्याब्त्सोव : मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं है।

निकोलाई : अच्छी बात है। तो तुम्हीं ने ख़ून किया

है डायरेक्टर का?

र्याब्त्सोव: हां, मैंने ही।

बोबोयेदोव: कैसा वहशी है!..

कोन: यह झूठ बोल रहा है!

लेव्शिन: आपका यहां कोई मतलब नहीं है, फ़ौजी!

निकोलाई: क्या कहा?

लेव्शिन: मैंने कहा कि इस आदमी का इस मामले से कोई सरोकार नहीं है, योंही अपनी टांग अड़ाये जा रहा है...

निकोलाई: और तुम्हारा इस मामले से सरोकार है? हत्या में तुम्हारा भी हाथ है न?

लेव्शिन (हंसता है): मेरा हाथ? जनाब, मैं तो एक बार लाठी से एक ख़रगोश मार बैठा था – बाद में उसी के ग़म में घुलता रहा...

निकोलाई: चुप रहो! (**र्याब्त्सोव से**) तुमने जिस पिस्तौल से गोली चलायी थी, वह कहां है?

र्याब्त्सोव: मालूम नहीं।

निकोलाई: वह कैसी थी? बयान करो!

र्याब्त्सोव (ज़रा घबराकर): कैसी?.. कैसी होती हैं वे? वैसी ही जैसी होती है।

कोन (ख़ुश होते हुए): कुत्ते का पिल्ला! इसने तो पिस्तौल भी नहीं देखी!

निकोलाई: कितनी बड़ी थी वह? (**हाथों से आध गज़ का इशारा करता है**) इतनी थी न?

र्याब्त्सोव: हां... कुछ कम...

निकोलाई: बोग्दान देनीसोविच, कृपया इधर आइये।

(**बोबोयेदोव को एक तरफ़ ले जाता है और धीमी आवाज़ में कहता है**) दाल में ज़रूर कुछ काला है, कोई तिकड़म की जा रही है। हमें इस छोकरे के साथ ज़्यादा कड़ाई बरतनी होगी ... जांच-अफ़सर के आने पर ही इससे बातचीत करेंगे।

बोबोयेदोव: भला क्यों?.. वह अपने जुर्म का इक़बाल तो कर रहा है।

निकोलाई (समझाते हुए): हम दोनों को इसके असली मुजरिम होने का शक है। इसको किसी दूसरे की जगह पेश किया जा रहा है, समझे न?

(**याकोव शराब के नशे में सावधानी से तत्याना के नज़दीक दरवाज़े से ज़रा निकलकर खड़ा हो जाता है। वह चुपचाप देखता रहता है। कभी-कभी उसका सिर झुक जाता है, जैसे ऊंघ रहा हो; फिर चौंककर झटके के साथ सिर ऊपर उठाता है। डरी-डरी-सी सूरत बनाये वह इधर-उधर देखता है**)

बोबोयेदोव (बात न समझते हुए): अच्छा ... अरे हां, हां, हां! देख रहे हैं न?..

निकोलाई: यह साज़िश है! सबका मिलकर किया हुआ जुर्म है ...

बोबोयेदोव: कैसा बदमाश है यह छोकरा, है न?

निकोलाई: सार्जेन्ट से फ़िलहाल इसे ले जाने को कहिये। किसी को भी इससे मिलने-जुलने न दिया जाये! मैं ज़रा-सी देर को जा रहा हूं ... कोन, आप मेरे साथ चलिये! जनरल कहां है?

कोन : ज़मीन खोदकर कीड़े निकाल रहे हैं ...

(दोनों बाहर जाते हैं)

बोबोयेदोव : क्वाच, इसे ले जाओ। इस पर कड़ी नज़र रखना ! कोई गड़बड़ नहीं होनी चाहिए, समझे !

क्वाच : जी, सरकार ! चल रे, छोकरे !

लेव्शिन (बड़े स्नेह से) : नमस्ते, पावेल ! नमस्ते, प्यारे ! ..

यागोदिन (दुखी होकर) : नमस्ते, पावेल ! ..

र्याब्त्सोव : नमस्ते ... सब ठीक है ! ..

(र्याब्त्सोव को बाहर ले जाया जाता है)

बोबोयेदोव (लेव्शिन से) : तुम इसे जानते हो, बुड्ढे ?

लेव्शिन : जानूंगा कैसे नहीं ? हम साथ काम करते हैं।

बोबोयेदोव : तुम्हारा नाम क्या है ?

लेव्शिन : येफ़ीम येफ़ीमोव लेव्शिन।

बोबोयेदोव (धीरे से तत्याना से) : अब ज़रा देखती जाइयेगा कि क्या होता है ! **(लेव्शिन से)** लेव्शिन, तुम बुज़ुर्ग और सयाने आदमी हो, तुम्हें अफ़सरों से सच-सच बात कहनी चाहिए ...

लेव्शिन : भला झूठ किसलिए बोला जाये ...

बोबोयेदोव (द्वेषपूर्ण ख़ुशी से) : ठीक। तो तुम मुझे ईमानदारी से यह बताओ कि तुम्हारे घर में देव-प्रतिमाओं के पीछे क्या छिपा हुआ है ? सच बोलना !

लेव्शिन (शान्ति से) : कुछ भी नहीं।

बोबोयेदोव : क्या यही सच है ?

लेव्शिन : हां , यही ...

बोबोयेदोव : शर्म करो , लेव्शिन ! तुम्हारी चांद गंजी हो गयी है , बाल पक गये हैं और फिर भी तुम किसी छोकरे की तरह झूठ बोल रहे हो ! .. तुम्हारी करतूतें ही नहीं , अफ़सर तो वह भी जानते हैं जो कुछ तुम्हारे दिल-दिमाग़ में है। बहुत बुरी बात है , लेव्शिन ! मेरे हाथों में क्या है ?

लेव्शिन : देख नहीं सकता ... नज़र कमज़ोर है।

बोबोयेदोव : मैं तुम्हें बताता हूं। ये सरकार द्वारा ग़ैरक़ानूनी घोषित की गयी किताबें हैं। इनमें लोगों को अपने ज़ार के ख़िलाफ़ विद्रोह करने को उकसाया गया है। ये किताबें तुम्हारे घर में देव-प्रतिमाओं के पीछे से मिली हैं ... अब बोलो ?

लेव्शिन (शान्ति से) : अच्छा।

बोबोयेदोव : तो तुम मानते हो कि ये तुम्हारी ही हैं ?

लेव्शिन : हो सकता है , मेरी ही हों ... किताबें तो सभी एक जैसी होती हैं ...

बोबोयेदोव : तुम बुढ़ऊ होकर भी झूठ बोल रहे हो।

लेव्शिन : हुज़ूर , मैंने तो बिल्कुल सच बोला है। आपने पूछा था कि मेरे घर में देव-प्रतिमाओं के पीछे क्या है , और अगर आप यह पूछ रहे हैं तो इसका मतलब है कि अब वहां कुछ भी नहीं है यानी जो कुछ था , वहां से निकाल लिया गया है। इसीलिए मैंने जवाब दिया था कि वहां कुछ भी नहीं है। आप मुझे शर्मिंदा क्यों कर रहे हैं ? मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।

बोबोयेदोव (झेंपकर) : सच ? सुनो, तुम बहुत बढ़-चढ़कर बातें नहीं करो... मेरे साथ मज़ाक करने का नतीजा अच्छा नहीं होगा ! किसने दी तुम्हें ये किताबें ?

लेव्शिन : आपको क्या लेना है यह जानकर ? यह मैं नहीं बताऊंगा। मैं तो यह भी भूल चुका हूं कि मुझे ये कहां से मिली थीं... आप अपने को परेशान नहीं करें।

बोबोयेदोव : अच्छा... यह बात है ? ठीक है... अलेक्सेई ग्रेकोव ! ग्रेकोव कौन है ?

ग्रेकोव : मैं हूं।

बोबोयेदोव : तुमसे स्मोलेन्स्क के कारीगरों में इनक़लाबी प्रचार के सिलसिले में पूछ-ताछ की गयी थी ?

ग्रेकोव : हां, की गयी थी।

बोबोयेदोव : इतने जवान और ऐसे प्रतिभाशाली हो ? तुमसे मिलकर ख़ुशी हुई !.. फ़ौजी पुलिसवालो, इन लोगों को बाहर बरामदे में ले जाओ... यहां बड़ी घुटन हो रही है। याकोव विरिपायेव ? हाज़िर है... आन्द्रेई स्विस्तोव ?

(फ़ौजी पुलिसवाले इन्हें बरामदे में ले जाते हैं और हाथ में सूची लिये हुए बोबोयेदोव भी वहां जाता है)

याकोव (धीरे से) : मुझे ये लोग पसन्द है !

तत्याना : मुझे भी। मगर ये लोग इतने सीधे-सादे क्यों हैं ?.. ऐसे सीधे-सादे ढंग से बात करते हैं, सीधे-सादे ढंग से देखते हैं ? भला क्यों ? इनमें

जोश क्यों नहीं? मर्दानगी क्यों नहीं?

याकोव: क्योंकि वे अपनी सचाई में सहज विश्वास करते हैं...

तत्याना: इनमें ज़रूर जोश होना चाहिए! ज़रूर बहादुरी होनी चाहिए! लेकिन यहां... तुम महसूस करते हो वे सभी को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं!

याकोव: ख़ूब है लेव्शिन!.. उसकी आंखें कैसी सब कुछ समझनेवाली, उदास और स्नेहमयी हैं। वह तो यह कहता लगता है – "क्या रखा है इन बातों में? काश, आप हमारे रास्ते से हट जायें... हमें आज़ादी दे दें... काश, आप एक तरफ़ हो जायें!

ज़खार (दरवाज़े में से झांकते हुए): क़ानून के ये ठेकेदार ख़ासे बुद्धू महानुभाव हैं! यहां अदालत खोल बैठे हैं... निकोलाई वसील्येविच तो विजेता बना फिरता है...

याकोव: ज़खार, तुम्हें तो सिर्फ़ यही एतराज़ है न कि यह सारा क़िस्सा तुम्हारी आंखों के सामने हो रहा है?

ज़खार: हां, मुझे तो ये लोग इस ख़ुशी से बख़्श सकते थे!.. नाद्या का दिमाग़ बिल्कुल चल निकला है... वह पोलीना और मेरे साथ गुस्ताख़ी से पेश आयी, क्लेओपात्रा को उसने "काटखानी बिल्ली" कहा और अब मेरे कमरे में सोफ़े पर पड़ी हुई रो रही है... भगवान ही जानता है कि यह सब क्या हो रहा है!..

याकोव (सोच में डूबते हुए): और जो कुछ

यहां हो रहा है, मेरे लिए वह अधिकाधिक बेतुका और घृणित होता जा रहा है।

जख्लार : हां, मैं यह समझता हूं... मगर किया क्या जाये? अगर हमला होता है, तो अपना बचाव तो करना ही चाहिए। घर में चैन की सांस लेने की कोई जगह नहीं रही... सब कुछ उलट-पुलट हो गया है! आज बड़ी नमी है, ठण्ड है... यह बारिश!.. बहुत जल्दी आ रही है पतझड़!

(निकोलाई और क्लेओपात्रा बड़े उत्तेजित-से आते हैं)

निकोलाई : अब मुझे पक्का यक़ीन हो गया है कि उन्होंने उसकी मुट्ठी गर्म करके उसे अपने साथ मिला लिया है...

क्लेओपात्रा : यह बात खुद उन्हें नहीं सूझ सकती थी... इनके पीछे ज़रूर कोई अच्छा दिमाग़ काम कर रहा है।

निकोलाई : आपके ख़्याल में... सिन्त्सोव है?

क्लेओपात्रा : और कौन हो सकता है? लो, यह रहे श्रीमान बोबोयेदोव...

बोबोयेदोव (बरामदे में खड़े हुए) : क्या ख़िदमत कर सकता हूं?

निकोलाई : मुझे पक्का यक़ीन हो गया है कि उस छोकरे की मुट्ठी गर्म करके उसे साथ मिला लिया गया है... **(फुसफुसाकर बात करता है)**

बोबोयेदोव (धीरे से) : ओहो? हुं...

क्लेओपात्रा (बोबोयेदोव से) : आप समझ गये न?

बोबोयेदोव : हुं... कैसे बदमाश हैं!

(निकोलाई और कप्तान ऊंचे-ऊंचे बातचीत करते हुए दरवाज़े से बाहर जाकर ग़ायब हो जाते हैं। क्लेओपात्रा को मुड़कर देखने पर तत्याना नज़र आती है)

क्लेओपात्रा : ओह... आप यहां हैं?

तत्याना : क्या कोई और बात हो गयी?

क्लेओपात्रा : मेरे ख़्याल में यह सब आपकी बला से... सिन्त्सोव के बारे में सुना?

तत्याना : हां, सुन लिया।

क्लेओपात्रा (चुनौती-सी देती हुई) : हां, उसे गिरफ़्तार कर लिया गया है! मैं ख़ुश हूं कि आख़िर तो उन्होंने कारख़ाने का सारा कूड़ा-करकट साफ़ कर डाला है... और आप?

तत्याना : मेरे ख़्याल में मैं कुछ भी महसूस करूं, आपकी बला से...

क्लेओपात्रा (दुर्भावनापूर्ण प्रसन्नता से) : आपको तो हमदर्दी थी न उस सिन्त्सोव से! **(तत्याना की तरफ़ देखकर उसके चेहरे पर कुछ नर्मी आ जाती है)** कैसे अजीब-अजीब ढंग से देख रही हैं आप... चेहरा भी उतरा-उतरा हुआ है... भला क्यों?

तत्याना : शायद मौसम का असर है।

क्लेओपात्रा (उसके पास जाकर) : सुनिये... हो

सकता है कि ऐसा कहना मूर्खता हो... मगर मैं हमेशा साफ़ बात कह देती हूं!.. बहुत जिन्दगी देखी-भाली है मैंने! बहुत कुछ सहा है... और बहुत जल-भुन गयी हूं! मैं यह जानती हूं कि सिर्फ़ औरत ही औरत की दोस्त हो सकती है...

तत्याना: आप मुझसे कुछ पूछना चाहती हैं?

क्लेओपात्रा: पूछना नहीं, बताना चाहती हूं! आप मुझे पसन्द हैं... आप लोगों से बेतकल्लुफ़ी से मिलती-जुलती हैं, हमेशा बनी-ठनी रहती हैं... और मर्दों से मिलते हुए झिझक महसूस नहीं करतीं। मुझे आपसे ईष्या होती है... कैसे आप बातचीत करती हैं, कैसे चलती-फिरती हैं... लेकिन कभी-कभी आप मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगतीं... यहां तक कि मैं आपसे नफ़रत भी करने लगती हूं!

तत्याना: यह दिलचस्प बात है। वह किसलिए?

क्लेओपात्रा (अजीब-सी आवाज़ में): आख़िर आप हैं कौन?

तत्याना: यानी?

क्लेओपात्रा: मैं यह समझ नहीं पाती कि आप हैं कौन? मैं लोगों को उनके सही रूप में देखना चाहती हूं, मुझे यह जानना पसन्द है कि वे क्या चाहते हैं? जो लोग यह नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, शायद वे ख़तरनाक होते हैं! उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता!

तत्याना: बड़ी अजीब बात कह रहीं आप! आपके विचार जानने की मुझे क्या ज़रूरत है?

क्लेओपात्रा (घबराकर और जोश से) : ज़रूरत है, ताकि लोग घी-खिचड़ी होकर, मिल-जुलकर रहें, ताकि वे एक दूसरे पर भरोसा कर सकें! देख रही हैं न कि वे हमें जान से मारने लगे हैं, हमें लूट लेना चाहते हैं! आप देखती हैं न कि गिरफ़्तार किये गये लोगों के कैसे उठाईगीरों जैसे तोबड़े हैं? ओह, वे जानते हैं कि वे क्या चाहते हैं, वे यह जानते हैं! और वे घुल-मिलकर रहते हैं, एक दूसरे पर भरोसा करते हैं... मैं उनसे नफ़रत करती हूं! मुझे उनसे डर लगता है! और हम जीते हैं एक दूसरे का गला काटते हुए, किसी चीज़ पर भरोसा न करते हुए, एक-दूसरे से किसी तरह भी न जुड़े हुए, हर कोई अपने लिए जी रहा है... हम फ़ौजी पुलिसवालों और सिपाहियों के सहारे जीते हैं – वे अपने बल पर... और वे हमसे अधिक शक्तिशाली हैं!

तत्याना : मैं भी आपसे एक बात साफ़-साफ़ पूछना चाहती हूं... आप अपने पति के साथ सुखी थीं?

क्लेओपात्रा : आप किसलिए यह पूछ रही हैं?

तत्याना : योंही। जिज्ञासावश!

क्लेओपात्रा (घड़ी भर सोचकर) : नहीं। वह मुझे भूलकर हमेशा दूसरे ही झंझटों में उलझा रहता था...

पोलीना (अन्दर आते हुए) : सुना आपने? अब पता चला है कि वह क्लर्क सिन्त्सोव समाजवादी है! और ज़ख़ार तो उसे सब कुछ बता देता था, यहां तक कि सहायक मुनीम भी बनाना चाहता था! ख़ैर, यह मामूली-सी बात है, मगर ज़रा सोचिये

कि जीना कितना मुश्किल होता जा रहा है! हमारे उसूली दुश्मन हर घड़ी हमारे साथ बने रहते हैं और हमें पता भी नहीं चलता!

तत्याना: कितनी अच्छी बात है कि मैं अमीर नहीं हूं!

पोलीना: बुढ़ापे में ऐसे कहना! (**नर्मी से**) क्लेओ-पात्रा पेत्रोव्ना, आपसे फ्राक को एक बार फिर पहनकर यह देख लेने का अनुरोध किया जा रहा है कि वह फ़िट है या नहीं... और क्रेप भी आ गयी है...

क्लेओपात्रा: मैं अभी जाती हूं... तबीयत अच्छी नहीं... घबराहट से दिल धक-धक कर रहा है... बीमार होना मुझे पसन्द नहीं!

पोलीना: कहें तो मैं आपको दिल की धड़कन दूर करने की दवाई दे सकती हूं? ज़रूर फ़ायदा होगा उससे।

क्लेओपात्रा (**जाते हुए**): मेहरबानी होगी!..

पोलीना: आप चलिये, मैं आ रही हूं। (**तत्याना से**) हमें इसके साथ और भी अधिक प्यार से पेश आना चाहिए, इससे इसे शान्ति मिलती है। तुमने अच्छा किया कि इससे कुछ बातचीत की... वैसे मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है, तत्याना... तुम्हें खूब बढ़िया ढंग आता है बीच का, सुविधाजनक रास्ता अपनाने का!.. मैं जाकर उसे दवाई देती हूं।

(अकेली रह जाने पर तत्याना बरामदे की तरफ़ देखती है, जहां फ़ौजियों की निगरानी में गिरफ़्तार किये गये लोग हैं। याकोव दरवाज़े में से झांकता है)

याकोव (हंसते हुए) : मैं दरवाज़े के पीछे खड़ा हुआ सुनता रहा हूं।

तत्याना (अनमने मन से) : कहते हैं कि छिपकर दूसरों की बातें सुनना अच्छा नहीं ...

याकोव : आम तौर पर भी लोगों की बातें सुनकर मन दुखी होता है। उन पर तरस आने लगता है ... सुनो, तत्याना ! मैं यहां से जा रहा हूं ...

तत्याना : कहां ?

याकोव : फ़िलहाल ... यह नहीं जानता ... अलविदा !

तत्याना (स्नेह से) : अलविदा ! .. ख़त लिखना !

याकोव : यहां तो अब दम घुटता है !

तत्याना : तुम कब जा रहे हो ?

याकोव (अजीब ढंग से मुस्कराते हुए) : आज ... तुम भी चली जाओ ... क्या ख़्याल है ?

तत्याना : हां, मैं भी चली जाऊंगी। तुम मुस्करा क्यों रहे हो ?

याकोव : योंही ... शायद अब फिर कभी न मिलें ...

तत्याना : फ़ज़ूल की बात कह रहे हो !

याकोव : भूल-चूक के लिए माफ़ी चाहता हूं !

(तत्याना उसका माथा चूमती है। याकोव उसे दूर हटाते हुए धीरे से हंसता है)

तुमने मुझे मुरदे की तरह चूमा है ... **(धीरे-धीरे जाता है)**

(तत्याना उसे देखती है, उसका मन होता है कि

उसके पीछे-पीछे जाये, मगर तनिक हाथ झटककर रुक जाती है। नाद्या हाथ में छाता लिये आती है)

नाद्या : कृपया आइये बगीचे में चलें... दर्द से मेरा सिर फट जा रहा है... मैं अभी मूर्ख की तरह रोती रही हूं, रोती रही हूं! अगर मैं बगीचे में अकेली जाऊंगी तो फिर से रोना शुरू कर दूंगी।

तत्याना : किसलिए रोती हो, गुड़िया? रोने की कोई बात ही नहीं!

नाद्या : मेरा मन बहुत परेशान है। कुछ सिर-पैर समझ में नहीं आता। जाने कौन सही है? मौसा कहते हैं कि वह सही हैं... मगर मैं ऐसा महसूस नहीं करती! मौसा रहमदिल हैं? पहले मुझे विश्वास था कि वह रहमदिल हैं... मगर अब नहीं जानती! जब वह मुझसे बात करते हैं, तो मुझे लगता है कि मैं ख़ुद बुरी और बुद्धू हूं... मगर जब मैं उनके बारे में सोचती हूं... और अपने से सभी तरह के सवाल पूछने लगती हूं... तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता!

तत्याना (उदासी से) : अगर तुम अपने आपसे सवाल पूछने लगोगी, तो क्रान्तिकारी हो जाओगी... और इस गड़बड़-झाले में नष्ट हो जाओगी, मेरी रानी!..

नाद्या : कुछ तो बनना ही चाहिए, कुछ तो!

(तत्याना धीरे से हंसती है)

आप किसलिए हंस रही हैं? कुछ तो बनना ही चाहिए!

उम्र भर बुद्धू बने रहने और मुंह बारे घूमने में तो कोई तुक नहीं!

तत्याना : मुझे इसलिए हंसी आ गयी कि आज सभी ऐसा कह रहे हैं... सभी, अचानक ही!

(वे बाहर जाती हैं और रास्ते में उन्हें जनरल और लेफ़्टीनेन्ट मिलते हैं। लेफ़्टीनेन्ट फुर्ती से एक ओर को हट जाता है)

जनरल : आम भरती बहुत ज़रूरी चीज़ है, लेफ़्टीनेन्ट! इससे दो मसले एकसाथ हल होते हैं... **(नाद्या और तत्याना से)** तुम दोनों कहां जा रही हो?

तत्याना : घूमने।

जनरल : अगर तुम्हें रास्ते में कहीं वह क्लर्क मिल जाये... क्या नाम है उसका? लेफ़्टीनेन्ट, क्या कुलनाम है उस आदमी का जिससे अभी-अभी मैंने आपका परिचय करवाया था?

लेफ़्टीनेन्ट : पोलो... पोलोगी, हुज़ूर!

जनरल (तत्याना से) : उसे मेरे पास भेज देना। मैं खाने के कमरे में लेफ़्टीनेन्ट और ब्रांडी के साथ चाय पीने जा रहा हूं... हा-हा-हा! **(अपने मुंह पर हाथ रखकर एक अपराधी की तरह इधर-उधर देखता है)** धन्यवाद लेफ़्टीनेन्ट! ख़ूब है आपकी याददाश्त! यह बहुत अच्छा है! अफ़सर को तो अपनी पलटन के हर फ़ौजी का नाम और उसकी सूरत याद होनी चाहिए। फ़ौजी जब रंगरूट होता है, तो ख़ासा मक्कार दरिन्दा होता है – मक्कार, मूर्ख और सुस्त।

अफ़सर उसकी आत्मा में घुसकर उसे धीरे-धीरे से समझदार और कर्त्तव्यनिष्ठ आदमी बनाता है।

(ज़ख़ार परेशान-सा अन्दर आता है)

ज़ख़ार : मामा जी, आपने कहीं याकोव को देखा ?

जनरल : नहीं, मैंने नहीं देखा... यहां आया है ?

ज़ख़ार : है, है!

(जनरल और लेफ़्टीनेन्ट जाते हैं। खीझा और गुस्से से भरा हुआ कोन बरामदे की तरफ़ से आता है)

कोन, आपने मेरे भाई को देखा है ?

कोन (रुखाई से) : नहीं। आज से मैंने अपनी ज़बान को ताला लगा लिया है। किसी को देखूंगा, तो भी नहीं बताऊंगा... चुप रहूंगा... ख़ैर! जितना बोलना था, बोल चुका...

पोलीना (आती है) : किसान आये हैं। वे फिर से लगान स्थगित करने की प्रार्थना कर रहे हैं।

ज़ख़ार : वाह! ख़ूब वक़्त चुना है उन्होंने भी...

पोलीना : वे शिकायत कर रहे हैं कि फ़सल अच्छी नहीं हुई और उनके पास लगान अदा करने के लिए कुछ भी नहीं है।

ज़ख़ार : वे हमेशा ही ऐसे रोते रहते हैं! तुमने याकोव को तो कहीं नहीं देखा ?

पोलीना : नहीं। उनसे क्या कहूं मैं ?

ज़ख़ार : किसानों से ? उन्हें दफ़्तर में भेज दो... मैं उनसे बात नहीं करूंगा!

पोलीना : मगर दफ़्तर में तो कोई है ही नहीं! तुम्हें मालूम ही है कि हमारे यहां हर चीज़ गड़बड़ हुई पड़ी है। दोपहर के खाने का वक़्त होनेवाला है, और वह कप्तान चाय पर चाय मांगता जा रहा है... समोवार खाने के कमरे में ही सुबह से अब तक उबल रहा है। कुल मिलाकर, पागलख़ाने की सी ज़िन्दगी है!

ज़ख़ार : जानती हो, याकोव अचानक यहां से कहीं जाना चाहता है?

पोलीना : मैं यह कहने के लिए माफ़ी चाहती हूं, पर उसका कहीं चले जाना अच्छा ही होगा...

ज़ख़ार : हां, बेशक। वह बहुत ही तंग करने लगा है – उलटी-सीधी बातें करता रहता है... कुछ ही देर पहले वह मेरे पीछे पड़ गया, पूछने लगा कि मेरी पिस्तौल से कौए को भी मारा जा सकता है या नहीं? बहुत ही गुस्ताख़ी से पेश आ रहा था। आख़िर चला गया और पिस्तौल भी अपने साथ ले गया... चौबीसों घण्टे नशे में धुत्त रहता है...

(दो फ़ौजी पुलिसवालों और क्वाच की निगरानी में बरामदे की तरफ़ से सिन्त्सोव आता है। पोलीना लोर्नेट्ट में से उसे देखकर बाहर चली जाती है। ज़ख़ार घबराकर अपनी ऐनक ठीक करता है, फिर पीछे की ओर हट जाता है)

(**तिरस्कारपूर्वक**) बड़े दुख की बात है, श्रीमान सिन्त्सोव!.. बहुत अफ़सोस है मुझे... आपके लिए, बहुत ही!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए) : आप बिल्कुल परेशान न हो... इसकी कोई ज़रूरत भी है?

ज़ख़ार : ज़रूरत है! लोगों को एक दूसरे मे हमदर्दी होनी चाहिए... मेरे विश्वासपात्र ने चाहे मुझसे विश्वासघात ही किया हो, बुरे दिनों का शिकार होने पर उससे हमदर्दी करना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूं... हां! अच्छा, तो विदा, श्रीमान सिन्त्सोव!

सिन्त्सोव : अलविदा।

ज़ख़ार : आपको मुझसे... मुझसे तो कोई शिकायत नहीं है न?

सिन्त्सोव : बिल्कुल शिकायत नहीं है।

ज़ख़ार (झेंपकर) : तो ठीक है। विदा! आपकी तनख़्वाह आपको भेज दी जायेगी... **(बाहर जाते हुए)** नाक में दम आ गया है! मेरा घर तो घर ही नहीं रहा, फ़ौजी पुलिस का दफ़्तर बन गया है!

(सिन्त्सोव व्यंग्यपूर्वक मुस्कराता है। क्वाच बड़े ध्यान से उसे घूरता रहता है, विशेष रूप से उसके हाथों को। सिन्त्सोव उलटे क्वाच की आंखों में झांकता है। क्वाच व्यंग्यपूर्वक मुस्कराता है)

सिन्त्सोव : ऐसे घूर क्यों रहे हो? क्या बात है?

क्वाच (खुश होकर) : कुछ नहीं... कुछ नहीं!

बोबोयेदोव (आता है) : श्रीमान सिन्त्सोव, आपको अभी शहर भेजा जा रहा है।

क्वाच (खुश होते हुए) : हुज़ूर, यह तो श्रीमान सिन्त्सोव है ही नहीं, दूसरा आदमी है!..

बोबोयेदोव : क्या मतलब ? साफ़-साफ़ बात करो !

क्वाच : मैं इसे जानता हूं। यह ब्र्यान्स्क कारख़ाने में काम करता था। वहां इसका नाम मक्सिम मार्कोव था !.. जनाब, दो बरस पहले हमने इसे वहां गिरफ़्तार किया था !.. मैं जानता हूं कि इसके बायें अंगूठे का नाख़ून ग़ायब है ! अब अगर यह यहां किसी दूसरे के नाम से रह रहा है, तो ज़रूर ही जेल से भाग आया है !

बोबोयेदोव (ख़ुशीभरे आश्चर्य से) : क्या यह सच है, श्रीमान सिन्त्सोव ?

क्वाच : बिल्कुल सच है, सरकार !

बोबोयेदोव : तो आप सिन्त्सोव हैं ही नहीं ! ख़ूब, बहुत ख़ूब ...

सिन्त्सोव : मैं कोई भी क्यों न होऊं, आपको मेरे साथ शराफ़त से पेश आना होगा ... यह याद रखिये !

बोबोयेदोव : ओहो ! साफ़ पता चलता है कि आप मामूली हस्ती नहीं हैं। क्वाच, तुम इसे अपनी निगरानी में रखना !.. ख़ूब चौकन्ने रहना !

क्वाच : जो हुक्म, सरकार !

बोबोयेदोव (ख़ुश होकर) : तो श्रीमान सिन्त्सोव, या जो भी हो आपका नाम, हम आपको शहर भेज रहे हैं। **(क्वाच से)** शहर पहुंचते ही अफ़सर को इसके बारे में जो कुछ जानते हो, सब बता देना। फ़ौरन ही इसका पुराना रिकार्ड तलब करना ... ख़ैर, यह मैं ख़ुद करूंगा ! ज़रा रुको, क्वाच ... **(जल्दी से बाहर जाता है)**

क्वाच (**ख़ुशमिज़ाजी से**) : तो हमारी फिर **मुला**-क़ात हो गयी !

सिन्त्सोव (**व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए**) : आपको ख़ुशी हो रही है न ?

क्वाच : ख़ुशी कैसे नहीं होगी ? पुराने परिचित ठहरे !

सिन्त्सोव (**नफ़रत से**) : अब तक आपको यह धन्धा छोड़ देना चाहिए था। आपके बाल पक गये हैं, मगर अभी एक कुत्ते की तरह आप लोगों का पीछा करते रहते हैं... क्या आपको यह घटिया काम नहीं लगता ?

क्वाच (**ख़ुशमिज़ाजी से**) : ऐसा कुछ नहीं, मुझे इसकी आदत हो गयी है ! तेईस बरस से यही कर रहा हूं... और सो भी कुत्ते की तरह नहीं ! अफ़सर मेरी बड़ी इज़्ज़त करते हैं – सम्मान-पदक देने का वचन दे रखा है उन्होंने ! अब ज़रूर दे देंगे !

सिन्त्सोव : मेरे कारण ?

क्वाच : हां, आपके कारण ! आप भागे किस जगह से थे ?

सिन्त्सोव : बाद में पता लग जायेगा।

क्वाच : सो तो लग ही जायेगा ! ब्र्यान्स्क कारख़ाने में काम करनेवाले उस आदमी की याद है – जिसके काले बाल थे और जो चश्मा लगता था ? अध्यापक सावीत्स्की की ? कुछ समय पहले उसे भी हमने फिर से गिरफ़्तार कर लिया था... मगर वह जेल में चल बसा... बहुत ही बीमार था ! मुट्ठी भर लोग

ही तो हैं आप!

सिन्त्सोव: थोड़ा सब्र कीजिये... बहुत हो जायेंगे हम!

क्वाच: सच? यह अच्छी बात है! जितने अधिक राजनैतिक क़ैदी होंगे, हमारे लिए उतना ही अच्छा होगा!

सिन्त्सोव: अधिक इनाम मिलेंगे, ठीक है न?

(दरवाज़े में बोबोयेदोव, जनरल, लेफ़्टीनेन्ट, क्लेओ-पात्रा और निकोलाई दिखाई देते हैं)

निकोलाई (सिन्त्सोव की तरफ़ देखते हुए): मैं ऐसा ही महसूस कर रहा था... **(चला जाता है)**

जनरल: ख़ूब आदमी निकला यह!

क्लेओपात्रा: अब साफ़ हो गया है कि कहां से यह हवा चली!

सिन्त्सोव (व्यंग्य करते हुए): सुनिये श्रीमान कप्तान, क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि आप बेहूदा व्यवहार कर रहे हैं?

बोबोयेदोव: मुझे... मुझे अक़्ल नहीं सिखाइये!

सिन्त्सोव (ज़ोर देकर): मगर मैं ऐसा करूंगा! यह वाहियात तमाशा बन्द कर दीजिये!

जनरल: ओ-हो... क्या तेवर हैं?

बोबोयेदोव (चिल्लाते हुए): क्वाच! ले जाओ इसे यहां से!

क्वाच: जो हुक्म, सरकार! **(सिन्त्सोव को वहां से ले जाता है)**

जनरल : कोई दरिन्दा ही है, है न ?.. देखिये तो ... कैसे चीख़ता है !

क्लेओपात्रा : मुझे यक़ीन है कि यह सारी आग इसी की लगायी हुई है !

बोबोयेदोव : यह मुमकिन है ... बहुत मुमकिन है !

लेफ़्टीनेन्ट : इस पर मुक़दमा चलाया जायेगा न ?

बोबोयेदोव (व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए) : इन्हें तो हम नमक-मिर्च लगाये बिना ही डकार जायेंगे ... ऐसे ही काफ़ी ज़ायकेदार हैं ये तो !

जनरल : यह ख़ूब कहा। ज़िन्दा घोंघे की तरह ... मुंह में डाला-हड़प !

बोबोयेदोव : बिल्कुल ऐसे ही ! तो हुज़ूर, हम जल्द ही शिकार पर हाथ साफ़ करके आपको इस बक-झक से निजात दिला देंगे ! निकोलाई वसील्येविच, आप कहां हैं ?

(सभी बाहर जाते हैं। बरामदे की तरफ़ से थानेदार दाख़िल होता है)

थानेदार (कोन से) : पूछ-ताछ यहां की जायेगी ?

कोन (उदासी से) : मुझे मालूम नहीं ... मुझे कुछ भी मालूम नहीं !

थानेदार : मेज़ और काग़ज़ात तो यहां हैं ... मतलब यह कि पूछ-ताछ यहीं होगी ! **(बरामदे में किसी से कहता है)** इन सबको यहां ले आइये ! **(कोन से)** मरनेवाले से ग़लती हो गयी – उसने तो यह बताया था कि किसी लाल बालोंवाले ने गोली चलायी है,

मगर मुजरिम निकला काले बालोंवाला !

कोन (बड़बड़ाते हुए) : ग़लतियां तो ज़िन्दा लोगों से भी होती हैं...

(गिरफ़्तार किये हुए लोगों को बरामदे से लाया जाता है)

थानेदार : यहां खड़ा कर दो इन्हें... क़तार में ! बुड्ढे, तुम सिरे पर खड़े हो जाओ ! तुम्हे शर्म नहीं आती ! शैतान बुड्ढे !

ग्रेकोव : आप ऐसी गन्दी ज़बान का क्यों इस्तेमाल कर रहे हैं ?

लेव्शिन : तुम कुछ परवाह नहीं करो, अलेक्सेई !.. कुछ भी कहने दो इसे...

थानेदार (धमकाते हुए) : मैं तुम्हारी अक्ल ठिकाने करूंगा !

लेव्शिन : कोई बात नहीं ! इनकी नौकरी ही ऐसी है... लोगों की बेइज़्ज़ती करने की।

(निकोलाई और बोबोयेदोव आते हैं, मेज़ के सामने बैठ जाते हैं। जनरल कोने में पड़ी हुई एक आरामकुर्सी पर बैठ जाता है और लेफ़्टीनेन्ट उसके पीछे खड़ा हो जाता है। क्लेओपात्रा और पोलीना दरवाज़े में खड़ी हैं। उनके पीछे तत्याना और नाद्या भी आ खड़ी होती हैं। दुखी-सा ज़ख़ार उनके कन्धों के ऊपर से देखता है। पोलोगी हिचकिचाता हुआ और सम्भल-सम्भलकर अन्दर आता है, मेज़ के सामने बैठे लोगों को नमस्कार करता है और घबराकर कमरे के बीच में ही खड़ा रह जाता

है। जनरल उंगली से इशारा करके उसे अपने पास बुलाता है। वह पंजों के बल चलता हुआ जनरल की आरामकुर्सी के पास पहुंचकर वहीं खड़ा हो जाता है। र्याब्त्सोव को लाया जाता है)

निकोलाई : हम कार्रवाई शुरू करते हैं। गार्ड्समैन र्याब्त्सोव !

र्याब्त्सोव : क्या है ?

बोबोयेदोव : "क्या है" नहीं, गधे, बल्कि यह कहो – "क्या हुक्म है, हुज़ूर !"

निकोलाई : तो आप अब भी अपनी इसी बात पर अड़े रहना चाहते हैं कि आपने ही डायरेक्टर की हत्या की है ?

र्याब्त्सोव (नाराज़गी से) : मैं कह तो चुका हूं ... अब और क्या चाहते हैं मुझसे ?

निकोलाई : आप अलेक्सेई ग्रेकोव को जानते हैं ?

र्याब्त्सोव : वह कौन है ?

निकोलाई : वह, जो आपके साथ खड़ा है !

र्याब्त्सोव : वह हमारे साथ काम करता है।

निकोलाई : मतलब यह कि इससे जान-पहचान है ?

र्याब्त्सोव : हम सभी एक दूसरे को जानते-पहचानते हैं।

निकोलाई : बेशक। मगर क्या आप इसके घर आते-जाते थे, इसके साथ घूमने-फिरने जाते थे ?.. दूसरे शब्दों में, क्या आप इससे काफ़ी घुले-मिले हुए हैं ? अच्छे दोस्त हैं ?

र्याब्त्सोव : मैं तो सभी के साथ घूमता-फिरता हूं। हम सभी दोस्त हैं।

निकोलाई : सच? मेरे ख़्याल में तो आप झूठ बोल रहे हैं! श्रीमान पोलोगी, हमें बताइये कि र्याब्त्सोव और ग्रेकोव के आपसी सम्बन्ध कैसे हैं?

पोलोगी : पक्की दोस्ती के सम्बन्ध... यहां दो दल हैं। जवान लोगों के दल का मुखिया है ग्रेकोव। यह अपने से ऊंचे लोगों के प्रति काफ़ी गुस्ताख़ी का रवैया रखता है। बड़ी उम्र के लोगों के दल का नेता येफ़ीम लेव्शिन है... यह शख़्स लोमड़ी की तरह मक्कार है और बड़ी ऊंची-ऊंची बातें करता है...

नाद्या (धीरे से) : ओह, कैसा कमीना है!

(पोलोगी घूमकर नाद्या की तरफ़ देखता है और फिर निकोलाई पर प्रश्नसूचक दृष्टि डालता है। निकोलाई भी नाद्या की तरफ़ देखता है)

निकोलाई : आप कहते जाइये!

पोलोगी (उसांस लेकर) : इन दोनों दलों के बीच की कड़ी है श्रीमान सिन्त्सोव, उसके इन सभी से बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं। यह हज़रत साधारण दिमाग़ रखनेवाला मामूली आदमी नहीं है। वह तरह-तरह की किताबें पढ़ता है और हर चीज़ के बारे में अपना दृष्टिकोण रखता है। मेरे फ़्लैट के सामनेवाले इसके फ़्लैट में तीन कमरे हैं...

निकोलाई : ऐसी तफ़सीलों की ज़रूरत नहीं है...

पोलोगी : मैं माफ़ी चाहता हूं ... मगर सचाई पूरी बातों के ज़िक्र की मांग करती है! सभी [illegible] लोग इसके फ़्लैट में आते-जाते हैं। उनमें से कुछ यहां भी हाज़िर हैं, जैसे कि ग्रेकोव ...

निकोलाई : ग्रेकोव, क्या यह सच है?

ग्रेकोव (**शान्ति से**) : मुझसे कोई सवाल न पूछा जाये – मैं जवाब नहीं दूंगा।

निकोलाई : कुछ फ़ायदा नहीं होगा इससे!

नाद्या (**ऊंची आवाज़ में**) : शाबाश, ग्रेकोव!

क्लेओपात्रा : यह क्या हो रहा है?

ज़ख़ार : नाद्या, प्यारी बिटिया!..

बोबोयेदोव : शी ...

(**बाहर बरामदे में शोर सुनाई देता है**)

निकोलाई : जिन लोगों का इस मामले से सम्बन्ध नहीं, ऐसे लोग यहां फ़ालतू हैं ...

जनरल : हुं ... कौन है यहां फ़ालतू?

बोबोयेदोव : क्वाच, जाकर देखो, यह शोर कैसा है?

क्वाच : हुज़ूर, कोई ज़बरदस्ती अन्दर आने की कोशिश कर रहा है! वह भला-बुरा कह रहा है और भीतर घुसना चाहता है!

निकोलाई : उसे क्या चाहिए? यह है कौन?

बोबोयेदोव : जाकर पूछो!

पोलोगी : मैं अपना बयान जारी रखूं या चला जाऊं!

नाद्या : ओह, नीच कहीं का!

निकोलाई : ज़रा रुक जाइये ... जिन लोगों का यहां कोई सरोकार नहीं, ऐसे फ़ालतू लोगों से मैं जाने का अनुरोध करता हूं !

जनरल : इसका ... इसका क्या मतलब समझा जाये ?

नाद्या (ज़ोर से चिल्लाते हुए) : यहां आप ही फ़ालतू हैं ! मैं नहीं, आप ! आप हर जगह फ़ालतू हैं ... मैं यहां अपने घर में हूं ! यह तो मैं इस बात की मांग कर सकती हूं कि आप यहां से चले जायें ...

ज़ख़ार (उत्तेजित होकर नाद्या से) : जाओ यहां से ! फ़ौरन ... चली जाओ !

नाद्या : सच ? तो यह बात है !.. तो मतलब यह है कि मैं ... सचमुच मैं ही फ़ालतू हूं यहां ! मैं जाती हूं, मगर जाने से पहले यह कह देना चाहती हूं ...

पोलीना : इसे मना कीजिये ... वरना यह ज़रूर कोई भयानक बात कह देगी !

निकोलाई (बोबोयेदोव से) : फ़ौजी पुलिसवालों से कह दीजिये कि दरवाज़ा बन्द कर दें !

नाद्या : आप सभी बेहया लोग हैं ... आपके पास दिल नहीं है ... सभी दयनीय ... अभागे हैं ..

क्वाच (ख़ुश-ख़ुश अन्दर आता है) : हुज़ूर ! एक और अपने जुर्म का इक़बाल करना चाहता है !

बोबोयेदोव : क्या ?

क्वाच : एक और हत्यारा आ गया है !

(बड़ी-बड़ी मूंछों और लाल बालोंवाला नौजवान अकीमोव धीरे-धीरे मेज़ की तरफ़ बढ़ता है)

निकोलाई (अनचाहे उठते हुए) : आप क्या चाहते हैं ?

अकीमोव : डायरेक्टर की हत्या मैंने की है।

निकोलाई : आपने ?

अकीमोव : हां, मैंने।

क्लेओपात्रा (धीरे से) : ओह... नीच ! इनके पास आत्मा भी है !..

पोलीना : हे भगवान ! ये कैसे भयानक लोग हैं !

तत्याना (शान्ति से) : आख़िर जीत इन्हीं लोगों की होगी !

अकीमोव (नाक-भौंह सिकोड़कर) : तो अब क्या बाक़ी रह गया ? लीजिये, मैं हाज़िर हूं ! मैंने हत्या की है।

(सभी लोग हतप्रभ हो जाते हैं। निकोलाई बोबोयेदोव के कान में झटपट कुछ फुसफुसाता है। बोबोयेदोव चकराया-सा मुस्कराता है। गिरफ़्तार किये हुए लोगों में ख़ामोशी छाई रहती है, सभी निश्चल खड़े रहते हैं। नाद्या दरवाज़े में खड़ी-खड़ी अकीमोव को देखती और रोती है। पोलीना और जख़ार कुछ खुसुर-फुसुर करते हैं। ख़ामोशी में तत्याना की धीमी-सी आवाज़ साफ़ सुनाई देती है)

तत्याना (नाद्या से) : रोओ नहीं, आख़िर जीत इन्हीं लोगों की होगी !

लेव्शिन : ओह , अकीमोव, व्यर्थ ही तुमने ...

बोबोयेदोव : ख़ामोश !

नाद्या (अकीमोव से) : आपने ऐसा क्यों किया? क्यों किया?

लेव्शिन : चिल्लाइये नहीं, हुज़ूर। मैं आपसे उम्र में बड़ा हूं।

अकीमोव (नाद्या से) : आप यहां कुछ नहीं समझ पायेंगी – यही बेहतर है कि बाहर चली जायें ...

क्लेओपात्रा : और यह शैतान बूढ़ा कैसा महात्मा बन रहा था!

बोबोयेदोव : क्वाच!

लेव्शिन : अब तुम चुप क्यों हो, अकीमोव? बोलो तो! बता दो कि कैसे डायरेक्टर ने तुम्हारी छाती पर पिस्तौल रख दी थी और तब तुमने उस पर ...

बोबोयेदोव (निकोलाई से) : सुना आपने, यह बूढ़ा इसे क्या पट्टियां पढ़ा रहा है? ओह, झूठा बुड्ढा!

लेव्शिन : मैं झूठा नहीं हूं ...

निकोलाई : और अब आपको क्या कहना है, र्याब्त्सोव?

र्याब्त्सोव : मुझे क्या कहना है ...

लेव्शिन : चुप रहो। तुम – चुप रहो! ये बहुत चालाक लोग हैं, शब्दों का हमसे कहीं अधिक अच्छा इस्तेमाल करना जानते हैं ...

निकोलाई (बोबोयेदोव से) : धक्के देकर इसे यहां से निकाल दीजिये!

लेब्शिन : धक्के देकर अब आप हमें बाहर नहीं निकाल सकेंगे! लद गये वे ज़माने—बहुत धमकी दे चुके! बहुत अरसे तक हम क़ानूनी अन्धेरगर्दी के वातावरण में जी लिये! अब हम खुद ज्वाला की तरह भभक उठे हैं—इस ज्वाला को नहीं बुझा पायेंगे! किसी भी तरह की धमकियों से नहीं बुझा पायेंगे इस ज्वाला को!

(परदा गिरता है)

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है:

रादुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।